

खौफ का अनदेखा चेहरा

शहम पिशाच



FLYDREAMS
PUBLICATIONS

प्रभाकर पाण्डेय

ब्रह्म

पिशाच

प्रभाकर पाण्डय

FlvDreams Publications

इस किताब के सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा, प्रकाशक और लेखक की लिखित पूर्वानुमति के बिना पुनः प्रकाशित करना, प्रति निकालना, वितरण करना, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी अन्य मेकैनिकल या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के ज़रिए पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता। किसी के भी द्वारा इस कहानी का उपयोग करना निषिद्ध है।

ब्रह्म पिशाच (कहानी संग्रह) © प्रभाकर पाण्डेय (2018)

आईएसबीएन: 978-81-939525-7-3

प्रथम संस्करण: मार्च 2019

द्वितीय संस्करण: May 2020

एडिटर: जयन्त कुमार बालोच

कवर: निशांत मौर्य

प्रकाशक: FlyDreams Publications

ईमेल: teamflydreams@gmail.com

हमारी किताबें यहाँ से खरीद सकते हैं :-

www.flydreamspublications.com

Amazon.in, Kindle, Pustakmandi, MarkmyBook

हमें फॉलो करें :-

Facebook.com/FlyDreamsPublications

Instamojo.com/teamflydreams

WhatsApp: +919660035345

यह एक काल्पनिक किताब है। कहानी में आए सभी चरित्र, नाम और घटनाएं लेखक की कल्पना पर आधारित हैं और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध एक संयोग मात्र होगा।

दो शब्द भूत-पिशाचों के नाम

मेरा तो यह मानना है कि जिस चीज की कल्पना हम इंसान कर लेते हैं, वह अवश्यंभावी हो जाता है। क्योंकि मानव दिमाग की उड़ान जहाँ तक हो सकती है, वहाँ तक अस्तित्व होना ही होना है। आप पाठकगण के समक्ष ये कहानियाँ रखते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है, और वैसे भी अगर पाठक न हों तो लेखनी किस काम की!

ये कहानियाँ काल्पनिकता पर आधारित हैं पर यह भी सत्य है कि इनमें से कई मैंने अपने गाँव-जवार में, अपनों से सुनी भी हैं। मैं विश्वास के साथ यह नहीं कह सकता कि भूत-प्रेत होते हैं या नहीं, पर मेरा यह भी कहना है कि अगर भगवान का अस्तित्व है तो, भूत-प्रेतों का क्यों नहीं?

कहानियों के बारे में मैं खुद कुछ नहीं कह सकता। यह तो पाठक महानुभावों के ऊपर है कि इन कहानियों को लेकर उनकी क्या प्रतिक्रिया है। पर मुझे यह भी विश्वास है कि आप इन कहानियों को रहस्य-रोमांच से भरपूर तो पाएंगे ही, साथ ही आप एक ऐसी दुनिया की सैर पर निकल जाएंगे जो थोड़ी आपकी दुनिया से हटकर होगी।

भूत-प्रेत, चुड़ैल, जिन्न ब्रह्मपिचाश आदि का नाम सुनते ही मानव मन कौतुहल से भर जाता है। वैसे भी, जो भी रहस्यमयी बातें, घटनाएँ होती हैं, वे मानव मन को अपने आगोश में जल्दी ही ले लेती हैं। खैर इस प्रकार की बातें, घटनाएँ पढ़ने वाले या फिल्म आदि के माध्यम से देखने वाले के लिए रोमांचकारी हो सकती हैं, कभी-कभी डर भी पैदा कर सकती हैं पर जरा सोचिए, उसपर क्या बीतती होगी, जिसके साथ कोई ऐसी घटना घटित होती होगी या हुई होगी? वैसे भी कभी-कभी इन बातों आदि का इतना प्रभाव पड़ जाता है कि व्यक्ति परेशानी में पड़ जाता है।

मैं तो बार-बार अपनी यही बात दुहराता रहता हूँ कि अगर भगवान का अस्तित्व है तो भूत-प्रेतों का क्यों नहीं?

जहाँ साकारात्मकता होती है, वहाँ नाकारात्मकता होती ही है। जहाँ सुख होता है, वहाँ दुख के भी अनुभव किए जाते हैं। इसका कारण यह है कि ऐसी बहुत सारी अवस्थाएँ हैं जो अपने एक से अधिक या यूँ कह लें कि अपनी विपरीत अवस्था में भी अपने अस्तित्व को बनाए रखती हैं। अब देखिए न, अच्छाई है तो बुराई भी है; प्रकाश है तो अंधकार भी; सुर हैं तो असुर भी।

खैर यह तो एक पक्ष हुआ पर एक दूसरा पक्ष भी है। और वह यह कि जैसे इंसान आदि हैं, बहुत सारे सूक्ष्म जीव आदि हैं, वैसे ही भूत-प्रेत भी हैं और बिना जाने, बिना विचारे, अपने ज्ञान का रौब दिखाते हुए, अपनी वैज्ञानिकता सिद्ध करते हुए इन्हें झुठलाया तो जा सकता है पर उसे आप कैसे समझा सकते हैं, उस पर आप अपने विज्ञान का जादू कैसे चला सकते हैं, जो ऐसी रहस्यमयी घटनाओं को, हृदय को कँपा देने वाली घटनाओं को अपनी आँखों से देखा हो या ऐसी घटनाओं से गुजरा हो या ऐसी परिस्थिति से खुद ही निपटा हो। तो फिर मैं वही बात कह रहा हूँ कि मुझे लगता है कि कहीं न कहीं कुछ ऐसे जीव, प्राणी आदि हैं जिनके किसी रूप को, स्वरूप को भूत-प्रेत आदि कहा जाता है और कुछ लोगों को इनका भान भी है।

एक बात और कहना चाहूँगा, मैं दावे के साथ यह भी नहीं कह सकता कि भूत-प्रेत होते ही हैं; पर भूत-प्रेत नहीं होते, यह भी मानने को मेरा मन तैयार नहीं, क्योंकि मैंने अपने गाँव-जवार में भूत-प्रेत-पिशाचों, चुड़ैलों आदि के इतने सारे किस्से सुन रखे हैं कि मेरी आत्मा इन आत्माओं के अस्तित्व को नकार नहीं पाती और साथ ही काफी मनन-चिंतन करने के बाद, तार्किक और अतार्किक विचार के बाद ऐसा लगने लगता है कि भगवान है तो शैतान भी होगा ही, चाहें वह भले हम मानवों के रूप में ही क्यों न हो।

माँ सरस्वती, श्रीगणेश, हनुमानजी को नमन करते हुए मैं पाठक महानुभावों के साथ ही माता-पिता, बाबा-ईया, काका-पितिया, एवं सभी अग्रजों, अनुजों के साथ अपने गाँव-जवार को नमन करता हूँ, क्योंकि इन सबकी कृपा से ही मैं कुछ लिख पाने में समर्थ हुआ हूँ।

साथ ही मैं इस पुस्तक को सहर्ष प्रकाशित करने के लिए फ्लाइडिम्स पब्लिकेशन का आभार व्यक्त करता हूँ, क्योंकि सच में इस प्रकाशन ने हम जैसे कितने नगण्य लेखकों को उड़ने के लिए पंख दे दिए हैं। सादर धन्यवाद!

प्रभाकर पाण्डेय 'गोपालपुरिया'

भूतही दुनिया

भादो का महीना। काली अँधियारी रात। कभी-कभी रह-रहकर हवा का तेज झोंका आता और आकाश में रह-रहकर बिजली भी कौंध जाती। रमेसर काका अपने घर से दूर घोटे (घर से दूर वह स्थान जहाँ किसान अपने गाय-बैल बाँधता है) पर मड़ई (घास-फूस से छाया हुआ घर) में लेटे हुए थे।

रमेसर काका का घोठा, गाँव से थोड़ी दूर, एक गढ़ही (तालाब) के किनारे था। गढ़ही बहुत बड़ी नहीं थी, पर बरसात के दिनों में लबालब भर जाती थी और इसमें इतने घास-फूस उग आते थे कि बहुत ही डरावनी लगने लगती थी। इसी गढ़ही के किनारे आम और महुए के लगभग 12-13 मोटे-मोटे पेड़ थे। दिन में जिनके नीचे चरवाहे, गोटी या चिक्का, कबड्डी आदि खेला करते थे और मजदूर या गाँव का कोई व्यक्ति, जो खेत घूमने या खेतों में खाद आदि डालने गया होता था, आराम फरमाता था। इस गढ़ही के उत्तरी छोर पर पीपल का भी एक बहुत ही पुराना पेड़ था पर गाँव वालों की नजरों में वह अभिशप्त समझा जाता था। गाँव वाले सदा ही इस पीपल के पेड़ से दूर ही रहना पसंद करते थे।

काल-चक्र से प्रभावित रात रूपी नवयौवना अपने बिछुड़े हुए प्रियतम की याद में अपने रूप-रंग को और भी कुंठित और रौद्र बनाए जा रही थी। रात्रि रूपी नवयौवना की विरह-वेदना को और भी उग्र बनाते हुए हवा का तेज झोंका, अब आँधी का रूप ले चला था। आम के पेड़ों के डालियों की टकराहट की अति डरावनी आवाज़, उस भयंकर रात को और भी भयंकर बनाते हुए रमेसर काका की मड़ई में बँधी भैंस को भी डरा रही थी। भैंस डरी-सहमी हुई रमेसर काका की बँसखटिया से चिपककर खड़ी हो गई थी। ऐसा लग रहा था कि वह रात उस बेजुबान जीव के लिए कोई शामत लेकर आई हो। रमेसर काका अचानक सोए-सोए ही हट-हट की रट लगाने लगे थे, पर भैंस अपनी जगह से बिना टस से मस हुए, सिहरी हुई, हटने का नाम नहीं ले रही थी।

रमेसर काका उठकर बैठ गए और बैठे-बैठे ही भैंस के पेट पर हाथ फेरने लगे। भैंस भी अपनापन पाकर रमेसर काका से और सटकर खड़ी हो गई। रमेसर काका को लगा कि शायद भैंस को मच्छर लग रहे हैं इसलिए बैठ नहीं रही है और बार-बार पूँछ से शरीर को झाड़ रही है। वे खड़े हो गए और मड़ई के दरवाजे पर रखे धुँहरहे (मवेशियों को मच्छर आदि से बचाने के लिए जलाई हुई आग, जिसमें से धुँआ निकलकर फैलता है और मच्छर आदि भाग जाते हैं) पर थोड़ा घास-फूस रखकर मुँह से फूँकने लगे।

रमेसर काका फूँक मार-मारकर आग तेज करने लगे और धुआँ भी बढ़ने लगा। बार-बार फूँक मारने से अचानक घास-फूस जलने लगी और मड़ई में थोड़ा अँजोर (प्रकाश) फैल गया। उस अँजोर में अचानक रमेसर काका की नजर उनकी बँसखटिया (बाँस की खाट) पर पड़ी।

अरे, यह क्या? उनकी बँसखटिया पर एक औरत बैठी हुई दिखाई दी। उस औरत को देखते ही उनके पूरे शरीर में बिजली कौंध गई और उसी समय आकाश में भी तेज बिजली कड़की और डराने वाले एक तेज प्रकाश से पूरी गढ़ही नहा उठी।

रमेसर काका डरने वालों में से तो नहीं थे, पर पता नहीं क्यों उनको आज थोड़ा डर का

आभास हो रहा था। उन्होंने हिम्मत करके आग को और तेज किया और उस पर सूखा पुआल रखकर पूरा अँजोर (प्रकाश) कर दिया। अब उस पुआल के अँजोर में वह महिला साफ़ नजर आ रही थी। अब रमेसर काका अँजोर में उस औरत को अच्छी तरह से देख सकते थे।

रमेसर काका ने धुँहरहे के पास बैठे-बैठे ही जोर से हाँक लगाकर पूछा, “कौन है? कौन है वहाँ?” पर उधर से कुछ भी प्रतिक्रिया न पाकर वे सन्न रह गए। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि अब क्या करना है। वे मन ही मन कुछ बुदबुदाए और उठकर खड़े हो गए, पर उनके पैर न आगे अपनी खाट की ओर ही बढ़ रहे थे और न ही मड़ई के बाहर की ओर ही। वे पूरी तरह से सुन्न हो गए थे और उनकी बुद्धि भी पूरी तरह से अलसाई हुई गहन निद्रा में चली गई थी।

अचानक खाट पर बैठी महिला अट्टहास करने लगी। उसकी तेज, भयंकर, डरावनी हँसी ने उस अंधेरी काली रात को और भी भयावह बना दिया। वह रह-रहकर डरावनी अट्टहास करते जा रही थी। आस-पास का माहौल पूरी तरह से भय के आगोश में समा गया था, पर रमेसर काका बजरंग बली को गुहार लगाते हुए, अपने आप को ढाँढस बँधाते हुए अब थोड़े सजग हो चुके थे। उन्होंने अब सोच लिया था कि डरना नहीं है, क्योंकि जो डर गया, वो मर गया।

रमेसर काका अब तनकर खड़े हो गए। उन्होंने मड़ई के कोने में रखी लाठी को अपने हाथ में ले लिया। वे फिर से बोल पड़े, “कौन हो तुम? तुमको क्या लगता है, मैं तुमसे डर रहा हूँ? कदापि नहीं।” इतना कहते ही रमेसर काका भी हँसने लगे, अट्टहास करने लगे और जोर-जोर से उस महिला को डराने-धमकाने लगे। पर सच्चाई यह थी कि रमेसर काका अंदर से पूरी तरह डरे हुए थे। यहाँ तक कि वे अंदर के काँप भी रहे थे पर पूरी तरह से अपने डर को नियंत्रण करने की कोशिश में लगे हुए थे। रमेसर काका का वह रूप देखकर वह महिला और उग्र हो गई और अपनी जगह पर खड़ी होकर तड़पी, “तू... डरता नहीं... है न...? बताती हूँ मैं तुझे!”

रमेसर काका को पता नहीं क्यों, अब कुछ और बल मिला। उनका डर और भी कम हुआ।

वे बोल पड़े, “बता, क्या करेगी तू मेरा? जल्दी यहाँ से निकल, नहीं तो इस लाठी से मार-मारकर तेरा सिर फोड़ दूँगा।” इतना कहते ही रमेसर काका ने अपनी लाठी ऐसे तान ली जैसे वे उस महिला का सिर फोड़ने ही वाले हों।

महिला चिल्लाई, “तू मुझे मारेगा। मुझे... मुझे मेरे ही घर से निकालेगा? अरे, मेरा बचपन बीता है इस मड़ई में। यह मेरा घर है, मेरा। मैं बरसों से यहीं रहती आ रही हूँ। पर पहले तो किसी ने कभी नहीं भगाया। यहाँ तक कि भइया (कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में पिताजी को भइया भी कहते हैं) ने भी। तू अपना होकर भी मुझे मारने की बात कर रहा है?”

अब पता नहीं क्यों रमेसर काका का गुस्सा और डर दोनों शांत हो रहे थे। उनको अब लग रहा था कि उनके सामने जो महिला खड़ी है, उसको वे जानते हैं। उसकी आवाज़ पहचानते हैं।

रमेसर काका अब लाठी पर अपने शरीर को टिका दिए और दिमाग पर जोर डालकर यह सोचने की कोशिश करने लगे कि यह है कौन? यह क्यों इसे अपना ही घर बता रही है? और अगर यह पहचान की है तो चुड़ैल के रूप में भयंकर, विकराल चेहरे वाली क्यों है? ओह! तो यह बलेसरा बहिन (बहन) है क्या? अचानक उनके दिमाग में कौंधा। नहीं-नहीं, बलेसरा बहिन नहीं हो सकती। उसे तो मरे हुए पच्चीस साल हो गए। अब रमेसर काका अपने अतीत में जा चुके थे। उनको सब कुछ याद आ रहा था। पिछली घटनाएँ एक-एक करके उनकी अतीत की यादों को ताजा करने लगी थीं।

उस समय उनकी बलेसरा बहिन 12-14 साल की थी और उम्र में उनसे लगभग 3-4 साल बड़ी थी। चारा काटने से लेकर गोबर-गोहूँ तथा मवेशियों को सानी-पानी करने में दोनों भाई-बहिन सदा साथ-साथ लगे रहते थे। यहाँ तक कि गेढ़ छीलना हो या कोल्हु-आड़े कचरस पेरकर राब या गुड बनाना हो, दोनों भाई-बहन प्रसन्न मन से यह सब काम करते थे। एक दिन दोपहर का समय था और इसी गड़ही पर इन्हीं आमों के पेड़ों पर गाँव के कुछ बच्चे ओल्हा-पाती (एक ग्रामीण खेल) खेल रहे थे। बलेसरा बहिन बंदरों की भांति इस डाली से उस डाली उछल-कूद कर रही थी। नीचे चोर बना लड़का पेड़ों पर चढ़े लड़के-लड़कियों को छूने की कोशिश कर रहा था। सभी बच्चे खेल का भरपूर आनंद उठा रहे थे। अचानक कोई कुछ समझे, इससे पहले ही बलेसरा बहिन जिस डाली पर बैठी थी, वह टूट गई और बलेसरा बहिन औंधे मुँह जमीन पर गिर पड़ी थी।

बलेसरा बहिन के जमीन पर गिरते ही सभी बच्चों को थकुआ मार गया और जब तक बड़े लोग आकर बलेसरा बहिन को उठाते तब तक उसकी इहलीला समाप्त हो चुकी थी। बलेसरा बहिन सदा-सदा के लिए इस लोक को छोड़कर जा चुकी थी।

रमेसर काका अभी यही सब सोच रहे थे कि उन्हें उस औरत के फिर से रोने की आवाज़ सुनाई दी। बिलकुल बलेसरा बहिन की तरह। अब रमेसर काका को पूरा यकीन हो गया था कि यह बलेसरा बहिन ही है। रमेसर काका अब ये भूल चुके थे कि उनकी बहन मर चुकी है। वे दौड़कर खाट के पास गए और बलेसरा बहिन को अँकवार में पकड़कर (गले लगाकर) रोने लगे। उन्हें कुछ भी सूझ-बूझ नहीं थी। रात कब बीत गई और सूर्यदेव निकल आए, इसका पता भी नहीं चला और रमेसर काका अब भी बेसुध होकर रोए जा रहे थे। तभी गाँव के कुछ लोग, कुछ काम से उस गड़ही पर आए और उन्हें रमेसर काका के रोने की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने मड़ई में झाँककर देखा तो रमेसर काका एक महिला को अँकवार में पकड़कर रोए जा रहे थे।

उस महिला को देखते ही ये सभी लोग सन्न रह गए क्योंकि वह वास्तव में बलेसरा ही थी, जो बहुत समय पहले भगवान को प्यारी हो गई थी। यह बात पूरे गाँव में आग की तरह फैल गई और उस गड़ही पर गाँव वालों की भीड़ लग गई। गाँव के एक बुजुर्ग पंडीजी ने कहा कि दरअसल बलेसरा जब मरी तो वह बच्ची नहीं थी। उसकी अंतिम क्रिया करनी चाहिए थी, पर उसे बच्ची समझकर केवल दफना दिया गया था और अंतिम क्रिया नहीं की गई थी। इसलिए उसकी आत्मा अभी भी भटक रही है।

गाँव के लोग अभी आपस में बात कर ही रहे थे कि तभी रमेसर काका बलेसरा बहिन के

साथ मड़ई से बाहर निकले। 'बलेसरा' गाँव के लोगों को एकत्र देखकर फूट-फूटकर रोने लगी थी। सब लोग उसे समझाने की कोशिश कर रहे थे, पर दूर से ही। रमेसर काका के अलावा किसी की भी हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह बलेसरा के पास जाए।

बलेसरा अचानक बोल पड़ी, “हाँ, यह सही है कि मैं मर चुकी हूँ। पर मुझसे डरने की आवश्यकता नहीं है। मैं इसी गाँव की बेटी हूँ। मैं यहीं पली-बढ़ी हूँ।” इतना कहने के बाद सिसकते हुए वह फिर बोलना शुरू की, “मैं आज तक भटक रही हूँ। मेरी सुध कोई नहीं ले रहा। मैं इस गड़ही पर रहकर अन्य भूत-प्रेतों से अपने गाँव के लोगों की रक्षा करती रहती हूँ। मैं नहीं चाहती कि इस गड़ही पर, इन आम के पेड़ों पर अगर कोई गाँव का व्यक्ति ओल्हा-पाती खेले तो उसे किसी भूत के कोप-भाजन का शिकार बनना पड़े।” इतना कहने के बाद अब तो बलेसरा पूरी तरह से फूट-फूटकर रोने लगी और बिलखते हुए बोली, “मुझे एक प्रेत ने ओल्हा-पाती खेलते समय पेड़ से धक्का दे दिया था। मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर पाई थी।”

दरअसल बलेसरा जब 10-12 साल की थी, तभी से अपने घर का सारा काम संभालती थी। अपनी माँ के कामों में हाथ बँटाने के साथ ही खेती-बारी का काम और गोबर-गोह्थार संभालती थी। जाड़े के दिनों में जब सूर्यदेव घने कुहरे को चीरकर कँपकपाते हुए अपना दर्शन देते थे तो बलेसरा तरई (चट्टाई) निकालकर मड़ई के बाहर बिछा देती और उसी पर बैठकर घमावन (धूप सेकना) लेती और उसकी माँ उसके बालों में कंधी आदि किया करती। अगर इसे गँवई भाषा में कहें तो बलेसरा अपनी माँ से ढील (जूँ) हेरवाती थी। इस तरई पर बैठकर वह अपने माँ से स्वेटर बुनना, डलिया, कुरुई, दौरा आदि बिनना (बुनना) भी सिखती थी। लोगों की सुनें तो बलेसरा बहुत ही गुणी होने के साथ ही साथ बहुत खूबसूरत भी थी।

एक भेड़ियार जो लगभग 20-22 साल का गबरू जवान था, वह अक्सर अपनी भेंड़ों को लेकर इसी गड़ई की ओर से निकलता था। वह किस गाँव का था, इसका पता किसी को भी नहीं था, पर जब भी वह अपनी भेड़ों को लेकर इस गड़ई की ओर आता था, तो 1-2 घंटे इसी गड़ई पर आराम फरमाता था। बार-बार इस गड़ई पर आने के कारण बलेसरा के भइया (पिताजी) से उसका थोड़ा परिचय भी हो गया था और वह बलेसरा के भइया को काका कहकर पुकारता था। बलेसरा के भइया ने उससे 2-3 कंबल भी खरीदे थे। सुनने में आता है कि उसने, बलेसरा के भइया से इन कंबलों का पैसा नहीं लिया था और कहा था कि काका, इधर बराबर आता ही हूँ और आपके घर पर पानी-ओनी पीता हूँ। कभी-कभी आपके वहाँ से सत्तू-भुजा आदि भी खाने को मिल जाता है इसलिए आपसे इन कंबलों का पैसा नहीं लूँगा। हाँ, अगर आप अब आगे कोई कंबल खरीदेंगे तो ज़रूर पैसा ले लूँगा।

एक दिन बातों ही बातों में उस भेड़ियार को पता नहीं क्या सूझा कि वह बलेसरा के भइया (पिताजी) से बोल पड़ा, “काका, हम आपकी छवड़ी (लड़की) से बेयाह (विवाह) करना चाहते हैं।”

यह बात सुनते ही बलेसरा के भइया के शरीर में आग लग गई। वे अपना आपा खो बैठे और दौड़कर मड़ई में से लउर (लाठी) निकाल लाए। वह भेड़ियार कुछ समझ पाए, इससे

पहले ही गुस्से में वे उस भेड़िहार को 2-3 लउर जमा दिए। वह भेड़िहार लहु-लुहान हो गया पर मुस्कुराता रहा। लउर जमाने के बाद गाली देते हुए उन्होंने उसे वहाँ से भाग जाने के लिए कहा, साथ ही यह भी कहा कि फिर कभी इस गढ़ई पर अपनी सूरत मत दिखाना, अगर इधर दिख गए तो तेरी खैर नहीं होगी।

इस बात को बीते कई महीने हो गए थे पर एक दिन अचानक वह भेड़िहार फिर से उस गढ़ई पर प्रकट हो गया। इस बार उसने अपनी भेड़ों को बलेसरा की मढ़ई से दूर ही रखा और गढ़ई के दूसरे किनारे पर एक छोटी-सी मढ़ई डाल कर रहने लगा। बलेसरा के भइया को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा और न ही वे इस ओर ध्यान देना ही उचित समझे। उन्होंने बात को बढ़ाना उचित नहीं समझा और सोचा कि अगर इस भेड़िहार ने अब कोई उल्टी-सीधी हरकत की तो इसकी खबर अच्छी तरह से ले लूंगा।

वह भेड़िहार प्रतिदिन सुबह अपनी भेड़ों को लेकर निकल जाता, पर शाम को उसी गढ़ई पर वापस आकर रात बिताता। एक दिन मौका देखकर उसने फिर से बलेसरा के भइया से कहा कि वह बलेसरा का विवाह उससे कर दें, पर बलेसरा के भइया इस बार तो और भी गुस्से में आ गए और फिर से उसको मारने पर ऊतारू हो गए। वह भेड़िहार डरा नहीं और सिर्फ इतना ही कहकर चला गया कि जैसी आपकी मर्जी। मैं अब आपसे कभी भी इस बारे में बात नहीं करूंगा और न ही आपको दोबारा परेशान ही करूंगा।

उसी दिन, रात में वह भेड़िहार फिर से अपनी भेड़ों के साथ उस गढ़ई पर आया और शराब के नशे में पता नहीं क्या-क्या बकता रहा। उसने यहाँ तक कहा कि आज की रात उसके जीवन की आखरी रात है। बलेसरा के भइया ने उसकी बातों को अनसुनी कर दिया और सोचा कि सुबह गाँव के कुछ बड़े-बुजुर्गों के सामने इसे मारकर यहाँ से भगा दूंगा।

सुबह उस भेड़िहार की भेड़े उठकर चरने के लिए इधर-उधर जाने लगीं पर भेड़िहार का कुछ भी अता-पता नहीं था। सूर्यदेव के सिर पर आ जाने के बाद भी वह भेड़िहार अपनी मढ़ई से बाहर नहीं निकला। इधर बलेसरा के भइया गाँव में जाकर 8-10 लोगों को पंचायत करने के लिए उस गढ़ई पर बुला लाए।

जब एक आदमी ने उस भेड़िहार की मढ़ई में जाकर उसको हाँक लगाई तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उस आदमी ने सोए भेड़िहार के पास जाकर उसको जगाने की कोशिश की, पर यह क्या, उस भेड़िहार के तो प्राण-पखेरू ही उड़ गए थे।

यह बात गाँव-जवार में आग की तरह फैल गई कि उस भेड़िहार ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली है। पुलिस आई और उसकी लाश को पोस्टमार्टम के लिए ले गई। यह बात आई-गई हो गई और कुछ दिनों के बाद लोगों के जेहन में भी यह बात धूमिल हो गई। रमेसर काका इस बात को भुलाकर फिर से अपने कामों पर ध्यान देने लगे।

इस घटना के लगभग एक साल बाद, एक दिन जब बलेसरा गाँव के ही कुछ बकरी-गाय आदि के चरवाहों के साथ ओल्हा-पाती खेल रही थी, तो वही डाल टूट गई, जिसपर वह बैठी थी और उसकी भी इहलीला समाप्त हो गई।

गाँव के लोगों को यह मात्र एक दुर्घटना लगी थी और उनको लगा था कि पेड़ से गिरकर बलेसरा की मौत हो गई। उसको उसी गढ़ई पर एक कोने में दफना दिया गया क्योंकि

उसके घर वालों को लगा था कि बलेसरा अभी 11-12 साल की बच्ची ही तो है।

आज बलेसरा ने बताया कि उसे ओल्हा-पाती खेलते समय किसी ने धक्का दिया था और वह धक्का देने वाला कोई और नहीं, बल्कि वही भेड़िहार था। बलेसरा ने सुबकते हुए आगे कहा कि जब से वह भेड़िहार मरा, उसके लगभग एक महीने बाद से ही उसे लगने लगा था कि कोई साया उसका पीछा कर रही है, पर उसने यह बात किसी को नहीं बताई। वह कहीं भी जाती तो उसे आभास होता कि कहीं कोई तो ऐसा है जिसे मैं देख नहीं पा रही हूँ, पर वह मेरा पीछा कर रहा है।

बलेसरा ने बताया कि एक दिन वह मढ़ई में अकेली थी। उस दिन उसके माता-पिता ऊँख छिलने (गन्ना छिलने) गए थे और बलेसरा मढ़ई में खाना बना रही थी। तभी वह भेड़िहार प्रकट हुआ और बलेसरा कुछ समझे इसके पहले ही फूट-फूटकर रोने लगा। बलेसरा की तो चीख निकल गई, पर उस भेड़िहार ने उसे, नहीं डरने के लिए कहा और कहा कि वह उससे शादी कर ले। बलेसरा ने डरते-डरते ही साफ मना कर दिया। इसके बाद वह भेड़िहार गायब हो गया और इस घटना के 4-5 दिन बाद ही उसने बलेसरा को पेड़ से धक्का देकर मार डाला।

बलेसरा आगे रो-रोकर कहने लगी कि उस भेड़िहार ने मुझ पर कब्जा कर लिया है। मैं उसकी गुलाम हूँ। उसने मुझसे जबरदस्ती शादी कर ली है। वह जो बोलता है, वह मुझे करना पड़ता है और कभी-कभी कोई छोटी गलती हो जाने पर वह मुझे मारता भी है। बलेसरा ने बताया कि इस भूतही दुनिया में जो सबसे ताकतवर है, उसकी ही चलती है। यहाँ भी पुरुष-वर्ग महिलाओं पर हावी है। उस भेड़िहार के कई सारे दोस्त मिलकर मुझे मारते हैं और हमेशा सताते रहते हैं। उस भेड़िहार ने मुझे पूरी तरह से बंधक बना लिया है।

बलेसरा ने कहा कि हम भूत-प्रेतों का भी अपना एक क्षेत्र होता है, जिसमें हम लोग विचरण करते रहते हैं। हम दूसरे भूत-प्रेतों के क्षेत्र में जाना पसंद नहीं करते। उसने यहाँ तक कहा कि हमारा भी शोषण किया जाता है। हमें एक नौकरानी की तरह रहना पड़ता है। जब जिस बड़े भूत कि मर्जी हुई, उसके हुकुम की तालिम करनी पड़ती है। हम भूत भी कई प्रकार के होते हैं, कुछ अच्छे भूत भी हैं, वे किसी का नुकसान नहीं करते, बस अपनी ही धुन में रहते हैं। हम भूत-प्रेत में भी हर जातियों-धर्मों के भूत हैं। कोई मुसलमान तो कोई हिंदू तो कोई और। हम लोग विशेषकर अपनी जाति-धर्म के पूजा-पाठ करने वाले लोगों से दूर रहना ही पसंद करते हैं। हमें धार्मिक, स्वच्छ स्थानों पर जाने में डर लगता है, ऐसा लगता है कि कोई ऐसी शक्ति है, जो हमें जलाकर राख कर देगी। इतना ही नहीं, हमें मंत्रों आदि से बहुत ही डर लगता है और हम कभी भी नहीं चाहते कि किसी अच्छे पंडित, पुजारी आदि से हमारा पाला पड़े।

इसके बाद बलेसरा ने कहा कि धन्य हो नेटुआबीर बाबा का। उसके बाद उसने आगे बताना जारी रखा, “एक दिन यह भेड़िहार मुझे बहुत सता रहा था। मैं आगे-आगे भाग रही थी और यह मारते हुए मुझे दौड़ाए जा रहा था। खड़खड़ दुपहरिया का समय था और मैं भागते हुए नेटुआबीर बाबा वाली बारी में पहुँच गई। यह भेड़िहार भी मेरे पीछे-पीछे उस बारी में पहुँच गया। मैं अचानक क्या देखती हूँ कि नेटुआबीर बाबा प्रकट हो गए, गुस्से में

उनका पूरा शरीर लाल हो रहा था। उन्होंने दौड़कर इस भेड़िहार को पकड़कर पटक दिए। भेड़िहार त्राहि माम, त्राहि माम करने लगा। बहुत ही मिन्नत के बाद नेटुआबीर बाबा ने इसे छोड़ा। फिर तब से यह थोड़ा कम सता रहा है।”

इसके बाद बलेसरा और फूट-फूटकर रोने लगी। उसने वहाँ खड़े लोगों से गुहार लगाई कि आखिर कब तक मैं ऐसे ही भटकती रहूँगी और उस भेड़िहार के साथ ही अन्य बलिष्ठ भूत-प्रेतों का अत्याचार सहती रहूँगी? आखिर कब तक मुझे इसी योनि में भटकना पड़ेगा?

उसकी बात सुनकर गाँव के कथावाचक पंडीजी आगे आए और बोले, “बेटी तेरा उद्धार करने के लिए हम लोग ज़रूर कुछ करेंगे और इस भूतही दुनिया से छुटकारा दिलाकर, तुझे इस प्रेत-योनि से मुक्ति दिला देंगे। पंडीजी के इतना कहते ही बलेसरा अचानक गायब हो गई।

कथावाचक पंडीजी ने उसी दिन बाजार से धार्मिक अनुष्ठान के लिए कुछ सामान मँगाया और दूसरे दिन सुबह नहा-धोकर पूजा-पाठ कर दिए। पंडीजी ने पहले उस भेड़िहार की मुक्ति के लिए अनुष्ठान किए, क्योंकि पंडीजी को ऐसा लग रहा था कि उसकी मुक्ति भी ज़रूरी है। फिर पंडीजी ने बलेसरा की मुक्ति के लिए अनुष्ठान किया। गाँववाले कहते हैं कि अब बलेसरा को मुक्ति मिल गई है।

ब्रह्मराक्षस

भूत-प्रेतों की लीला भी अपरम्पार होती है। कभी-कभी ये बहुत ही सज्जनता से पेश आते हैं, तो कभी-कभी इनका उग्र रूप अच्छे-अच्छों की धोती गीली कर देता है। भूत-प्रेतों में बहुत कम ऐसे होते हैं जो आसानी से काबू में आ जाएँ। नहीं तो अधिकतर सोखाओं-पंडितों को पानी पिलाकर रख देते हैं, उनकी नानी की याद दिला देते हैं।

यह कहानी एक ऐसे ही प्रेत की है, जिसको कोई भी सोखा-पंडित, अपने काबू में नहीं कर पाए और न ही वह प्रेत किसी देवी-देवता से डरता ही था।

क्या वह प्रेत ही था या कोई और? इस प्रेत ने बहुत सारे सोखाओं-पंडितों को घिसरा-घिसराकर मारा और इतना ही नहीं, जब इसे किसी देवी या देवता के स्थान पर लेकर जाया गया, तो इसने उस देवी या देवता की भी खुलकर खिल्ली उड़ाई और उन्हें चुनौती दे डाली कि पहले पहचान, मैं कौन? इस कौन का उत्तर किसी के पास नहीं था। चाहें वह सोखा हो या किसी देवी या देवता का बहुत बड़ा भक्त या पुजारी।

ये सुनी हुई कहानी है, हमारे पास के जिले के एक गाँव की। इस गाँव में एक पंडीजी हैं, जो बहुत ही सुशील, सभ्य और नेक इंसान हैं। यह कहानी घटित होने से पहले तक, ये पंडीजी एक बहुत बड़े जाने-माने ठेकेदार हुआ करते थे और ठेके के काम से अधिकतर घर से दूर ही रहा करते थे। हफ्ते या पंद्रह दिन में इनका घर पर आना-जाना होता था। इनके घर के सभी लोग बड़े ही सुशिक्षित एवं सज्जन प्रकृति के थे। इनकी पत्नी तो साधु स्वभाव की थी और एक कुशल गृहिणी होने के साथ-साथ बहुत ही धर्मनिष्ठ भी।

एक बार की बात है कि पंडीजी ठेके के काम से बाहर गए हुए थे, पर दो दिन के बाद ही उनको दो लोग उनके घर पर पहुँचाने आ गए। पंडीजी के घर वालों को उन दोनों व्यक्तियों ने बताया कि पता नहीं क्यों, कल से ही पंडीजी कुछ बहुत ही अजीब हरकत कर रहे हैं। जैसे कल रात को सात मज़दूरों ने अपने लिए खाना बनाया था और ये ज़िद करके उन लोगों के साथ ही खाना खाने बैठे। मज़दूरों ने कहा कि पंडीजी पहले आप खा लें फिर हम खाएँगे। इसके बाद जब ये खाना खाने बैठे तो सातों मज़दूरों का खाना अकेले ही खा गए और तो और ये खाना भी आदमी जैसा नहीं, निशाचरों जैसा खा रहे थे। इनका वह रूप देखकर, दो मज़दूर तो डरकर तुरंत ही वहाँ से भाग निकले तब हम लोगों को पता चला। उसके बाद हम लोग भी वहाँ पहुँचे और इनको किसी तरह सुलाए और सुबह होते ही इनको पहुँचाने के लिए निकल पड़े।

इसके बाद वे दोनों व्यक्ति चले गए तब पंडीजी भी आराम से अपनी कोठरी में गए। कुछ देर के बाद पंडीजी लुंगी लपेटे घर से बाहर आए और घर वालों के मना करने के बावजूद भी खेतों की ओर निकल गए। घर का एक व्यक्ति भी (इनके छोटे भाई) चुपके से इनके पीछे-पीछे हो लिया। जब पंडीजी गाँव से बाहर निकले तो अपने ही आम के बगीचे में चले गए। आम के बगीचे में पहुँचकर कुछ समय तो पंडीजी टहलते रहे पर पता नहीं अचानक उनको क्या हुआ कि आम के नीचे झुलती हुई मोटी-मोटी डालियों को ऐसे तोड़ने लगे जैसे हनुमान का बल उनमें आ गया हो। एक बिगड़ेल हाथी की तरह वे झुलती हुई डालियों को

धराशायी करने लगे। डालियों के टूटने की आवाज़ सुनकर इनके छोटे भाई दौड़कर बगीचे में पहुँचे और इनको ऐसा करने से रोकने लगे। जब इनके छोटे भाई ने बहुत ही मान-मनौवल (प्रार्थना) की, तब जाकर पंडीजी थोड़ा शांत हुए और घर वापस आ गए।

इस घटना के बाद तो पंडीजी के पूरे परिवार के साथ इनका पूरा गाँव भी संशय में जीने लगा। एक दिन फिर क्या हुआ कि पंडीजी अपनी ही कोठरी में बैठकर अपने बच्चे को पढ़ा रहे थे और इनकी पत्नी वहीं बैठकर रामायण पढ़ रही थी। तभी इनकी पत्नी क्या देखती हैं कि पंडीजी का शरीर फूलता जा रहा है और चेहरा भी क्रोध से लाल होता जा रहा है। अभी पंडीजी की पत्नी कुछ समझ पाती कि पंडीजी ने अपने ही बेटे का सिर अपने मुँह में ले लिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने बेटे का सिर चबा जाएँगे। उनकी पत्नी डरी नहीं और सभ्य भाषा में बच्चे को छोड़ने की विनती करने लगी। अचानक पंडीजी बच्चे का सिर मुँह से निकालकर शांत होने लगे और उस रोते बच्चे का सिर सहलाने लगे।

इस घटना के बाद तो पंडीजी के घर वालों की चैन और नींद दोनों हराम हो गई। उन लोगों ने पूजा-पाठ करवाने के साथ ही कई सारे डॉक्टरों से संपर्क भी किया। यहाँ तक कि उन्हें कई बड़े-बड़े अस्पतालों में दिखाया गया, पर डॉक्टरों की कोई भी दवा काम नहीं आई और इधर एक-दो दिन में पंडीजी कोई न कोई भयानक कार्य करके सबको सकते में डालते ही रहे। डॉक्टरों से दिखाने का सिलसिला लगभग 2 महीने तक चलता रहा, पर पंडीजी के हालत में सुधार नाम-मात्र भी नहीं हुआ।

हाँ, पर अब सबके समझ में एक बात आ गई थी। वह यह कि जब भी पंडीजी का शरीर फूलने लगता था और उनका चेहरा तमतमाने लगता था तो घर वाले उनकी पत्नी को बुला लाते थे और पंडीजी अपनी पत्नी को देखते ही शांत हो जाते थे।

एक दिन पंडीजी की पत्नी पूजा कर रही थीं कि पंडीजी वहाँ आ गए और अपनी पत्नी से हँसकर पूछे कि तुम पूजा क्यों कर रही हो? पंडीजी की पत्नी ने कहा कि आप अच्छा हो जाएँ, इसलिए। अपनी पत्नी की बात सुनकर पंडीजी ठहाका मारकर हँसने लगे और हँसते-हँसते अचानक बोल पड़े, “कितना भी पूजा-पाठ कर लो, पर मैं इसे छोड़ने वाला नहीं हूँ। अगर मैं इसे छोड़ूँगा तो इसे इस लोक से भेजने के बाद ही।”

पंडीजी की यह बात सुनकर पंडीजी की पत्नी सहमी तो ज़रूर, पर उन्होंने हिम्मत करके पूछा, “आप कौन हैं और मेरे पति ने आपका क्या बिगाड़ा है, आप क्यों इनके पीछे पड़े हैं?”

इस पर पंडीजी ने कहा कि मैं कौन हूँ, यह मैं नहीं जानता और इसने मेरा क्या बिगाड़ा है, मैं यह भी नहीं बताऊँगा।

पंडीजी की पत्नी ने जब यह बात अपने घर वालों को बताई तो पंडीजी के घर वालों ने उस जवार (क्षेत्र) में जितने सोखा-पंडित थे, उन सबसे संपर्क करना शुरू किया। पहले तो कुछ सोखा-पंडितों ने झाड़-फूँक किया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। एक दिन पंडीजी के घर-वाले पंडीजी को लेकर उसी जवार के एक नामी सोखा के पास पहुँचे।

सोखा-बाबा कुछ मंत्र बुदबुदाए और पंडीजी की ओर देखते हुए कड़ककर बोले कि तुम चाहे जो भी हो पर तुम्हें इसे छोड़कर जाना ही होगा, नहीं तो मैं तुम्हें जलाकर भस्म कर दूँगा।

जब सोखा-बाबा ने भस्म करने की बात कही तो पंडीजी का चेहरा तमतमा उठा। वे क्रोध से लाल हो उठे और वहीं उस सोखा को कपड़े की तरह पटक-पटककर मारने लगे। सोखा की सारी शेखी रफूचक्कर हो गई थी। वह अपनी सोखागीरी भूलकर गिड़गिड़ाने लगा। फिर पंडीजी की पत्नी ने बीच-बचाव किया और सोखा की जान बच गई।

पंडीजी द्वारा सोखा के पिटाई की खबर आग की तरह पूरे जवार (आस-पास का क्षेत्र) क्या, कई जिलों में फैल गई। अब तो कोई सोखा या पंडित उस पंडीजी से मिलना तो दूर उनका नाम सुनकर ही काँपने लगता था। इसी दौरान पंडीजी को लेकर एक देवी माँ के स्थान पर ले जाया गया, पर देवी माँ (देवी माँ जिस महिला के ऊपर वास करती थीं, उस महिला के देवी-वास के समय) ने साफ मना कर दिया कि वे ऐसे दुष्ट और असभ्य व्यक्ति को मुँह भी लगाना नहीं चाहतीं। पंडीजी उस स्थान पर पहुँचकर मुस्कुरा रहे थे और अपनी पत्नी से बोले कि जो देवी मेरे सामने आने से घबरा रही है, वह मुझे क्या भगाएगी? देवी माँ ने पंडीजी के घर वालों से कहा कि यह कौन है, यह भी पहचानना मुश्किल है। आप लोग इसे लेकर बड़े-बड़े तीर्थ-स्थानों पर जाइए, हो सकता है कि यह पंडीजी को छोड़ दे।

इसके बाद पंडीजी के घर-वाले पंडीजी को लेकर बहुत सारे तीर्थ स्थानों, जैसे मैहर, विंध्याचल, काशी, थावे, कुछ नामी मजार आदि पर गए, पर कुछ भी फायदा नहीं हुआ। यहाँ तक कि पंडीजी अपने घर वालों के साथ इन तीर्थों पर आसानी से जाते रहे और घूमते रहे। अधिकतर तीर्थ-स्थान घूमने के बाद भी जब उस प्रेत ने पंडीजी को नहीं छोड़ा, तो पंडीजी के घर-वाले, घर पर ही प्रतिदिन विधिवत पूजा-पाठ कराने लगे। पंडीजी की पत्नी प्रतिदिन उपवास रखकर दुर्गा सप्तशती का पाठ करने लगीं।

एक दिन पंडीजी ने अपने घर वालों को अपने पास बुलाया और बोले कि आप सभी लोग खेतों में जाकर कम से कम एक-एक पीपल का पेड़ लगा दीजिए। पंडीजी की पत्नी बोल पड़ी कि अगर आपकी यही इच्छा है तो एक-एक क्या, हम लोग ग्यारह-ग्यारह पीपल के पेड़ लगाएँगे। इसके बाद पंडीजी के घर-वाले, पंडीजी को साथ लेकर, उसी दिन खेतों में गए और इधर-उधर से खोजबीन करके एक-एक पीपल का पेड़ लगाया और पंडीजी से बोले कि हम लोग बराबर पीपल का पेड़ लगाते रहेंगे।

इस घटना के बाद पंडीजी थोड़ा शांत रहने लगे थे। अब वे अपने घर का छोटा-मोटा काम भी करने लगे थे। एक दिन पंडीजी के बड़े भाई घर के दरवाजे पर लकड़ी फाड़ रहे थे। पंडीजी ने वहाँ पहुँचकर टाँगी अपने हाथ में ले लिया और देखते ही देखते लकड़ी की तीन-चार मोटी-मोटी सिल्लियों को फाड़ दिया। शायद इन तीनों सिल्लियों को फाड़ने में उनके भाई महीनों लगाते।

जी हाँ, उस दिन को पंडीजी के परिवार वाले कैसे भूल सकते हैं! यही तो वह दिन था, जो पंडीजी के परिवार वालों को अप्रतिम खुशियाँ देने आया था। सुबह के लगभग चार बजे होंगे। पंडीजी ने अपनी पत्नी को जगाया और बोल पड़े, “मैं जा रहा हूँ।”

पंडीजी की पत्नी आँख मलते हुए बोल पड़ी, “अभी तो रात है और इस रात में आप कहाँ जा रहे हैं?”

अपनी पत्नी की यह बात सुनकर पंडीजी ठहाका मार कर हँसने लगे और हँसते-हँसते ही

बोले, “मैं जा रहा हूँ और वह भी अकेले। तेरे सुहाग को तेरे पास छोड़कर। अब मैं तेरे पति को और तुम लोगों को कभी तंग नहीं करूँगा। तुम जल्दी से अपने पूरे घर वालों को जगवओ ताकि जाने से पहले मैं उन सबसे भी मिल लूँ।” पंडीजी के इतना कहते ही पंडीजी की पत्नी के आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे और वे पंडीजी का पैर पकड़कर खूब तेज रोने लगी। अब तो पंडीजी की पत्नी के रोने की आवाज़ सुनकर घर के लोग, जो ऐसे ही भयभीत थे और भी भयभीत हो गए और बिन बुलाए दौड़-भागकर पंडीजी के कमरे में पहुँच गए।

अरे, यह क्या? पंडीजी के कमरे का माहौल तो एकदम अच्छा था, खुशनुमा था क्योंकि पंडीजी तो पलंग पर आराम से बैठे मुस्कुराए जा रहे थे।

घर वालों ने पंडीजी की पत्नी को चुप कराया और रोने का कारण पूछा। पंडीजी की पत्नी के बोलने से पहले ही पंडीजी स्वयं बोल पड़े, “अब मैं सदा-सदा के लिए आपके घर के इस सदस्य (पंडीजी) को छोड़कर जा रहा हूँ। अब आप लोगों को कष्ट देने कभी नहीं आऊँगा।”

पंडीजी के इतना कहते ही पंडीजी की पत्नी बोल पड़ी, “आप जो भी हों, मेरी गलतियों को क्षमा करें; क्या मैं जान सकती हूँ कि आप कौन हैं और मेरे पति को क्यों पकड़ रखे थे?” इतना सुनते ही पंडीजी बहुत जोर से हँसे और बोले कि मैं ब्रह्म-प्रेत (ब्रह्म-पिशाच) हूँ। मेरा कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तेरे पति ने उसी पीपल के पेड़ को कटवा दिया था, जिसपर मैं हजारों वर्षों से रहा करता था। ठेकेदारी के गर्व में चूर इसने मेरा घर ही उजाड़ दिया था इसलिए मैंने भी इसको बर्बाद करने की ठान ली थी पर तुम लोगों की अच्छाई ने मुझे ऐसा करने से रोक लिया।

इसके बाद अचानक पंडीजी की पत्नी के कान में वे कोई छोटा-सा मंत्र बुदबुदाए और बोल पड़े, “इस मंत्र के जाप से तुम्हारा सदा कल्याण होगा।”

इस घटना के बाद से वे ब्रह्म-प्रेत महाराजजी उस पंडीजी को छोड़कर सदा-सदा के लिए जा चुके हैं। आज पंडीजी एवं उनका परिवार एकदम खुशहाल और सुख-समृद्ध है। परंतु ब्रह्म-प्रेत महाराज के जाने के बाद भी अगर कुछ बचा है तो उनकी यादें और वह भी विशेषकर उन सोखाओं के जेहन में, जिनका पाला इस ब्रह्म-प्रेतजी से पड़ा था और जिसके चलते इन सोखाओं ने अपनी सोखागीरी सदा-सदा के लिए छोड़ दी थी।

एक निवेदन करता हूँ, प्रेत बनकर नहीं, आदमी बनकर। एक तो पेड़ काटें ही नहीं और अगर मजबूरी में काटना भी पड़ जाए तो एक के बदले दो लगा दीजिए, ताकि मेरा घर बचा रहे और आप लोगों का भी।

भूत का अलौकिक प्रेम

सोलह वर्ष की रमकलिया अपने माँ-बाप की इकलौती संतान थी। उसके माँ-बाप उसका बहुत ही ख्याल रखते थे और उसकी हर माँग पूरी करते थे। यहाँ तक कि गाँव-जवार के बड़े-बुजुर्ग बताते हैं कि गाँव क्या, पूरे जवार में सबसे पहले साइकिल रमकलिया के घर पर ही खरीद कर आई थी। उस साइकिल को देखने के लिए गाँव-जवार टूट पड़ा था। रमकलिया उस समय साइकिल को लंगड़ी चलाते हुए गढ़ही, खेत-खलिहान, सब घूम आती थी। रमकलिया बहुत ही नटखट थी और लड़कों जैसे मटरगस्ती करती रहती थी। वह लड़कों के साथ कबड्डी, चिक्का आदि खेलने में भी आगे रहती थी।

एक बार कबड्डी खेलते समय गलगोदही (गलत खेलना) करने को लेकर झगड़ा हो गया। देखने वाले तो बताते हैं कि रमकलिया ने विपक्षी टीम के लड़कों को दौड़ा-दौड़ा कर मारा था, पानी पिला-पिला कर मारा था। किसी के दाँत से खून निकल रहा था, तो कोई चिल्लाते हुए अपने घर की ओर भाग रहा था। रमकलिया से उसके हमउम्र लड़के पंगा लेना उचित नहीं समझते थे। क्योंकि उसके हमउम्र लड़के उसे उजड़ु और झगड़ालू टाइप की लड़की मानते थे। कोई उसके मुँह लगना पसंद नहीं करता था। हाँ, यह अलग बात थी कि सभी लड़के उससे बहुत डरते थे।

मई का महीना था, कड़ाके की गर्मी पड़ रही थी। रमकलिया ने खर-खर दुपहरिया में अपनी साइकिल उठाई और हनहनाते हुए गाँव से बाहर अपने बगीचे की ओर चल दी। उसका बगीचा धोबरहिया गढ़ई नाम के तालाब के किनारे था। इस बगीचे में आम और महुए के पेड़ों की अधिकता थी। यह बगीचा गाँव से लगभग एक किमी की दूरी पर था। बगीचे में पहुँचकर पहले तो रमकलिया खूब साइकिल हनहनाई, पूरे बगीचे में दौड़ाई और पसीने से तर-बतर हो गई। फिर उसने बगीचे के बीचों-बीच एक मोटे आम के पेड़ के नीचे साइकिल खड़ी करके अपने दुपट्टे से चेहरे का पसीना पोछने लगी।

पसीना पोछने के बाद, पता नहीं रमकलिया को क्या सूझा कि वह उसी पेड़ के नीचे अपना दुपट्टा बिछाकर उस पर लेट गई।

बगीचे में लेटे-लेटे ही रमकलिया का मन-पंछी उड़ने लगा। वह सोचने लगी कि उसके बाबूजी उसके लिए एक वर की तलाश कर रहे हैं। वह थोड़ा सकुचाई, थोड़ा मुस्काई और फिर सोचने लगी। एक दिन एक राजकुमार आएगा और उसे बिआह कर ले जाएगा। पता नहीं वह कैसा होगा, कौन होगा, कहाँ का होगा? पता नहीं मैं उसके साथ खुश रह पाऊँगी या नहीं। पर खैर जो ईश्वर की मर्जी होगी वही होगा। बाबूजी उसके लिए जैसा भी लड़का खोजेंगे, वह उसी से शादी करके खुश रहेगी। उसे पक्का विश्वास था कि उसके बाबूजी उसकी शादी ज़रूर किसी धनवान घर में करेंगे। जहाँ उसकी सेवा के लिए ज़रूर कोई न कोई नौकरानी होगी।

अभी रमकलिया इन्हीं सब विचारों में खोई थी कि उसे आभास हुआ जैसे उसके सिर की तरफ कोई बैठकर उसके बालों में अंगुली पिरो रहा है। रमकलिया के साथ ऐसा पहली बार नहीं हो रहा था। ये तो आए दिन की बात थी। बकरी-गाय आदि चराने वाले लड़कियाँ या

लड़के चुपके से उसके पीछे बैठकर उसके बालों में अंगुली पिरोते या सहलाते रहते थे। रमकलिया भी खुश होकर उन्हें थोड़ा-बहुत अपनी साइकिल चलाने को देती थी। पर पता नहीं क्यों, आज रमकलिया को यह आभास हो रहा था कि अंगुली कुछ इस तरह से पिरोई जा रही थी कि कुछ अलग-सा ही, एक अनजान, अप्रतिम प्रेमानंद का एहसास हो रहा था। ऐसा लग रहा था कि कोई बहुत ही प्रेम से बालों को सहलाते हुए अपनी अंगुलियाँ उसमें पिरो रहा था। आज रमकलिया को एक अलग ही आनंद मिल रहा था, जिसमें उसके यौवन की खुमारी भी छिपी लग रही थी। उसके शरीर में एक हल्की-सी गुदगुदी हो रही थी और उसे अंगड़ाई लेने की भी इच्छा हो रही थी। पर वह बिना शरीर हिलाए चुपचाप लेटी रही। उसे लगा कि अगर उठकर बैठ गई तो यह स्वर्गिक आनंद पता नहीं दुबारा मिलेगा या नहीं।

उसने बिना पीछे मुड़े ही धीरे से कहा, 10 मिनट और ऐसे ही अंगुलियाँ घुमाओ तो मैं एक घंटे तक तुम्हें साइकिल चलाने के लिए दूँगी। पर पीछे से कुछ भी आवाज़ नहीं आई। फिर भी रमकलिया मदमस्त लेटी रही। उसे हल्की-हल्की नींद आने लगी।

शाम हो गई थी और रमकलिया अभी भी बगीचे में लेटी हुई थी। तभी उसे उसके बाबूजी की तेज आवाज़ सुनाई दी, “रामकली, बेटी रामकली! अरे, कब से यहाँ आई है? मैं और तुम्हारी माँ कब से तुम्हें खोज रहे हैं। इस सुनसान बगीचे में कोई भी नहीं है और तू निडर होकर सो रही है?” रमकलिया ने करवट ली और अपने बाबूजी को देखकर मुस्काई। उसके बाबूजी उसे घर चलने के लिए कहकर घर की ओर चल दिए। रमकलिया उठी, साइकिल उठाई और लंगड़ी मारते हुए गाँव की ओर चल दी।

उस रात पता नहीं क्या हुआ कि रमकलिया ठीक से सो न सकी। पूरी रात करवट बदलती रही। जब भी सोने की कोशिश करती, उसे बगीचे में घटी आज दोपहर की घटना याद आ जाती। वह बार-बार अपने दिमाग पर जोर डालकर यह जानना चाहती थी कि आखिर कौन था वह? रमकलिया अब पछता रही थी। उसे लग रहा था कि पीछे मुड़कर उसे, उससे बात करनी चाहिए थी। लेकिन वह करे भी तो क्या करे। उस अनजान व्यक्ति के कोमल, प्यार भरे स्पर्शों से उसे अचानक कब नींद आ गई थी, पता ही नहीं चला था। अगर उसके बाबूजी बगीचे में पहुँचकर उसे जगाते नहीं तो पता नहीं कब तक सोती रहती?

सुबह जल्दी जगकर रमकलिया ने फिर अपनी साइकिल उठाई और उस बगीचे में चली गई। सुबह की ताजी हवा पूरे बगीचे में हिचकोले ले रही थी, पर पता नहीं क्यों सरसराती हवा में, पत्तियों और टहनियों से बात करती हवा में रमकलिया को एक भीनी-भीनी मदमस्त कर देने वाली सुगंध का आभास हो रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि आज पवन देव उसके बालों से खेल रहे हैं। वह लगभग एक घंटे तक बगीचे में रही और फिर घर वापस आ गई। घर आने के बाद रमकलिया पता नहीं किन यादों में खोई रही।

उसी दिन फिर से खड़खड़ दुपहरिया में रमकलिया का जी नहीं माना और वह साइकिल उठाकर बगीचे की ओर निकल गई। बगीचे में 3-4 राउंड साइकिल हनहनाने के बाद फिर रमकलिया उसी आम के पेड़ के नीचे सुस्ताने लगी।

उसे कुछ सूझा। वह हल्की सी मुस्काई और अपने दुपट्टे को अपने सिर के नीचे लगाकर सोने का नाटक करने लगी। अभी रमकलिया को लेटे 2-4 मिनट भी नहीं हुए थे कि उसे

ऐसा लगा कि कोई उसके बालों में अंगुली पिरो रहा है। वह कुछ बोली नहीं पर धीरे-धीरे अपना हाथ अपने सिर पर ले गई। वह उन अंगुलियों को पकड़ना चाहती थी, जो उसके बालों में घुसकर, बालों से खेलते हुए, उसे एक सुखद आनंद की अनुभूति करा रही थी। पर वह ज्यों अपने हाथ, अपने सिर पर ले गई, वहाँ उसे कुछ नहीं मिला। पर ऐसा लग रहा था कि अभी भी कुछ अंगुलियाँ उसके बालों से खेल रही हैं। रमकलिया को बहुत ही अचंभा हुआ और वह तुरंत उठकर बैठ गई। पीछे सिर घुमाकर देखी तो गजब हो गया। पीछे कोई नहीं था। उसे लगा कि शायद जो था, वह इस पेड़ के पीछे छिप गया हो। पर फिर उसके मन में एक बात आई कि जब वह अपना हाथ सिर पर ले गई थी तो वहाँ कुछ नहीं मिला था, फिर भी बालों में अंगुलियों के सुखद स्पर्श कैसे लग रहे थे? खैर, वह उठकर खड़ी हो गई और पेड़ के पीछे चली गई। वहाँ भी कोई नहीं था। अब उसने बगीचे में आस-पास दौड़ लगाई, पर उसे कोई नहीं दिखा। फिर वह अपनी साइकिल के पास आई और तेजी से चलाते हुए गाँव की ओर भागी। उसे डर तो नहीं लग रहा था पर कहीं-न-कहीं एक रोमांचित अवस्था ज़रूर बन गई थी, जिससे उसके रोंगटे खड़े हो गए थे।

आज की रात फिर रमकलिया सो न सकी। आजकल उसे अपने आप में बहुत सारे परिवर्तन नजर आ रहे थे। उसे ऐसा लगने लगा था कि वह अब विवाह योग्य हो गई है। वह बार-बार शीशे में अपना चेहरा भी देखती। अब उसमें थोड़ा सरमाने के गुण भी आ गए थे। बिना बात के ही कुछ याद करके उसके चेहरे पर एक हल्की मुस्कान फैल जाती। पता नहीं क्यों उसे लगने लगा था कि उसके बालों से खेलने वाला कोई उसके गाँव का नहीं, अपितु कोई दूसरा सुंदर युवा है, जो प्यार से वशीभूत होकर उसके पास खिंचा चला आता है और चुपके से उसके बालों से खेलने लगता है। फिर उसके दिमाग में कौंधा कि जो भी है, है वह बहुत शर्मीला और साथ ही फुर्तीला भी। पता नहीं कहाँ छूमंतर हो गया कि दिखा ही नहीं। रमकलिया के दिमाग में बहुत सारी बातें दौड़ रही थीं, पर सब सुखद एहसास से भरी, रोमांचित करने वाली ही थीं।

अब तो जब तक रमकलिया अपने बगीचे में जाकर 1-2 घंटे लेट नहीं लेती, तब तक उसका जी ही नहीं भरता। रमकलिया का अब प्रतिदिन बगीचे में जाना और एक अलौकिक प्रेम की ओर कदम बढ़ाना शुरू हुआ। एक ऐसा अनजाना, नासमझ प्रेम, जो रमकलिया के हृदय में हिचकोले ले रहा था। वह पूरी तरह से अनजान थी इस प्रेम से, फिर भी इस प्रेम की दीवानी हो गई थी। पहली बार प्रेम के इस अनजाने एहसास ने उसके हृदय को गुदगुदाया था, एक स्वर्गिक आनंद को उसके हृदय में उपजाया था।

एक दिन सूर्य देव डूबने को थे। चरवाहे अपने गाय-भैंस, बकरियों को हाँकते हुए गाँव की ओर चल दिए थे। अंधेरा छाने लगा था। ऐसे समय में रमकलिया को पता नहीं क्या सूझा कि वह अपनी साइकिल उठाई और बगीचे की ओर चली गई। आज उसने बगीचे में पहुँचकर साइकिल को एक जगह खड़ा कर खुद ही पास में खड़ी हो गई। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। उसे पता नहीं क्यों ऐसा लग रहा था कि कोई तो है जिसने अभी उसे, उस बगीचे में बुलाया और वह भी अपने आप को रोक न सकी और खिंचते हुए इस बगीचे की ओर चली आई।

दो-चार मिनट खड़ा रहने के बाद रमकलिया थोड़ा तन गई और अपने सुकोमल हृदय

को कठोर बनाकर बुदबुदाई, “अगर यह कोई इंसान न होकर, भूत निकला तो! खैर जो भी हो, मुझे पता नहीं क्यों, इस रहस्यमयी जीव से प्रेम हो गया है। भूत हो या कोई दैवी आत्मा, अब तो मैं इससे मिलकर ही रहूँगी। इंसान, इंसान को अपना बनाता है। मैं अब इस दैवी आत्मा को अपना हमसफर बनाऊँगी। देखती हूँ, इस अनजाने, अनसमझे प्यार का परिणाम क्या होता है? अगर वह इंसान नहीं तो कौन है और किस दुनिया का रहने वाला है? कैसी है उसकी दुनिया?”

यह सब सोचती हुई रमकलिया ने अपने साइकिल का हैंडल पकड़ा और उसे डुगराते हुए बगीचे से बाहर आने लगी। अब बगीचे में पूरा अंधेरा पसर गया था और साथ ही सन्नाटा भी। रह-रह कर कभी-कभी गाँव की ओर से कोई आवाज़ उठ आती थी।

रात को रमकलिया अपने कमरे में बिस्तरे पर करवटें बदल रही थी। नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी। एक अजीब सिहरन, गुदगुदी का एहसास हो रहा था उसको। उसे कभी हँसना तो कभी रोना आ रहा था। तभी अचानक उस कमरे के जंगले से एक बहुत ही तेज, डरावनी, सरसराती हवा ने कमरे में प्रवेश किया। बिना बहती हवा के अचानक कमरे में पैठी इस डरावनी हवा से रमकलिया थोड़ी सहम गई और फटाक से उठकर बैठ गई। उसकी साँसें काफी तेज हो गई थीं। उसने धीरे-धीरे लंबी साँस लेकर अपने बढ़ते दिल की धड़कन को भी काबू में करने का प्रयास किया, तभी उसे ऐसा लगा कि कोई उसके कान में हौले-हौले, भारी आवाज़ में गुनगुना रहा हो, “बढ़ती दिल की धड़कन, कुछ तो कह रही है, मैं तेरा दिवाना, जलता परवाना हूँ, तू क्यों नहीं समझ रही है?” इसी के साथ उसे लगा कि वह सरसराती हवा उसके बिस्तरे के बगल में हल्के से मूर्त रूप में स्थिर हो गई है पर कुछ भी स्पष्ट नहीं है।

अचानक उसे लगा कि वही (बगीचे वाले) सुकोमल हाथ फिर से उसके बालों के साथ खेलने लगे हैं, उसे एक चरम आनंद की अनुभूति करा रहे हैं। वह चाहकर भी कुछ न कह सकी और धीरे-धीरे फिर से लेट गई। उसके लेटते ही ऐसा लगा कि उसके कमरे में रखी एक काठ-कुर्सी सरकते हुए उसके सिरहाने की ओर आ रही है। वह करवट बदली और उस काठ-कुर्सी की ओर नजर घुमाई, तब तक वह काठ-कुर्सी उसके सिरहाने आकर लग गई। फिर बिना कुछ कहे एक मदमस्त, अल्हड़, प्रेमांगना की तरह अँगराई लेते हुए, साँसों को तेजी के साथ छोड़ते हुए वह फिर से चुपचाप बिस्तरे पर लेट गई। उसके लेटते ही वह सुकोमल हाथ फिर से उसके बालों से खेलने लगे। वह एक कल्पित दुनिया की सैर पर निकल गई।

यह कल्पित दुनिया अलौकिक थी। इस दुनिया की इकलौती राजकुमारी रमकलिया ही थी, जिसे अपने सेवक से प्रेम हो गया था। वह इस कल्पित दुनिया में आनंदित होकर विचरण कर रही थी। अचानक रमकलिया को इस कल्पित दुनिया से बाहर आना पड़ा क्योंकि उसे लगा कि कोई उसका सिर पकड़ कर जोर-जोर से हिला रहा है यानि जगाने की कोशिश कर रहा हो।

रमकलिया को लगा कि कहीं यह भी स्वप्न तो नहीं पर वह तो जगी हुई ही थी। वह उठकर बैठ गई। फिर उस कमरे में शुरू हुई एक ऐसी कहानी जो रमकलिया को उसके पिछले जन्म में लेकर चली गई।

रमकलिया बिस्तर पर सावधान की मुद्रा में बैठी हुई थी। काठ-कुर्सी पर मूर्त रूप में पर पूरी तरह से अस्पष्ट हवा का रूप विराजमान था और वहाँ से एक मर्दानी भारी आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह आवाज़ कह रही थी, “रमकलिया तू मेरी है, सिर्फ मेरी। मैं पिछले दो-तीन जन्मों से, तुझे प्रेम करता आ रहा हूँ। मैंने हर जन्म में तुझे अपनाने के लिए कुछ-न-कुछ ग़लत कदम उठाया है। पर इस जन्म में, मैं तुझे सच्चाई से पाना चाहूँगा।” वह आवाज़ आगे बोली, “याद है, पिछले जन्म में भी मैं तुझे अथाह प्रेम करता था। पर तू मेरे प्रेम को नहीं समझ सकी और मैं भी बावला, पागल, तुझे पेड़ से धक्का दे दिया था। (बलेसरा की कहानी - बलेसरा अब रमकलिया के रूप में फिर से पैदा हुई थी।) मैं वही हूँ पर अब बदल गया हूँ। भले मैं आत्मा हूँ, एक प्रेत हूँ पर अब मैं अपनी प्रियतमा का कोई अहित नहीं करूँगा और अब उसे नफरत से नहीं, प्रेम से जीतूँगा।”

उस हवा रूपी आवाज़ की बातें सुनकर रमकलिया एक पागल प्रेमिका की तरह उठकर उस कुर्सी पर विराजमान मूर्त पर अस्पष्ट हवा से लिपट गई। वह सिसक-सिसक कर कहने लगी, “तू जो भी हो, पर हो मेरे प्रियतमा। मैं अब तेरे बिना जी नहीं सकती। तू अब देर न कर। अभी मेरी माँग में सिंदूर भर और मुझे अपना बना। मुझे सदा-सदा के लिए अपने साथ ले चला।” इतना कहने के बाद रमकलिया को पता नहीं अचानक क्या हुआ कि वह बिस्तरे पर गिर पड़ी।

सुबह-सुबह रमकलिया के माता-पिता, रमकलिया के कमरे का दरवाजा पीटे जा रहे थे, पर वह उठने का नाम नहीं ले रही थी। रमकलिया के माता-पिता बहुत ही परेशान थे क्योंकि रमकलिया के कमरे से कोई सुगबुगाहट नहीं आ रही थी। आस-पास के कुछ लोग भी एकत्र हो गए थे। सब चिल्ला-चिल्लाकर रमकलिया को जगाना चाहते थे।

अंततः रमकलिया के माता-पिता ने कमरे का दरवाजा तोड़ने का फैसला किया क्योंकि वे अब किसी अनहोनी की आशा में पीले पड़ते जा रहे थे। लकड़ी के दरवाजे पर कसकर एक लात पड़ते ही अंदर से लगी उसकी किल्ली निकल गई और भड़ाक से करके दरवाजा खुल गया।

दरवाजा खुलते ही रमकलिया के माता-पिता रमकलिया के बिस्तर की ओर भागे। साथ में आस-पास के कई लोग भी थे। रमकलिया के कमरे का हुलिया पूरी तरह से बदला हुआ था। कमरे में एक अजीब-सी भीनी-भीनी खुशबू पसरी हुई थी और साथ ही रमकलिया के बिस्तरे पर तरह-तरह के फूल बिछे हुए थे। पास पड़ी कुर्सी पर सिंधोरे का एक डिब्बा पड़ा हुआ था। ऐसा लग रहा था कि बिस्तर पर रमकलिया नहीं, कोई नवविवाहिता, लाल साड़ी पहनकर औंधे मुँह लेटी हुई है।

रमकलिया की माँ ने देर न की और बिस्तरे पर सोई उस महिला को झँकझोरने लगी। उस सोई तरुणी ने करवट बदला और आँखें मलते हुए उठकर बैठ गई। सभी लोग अचंभित तो थे ही पर रमकलिया का यह रूप देखकर उन्हें साँप भी सूँध गया था। दरअसल वह रमकलिया ही थी पर वह एक नवविवाहिता की तरह सजी-सँवरी हुई थी। उसके हाथों में लाल-लाल चूड़ियाँ थीं तो पैर में महावर लगा हुआ था। पता नहीं कहाँ से उसके पैर में नए छागल भी आ गए थे। सिर पर सोने का मँगटिका शोभा पा रहा था और उस मँगटिके के

नीचे सिंदूर की हल्की आभा बिखरी हुई थी।

सभी लोग हैरान-परेशान थे। अरे, रात को ही तो रमकलिया अपने कमरे में आई थी। रात को उसके कमरे में कोई सुगबुगाहट भी नहीं हुई। दरवाजा भी नहीं खुला तो इतना सारा सामान कहाँ से आ गया था उसके कमरे में। उसे एक नव-दुल्हन की तरह कौन सजा गया था? उसको जिस तरह से सजाया गया था, उससे ऐसा लग रहा था कि कोई 8-10 महिलाओं ने 2-4 घंटे मेहनत करके उसे सजाया था। रमकलिया के माता-पिता परेशान थे कि उनके घर में इतना कुछ हो गया और उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी।

रमकलिया बिस्तरे से उठी। उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान थी। वह अपने कमरे में स्तब्ध खड़े लोगों, विशेषकर अपने पिता और माता की ओर देखने लगी। वह धीरे-धीरे चलकर अपने माता के पास गई और उनके गले से लिपट गई। उसकी माँ तो बस बदहवास खड़ी थी और उसकी आँखों से अश्रुधारा फूट चुकी थी।

रमकलिया अपने हाथों से अपनी माँ के आँखों को पोछते हुए बोली, “माँ, रो मत। यह तो प्रसन्नता की बात है कि तेरी बेटी को उसके मन अनुरूप वर मिल चुका है। देख, मेरी खुशियों को अपने इन आँसुओं में मत बहाओ।”

इसके बाद वह अपने पिता की ओर मुड़ी और उनके चरणों में नतमस्तक हो गई। इतना सब होने के बाद भी न उसकी माँ कुछ बोल न पाई और न ही उसके पिता के मुख से ही कोई शब्द निकला। सभी लोग आश्चर्य में डूबे थे। धीरे-धीरे यह बात गाँव क्या, पूरे जवार और जिले में फैल गई। लोग रमकलिया के गाँव की तरफ आते और सच्चाई जानने की कोशिश करते पर गाँव के लोगों की सुनी बातों पर अविश्वास से सिर हिलाते और वापस चले जाते।

जी हाँ, रमकलिया की माने तो उस रात, उस प्रेत ने उससे विवाह करके उसे सदा के लिए अपना बना लिया था।

ब्रह्मपिशाच व हिमालयी संत

आज भी गाँवों आदि में अगर कोई व्यक्ति गाँव से दूर खेतों, बगीचों आदि में हो या किसी सुनसान जगह पर हो तो कुछ भी खाने से पहले, उस खाने वाली वस्तु का कुछ भाग, उस जगह पर गिरा (चढ़ा) देता है, ताकि उसके सिवा अगर वहाँ कोई है, जैसे कि कोई न दिखने वाला प्राणी, प्रेत आदि, तो वह उसे ग्रहण कर ले। गाँवई लोग गाँव के बाहर अगर कहीं सुनसान क्षेत्र में होते हैं, या किसी ऐसे क्षेत्र में जहाँ उनको लगता है कि यहाँ आस-पास में कोई अदृश्य आत्मा हो सकती है, तो वे लोग जब भी सूती (तंबाकू) बनाते हैं, तो खाने से पहले थोड़ा-सा उस अदृश्य आत्मा के लिए गिरा चढ़ा देते हैं, क्योंकि उनका मानना था कि अगर सूती या अन्य कोई भी खानेवाली चीज नहीं चढ़ाएँगे तो अदृश्य आत्मा नाराज होकर उनको परेशान कर सकती है।

कई बार कितने ही ग्रामीणों को एकांत में सूती तंबाकू मसलकर, बिना चढ़ाए खुद खाने की सजा मिल चुकी थी। आस-पास के प्रेत ने उन लोगों को कभी-कभी तो बहुत ही पटककर मारा था या बहुत परेशान किया था और कभी-कभी तो ऐसे लोगों को उस खिसियाए भूत से अपनी जान बचाने के लिए सूती का पूरा पत्ता ही चढ़ाना पड़ा था और साथ में लंगोट आदि भी।

सूती का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ कि इस कहानी का असली सूत्रधार सूती ही है। अगर उस समय इस सूती ने अपना कमाल नहीं दिखाया होता तो शायद यह कहानी कभी जनम ही नहीं ले पाती।

विदेश के एक चीनी मिल में हमारे गाँव के खमेसर पंडीजी के साथ ही अन्य कई भारतीय भी नौकरी करते थे। एक बार खमेसर पंडीजी ने उस चीनी मिल में काम करने वाले अपने कुछ भारतीय दोस्तों से कहा कि क्यों न हम लोग एक बार हिमालय की यात्रा पर, हिमालय के दर्शन करने के लिए चलें। मुझे बहुत ही इच्छा है कि हिमालय की सैर करूँ। 1-2 हफ्ते हिमालय में रहकर हिमालय-वासियों से मिलूँ, उनके रहन-सहन देखूँ। मैं अपने दादाजी से बराबर सुनते आया हूँ कि हिमालय में यति (हिममानव) के साथ ही बहुत सारे विलक्षण जीव रहते हैं। शायद ईश्वर की कृपा से ऐसे किसी अलौकिक जीव के भी दर्शन हो जाएँ।

उन्होंने आगे कहा कि मैं तो अपने दादाजी से सुन रहा हूँ कि हिमालय की कंदराओं में आज भी बहुत सारे संत-ऋषि पूजा-पाठ करते हुए, धूँई रमाए हुए और समाधि में लीन देखे जा सकते हैं। उन्होंने आगे यह भी बताया कि हिमालय में सिद्ध महात्मा लोग रहते हैं, जिनके दर्शन मात्र से सारे मनोरथ पूरे हो जाते हैं। इतना ही नहीं हिमालय में दिव्य औषधियाँ भी पाई जाती हैं, जिनके स्पर्श मात्र से बड़े-बड़े रोग अपने आप ठीक हो जाते हैं। उन्होंने अपने साथियों को बताया कि कैसे एक बार उनके दादाजी अपने कुछ साथियों के साथ हिमालय में गए हुए थे। उनके एक साथी को कोई असाध्य चर्मरोग था पर पता नहीं हिमालय में उसके पैरों आदि से ऐसी कौन-सी दिव्य औषधि टकरा गई की 2-3 दिन में ही उसका असाध्य चर्म रोग ठीक हो गया। खमेसर पंडीजी की यह अलौकिक बातें सुनकर उनके चार साथी हिमालय की यात्रा के लिए तैयार हो गए।

आज हिमालय भले ही अतिक्रमण का शिकार हो रहा है, लोग वहाँ भी गंदगी फैला रहे हैं, उस दिव्य क्षेत्र को प्रदूषित कर रहे हैं पर इस घटना (75-80 साल पहले) के समय हिमालय की दिव्यता, सौंदर्य, स्वच्छता, स्वर्गिक आनंद का बोध कराती थी। हिमालय की आबो-हवा में साँस लेना अपने आप में स्फूर्ति भर देता था, मन में आनंद का संचार कर देता था।

खमेसर पंडीजी अपने चार अनुभवी, बहादुर साथियों के साथ हिमालय की यात्रा पर निकल पड़े। उन्होंने हिमालयी क्षेत्र में कई हफ्ते बिताए और बहुत सारी अलौकिक, विस्मय भरी बातें, घटनाएँ देखीं। एक दिन वे बहुत ही सुबह अपने साथियों के साथ हिमालय के एक छोटे से शिखर पर चढ़ रहे थे तो लगभग 300 मीटर की दूरी पर उन्हें एक बहुत ही विशाल मानव दिखाई दिया। उन्होंने जैसा कि अपने दादाजी से सुन रखा था कि हिमालय में विशाल मानव जिन्हें यति या हिममानव कहते हैं, घूमते रहते हैं। उन्हें उस विशाल मानव को देखकर बहुत ही कौतुहल हुआ और उन्होंने अपने साथियों से कहा कि हम लोग छिप-छिपकर इस महामानव का पीछा करते हैं और इसके बारे में कुछ बातें पता करते हैं।

उस विशाल मानव का पीछा करने के चक्कर में ये लोग हिमालय की उस पहाड़ी पर कब बहुत ही ऊपर चढ़ गए और लगभग दोपहर भी हो गई, इन लोगों को पता ही नहीं चला। वह विशाल मानव भी बहुत दूर होते-होते कहीं गायब हो गया था या किसी गुफा में प्रवेश कर गया था।

खमेसर पंडीजी के एक साथी ने कहा कि हम लोग काफी ऊपर चढ़ आए हैं और काफी समय भी हो गया है। भूख भी सताने लगी है और अत्यधिक प्यास भी, साथ ही हम लोगों के पास न कुछ खाने को है और न ही पानी ही। फिर क्या था, अब वे लोग उस पहाड़ी पर पानी की तलाश में, कुछ खाद्य फलों की तलाश में आस-पास भटकने लगे। अचानक उन लोगों को आभास हुआ कि वे लोग रास्ता भटक गए हैं। यह आभास होते ही सबकी साँस अटक गई। अब क्या किया जाए, किधर जाया जाए? एक छोटे से पेड़ के नीचे वे लोग बैठकर भगवान से गुहार लगाने लगे कि काश कोई आ जाए और उन्हें रास्ता दिखा दे। वे लोग ग़लती से ऐसे क्षेत्र में प्रवेश कर गए थे, जहाँ किसी अन्य मनुष्य का नामो-निशान नहीं लग रहा था। धीरे-धीरे शाम भी होने लगी थी और भूख-प्यास से इन लोगों का बहुत ही बुरा हाल हो रहा था। दिमाग ने भी काम करना बंद कर दिया था। अब कोई चमत्कार ही इन्हें बचा सकता था। उन लोगों ने आपस में एक-दूसरे को हिम्मत और धैर्य बनाए रखने के लिए कहा। खमेसर पंडीजी ने कहा कि हमें ईश्वर पर पूरा विश्वास है और ज़रूर हम लोग इस परेशानी से बाहर निकलेंगे।

अचानक इनके एक साथी ने अपनी सूती वाली थैली टटोली और उसमें से सूती निकालकर, उसमें चूना मिलाकर मसलते हुए कहा कि दिमाग काम नहीं कर रहा है तो क्यों न सूती का आनंद लिया जाए। इतना कहकर वह सूती को मसलने लगा। सूती को मसलने और थोंकने के बाद परंपरानुसार उसने अपने साथियों को सूती देने से पहले थोड़ी-सी सूती वहाँ यह कहते हुए गिरा दी कि जय हो यहाँ के भूत-प्रेत, बाबा आदि। कृपया ग्रहण करें और हम लोगों की भूल को क्षमा करते हुए हमें राह दिखाएँ, हमें घर पहुँचाएँ।

उस चढ़ाई हुई सूती ने अपना काम कर दिया। अचानक वहाँ बहुत ही भयानक और तीव्र हवा चली। आस-पास के छोटे-छोटे पेड़ अजीब तरीके से एक-दूसरे से टकराए और एक विशाल डरावनी भूत-काया प्रकट हो गई।

वह काया देखने में तो इंसान जैसी ही थी पर आकार-प्रकार में एकदम अलग, जो उसके प्रेत होने की पुष्टि कर रही थी। खमेसरजी और उनके साथी डरे नहीं, अपितु हाथ जोड़कर अभिवादन की मुद्रा में, उस विशाल काया की ओर देखने लगे। खमेसरजी और उनका कोई साथी कुछ बोले इससे पहले ही वह विशाल काया तड़प उठी, “बहुत दिनों के बाद कुछ खाने को मिला है। तुम लोगों का मैं शुक्रगुजार हूँ।” इसके बाद उस विशाल काया ने कहा कि मुझसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि मैं इस क्षेत्र में चाहकर भी किसी का नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

वह प्रेत-काया वहाँ से जाए, इससे पहले ही खमेसर पंडीजी ने कहा कि हे भूतनाथ! हम लोग रास्ता भटक गए हैं, कृपया हमें नीचे तक बस्ती में जाने का मार्ग बताएँ। खमेसर पंडीजी की बात सुनकर वह प्रेत पहले तो हँसा पर फिर अचानक गंभीर हो गया। उसने कहा कि मैं तो खुद ही भटक गया हूँ। सालों हो गए, इस क्षेत्र से निकलने की कोशिश कर रहा हूँ पर खुद ही नहीं निकल पा रहा हूँ। उसने आगे रोवासूँ होकर (रोनी जैसी सूरत बनाकर) कहा कि मैं ब्राह्मण हूँ। बहुत पहले इस क्षेत्र में आया था। एक गुफा में एक महात्मा की सेवा में लग गया था क्योंकि मुझे सिद्धियाँ प्राप्त करनी थीं। एक दिन मुझसे एक घिनौना अपराध हो गया। मैं, महात्माजी के समाधि में जाने के बाद, धीरे से उठा और उस गुफा के बाहर आ गया। गुफा से बाहर आने के बाद अपनी थोड़ी-सी शक्ति जो मुझे प्राप्त हुई थी, उसके बल पर आस-पास अपने तपोबल से नजर दौड़ाई। मुझे पास में ही किसी भूतनी के होने का आभास हुआ। मैंने अपनी शक्ति से उसे अपनी ओर खींच लिया और उसे एक सुंदर युवती में परिवर्तित कर दिया। फिर मैं उसके साथ विहार करने लगा। मैं मौज-मस्ती में इतना लीन था कि मुझे पता ही नहीं चला कि मेरे महात्मा गुरुजी, मेरे पास आ गए हैं। अचानक मुझे भान हुआ कि मेरे गुरुजी गुस्से में जल रहे हैं। मैं काँपने लगा और इशारे में उस भूतनी को भागने के लिए कहा।

कुछ बोलूँ इससे पहले ही मेरे गुरुजी बोले, “नीच ब्राह्मण! तूने ब्राह्मण का, तपोशक्तियों का अनादर किया है। तू जीने का अधिकारी नहीं। मैं तूझे श्राप देता हूँ कि तू भी मनुष्य-योनि त्यागकर प्रेत हो जा।” गुरुजी के इतना कहते ही मेरा शरीर जलने लगा और मैं कुछ कर पाता इससे पहले ही मनुष्य-योनि त्यागकर प्रेत-योनि में आ गया था। इसके बाद गुरुजी ने कहा कि तू आस-पास के क्षेत्र में ही भटकता रहेगा और अपने किए की सजा भुगतता रहेगा और इतना कहकर गुरुजी गुफा में प्रवेश कर गए। फिर मैंने कई बार सोचा कि गुफा में जाकर अपने गुरु से क्षमा माँगू पर जब भी उस गुफा की ओर बढ़ने की कोशिश करता हूँ, शरीर जलने लगता है और कोई बड़ी शक्ति मुझे गुफा में प्रवेश नहीं करने देती।

इसके बाद उस ब्रह्म-पिशाच ने कहा कि शायद आप लोग गुफा में प्रवेश कर जाएँ। उसने कहा कि अगर आप लोग गुफा में प्रवेश कर जाएँगे तो आप लोगों की जान अवश्य बच जाएगी, क्योंकि गुफा में बहुत सारे सिद्ध, अतिसिद्ध महात्मा रहते हैं। वे लोग अपने तपोबल से आप सबको नीचे बस्ती में पहुँचा सकते हैं। फिर उस ब्रह्म-पिशाच ने कहा कि

निडर होकर मेरे साथ आइए, मैं गुफा का द्वार दिखाता हूँ।

बिना कुछ बोले या दिमाग पर जोर डाले वे लोग उस प्रेत के पीछे हो लिए। कुछ दूर चलने के बाद उन्हें कुछ ऊँचाई पर एक गुफा की आकृति दिखी। उस प्रेत ने बताया कि थोड़ा ऊपर जो एक छेद दिख रहा है, आप लोग उससे गुफा में प्रवेश करने की कोशिश करें।

सभी लोग उस प्रेत की बात सुनकर हतप्रभ हो गए। वे लोग कोई छोटे-मोटे जीव, साँप, बिल्ली आदि हैं क्या कि इस पतले छेद से अंदर जा पाएँगे? वह ब्रह्म-प्रेत उनके मन की बात जान गया। उसने अट्टहास किया और बोला, “अरे! डरिए मत। यह अलौकिक द्वार है। अगर आप लोगों ने थोड़ा भी पुण्य किया है, या अच्छे इंसान होंगे तो इस पतले छेद के पास पहुँचकर प्रार्थना करने पर, नमस्कार करने पर, यह छेद अपने आप, आप लोगों को मार्ग दे देगा, यानी बड़ा हो जाएगा।

सभी साथी इशारे ही इशारे में एक-दूसरे की सहमति लेकर उस पतले छेद के पास पहुँचे। उन लोगों ने झुककर उस छेद को प्रणाम किया। प्रणाम करते ही चमत्कार हुआ और वह पतला छेद एक बड़े आकार में बदल गया। फिर उन लोगों ने उस प्रेत महानुभाव को नमस्कार व विदा करते हुए, उस गुफा में प्रवेश कर गए।

अनोखी, अद्भुत, अलौकिक, स्वर्गिक गुफा। जिसका वर्णन हो ही नहीं सकता। गुफा में वे लोग ज्यों-ज्यों अंदर बढ़ते गए, उन लोगों की थकावट, डर आदि छूमंतर होते गए। एक ऐसा आनंद जो शायद आनंद की पराकाष्ठा हो, परमानंद हो। उन्हें लगने लगा कि उनका मनुष्य जन्म सफल हो गया था। उन लोगों को इस बात का भी गर्व हो रहा था कि वास्तव में वे लोग अच्छे इंसान हैं, तभी तो इस गुफा ने उन्हें अंदर आने के लिए मार्ग दे दिया।

गुफा में और कुछ अंदर जाने पर अचानक इन लोगों को रुकना पड़ा। सामने से इन्हें जंगली हिंसक पशु आते हुए दिखाई दे रहे थे तो कभी उफनती नदी इन्हें बहा ले जाने का तो कभी प्रज्वलित आगे बढ़ती अग्नि इन्हें जलाने का प्रयास कर रही थी। यह सब माया जैसा ही लग रहा था क्योंकि न वे हिंसक पशु इन्हें नुकसान पहुँचा रहे थे और न ही नदी इन्हें भिगो रही थी और न ही वह अग्नि इन्हें जला रही थी। इस दल ने हिम्मत दिखाई और आगे बढ़ना जारी रखा। कुछ दूर और आगे जाने पर एक महात्मा दिखे। जिनका शरीर दिव्य था। पूरे शरीर से आभा निकल रही थी। मस्तक सूर्य जैसा चमक रहा था, चेहरे पर एक अतुल्य, रहस्यमय मुस्कान तैर रही थी और वे दिव्य महात्मा धीरे-धीरे चहलकदमी कर रहे थे। सभी लोग सहम गए और हाथ जोड़कर जहाँ थे, वहीं खड़े हो गए।

उन दिव्य महात्मा ने सभी को और अंदर आने के लिए कहा और बिना कुछ बोले गुफा में एक तरफ बैठ जाने का इशारा किया। उस गुफा की सबसे रहस्यमय, अलौकिक बात यह थी कि जिस किसी को जितनी जगह चाहिए थी, वह अपने आप मिल जाती। जैसे ही वे लोग बैठने लगे, पता नहीं कहाँ से उनके बैठने वाली जगह पर खूबसूरत व आरामदायक बिस्तर बिछ गए।

फिर उस महात्मा की सौम्य आवाज़ सुनाई दी, “मनुष्य श्रेष्ठ! लगता है कि आप लोग रास्ता भटक गए हैं और काफी देर से परेशान हैं। आप लोगों को भूख और प्यास भी खूब लगी हुई है।”

“आप लोगों को रास्ता बताने से पहले, हमारा यह कर्तव्य बनता है कि आप अतिथियों की सेवा करें।” इतना कहने के बाद उस महात्माजी ने वहीं पास में उगी तुलसी माता के कुछ पत्तों को तोड़ा और पाँचों के सामने एक-एक तुलसीदल रख दिए। फिर क्या था, एक नया, रहस्यमयी चमत्कार। मिनटों नहीं लगे उस तुलसी पत्ते को थाली-गिलास-स्वादिष्ट व्यंजनों में तब्दील होने में। सबसे अनोखी बात यह थी कि उन सबकी थाली में अलग-अलग व्यंजन थे यानि सबके मन में उस समय जो खाने की इच्छा हो रही थी, उन्हीं व्यंजनों से उन लोगों की थाली भरी पड़ी थी।

उन दिव्य महात्मा का आदेश मिलते ही पाँचों ने छककर उस दिव्य प्रसाद का आनंद उठाया और पूरी तरह से तृप्त और आनंदित हो गए।

भोजन करने के बाद महात्माजी ने कहा कि इस गुफा में बहुत सारे महात्मा समाधि, पूजा-पाठ में लीन हैं। आप लोग अब इस गुफा में इससे आगे नहीं जा सकते। मैं तो इन दिव्य गुरुओं का एक छोटा-सा सेवक मात्र हूँ, जो इन सबकी सेवा में लगा रहता हूँ। दिव्य महात्मा ने यह भी बताया कि वे काशी के पास के रहने वाले हैं और बचपन में ही संसार त्यागकर हिमालय में आ गए थे और काफी भटकने के बाद एक दिन एक महात्मा मिल गए, जो उन्हें इस गुफा में लेकर आए। तब से वे वहीं हैं और महात्माओं की सेवा में लगे हुए हैं। उन्होंने आगे बताया कि उन्हें इस गुफा में आए लगभग 500 साल से अधिक हो गए हैं। फिर उन्होंने कहा कि अब आप लोगों को यहाँ से फौरन निकल जाना चाहिए। अगर किसी अन्य गुरु महात्मा की नजर आप सब पर पड़ गई तो आप लोग भस्म भी हो सकते हैं क्योंकि न चाहकर भी कोई आम इंसान, प्राणी इन दिव्य महात्माओं के दिव्य नेत्र से जलने से नहीं बच सकता।

हम लोग कुछ बोलें, कुछ पूछें, अपनी कुछ जिज्ञासा शांत करने की कोशिश करें, इससे पहले ही उस महात्मा ने कहा कि आप लोग अपनी आँखें बंद करें। सभी लोगों ने उस दिव्य महात्मा के आदेश का पालन करते हुए अपनी आँखों को बंद कर लिया। फिर उस महात्मा की आवाज़ आई, अब आप लोग अपनी आँखें खोलें।

चमत्कार। अद्भुत, अविस्मरणीय चमत्कार। जब उन लोगों ने आँखें खोली तो अपने आप को हिमालयी क्षेत्र में उस बस्ती के पास खड़े पाए जहाँ वे लोग ठहरे हुए थे।

भूत की लंगोट

‘भागते भूत की लंगोट भली!’ यह कहावत बहुत ही कही-सुनी जाती है पर वह लंगोट पहना भूत अभी तक मुझे नहीं दिखा। काफी दिनों से इस फेर में हूँ कि कहीं वह भूत दिख जाए और वह भी भागते हुए, और वह भी अपनी लंगोट को छोड़कर। कब ऐसा होगा? खैर, अभी तो मन में इस कहावत के अर्थ से नहीं अपितु इस बात से उत्पन्न हो रही है कि अगर यह लंगोट किसी भूत की थी तो वह पहना क्यों नहीं था? क्या किसी दरजी से अभी नया-नया सिलवाया था और हाथ में लिए जा रहा था, तभी किसी कारण-वश भागने लगा और लंगोट हाथ से छूटकर गिर गई? क्या है इस लंगोट का माजरा? आखिर क्यों बनी ऐसी कहावत, क्यों बनी यह लोकोक्ति? पर कभी न कभी, किसी ने ज़रूर किसी भूत की लंगोट देखी होगी! हो सकता है कि उस व्यक्ति को जब इस भागते भूत की लंगोट मिली होगी तो शायद इस लंगोट के दम पर उसने कुछ भूतिया, मायावी कारनामों दिखाए होंगे और मन ही मन प्रसन्न हो गया होगा कि चलो, भागते भूत की लंगोट भली।

हमारे ज्वार में एक पंडित कुमार थे। कहा जाता है कि इनके पास एक लंगोट थी, जो किसी ऐरे-गैरे भूत ने नहीं बल्कि एक सिद्ध, पूजनीय, ब्रह्मचारी, पहलवान भूत ने इन्हें प्रसन्न होकर दी थी और उस लंगोट के चलते, उस पंडीजी के पुत्र ने कई रोचक, अद्भुत, रोमांचकारी, अलौकिक कार्यों को, घटनाओं को अंजाम दिया था। कुछ ऐसी घटनाएँ जिन्हें सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, शरीर पसीने से नहा जाती है, दिल की धड़कन तेज हो जाती है और कमजोर दिलवाले तो धोती गीली कर देते हैं।

हमारे ज्वार में रमदेना नामक एक रमणीय गाँव था, जो एक नदी किनारे बसा हुआ था। इस गाँव में ग्वालों की अधिकता थी और सभी ग्वालों के पास खूब खेती-बारी थी और साथ ही सब के दरवाजे पर 10-20 गाय-बैल बँधे हुए दिख जाते थे। इस गाँव में मात्र एक घर रमेसर नामक पंडीजी का था। रमेसर पंडीजी पूजा-पाठ करके, कथा-पोथी बाँचकर अपने घर का खर्च चलाते थे।

गाँव-ज्वार में रमेसर पंडीजी का काफी सम्मान था। वे भले ही धनी नहीं थे पर गाँव-ज्वार का हर धनाढ्य उन्हें सम्मान की नजरों से देखता था। इस गाँव में एक बहुत धनी-मानी ननकू नामक ग्वाला थे, जिन्हें गाँव-भर सम्मान से ‘चौधरी जी’ कहा करता था। चौधरी जी के पास काफी खेती-बारी थी और काफी अच्छा अनाज भी उगता था। साथ ही चौधरी जी के घोठे पर 4-5 जोड़ी बैल और एक लेहड़ा अच्छी गायें भी थीं। चौधरी जी बहुत ही सुलझे हुए व्यक्ति थे। सब की परवाह करते तथा ज़रूरतमंदों की मदद भी, पर चौधरी जी के 4 बेटों में से मझला बेटा काफी घमंडी था। उसे अपने धन-बल का बहुत अभिमान था। वह गाँव के लोगों को हीन नजरों से देखता था और रह-रहकर कमजोरों पर जुल्म भी किया करता था।

समय कब करवट बदल दे, कब कौन-सी घटना घट जाए, कहा नहीं जा सकता। समय राजा को रंक तो रंक को राजा बना देता है। एक बार की बात है कि पंडीजी किसी ज़रूरी काम से अपने किसी रिश्तेदारी में जाने वाले थे। उसी दिन चौधरी जी के वहाँ सत्यनारायण की कथा होनी थी। चौधरानी ने अपने मझले बेटे से कहा कि जाकर पंडीजी

को बुला लाओ।

चौधरी का मझला बेटा अकड़ते हुए पंडीजी के दरवाजे पर पहुँचा और दरवाजे पर से ही पंडीजी, पंडीजी कहकर हाँक लगाया। पंडीजी घर में से बाहर निकले और जानना चाहे कि क्या बात है? चौधरी के उस मझले बेटे ने कहा कि अभी उन्हें उसके साथ उसके घर पर चलना है क्योंकि सत्यनारायण की कथा कहनी है।

पंडीजी ने अपनी असमर्थता जताई और कहा कि आज तो वे एक ज़रूरी काम से एक रिश्तेदारी में जा रहे हैं। हाँ, कल सुबह-सुबह वे कथा बाँचने के लिए ज़रूर पहुँच जाएँगे।

पंडीजी की असमर्थता सुनकर वह चौधरी-पुत्र गुस्से में आ गया और कहा कि उन्हें हर हालत में कथा बाँचने चलना ही होगा। पंडीजी जितनी बार अपनी असमर्थता जताते, उतना ही वह चौधरी-पुत्र गुस्से से भर जाता। उसने पंडीजी की मनाही को अपने सम्मान का प्रश्न बना लिया था। अंत में तैस में आकर उस चौधरी-पुत्र ने पंडीजी को भला-बुरा भी कहा। साथ ही यह भी कहा कि देखता हूँ आप किस रास्ते से जाते हैं, मारकर आपके हाथ-पैर तोड़ दूँगा।

पंडीजी के दरवाजे पर गाँव के कुछ और लोग इकट्ठे हो गए और चौधरी-पुत्र को शांत कराने लगे पर वह बोलता ही रहा। इतने में पंडीजी का पुत्र जो लगभग 16-18 साल का था, घर में से निकला और उस चौधरी-पुत्र को उलटा-पुलटा बोलने से रोकने लगा। अब क्या, देखते ही देखते चौधरी-पुत्र का गुस्सा और बढ़ गया और उसने आव देखा न ताव और उस ब्राह्मण कुमार को वहीं पटककर मारने लगा। पंडीजी हाथ-पैर जोड़ते रहे, मिन्नतें करते रहे पर उस चौधरी कुमार ने ब्राह्मण कुमार को पीटना जारी रखा। बाद में गाँव वालों के मान-मनौवल से झगड़ा शांत हुआ। पंडीजी रिश्तेदारी में न जाकर उस चौधरी के यहाँ गए और बेमन से सत्यनारायण भगवान की कथा बाँची। चौधरी जी ने थोड़ा अपने पुत्र को डाँटा पर पंडीजी से भी कहा कि उन्हें भी एक ही बुलावे पर कथा बाँचने आ जाना चाहिए था।

इधर पंडीजी के पुत्र को काफी चोटें आई थी, उसे काफी भीतरघाव लगा था और उसने खटिया पकड़ ली थी। उसे महीनों तक खाट पर पड़े रहना पड़ा और दूध में हल्दी डालकर पीना पड़ा। इस घटना के बाद से पंडीजी काफी टूट चुके थे और उदास रहा करते थे। अब तो उनके घरेलू कामों में उनका लड़का भी हाथ नहीं बँटा पा रहा था और अधिक समय आराम ही करता रहता क्योंकि अब वह काफी कमजोर पड़ गया था।

धीरे-धीरे करके 4-5 महीने बीत गए। पंडीजी के मन का घाव थोड़ा कम हो गया था और वे कथा-पोथी बाँचने के लिए फिर से गाँव-जवार में जाने लगे थे और साथ ही साथ उनके पास जो थोड़ी-सी खेती-बाड़ी थी, उसे भी मेहनत से करने लगे थे।

एक बार की बात है, आषाढ़ का महीना था और पंडीजी भिनसहरे गाँव से दूर एक बगीचे के पास बियाड़ में पहुँचकर रोपनी के लिए बिया उखाड़ रहे थे। बिया उखाड़ते समय उन्हें सुर्ती खाने की इच्छा हुई। उन्होंने चुनौटी (वह दो मुँहा डब्बा, जिसमें एक ओर सुर्ती और एक ओर चूना रखते हैं) निकाली और सुर्ती बनाने लगे। सुर्ती बनाने के बाद, खाने से पहले उन्होंने थोड़ी-सी सुर्ती वहीं बगीचे में रहने वाले लंगोटिया बाबा को चढ़ा दी।

दरअसल पास के बगीचे में आम, महुआ और पीपल के कई सारे पेड़ थे। इन्हीं पेड़ों के बीच में एक श्रीफल का पेड़ भी था जो लंगोटिया बाबा का स्थान (थान) माना जाता था।

गाँव के लोग समय-समय पर इस श्रीफल के पेड़ पर रहने वाले लंगोटिया बाबा की सेवा में जेवनार (खीर), जनेऊ आदि चढ़ाया करते थे और साथ ही गाँव-जवार के कुछ लोग, कुछ मनौती पूरा होने पर या मनौती पूरा होने के लिए इस श्रीफल के पेड़ पर लाल लंगोट बाँध दिया करते थे। ये लंगोटिया बाबा बहुत ही जगता (शक्तिशाली) माने जाते थे। सुर्ती चढ़ाकर खाने के बाद पंडीजी फिर से बिया उखाड़ने में लग गए। कमजोर शरीर के चलते वे बिया उखाड़ते-उखाड़ते हाँफने लग जाते और बार-बार आराम करने के लिए बियाड़ से निकलकर मेड़ पर बैठ जाते।

एक बार मेड़ पर बैठकर पंडीजी सोचने लगे कि काश, उनके लड़के की तबीयत-पानी ठीक होती तो उन्हें यह बिया नहीं उखाड़ना पड़ता क्योंकि उनका लड़का यह सब काम खुद ही कर दिया करता था, पर जब से उसे चौधरी के मझले बेटे ने मारा था, बेचारा बहुत ही कमजोर हो गया था। अभी पंडीजी मेड़ पर बैठे उदास मन से यही सब सोच रहे थे कि उनके सामने लाल लंगोट पहने हुई और कांधे पर मोटा जनेऊ लटकाए हुई, एक नौ फुट्टा दिव्य-आत्मा प्रकट हो गई। उस आत्मा के शरीर से निकलती अद्वितीय आभा बहुत ही आकर्षक और दिव्य थी पर उस आत्मा को देखते ही पंडीजी थोड़ा डर गए। पंडीजी को समझ में नहीं आया कि क्या करें? बियाड़ के पानी से भीगा पंडीजी का शरीर पसीने से और भी भीग गया। वे मन ही मन हनुमान चालीसा का पाठ करने लगे।

अचानक उस दिव्य-आत्मा की आवाज़ गुँजी, “पंडित! डर मत। मैं तो लंगोटिया बाबा हूँ। तेरी सुर्ती खाने आ गया था। तेरे दुख से मैं भी बहुत दुखी हूँ। तेरा लड़का मेरा बहुत बड़ा भक्त था। प्रतिदिन मेरे थान की साफ-सफाई करता था। उसके साथ जो भी हुआ, अच्छा नहीं हुआ पर तू अब निश्चिंत हो जा। मैं तेरी पूरी सहायता करूँगा।” इतना कहने के साथ ही उस दिव्य-आत्मा ने वहीं खड़े-खड़े कहा कि चलो जी, तुम लोग देखते क्या हो, बिया उखाड़ों और जल्द से जल्द इस पंडीजी के खेत में लेव आदि लगाकर रोपिया कर दो। पंडीजी तो अवाक होकर मेड़ पर ही बैठे रहे। वे तभी क्या देखते हैं कि कुछ सदृश्य आत्माएँ, विकराल आत्माएँ जो भूत-प्रेत थीं, वहाँ प्रकट हो गईं और देखते ही देखते बिया उखाड़कर पंडीजी के खेत में लेव आदि लगाकर रोपनी भी कर दीं।

इन सब कामों में 10 मिनट भी नहीं लगे। पंडीजी हैरान-परेशान यह सब देख रहे थे। कुछ भूत-प्रेत ही बैल बनकर हल खींच रहे थे तो कुछ हरवाह (हल जोतने वाला) बनकर खेत में लेव लगा रहे थे। अजीब नजारा था। यह सब करने के बाद भूत-प्रेत गायब हो गए और साथ ही लंगोटिया बाबा भी।

अब तो पंडीजी को अपनी खेती-बारी का कोई काम करना नहीं पड़ता। लंगोटिया बाबा भूत-प्रेतों से उनका सारा काम करवा देते थे। भूत-प्रेत मनुष्य रूप में आकर दिन-रात पंडीजी के घर का काम भी कर देते थे। गाँव वालों को बहुत ही ताज्जुब होता कि जवार-पथार के बहुत सारे लोग पंडीजी के घर-गृहस्थी के कामों में हाथ बँटा रहे हैं। दरअसल ये भूत-प्रेत जवार के, आस-पास के गाँव के किसी व्यक्ति के रूप में आते थे। अब तो पंडीजी का

लड़का भी थोड़ा तगड़ा होने लगा था और पंडीजी के कहने पर फिर से धीरे-धीरे लाठी के सहारे लंगोटिया बाबा के थान पर जाने लगा था।

नागपंचमी का दिन था और पंडीजी का लड़का सुबह-सुबह ही दूध-लावा चढ़ाने के लिए लंगोटिया बाबा के थान पर पहुँचा। अचानक उसे चक्कर आ गया और वह लंगोटिया बाबा के थान के पास ही गिर गया। कुछ समय बाद उसे होश आया तो क्या देखता है कि एक दिव्य आत्मा (लंगोटिया बाबा) उसके पास बैठी हुई है। लंगोटिया बाबा ने उसे निडर बनने को कहा तथा साथ ही उस श्रीफल के पेड़ पर टंगे लंगोटों में से एक लंगोट भी उतारकर दिया तथा कहा कि बेटा आज घर जाकर तू इस लंगोट को पहन।

उस ब्राह्मण कुमार ने लंगोटिया बाबा का धन्यवाद किया और घर पर आ गया। घर पर आने के बाद वह नमस्कार करके लंगोट पहना और फिर उसे पता नहीं क्या सूझा कि गाँव-घर के लोगों के साथ वह गाँव के बाहर के मैदान में चिक्का-कबड्डी खेलने के लिए चल पड़ा। उस दिन गाँव के उस मैदान में कुश्ती का आयोजन भी किया गया था। गाँव के वही चौधरी जी एक काठ-कुर्सी पर विराजमान थे और साथ ही उनके लड़के भी लंगोट पहने हुए अखाड़े की मिट्टी को अपने शरीर पर मल रहे थे। कुश्ती शुरू हुई और पहली कुश्ती के लिए चौधरी का मझला लड़का ही अखाड़े में जा खड़ा हुआ। उसकी कठ-काठी इतनी अच्छी थी कि किसी गाँव-वाले की हिम्मत ही नहीं होती थी कि उससे दो-दो हाथ कर ले।

वह सांड की तरह अखाड़े में घूमता रहा और खुली चुनौती देता रहा। इधर काठ-कुर्सी पर बैठे चौधरी जी मुस्कराते हुए अपनी सफेद मूछों पर ताव देते रहे। अचानक वहाँ दर्शक बनी भीड़ को एक कौतुहल वाली घटना देखने को मिली। पंडीजी का वह घवाह (जिसे चोट लगी हो), कमजोर लड़का अखाड़े में पहुँचकर चौधरी-पुत्र से दो-दो हाथ करने के लिए बेताब नजर आ रहा था। गाँव के कुछ लोगों के साथ ही चौधरी जी ने भी मना किया कि बेटा बाहर आ जाओ। कुश्ती लड़ना तेरे बस की बात नहीं है। तू बहुत ही कमजोर है। बेकार के जोश में होश मत खोओ। पर वह पंडित कुमार मानने को तैयार ही नहीं था। शेर की तरह गुर्ग उठा कि अब तो इस अखाड़े से दो-दो हाथ करने के बाद ही निकलूँगा।

चौधरी-पुत्र हँसा और गर्व से बोला कि 4-5 महीने पहले ही तो तूझे घिसरा-घिसरा कर मारा था। क्या वह सब तू भूल गया और अब मरने के लिए अखाड़े में आ गया? ब्राह्मण कुमार कुछ नहीं बोला और ताल ठोकने लगा। देखते ही देखते कुश्ती शुरू हो गई। कुश्ती शुरू होते ही ब्राह्मणकुमार में गजब की फुर्ती दिखने लगी। ऐसा लगने लगा कि वह कोई बहुत बड़ा, नामी, निपुण पहलवान हो। चौधरी पुत्र तो उसके सामने एकदम बौने नजर आने लगे क्योंकि 2-3 मिनट में ही ब्राह्मण कुमार का शरीर लंबा-चौड़ा, भीमकाय नजर आने लगा। ब्राह्मण कुमार के मटमैले, पसीने से तर शरीर से गजब की आभा निकल रही थी। देखते ही देखते वह चौधरी-पुत्र को पटककर उसकी छाती पर जा चढ़ा और गर्जन करने लगा। वह तो चौधरी कुमार को छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा था। अखाड़े में चौधरी के बाकी तीन पुत्र भी कूद पड़े और गाली देते हुए उस ब्राह्मण कुमार पर टूट पड़े। अरे! क्या हो गया था उस ब्राह्मणकुमार को! मिनटों भी नहीं लगे और चौधरी के चारों पुत्रों को लसाड़ते हुए एक के ऊपर एक गाँजकर ब्राह्मण कुमार एकदम ऊपर बैठकर फिर चित्कारने लगा।

अब तो वहाँ भयावह भागदौड़ की स्थिति बन गई। कुछ कमजोर दिल वाले वहाँ से भाग भी निकले। त्राहिमाम-त्राहिमाम मच चुका था वहाँ। गाँव-वाले कितना भी अनुनय-विनय कर रहे थे पर ब्राह्मण कुमार उन चौधरी कुमारों को छोड़ ही नहीं रहा था और चारों चौधरी कुमार अधमरे हो गए थे।

फिर क्या था, चौधरी के कहने पर कोई व्यक्ति गाँव की ओर दौड़कर पंडीजी को बुला लाया और फिर पंडीजी के सामने चौधरी जी गिड़गिड़ाने लगे। फिर पंडीजी के कहने पर ब्राह्मण कुमार ने चौधरी कुमारों को छोड़ा।

कहा जाता है कि इस घटना के बाद कई महीनों तक चौधरी के उन चारों कुमारों को बदाम-छोहारा खाना पड़ा था तथा हल्दी वाला दूध पीना पड़ा था। उस ब्राह्मण कुमार ने बुरी तरह से चौधरी कुमारों को तोड़कर रख दिया था। इस घटना के बाद से उस ब्राह्मण कुमार की गणना जवार-जिले के नामी पहलवानों में होने लगी थी और वे उस लंगोट को पहनकर अच्छे-अच्छे पहलवानों को धूल चटा दिया करते थे। उन्हें कई सारे पुरस्कारों से नवाजा गया और वे पहलवान शिरोमणि के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे आजीवन कुशती लड़ते रहे और कभी भी परास्त नहीं हुए।

हाँ, पर साथ ही वे आजीवन उस लँगोटिया बाबा के थान की साफ-सफाई करने के साथ उनकी पूजा करते रहे। कहा तो यह भी जाता है कि इस पंडीजी के कई पुश्तों की सेवा भूत-प्रेत करते रहे और लंगोटिया बाबा की कृपा सदा इस परिवार पर, इस पंडीजी के वंश पर बनी रही।

भाग्यशाली का हल भूत हाँकता है

भोजपुरी में एक कहावत है कि भाग्यशाली का हल भूत हाँकता है (भगीमाने के हर भूत हाँकेला)। खैर, यह तो एक कहावत है पर अगर कभी ऐसा हो जाए कि कोई प्रेत चौबीसो घंटे आपकी सेवा में हाजिर हो जाए तो आपको कैसा लगेगा? अगर आप किसी ऐसे बिगड़ैल, भयानक प्रेत को डाँटकर अपना काम कराएँ, जिसे देखकर अच्छे-अच्छों की धोती गीली हो जाए तो इससे आश्चर्य की बात और क्या हो सकती है? यह कहानी कुछ ऐसी ही है।

बात तब की है जब रमेसर काका गबड़ू जवान हुआ करते थे। रमेसर काका के पिताजी एक छोटे-मोटे किसान थे और खेती-किसानी के लिए एक जोड़ी बैल हमेशा रखते थे। उनका मानना था कि अगर खेती अच्छी करनी है तो एक जोड़ी अच्छे बैल हमेशा दरवाजे पर होने ही चाहिए। उस समय रमेसर काका भी खेती-बारी के साथ ही कुछ और छोटे-मोटे कामों में अपने पिताजी की मदद करते रहते थे। ऊँखीबवगा (ऊँख बुआई) से लेकर बियाड़ (धान के बीज का खेत) बनाने तक, कोल्हु-आड़ में गन्ने की पेराई से लेकर गुलवर झोंकाई तक, हर काम रमेसर काका बखूबी करते थे।

एक बार की बात है कि रमेसर काका को अपने टायर (बैलगाड़ी) पर भूसा लादकर अपने एक बहनोई के यहाँ पहुँचाना था। दरअसल उनके बहनोई का गाँव एक नदी के खलार में पड़ता था जिससे यहाँ धान, गेहूँ आदि नहीं हो पाता था, जिसके चलते पशुओं को चारे के लाले पड़ जाते थे। इसलिए हर साल रमेसर काका अपनी बैलगाड़ी पर भूसा, पुआल आदि लादकर अपने इस बहनोई के यहाँ पहुँचा दिया करते थे।

दिन ढल चुका था और बैलगाड़ी पर भूसा भी लद चुका था। रमेसर काका नहा-धोकर शाम को लगभग सात बजे बैलगाड़ी लेकर निकले। उन्हें अपने बहनोई के यहाँ जाने में लगभग पूरी रात का समय लगता था और सुबह 4-5 बजे पहुँचते थे। उन्होंने एक बाल्टी, एक लोटा और एक डोर अपने पास रख ली थी तथा साथ ही बैलों को खाने के लिए एक झोली में गेड़ की छाँटी (पशु-चारा) भी।

रमेसर काका के बैल बहुत ही समझदार थे, जब वे एक बार रास्ते पर चल पड़ते थे तो गड्डुआन (गाड़ीवान) को काफी आराम मिलता था क्योंकि ये बैल बिना हाँके बराबर चलते ही रहते थे। इससे रमेसर काका को बार-बार न बैलों को हाँकना पड़ता था और न ही सामने से किसी गाड़ी आदि के आने पर साइड ही करना पड़ता था, क्योंकि आगे से किसी गाड़ी आदि के आने पर बैल खुद ही किनरिया (किनारे हो) जाते थे। इतना ही नहीं, रमेसर काका कभी-कभी बैलगाड़ी पर झपकी भी ले लेते थे और बैल आराम से अपने मार्ग पर बढ़े चले जाते थे।

रमेसर काका को घर से निकले लगभग 3-4 घंटे हो चुके थे। रात के 10-11 बज चुके थे और अब वे जिस कच्चे खुरहुरिया रास्ते से जा रहे थे, वह रास्ता पूरी तरह से सूनसान हो गया था। दूर-दूर तक कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। रात भी अंधेरे में पूरी तरह गहरी नींद में सोने के लिए व्याकुल हो उठी थी। दूर-दूर तक सन्नाटा और उस रास्ते के किनारे उगे

हुए बड़े-बड़े घास-फूस और कुछ छोटे-बड़े पेड़ों के सिवा कुछ भी नहीं था। खैर, इससे रमेसर काका को क्या फर्क पड़ता था। उन्हें तो इससे भी अधियारी रात में दूर-दूर तक, यहाँ तक की बिहड़ इलाकों से होकर भी जाने की आदत थी। बैलों की रफ्तार अब थोड़ी धीमी हो चुकी थी पर वे रुकने वाले नहीं थे, बड़े चले जा रहे थे अपने मार्ग पर।

बैलगाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी और रमेसर काका कमर को थोड़ा आराम देने के लिए, झपकी लेना शुरू कर दिए थे। रात के उस सन्नाटे को चीरती बैलों के गलों में बँधी घंटियाँ बहुत ही मनोहरी ध्वनि उत्पन्न कर रही थीं। उस अंधेरी आधी रात में यह सुमधुर ध्वनि किसी को भी नींद की गोद में भेजने के लिए पर्याप्त थी। अचानक पता नहीं क्या हुआ कि बैल ठिठककर रुक गए। बैलों के ठिठककर रुकने से रमेसर काका हड़बड़ाकर उठ बैठे। अंधेरे में उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया। उन्होंने एक बैल की पूँछ पकड़कर जोर से एक आवाज़ निकाली पर बैल फिर से दो कदम चलकर रुके ही नहीं बल्कि रुककर थोड़ा पीछे भी हट गए जिससे बैलगाड़ी का संतुलन थोड़ा बिगड़ गया। रमेसर काका किसी अनहोनी की आशंका से तुरंत कूदकर बैलों के पास आगे आ गए और बैलों के शरीर पर हाथ फेरते हुए पुचकारने लगे। अब बैल भी थोड़ा शांत होकर खड़े हो गए।

इसके बाद रमेसर काका ने उस रास्ते पर आगे की ओर नजर दौड़ाई पर उस धुप्प अंधेरे में उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया। पर ऐसा ज़रूर लगा कि आगे शायद कुछ लोग हो-हल्ला कर रहे हैं। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि आगे क्या माजरा है।

रमेसर काका को रात-बिरात ऐसी परिस्थितियों से बराबर सामना हो जाता था। दरअसल आगे भूत-प्रेतों का जमावड़ा था और वे इस अंधेरी रात में खेल खेलने में मस्त थे। रमेसर काका वहीं बैलों के पास ही रुककर आगे का जायजा लेने लगे और मन ही मन इन भूत-प्रेतों को कोस रहे थे कि इन्हें खेलना ही है तो थोड़ा रास्ता छोड़कर खेलते। वे वहीं रुककर इंतजार करने लगे कि भूत-प्रेतों का खेल जल्द से जल्द बंद हो और वे आगे बढ़ें पर 10-15 मिनट तक इंतजार करने के बाद भी भूत-प्रेत रास्ते से हटने का नाम नहीं ले रहे थे। बैल भी अब कितना भी हाँकने पर आगे बढ़ने का नाम नहीं ले रहे थे।

रमेसर काका तो पूरी तरह से निडर स्वभाव के थे ही। उन्हें काहे का डर और हाँ, उनके साथ में दो बैल भी तो थे। उन्हें पता था कि अगर बैल थोड़ा हिम्मत दिखाएँगे तो ये भूत-प्रेत उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाएँगे। उनके दिमाग में एक विचार आया। वे अब बिना देरी किए बैलों के पगहों को पकड़कर बैलों के आगे-आगे चलने लगे और अब बैल भी उन्हें अपने आगे-आगे चलता देख धीरे-धीरे उनके पीछे हो लिए। भूत-प्रेतों के पास पहुँचते ही एक अजीब घटना घटी। वे सारे भूत-प्रेत अब अजीब-अजीब डरावनी आवाजें निकालने लगे। बैल थोड़े सहम से गए थे पर रमेसर काका ने हिम्मत न हारते हुए बैलों को पुचकारते हुए उन्हें आगे खींचने की कोशिश करते रहे।

जब रमेसर काका थोड़ा आगे बढ़ते तो भूत-प्रेत भी थोड़ा आगे बढ़ जाते पर रास्ते से हटते नहीं और फिर से भयंकर-भयंकर रूप बनाकर डरावनी आवाजें निकालते। अब रमेसर काका ने ताल ठोकते हुए उन भूत-प्रेतों को चुनौती दे डाली। उन्होंने कहा कि हिम्मत है तो आगे बढ़ो, पीछे क्यों घिसक रहे हो?

एक बड़ा भयंकर प्रेत, भयानक आवाज़ करते हुए एकदम से रमेसर काका के पास ही आ गया। रमेसर काका तो पहले से ही पूरी तरह से सतर्क थे। उन्होंने बिना देरी किए एक जोर की लात उस प्रेत को दे मारी और मार पड़ते ही वह प्रेत तिलमिलाकर थोड़ा दूर हट गया। अब कुछ भूत-प्रेत उस मार्ग के थोड़े किनारे हो गए थे और थोड़े डर-सहम गए थे, पर अब और भी गुस्सैल लग रहे थे।

अब रमेसर काका की बुद्धि भी काम नहीं कर पा रही थी क्योंकि अब तो बैल एकदम से आगे बढ़ने का नाम नहीं ले रहे थे और इस भयावह अंधेरी रात में इस समय अब किसी व्यक्ति के उस रास्ते से आने-जाने की कोई उम्मीद भी नहीं थी और रमेसर काका सुबह तक का इंतजार भी नहीं करना चाहते थे। रमेसर काका को एक तरकीब सूझी। उन्होंने मन ही मन हनुमानजी का नाम लिया और कड़ककर बोले, “तुम इतने सारे और मैं अकेला। अगर हिम्मत है तो एक-एक करके आओ। तुम सबको देखता हूँ।” यह कहते हुए रमेसर काका ठहाका मार कर हँसे और ताली ठोकने लगे।

रमेसर काका का यह रूप देखकर भूतों को लगा कि यह तो उनका मजाक उड़ा रहा है। अचानक वही भयानक प्रेत जिसे रमेसर काका ने एक लात मारी था, आगे बढ़ा। आगे बढ़कर उसने अपने दोस्त भूत-प्रेतों से कहा कि तुम लोग अब तमाशा देखो। कोई भी आगे न बढ़े। मैं इससे लड़ने के लिए तैयार हूँ।

रमेसर काका उसकी बात सुनकर थोड़े सहमे पर हिम्मत नहीं हारी, क्योंकि उन्होंने कितने सारे प्रेतों से टक्कर ली थी और सबको धूल चटाया था।

इसके बाद रमेसर काका ने वहाँ खड़े सभी भूत-प्रेतों से कहना शुरू किया कि आप लोगों की यही बात मुझे सबसे अच्छी लगती है कि आप लोग जो जबान देते हो उस पर सदा कायम रहते हो। मुझे पूरा यकीन है कि आप में से कोई भी बीच में नहीं आएगा और कौन जीता और कौन हारा इसका भी सही-सही फैसला आप लोग करेंगे।

इसके बाद रमेसर काका उस चुनौती स्वीकारने वाले भूत की ओर देखकर बोले कि अगर मैं हार गया तो तू जो भी बोलेगा, वह मैं करूँगा, सदा के लिए तेरा दास हो जाऊँगा।

अब उस भूत से न रहा गया। उसने भी ताल ठोंकी और तड़पा, “मुझे मंजूर है और अगर मैं भी हार गया तो सदा के लिए तेरा दास हो जाऊँगा।”

इसके बाद तो बिना देर किए रमेसर काका और उस प्रेत में पटका-पटकी शुरू हो गई। कभी रमेसर काका ऊपर तो कभी वह प्रेत। 10 मिनट तक लड़ते-लड़ते दोनों थकने लगे थे पर एक-दूसरे में गुत्थम-गुत्थी जारी थी।

अब रमेसर काका को लगने लगा था कि कहीं वे कमजोर न पड़ जाएँ पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और लड़ते-लड़ते धीरे-धीरे पास खड़े बैलों की ओर बढ़ने लगे। यह रमेसर काका की एक चाल थी जो उस आत्मा पर भारी पड़ चुकी थी। दरअसल लड़ते-लड़ते दोनों बैलों के बीच में आते ही पता नहीं बैलों को क्या हुआ कि वे अपनी जगह पर ही रहकर इधर-उधर अपना पैर पटकने लगे। वह प्रेत कुछ समझ पाता उससे पहले ही बैलों ने अपने पैर से मार-मारकर उसे लहुलुहान कर दिए। दरअसल वे दोनों बैल केवल उस प्रेत को ही निशाना बना रहे थे और अपने पैरों से मार-मारकर, कुचल-कुचलकर उसे अधमरा कर

दिए। अब क्या उस प्रेत के कमजोर पड़ते ही रमेसर काका उस प्रेत को दोनों बैलों के बीच से खींचकर बाहर लाए और उसे लिटाकर उसके सीने पर बैठ गए। भूत-प्रेतों ने ही रमेसर काका के जीत की घोषणा की। अब वह प्रेत रमेसर काका का दास बन चुका था।

रमेसर काका के जीवन में यह ऐसी घटना थी जो शायद उस समय के किसी भी इंसान के जीवन में न घटी हो और न ही भविष्य में घटे। रमेसर काका बहुत खुश थे पर पसीने से पूरी तरह भीग गए थे। उन्होंने गमछे से अपना पसीना पोछा और उस प्रेत से कहा कि अब हमारे बैलगाड़ी के आगे-आगे चल। अब वह प्रेत करे भी तो क्या, जबान दे चुका था और अपनी जबान को तोड़ नहीं सकता था।

कुछ दूर चलने के बाद रमेसर काका को लगा कि अगर ऐसे चलते रहे तो कल दिन में 10-11 बजे तक भी बहनोई के गाँव नहीं पहुँच पाएँगे। उनको एक तरकीब सूझी।

उन्होंने बैलगाड़ी के आगे चलते प्रेत को हाँक लगाई और उसे अपने पास बुलाया। अपने पास बुलाने के बाद उन्होंने उस प्रेत से कहा कि तेरी वजह से मुझे काफी देर हो चुकी है। अब एक ही उपाय है कि तू इस बैलगाड़ी में जुड़ और इसे खींचकर ले चल।

अब प्रेत करे भी तो क्या। रमेसर काका ने बैलों को खोलकर, उन्हें बैलगाड़ी के पीछे बाँध दिया और उस प्रेत को बैलगाड़ी में जोत दिए। फिर वह प्रेत बैलगाड़ी को लेकर बढ़ा।

जब भी वह प्रेत थोड़ा धीमा होता, रमेसर काका उसकी पीठ पर दो-चार डंडा बजाते और वह तेजी से भागने लगता। भिनसहरे करीब 3-4 बजे ही रमेसर काका अपने बहनोई के घर पहुँच चुके थे। घर के बाहर ही उनके बहनोई का घास-फूस से छाया हुआ एक भुसौला (भूसा रखने का घर) था। रमेसर काका ने अपने बहनोई को जगाना उचित नहीं समझा और उस प्रेत को आदेश देकर सारा भूसा उस भुसौले में रखवा दिया। प्रेत ने लगभग आधे घंटे में सारा भूसा, भुसौले में रख दिया था। बैलगाड़ी खाली हो चुकी थी और रमेसर काका बैलों को बहनोई के ही नाँद पर बाँधकर सानी-पानी कर दिए थे और खुद ही वहीं पड़ी एक बँसखटिया पर सो गए थे।

पाँच बजे के करीब जब रमेसर काका के बहनोई जगे तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने देखा कि रमेसर तो बँसखटिया पर सोया है। यह कब आया और यह भूसा भी उतारकर भुसौले में रख दिया। उनको कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। बस सब चमत्कार जैसा लग रहा था। क्योंकि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। हर बार रमेसर काका के बहनोई खुद रमेसर काका के साथ मिलकर भूसा उतारकर भुसौले में रखते थे। खैर, उनको क्या पता कि यह सब किसी भूत का कमाल है।

रमेसर काका आराम से जगे। पानी-ओनी पिया फिर बैलों को नाँद से उकड़ाकर छाँव में बाँध दिया और उसी दिन फिर से रात को खाना-ओना खाकर करीब 11 बजे अपनी बहन के घर से चले। क्योंकि अब उनको पता था कि गाँव पहुँचने में 10-12 घंटे नहीं 5-6 घंटे लगने वाले हैं। जी हाँ, फिर से रमेसर काका जब बैलों को जोतकर बैलगाड़ी को लेकर अपने बहनोई के गाँव के बाहर पहुँचे तो सुनसान देखते ही बैलगाड़ी में से बैलों को खोलकर गाड़ी के पीछे बाँध दिए और उस प्रेत को जोता लगाकर गाड़ी में जोत दिए। सुबह-सुबह रमेसर काका अपने गाँव के पास पहुँच गए थे। अब उनको लगने लगा था कि कहीं कोई यह देख न

ले कि बैल तो पीछे बँधे हैं और फिर भी बैलगाड़ी तेजी से आगे की ओर बढ़ रही है, इसलिए उन्होंने उस प्रेत को छुड़ाकर बैलों को गाड़ी में जोत दिया था। रमेसर काका तो अब उस प्रेत से बहुत सारा काम करवाना शुरू कर दिए थे, पर सदा ध्यान रखते कि इसकी भनक किसी गाँव वाले को न लगे, नहीं तो सब गुड़-गोबर हो जाएगा। जय-जय।

जोगिया बाबा (एक संत ब्रह्मपिशाच)

प्रेत! यह शब्द ही बड़ा अजीब और रोंगटे खड़े कर देने वाला है। पर सभी भूत-प्रेत, भूत (अनिष्ट करनेवाले) नहीं होते; कुछ साधु स्वभाव के भी होते हैं। मतलब अच्छा आदमी अगर मरने के बाद प्रेत बनता है तो उसके काम अच्छे ही होते हैं पर कभी-कभी भूत-प्रेत का अच्छा या बुरा बनना इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह किन परिस्थितियों में मरा। मतलब अगर बहुत ही अच्छा आदमी है पर किसी शत्रुतावश कोई उसे जानबूझकर मार देता है तो उस व्यक्ति के प्रेत बनने के बाद आप उससे अच्छाई की उम्मीद नहीं कर सकते, पर हो सकता है कि वह अच्छा भी हो। कभी-कभी शत्रुतावश भी लोग किसी को मार देते हैं या कोई किसी भयानक दुर्घटना का शिकार हो जाता है। ऐसी लोगों की आत्माएँ तब तक भटकती रहती हैं, जब तक कि उन्हें मुक्ति नहीं मिल जाती। ऐसी आत्माएँ कभी-कभी भयंकर रूप से प्रतिशोध लेने पर उतारू हो जाती हैं और ऐसे में उन्हें अच्छे-बुरे, दोषी-निर्दोष का खयाल नहीं रहता और गेहूँ के साथ घुन भी पीसा जाता है, वाली कहावत चरितार्थ होने लगती है।

ये आत्माएँ अच्छे लोगों को भी परेशान करना शुरू कर देती हैं। इन आत्माओं से बचने का बस एक ही तरीका होता है कि इन्हें मुक्ति दिलवा दी जाए या खुद ही सशक्त रूप से धार्मिक रूप से रहा जाए, क्योंकि जो लोग पूरी तरह से, दिल से धार्मिक होते हैं, जिनके दिल में छल-कपट नहीं होता। जो पूरी तरह से ईमानदार होते हैं, अगर उनके पीछे कोई भूत-प्रेत लगे भी तो उनका अहित नहीं कर पाता।

आज मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ वह एक साधु-स्वभाव के प्रेत की है। आज भी गाँवों में एक प्रकार के भिखमंगा आते हैं जिन्हें जोगी (योगी) कहा जाता है। ये लोग विशेषकर भगवा वस्त्र धारण करते हैं या लाल। इनके हाथों में सारंगी नामक बाजा रहता है, जिसे ये लोग भीख माँगते समय बजाते रहते हैं। ये लोग पुराने कपड़ों को सिलकर गुदरी बनाते हैं। ये गुदरियाँ देखने में बहुत ही अच्छी लगती हैं। कुछ जोगी गाने में भी बहुत निपुण होते हैं और सारंगी बजाने के साथ ही साथ गाते भी हैं। ये जोगी अपने गीतों में राजा भरथरी से संबंधित गीत गाते हैं। राजा भरथरी के बारे में यह कहा जाता है कि वे एक बहुत ही अच्छे राजा थे और बाद में जोगी हो गए थे। जोगी के रूप में 'अलख निरंजन' का उद्घोष करते हुए सर्वप्रथम वे भिक्षाटन के लिए अपने ही घर आए थे और अपनी माँ के हाथ से भिक्षा लिए थे। दरअसल इन जोगियों के बारे में कहा जाता है कि जोगी बनने के बाद इन्हें सर्वप्रथम अपनी माँ या पत्नी हो तो, उसके हाथ से ही भिक्षा लेनी पड़ती है और भिक्षा लेते समय इनकी पहचान छिपी होनी चाहिए तभी ये सच्चे जोगी साबित होते हैं।

इन जोगियों के भिक्षाटन का तरीका भी अलग-अलग होता है। कुछ जोगी सारंगी बजाते हुए गाँव में प्रवेश करते हैं और घर-घर जाकर जो कुछ भी अन्न-पैसा मिलता है, उसे ले लेते हैं पर कुछ जोगी एक महीने तक किसी गाँव का फेरी लगाते हैं। इस फेरी के दौरान वह जोगी सारंगी बजाते और गाते हुए पूरे गाँव में दिन में एक बार घूम जाता है। इस फेरी के दौरान वह किसी के घर से कुछ भी नहीं लेता पर एक महीना फेरी लगाने के बाद वह घर-घर जाकर कपड़े (पुराने भी) या थोड़ा अच्छी मात्रा में अनाज आदि वसूलता है और

लोग इन जोगियों की माँग को राजी-खुशी पूरा भी करते हैं। इन कपड़ों से वे लोग गुदड़ी बनाते हैं या बेंच देते हैं।

सुनाना था क्या और मैं क्या सुनाने बैठ गया? अरे, मुझे तो प्रेत बने जोगी की कहानी सुनानी थी और मैं लगा भिक्षुक जोगी की कथा अलापने। आइए, अब बिना लाग-लपेट के प्रेत जोगी की एक अलौकिक कहानी सुना ही देता हूँ। नहीं-नहीं, मैं कहानी सुनाऊँगा नहीं, अपितु किसी फिल्म की तरह, अपने साथ मैं इस कहानी के साथ आप लोगों को लेकर चलता हूँ। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ेगी, हम भी कहानी के साथ होंगे और इस रोमांचक कहानी का लुप्त उठाते रहेंगे।

ये कहानी आज से 55-60 वर्ष पहले की है। हमारे गाँव के पुरनिया लोग बताते हैं कि आज से बहुत पहले ये जोगी लोग (भिखमंगे जोगी) एक बड़ी संख्या में दल बनाकर आते थे और गाँव के बाहर किसी बगीचे आदि में अपना डेरा डाल देते थे। आपस में क्षेत्र का बँटवारा कर ये लोग भिक्षाटन के लिए अलग-अलग गाँवों में निकल जाते थे। फिर शाम को ये लोग उसी जगह पर एकत्र होते थे और साथ में मिलकर भोजन आदि बनाते और खाते थे।

एक बार की बात है कि ऐसा ही जोगियों का एक दल हमारे गाँव के बाहर एक बगीचे में ठहरा हुआ था। इस बगीचे में उस समय जामुन, आम आदि के पेड़ों की अधिकता थी। आज भी इस बगीचे में एक-आध जामुन के पेड़ हैं। ये जोगी कहाँ के रहने वाले थे, इसकी जानकारी हमारे गाँव के किसी को भी नहीं थी और न ही कोई इन लोगों के बारे में जानना ही चाहा था। दरअसल उस समय ऐसे जोगी समूहों का आना आम बता था और गाँव वालों को इनसे कोई परेशानी नहीं होती थी, इसलिए इनकी तरफ कोई ध्यान नहीं देता था।

अभी इन जोगियों का उस बाग में डेरा जमाए दो-चार दिन ही हुए थे कि एक अजीब घटना घट गई। एक दिन हमारे गाँव का एक व्यक्ति किसी कारणवश सुबह-सुबह उस बगीचे में गया। वह बगीचे में क्या देखता है कि जोगियों का दल नदारद है और एक जामुन के पेड़ पर से एक जोगी फँसरी लगाए लटक रहा है। जोगी की लटकती हुई उस लाश को देखकर वह आदमी चिल्लाते हुए गाँव की ओर भागा। उसकी चिल्लाहट सुनकर गाँव के काफी लोग इकट्ठा हो गए और एक साथ उस बगीचे में जामुन के पेड़ के पास आए। गाँव के पहरेदार ने थाने पर खबर कर दी। पुलिस आई और उस जोगी की लाश को ले गई। गाँव के कुछ प्रबुद्ध लोगों के अनुसार जोगियों में किसी बात को लेकर बड़ा झगड़ा हो गया था और उन लोगों ने इस जोगी को मारकर यहाँ लटका दिया था और ऐसा करने के बाद वे लोग खुद फरार हो गए।

खैर, ये तो रही उस जोगी के मरने की बात। समय धीरे-धीरे बीतने लगा और अब गाँव वाले भी इस बात को भूल गए थे। उन्हें अब यह भी जानने की चिंता नहीं थी कि क्या पुलिस असली मुजरिम को पकड़ पाई है या नहीं। खैर, इस घटना के लगभग पाँच-छह महीने बाद की बात होगी। एक दिन कुछ लोग दोपहर के समय उसी बगीचे में अपने मवेशियों को चरा रहे थे, तभी अचानक उसी जामुन के पेड़ पर बैठकर अकेले सारंगी बजाता हुआ वही जोगी कुछ लोगों को दिख गया। वे चरवाहे तेजी से अपने मवेशियों को

लेकर गाँव की ओर निकल भागे। जोगी के प्रेत होने वाली बात पूरे गाँव में तेजी से फैल गई और उसके बाद कोई भी अकेले उस जामुन के पेड़ के पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। इस घटना के बाद कुछ लोगों ने यह भी दावा किया कि कभी-कभी वह जोगी भिनसहरे सारंगी बजाते हुए उन्हें गाँव के बाहर एकांत में भी दिख जाता है।

एक बार की बात है कि जामुन खाने के लिए बच्चों का एक दल दोपहर में उस बगीचे में गया। बच्चों ने आव देखा न ताव और तीन-चार बच्चे फटाफट उस जामुन के पेड़ पर चढ़कर जामुन तोड़ने लगे। कुछ बच्चे नीचे खड़े होकर ही झटहा (लकड़ी का छोटा डंडा) और ढेले (ईंट, मिट्टी के टुकड़े) से मार-मारकर जामुन तोड़ने लगे। बच्चों का जामुन तोड़ने का यह सिलसिला अभी शुरू ही हुआ था कि नीचे खड़े एक बच्चे को जामुन के उस पेड़ की एक ऊपरी डाल पर एक जोगी बैठा हुआ दिखाई दिया। जोगी उस डाल पर आराम से बैठा हुआ था और उसके हाथ में सारंगी विराजमान थी। उस जोगी को देखते ही उस बच्चे की चीख निकल गई। तब तक नीचे खड़े और बच्चों की नजर भी उस जोगी पर पड़ गई थी। अब तो बगीचे का माहौल पूरी तरह से भयावह हो गया था। बच्चे जोगी-जोगी कहकर चिल्लाने और रोने लगे। पेड़ पर चढ़े बच्चों की नजर जब उस जोगी पर पड़ी तो उनको तो साँप ही सूँघ गया और वे लोग हड़बड़ाहट में नीचे उतरने लगे। पेड़ पर चढ़ा एक बच्चा अपने आप को संभाल नहीं पाया और पेड़ पर से ही गिर पड़ा पर एकदम नीचे की एक डाल पर आकर अटक गया। दूर से कुछ बच्चों ने देख लिया था कि उसको उस जोगी ने थाम लिया था, जिसके चलते वह नीचे गिरने से बच गया। उसके बाद उस जोगी ने उस बच्चे को नीचे उतारकर जमीन पर सुला दिया और खुद गायब हो गया।

यह पूरी घटना मात्र 5-7 मिनट के अंदर ही घटी थी। सभी बच्चों ने अब और जोर-जोर से रोना भी शुरू कर दिया था और कुछ बच्चे तो गाँव की ओर भी भाग गए थे। अब गाँव के कुछ बड़े लोग भी लाठी-भाला आदि लेकर उस जामुन के पेड़ के पास आ गए थे। उस बच्चे को बेहोशी की हालत में उठाकर घर लाया गया। कुछ गँवई जड़ी-बूटी उस बच्चे को पिलाई गई। 2-3 घंटे के बाद वह लड़का पूरी तरह से ठीक हो गया था। जिन बच्चों ने गिरते हुए बच्चे को जोगी के द्वारा थामकर, नीचे उतारकर सुलाते हुए देखा था; उन बच्चों ने यह बात जब सभी को बताई तो उस जोगी के प्रति पूरे गाँव में श्रद्धा और आदर का भाव पैदा हो गया था।

अब तो कुछ लोग सुबह नहा-धोकर उस बगीचे में गए और उस जामुन के पेड़ के नीचे अगरबत्ती, दीपक आदि जलाए और हाथ जोड़कर उस प्रेत जोगी से प्रार्थना किए कि हे जोगी बाबा, सदा हमारे गाँव की रक्षा करना। अब तो वह जामुन का पेड़ कट गया है और यदा-कदा गाँव का कोई व्यक्ति उस बगीचे में जोगी बाबा के नाम पर कुछ पूजा-पाठ कर आता है। परंतु इस घटना के बाद वे जोगी बाबा कभी फिर से किसी गाँव वाले को प्रकट रूप में दिखाई नहीं दिए पर उस बगीचे की ओर जाने वाले कुछ लोग बताते हैं कि आज भी कभी-कभी उस बगीचे में सारंगी की मधुर ध्वनि सुनाई देती है। इतना ही नहीं, लोग बताते हैं कि सारंगी की मधुर ध्वनि सुनते ही उनका सारा डर गायब हो जाता है और लोग कभी भी उस बगीचे की ओर निकल पड़ते हैं क्योंकि उन्हें पता होता है कि उनकी रक्षा के लिए जोगिया बाबा तो हैं ही।

आज भी उस प्रेत-जोगी के बारे में बात करते हुए लोग थकते नहीं हैं और कहते हैं कि वे दिखाई इसलिए नहीं देते ताकि कोई डरे नहीं परंतु सारंगी बजाकर अपने होने का एहसास कराते रहते हैं। इतना ही नहीं उस क्षेत्र में जाने वाले जब किसी व्यक्ति को भय सताता है तो अपने आप उसे सारंगी की ध्वनि सुनाई देने लगती है और वह निडर हो जाता है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि जब से यह जोगिया बाबा वाला कांड हुआ, उसके बाद से उस क्षेत्र में भूत-प्रेत संबंधी कोई घटना नहीं घटी, क्योंकि गाँव वालों को विश्वास था कि उस जोगी बाबा ने सारे भूत-प्रेतों को अपने अधीन कर लिया है और उन्हें ग़लत काम करने से रोक दिया है।

झूठ की सही, गाँव के एक परिवार का कहना है कि उनके बड़े बेटे पर वह जोगी बाबा आते रहते हैं और जिस समय वह जोगी बाबा उस व्यक्ति पर सवार होते हैं, उस समय अगर वह किसी मरीज की झाड़-फूँक कर देता है तो वह मरीज ठीक हो जाता है। पर मेरा तो सिर्फ यह कहना है कि आप किसी भी कथित सोखा-ओझा के चक्कर में न पड़े। सबसे रक्षक भगवान हैं। आप अच्छे कर्म करें, ईमानदार रहें, आपका सदा कल्याण ही कल्याण होगा। अगर कोई मुसीबत भी आएगी तो वह आसानी से टल जाएगी क्योंकि भगवान को वैसे तो सभी लोग-जीव-प्राणी पसंद होते हैं लेकिन वे केवल अच्छे लोगों के ही साथ रहते हैं और जब साक्षात् भगवान आपके साथ है तो फिर डर किस बात का। सही काम करें, ईमानदारी से करें। जय-जय।

मझिया वाले बाबा (एक अलौकिक ब्रह्मपिशाच)

वैसे तो आज का इंसान किसी भूत-प्रेत से कम नहीं है। हम जितने ही सभ्य होते जा रहे हैं, उतने ही शैतान भी। हमारे कार्यों में, हमारी सोच में हमारी पिशाची प्रवृत्ति हावी होती जा रही है। सभ्यता और बुद्धिमता आज के युग में इस बात से परखी जाती है कि हम कितने ग़लत काम करके भी लोगों, कानून, धर्म आदि की आँखों में धूल झोंक सकते हैं। आज के समय में सभ्यता और बुद्धिमता दोनों की परिभाषाएँ पूरी तरह से बदल गई हैं।

खैर, मैं भी अपने में बदलाव लाए बिना लेक्चर झाड़ने लगता हूँ। शायद यह कलियुग का ही प्रभाव है या यूँ कह लें, कलियुग के नाम पर मैं भी बचने की कोशिश कर रहा हूँ। छोड़िए इन बातों को, इंसानी साम्राज्य को, इंसानी दाँव-पेंच को। यह सब तो हम जी ही रहे हैं। इन सबसे दूर, आइए, मैं आप लोगों को एक बार फिर भूत-प्रेतों के साम्राज्य में ले चलता हूँ। भूतों से मिलवाता हूँ और एक सुनी हुई काल्पनिक घटना सुनाता हूँ।

जी हाँ, इस घटना को काल्पनिक इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इसे मैंने एक पंडीजी से सुन रखी है। हो सकता है कि पंडीजी की बातों में सच्चाई हो पर चूँकि जो घटनाएँ एक-दूसरे से सुनी जाती हैं, उसमें कुछ काल्पनिकता भी हो सकती है। इसलिए इस घटना को काल्पनिक कहना ही उचित होगा। वैसे भी यह घटना मेरे साथ तो घटी नहीं, तो मैं सत्य होने के ढोल क्यों बजाऊँ? यह घटना हमारे गाँव के एक बुजुर्ग पंडीजी बताते थे और पंडीजी जब यह आप-बीती सुनाते थे तो सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते थे। ऐसा लगता था कि यह घटना वास्तविक है और अभी आँखों के सामने ही घट रही है। वे बुजुर्ग पंडीजी जब इस घटना का वर्णन करते थे तो उनके चेहरे पर अजीब से भाव आते-जाते थे, जिससे सुनने वाले को एक अजीब रोमांच की अनुभूति होती थी। पंडीजी एक ही साँस में यह पूरी घटना सुना जाते थे। तो आइए, देर किस बात की, हम लोग भी सुन लेते हैं इस घटना को।

थोड़ा-सा इंतजार और कर लेते हैं। सीधे कहानी पर पहुँचने से अच्छा है कि कथानक को मजबूती प्रदान करने के लिए थोड़ी पृष्ठभूमि पर भी नजर डाल लेते हैं। बात यही कोई सौ-सवा सौ साल पहले की होगी और तब यह आप-बीती सुनाने वाले पंडीजी 20-22 साल के रहे होंगे। उस समय हमारे गाँव के लोग बाजार करने के लिए पथरदेवा या तरकुलवा जाते थे। वैसे आजकल कंचनपुर ही क्यों, हर छोटे-बड़े चौराहों पर बाजार लगनी शुरू हो गई है। हमारे गाँव के लोगों को पथरदेवा सीधा पड़ता (लगता) है जबकि तरकुलवा थोड़ा-सा उल्टा।

आज-कल तरकुलवा में शनि और मंगल को बहुत ही बड़ा बाजार लगता है। दूर-दूर के व्यापारी यहाँ आते हैं और अनाज आदि की खरीददारी करते हैं। तो शनि और मंगल को हमारे गाँव के किसान लोग तरकुलवा का रुख करते हैं पर दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं की खरीददारी यानी नून-तेल, मिर्च-मसाला आदि के लिए हमारे गाँव के लोग पथरदेवा ही जाते हैं। हाँ, अब एक अंतर ज़रूर आ गया है। आज बाजार करने लोग खुरहुरिया रास्ते, पगडंडियों आदि से पैदल नहीं जाते बल्कि पक्की सड़क से होकर जाते हैं

और वह भी वाहन आदि पर सवार होकर जबकि पिछले समय में लोग पैदल और वह भी खुरहुरिया रास्ते से तिरछे बाजार करने जाया करते थे ताकि जल्दी से पहुँच जाएँ। ये खुरहुरिया रास्ते लोगों के आने-जाने से अपने आप बन जाते थे। उस समय ये खुरहुरिया रास्ते या पगडंडियाँ बहुत ही सुनसान हुआ करती थीं और मूँज आदि छोटे-मोटे पौधों से कभी-कभी पूरी तरह से ढक जाती थीं। दोपहर और दिन डूबने के बाद तो इन खुरहुरिया रास्तों और पगडंडियों पर कभी-कभी ही कोई इक्के-दुक्के आदमी दिखाई दे जाते थे। इन खुरहुरिया रास्तों और पगडंडियों के अगल-बगल में कहीं-कहीं दूर तक फैले हुए खेत हुआ करते थे तो कहीं-कहीं भयावह, बियावान छोटे-मोटे जंगल या पुरखे-पुरनियों द्वारा लगाए हुए बाग-बगीचे। उस समय हमारे गाँव के लोग पथरदेवा इसी प्रकार की एक पगडंडी से होकर जाते थे। जो एक नहर को पार करते हुए सुनसान बाग-बगीचों, मूँजहानी आदि से होकर गुजरती थी। हमारे गाँव से पथरदेवा की दूरी लगभग एक कोस है पर आज यह दूरी बहुत ही कम प्रतीत होती है क्योंकि सड़कों के निर्माण के साथ-साथ बीच-बीच में बहुत सारे भवनों का निर्माण भी हो गया है जिसके कारण हमारे गाँव से पथरदेवा के बीच छोटी-मोटी दुकानों से लदे कई स्थान बस गए हैं। आज-कल जंगलों, बाग-बगीचों आदि को काटकर समतल खेत या पक्के घर बना दिए गए हैं। यानि सब मिला-जुलाकर कहूँ तो पथरदेवा हमारे गाँव से ही समझिए दिख ही रहा है।

तो आइए, अब मझियावाले बाबा की जयकार करते हुए हलुमानजी (हनुमानजी) की दुहाई देते हुए सीधे कहानी की ओर रुख करते हैं। पंडीजी की उस रोमांचक भूतही कहानी को अब और भूतही न बनाते हुए सुना देना ही उचित होगा।

एक बार की बात है कि हमारे गाँव के वही पंडीजी बाजार करने के लिए पथरदेवा गए। दिन ढल चुका था और शाम हो गई थी। पथरदेवा में उनका ममहर भी था। बाजार में उनके मामा मिल गए और उन्हें घर चलने के लिए आग्रह करने लगे। पंडीजी ने कहा कि फिर कभी आऊँगा तो घर पर चलूँगा। अभी मुझे कुछ ज़रूरी सामान लेकर घर जाना है क्योंकि मैं अकसेरुआ (अकेला) आदमी हूँ और घर के साथ गाय-गोरू की भी देख-भाल करनी पड़ती है। पर पंडीजी के मामा माने नहीं और उन्हें अपने घर पर लेकर चले गए। पंडीजी जल्दी-जल्दी में मामी का दिया हुआ भुजा-भरी खाए, रस पीए और फिर आने का वादा करके वहाँ से चलने को हुए। उनके मामा ने कहा कि रात हो चुकी है, कहो तो मैं चलकर छोड़ देता हूँ या न हो तो रुक जाओ, कल चले जाना। पर पंडीजी को तो अपनी गाय दिखाई दे रही थी जो दोनों जून लगती थी और एकवड़ (यानि एक आदमी के अलावा वह दूसरे को दूहने नहीं देती थी) हो गई थी। पंडीजी अपनी निडरता का परिचय देते हुए मामा से बोले कि मैं अकेले चला जाऊँगा, आप कष्ट न करें और इतना कहकर पंडीजी मामा के घर से निकलकर अपने गाँव की ओर चल दिए। अब लगभग रात के 8-9 बज चुके थे और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उस समय के हिसाब से काफी रात हो चुकी थी।

जिस पगडंडी से होकर हमारे गाँव के लोग पथरदेवा आते-जाते थे, वह पगडंडी एक बहुत ही घनी और भयावह बगीचे से होकर गुजरती थी। इस बगीचे में आम, महुआ, जामुन इत्यादि पेड़ों की बहुलता थी पर बीच-बीच में कहीं-कहीं बरगद व पीपल जैसे बड़े पेड़ भी शोभायमान थे। इस बगीचे को मझियावाली बारी के नाम से जाना जाता था। यह बारी

(बगीचा) सिधावें नामक गाँव के पास में थी। आज भी इसका नाम वही है पर इसका अस्तित्व खत्म होने की कगार पर है या यूँ कह लें कि पर्यावरण के रक्षक मानव ने इसे ही क्या, ऐसे कितने ही बगीचों को धराशायी कर दिया है। इस बगीचे के लगभग सारे पेड़ काटे जा चुके हैं। आज हम भले कहते फिरते हैं कि एक पेड़ सौ पुत्र समाना, पर मन का भाव रहता है, सौ काटो पर एक भी न लगाना। शायद हमें पता नहीं कि इन पेड़-पौधों की हत्या कर हम अपने वजूद को ही मिटाने पर तुले हुए हैं।

जब हमारे गाँव के पंडीजी इस बगीचे में पहुँचे तो उनकी हिम्मत जवाब देने लगी। उनकी साँसे तेज और शरीर पसीने से तर-बतर होने लगा। कारण यह था कि पगडंडी पर आगे भूत-प्रेतों का जमावड़ा था और वे चिक्का, घोड़ कबड़ी आदि खेल खेलने में लगे हुए थे। उन भूत-प्रेतों के भयावह रूप, उनकी चीख-पुकार, मारपीट किसी भी हिम्मती और हनुमान-भक्त को भी मूर्छित करने के लिए पर्याप्त थी। पंडीजी की सुने तो लगभग 100 से ऊपर भूत-भूतनी थे और ऐसा लग रहा था कि भूत-प्रेतों का मेला लगा हुआ हो। भूत-प्रेतों की डरावनी आवाज़ सुनकर ऐसा लगता था कि कलेजा मुँह को आ जाएगा। पंडीजी का पूरा शरीर काँपने लगा था। मुँह से आवाज़ भी नहीं निकल पा रही थी कि हनुमान चालीसा ही पढ़ा जाए। पर ये भूत-प्रेत पंडीजी से अनजान होकर खेल खेलने में ही लगे हुए थे। खैर, पंडीजी भी बहुत ही हिम्मती थे और रात-बिरात खेतों आदि में रहकर पटौनी (सिंचाई) आदि करने के साथ ही आवश्यकता पड़ने पर ये खेतों में बँसखटिया डालकर सोते भी रहते थे। पंडीजी थोड़ी और हिम्मत किए और एक पेड़ की आड़ में खड़े होकर तेज साँसों से मन ही मन हनुमानजी को गोहराने लगे। उनकी साँस तो बहुत ही फूल रही थी पर करें तो क्या करें। वे अपनी साँसों पर काबू करने के साथ ही यह भी सोच रहे थे कि कब ये भूत-प्रेत रास्ते से हटें और मैं लंक लगाकर भागकर घर पहुँच जाऊँ। तभी उन्हें कुछ याद आया और वे मन ही मन हँसने लगे। उनके दिमाग में कौंधा कि अरे, यह तो मझिया वाले बाबा का क्षेत्र है। फिर मैं क्यों डर रहा हूँ?

अभी वे मन ही मन यही सोच रहे थे कि तभी अचानक उनके कानों में भारी-भरकम खड़ाऊँ की चट-चट की आवाज़ सुनाई देने लगी। खड़ाऊँ की आती इस आवाज़ से उनका डर थोड़ा कम हुआ और कुछ हिम्मत बँधी। धीरे-धीरे वह आवाज़ और तेज होने लगी और देखते ही देखते उनके पास एक स्वर्णमयी शरीर का लंबा-चौड़ा व्यक्ति जो केवल एक सफेद धोती और जनेऊ पहने हुए था और जिसके कंधे से सफेद गमझा झूल रहा था, प्रकट हुआ। उसके ललाट का तेज उस अँधियारी रात में भी स्पष्ट दिख रहा था। उस अलौकिक आत्मा के दर्शन मात्र से पंडीजी पूरी तरह से बेखौफ और आनंदित हो गए और बार-बार उस स्वर्णिम विराट पुरुष के मुख-मंडल की ओर नजर ले जा रहे थे पर उस विराट पुरुष के मुख-मंडल पर इतना तेज था कि पंडीजी की आँखें टिक ही नहीं पा रही थीं और चौंधिया रही थीं।

पंडीजी के अनुसार उस महापुरुष के पूरे शरीर से एक अलौकिक आभा निकल रही थी। पंडीजी अभी कुछ कहते उससे पहले ही उस अलौकिक पुरुष ने पंडीजी से पूछा, "आपको डर लग रहा है क्या?"

पंडीजी ने स्वीकारोक्ति में केवल अपनी मुंडी हिला दी। फिर उस अलौकिक पुरुष ने कहा, "डरने की कोई बात नहीं। आप तो निडर जान पड़ते हैं। खैर, आप आगे-आगे चलिए

और मैं आपके पीछे-पीछे आपके गाँव तक आता हूँ।"

उस अलौकिक पुरुष की इतनी बात सुनते ही पंडीजी तेज कदमों से पगडंडी पर चलने लगे और उनके पीछे-पीछे वही खड़ाऊँ की चट-चट की तेज आवाज़। अब तो दूर-दूर तक भूत-प्रेतों का नामोनिशान नहीं और अब पंडीजी भी निडर मन से अपने मार्ग पर अग्रसर थे। पंडीजी ने बताया कि खड़ाऊँ की तेज आवाज़ आते ही सभी भूत-प्रेत पता नहीं कहाँ रफूचककर हो गए थे।

जब पंडीजी गाँव के पास पहुँच गए और गाँव के पास की नहर को पार कर लिए तो घूमकर उस अलौकिक आत्मा से तेज आवाज़ में बोले, "बाबा, अब मैं चला जाऊँगा! आप अपने निवास पर वापस लौट जाएँ। मेरे कारण जो आपको कष्ट हुआ उसके लिए क्षमा चाहता हूँ।"

उस समय वह आत्मा उनसे कुछ 20-25 मीटर की दूरी पर नहर के इस पार ही थी। इसके बाद पंडीजी उस महामानव को बार-बार प्रणाम किए और घर की ओर तेज कदमों से चल पड़े। उनको कुछ दूरी तक तो खड़ाऊँ की चट-चट की आवाज़ सुनाई दी फिर कुछ देर बाद खड़ाऊँ की वह चट-चट की आवाज़ अंधियारी रात के निरव में कहीं खो गई। पंडीजी उस अलौकिक आत्मा का मन ही मन गुणगान करते हुए घर पहुँचे। वे बहुत ही प्रफुल्लित लग रहे थे। लगे भी क्यों नहीं, आखिर उन्हें उस मझिया वाले बाबा के दर्शन हो ही गए थे, जिनके बारे में ससम्मान उन्होंने कई लोगों से सुन रखी थी।

सुबह-सुबह यह बात पूरे गाँव में अति रोचक समाचार की तरह फैल गई। उनके घर और गाँव-गड़ा के लोगों को पूरा विश्वास था कि यह मझिया वाले बाबा ही थे क्योंकि मझियावाले बाबा का सम्मान सब लोग करते थे। यहाँ तक कि भूत-प्रेत भी। तभी तो उस रास्ते से कोई भी आसानी से कभी भी आ-जा सकता था और भूत-प्रेत भी मझिया वाले बाबा के डर से किसी का नुकसान नहीं पहुँचाते थे। हाँ, यह अलग बात थी कि इन भूत-प्रेतों से लोग खुद ही डर जाते थे।

धन्य है भारतीय संस्कृति जिसे हर वस्तु में देवत्व नजर आता है। हर बगीचे आदि का एक अधिकारी देव होता है। तो मझियावाली बारी के देवता थे, मझियावाले बाबा। आप भी मेरे साथ प्रेम से बोलिए, मझियावाले बाबा की जय।

तो यह काल्पनिक कहानी यहीं खत्म होती है। फिर से एक बार बोलिए, मझियावाले बाबा की जय। एक बात और कहना चाहूँगा, महानुभाव गण, यहाँ दी गई कहानियाँ काल्पनिकता पर आधारित हैं। इन्हें मनोरंजन के रूप में पढ़ें, समझें। इन्हें दिल-व-दिमाग में न बैठाएँ, पर हाँ, साथ ही ये कहानियाँ आपको कैसी लगती हैं, ज़रूर-ज़रूर बताएँ। आभार सहित।

नेटुआबीर बाबा – 1

जी हाँ, नेटुआबीर बाबा! कहने के लिए तो भूत-प्रेत-पिशाच की श्रेणी में आते हैं पर इनके किस्से इन्हें वीर और अच्छे भूत-प्रेतों की श्रेणी में लाकर खड़े कर देते हैं। एक ऐसे प्रेत जो अपने कारनामों के चलते पूज्यनीय बन गए और आज भी गाँव-जवार में इनकी पूजा की जाती है।

भारत एक ऐसा देश, जहाँ आपको राम के भक्त तो मिलेंगे ही, रावण की जय-जयकार करने वाले भी मिल जाएँगे। तार्किकता के आधार पर, कर्मों के आधार पर व्यक्ति या आत्मा के गुण-अवगुण का निर्धारण उचित होता है। गाँवों में आज भी गँवई देवी-देवता यानी बरमबाबा (ब्रह्म बाबा), डिहुआर बाबा (डिह बाबा), काली माई, भवानी माई, बेलही भवानी आदि के साथ ही कुछ ऐसे भूत-प्रेत भी मिल जाएँगे जिनकी पूजा गाँव-जवार वाले करते हैं और ये भूत-प्रेत इन गाँव-जवार वालों की रक्षा करते हैं या इन गाँव-जवार वालों का कभी बुरा नहीं करते।

गाँवों में आपको सुनने को ऐसी कई कहानियाँ मिल जाएँगी जिसमें किसी भूत ने किसी गाँव वाले की रक्षा की हो, की बात शीशे की तरह साफ पता चलती है। कहने का तात्पर्य यह है कि सारे भूत-प्रेत सताने वाले या भयभीत करने वाले ही नहीं होते हैं। कुछ भूत अच्छे भी होते हैं, तो कुछ तो बहुत ही अच्छे। अगर कोई व्यक्ति समय से पहले ही काल के गाल में समा जाता है या दुर्घटना का शिकार होकर इस नश्वर शरीर का त्याग कर देता है और अगर उसके कर्म अच्छे होते हैं, वह अच्छे दिलवाला होता है तो वह मरने के बाद अच्छे कर्म ही करने की कोशिश करता है और किसी का बुरा करना नहीं चाहता। ऐसे प्रेत-पिशाच सदा नेकनीयता से पेश आते हैं। ये लोग या तो इंसानों से बचने की कोशिश करते हैं और या कभी किसी इंसान से भाग्यवश इनकी मुलाकात हो भी जाती है तो ये उसका बुरा नहीं करते। अपितु मुसीबत में फँसे व्यक्ति की मदद ही करते हैं।

नेटुआबीर एक ऐसे ही परोपकारी प्रेत कहे जाते हैं जो सदा दूसरों की, गाँव वालों की मदद किया करते हैं। पर अगर कोई इनसे पंगा लिया तो उसे इनके क्रोध का शिकार बनने से कोई नहीं बचा सकता। अगर अच्छे लोगों के लिए नेटुआबीर बाबा एकदम अच्छे हैं तो बुरे लोगों के लिए बुरे भी हैं। नेटुआबीर बाबा की रोमांचक, अलौकिक कहानियों को सुनाने के बाद मैं आप लोगों को एक जोगिया बाबा (पीले-लाल आदि वस्त्र पहनकर गाँवों में सारंगी बजाकर भीक्षाटन करने वाले एक तरह के भिक्षुक) की कहानी भी सुनाऊँगा, जो मरने के बाद भी अपनी अच्छाई को त्याग नहीं पाए थे। इतना ही नहीं, आप लोगों को अलौकिक ब्रह्मपिशाच मझियावाले बाबा से भी तो ऊपर कहानी में मिलवा ही दिया। तो आइए, अब देर न करते हुए, मैं आप लोगों को नेटुआबीर बाबा से मिलवा ही देता हूँ, उनकी कुछ हैरतअंगेज कहानियों को सुनाकर, आप लोगों के मन में भी उनके लिए श्रद्धा का सूत्रपात कर ही देता हूँ।

गाँव के पूर्वी ओर सरकारी नहर के उस पार एक छोटा-सा बगीचा है। इसी बगीचे के बीच में एक विशाल जंगली पेड़ शोभायमान है, जिस पर नेटुआबीर बाबा का आवास है। पास में आम, महुए, जामुन आदि के अनेकों पेड़ इस बगीचे को विशालता प्रदान करते हैं तो

आस-पास में किसानों, गाँव वालों द्वारा लगाई गई कई सारी बँसवाड़ियाँ (बाँसों का झुरमुट) इस बगीचे को भयावहता प्रदान करने में कोई कोतहाई नहीं बरततीं और बगीचे के सुंदर-नयनाभिराम रूप को डरावना और कुरूपता प्रदान करती हैं। इसी बगीचे के पास में एक बहुत ही छोटा-सा तालाब भी है, आस-पास में गन्ने, धान आदि के लहलहाते खेत भी हैं, जो कभी-कभी बँसवारियों के हाँ में हाँ मिलाते हुए डरावने माहौल का संचार करते हैं तो कभी-कभी आँखों को प्रसन्नता देते हुए सुहावने, खुशनुमा माहौल का संचार कर जाते हैं। इस बगीचे की ओर निकलने वाला हर गँवई, हर चरवाहा, हर किसान, हर मजदूर एक बार श्रद्धा के साथ सिर झुकाकर नेटुआबीर बाबा की जय बोलना नहीं भूलता; और भूले भी क्यों, आखिरकार नेटुआबीर बाबा तो सदा इन गाँव वालों की भलाई ही करते रहते हैं। कभी भी बिना ग़लती के किसी को सताया नहीं और साथ ही डरे-भूले-भटके को राह ही दिखाई है तथा गाँव वालों की, अनजान पथिकों की, राहगीरों की रक्षा ही की है। कुल मिलाकर नेटुआबीर बाबा गाँव वालों के लिए अपने हैं, अपने घर के हैं और फिर वे हैं ही तो कोई गँवई डरे क्यों? गाँव से पूरब की ओर निकलते ही एक बार नेटुआबीर बाबा की जय बोलते ही सारे डर दुम दबाकर रफूच्चकर हो जाते हैं और लोगों के चेहरों पर प्रसन्नता का संचार हो जाता है तथा उनके मुँह से ग्रामीण लोकगीत फूट पड़ते हैं।

आइए, अब आपको अपने गाँव-जवार की सैर पर ले चलता हूँ, ताकि इसी बहाने अपने गाँव वालों से मिलवाने के साथ ही, अपने गाँव के मनोरम दृश्यों का दर्शन कराने के साथ आपको नेटुआबीर बाबा से भी मिलवा सकूँ।

एक इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल खमेसर सिंहजी बहुत ही नेक इंसान माने जाते थे। वे बहुत ही धार्मिक व सहृदय इंसान थे। लोगों की सहायता करने के साथ ही वे गरीब छात्रों की हर प्रकार से सहायता करने के लिए सदा तत्पर रहते थे। सुबह चार बजे ही जगकर नहा-धोकर विधिवत पूजा-पाठ करने के बाद ही वे मुँह में कुछ डालते थे। खाली समय मिलते ही वे कोई न कोई धार्मिक भजन, गीत आदि गुनगुनाते रहते। गाँव-जवार क्या, पूरे जिले के सम्मानित व शिक्षित व्यक्तियों में उनका शुमार था। उनका कॉलेज उनके गाँव से लगभग 20-22 किमी दूर एक छोटे से कस्बे में था पर वे प्रतिदिन घर से मोटरसाइकिल द्वारा ही कॉलेज जाते थे और शाम को वापस घर लौट आते थे। कॉलेज में प्रधानाचार्य के रहने के लिए एक छोटा परंतु बहुत ही व्यवस्थित आवास था पर खमेसरजी को बिना गाँव आए कल ही नहीं पड़ता और इसलिए उन्होंने उस आवास को किसी और अध्यापक को रहने के लिए दे दिया था।

खमेसरजी जब तक गाँव आकर गाँव के लोगों से मिल नहीं लेते, हालचाल नहीं पूछ लेते, उन्हें चैन ही नहीं मिलता था। कॉलेज से आते ही उन्हें गाँव में घूम-घूमकर कुछ लोगों को समझाते, खेती-बारी का हालचाल पूछते, न पढ़ने वाले बच्चों को डाँटते हुए देखा जा सकता था। साथ ही रात होते ही उनके दरवाजे पर कुछ बच्चे अपनी किताब-कापी लेकर आ जाते और उनसे हिसाब आदि सीखते। खमेसरजी को भी अपने गँवई संसार में बने रहना, बहुत ही अच्छा लगता और वे बच्चों को प्रसन्न मन से पढ़ाते। इतना ही नहीं किसी की तबीयत खराब होने पर अगर वह खरबिरउआ दवाई (जड़ी-बुटी या गाँव में दवा के लिए उपयोग की जाने वाली कोई गँवई वस्तु) से काम चलाता तो खमेसरजी उसे डाँटते और

तुरंत उसे जिला अस्पताल या किसी प्राइवेट अस्पताल पर जाने को कहते। साथ ही अगर वह बीमार आदमी कभी-कभी आलस कर जाता तो रविवार या छुट्टी के दिन खमेसरजी खुद उस बीमार व्यक्ति को अपनी मोटरसाइकिल पर बिठाकर अस्पताल ले जाते और दवा कराते।

खमेसरजी लोगों से तो बराबर कहा करते कि हमें पूजा-पाठ करते रहना चाहिए, नकारात्मकता से बचना चाहिए। ईश्वर है और वह हम सबका ख्याल रखता है, वही परम पिता है। पर साथ ही वे भूत-प्रेत, डाइन-चुडैल में एकदम विश्वास नहीं करते और कभी कोई बोल देता कि फलाँ को भूत पकड़ा है तो गुस्सा करते कि भूत-उत कुछ नहीं होता, यह सब मन का वहम है। और उस कथित भूत पकड़े हुए आदमी को ओझा-सोखा के पास न जाकर डॉक्टर के पास जाने की सलाह देते।

उनको लगता कि गाँव लोग बेकार में भूत-प्रेत में उलझे हुए हैं। शायद इसका कारण यह है कि गाँव में शिक्षा की कमी है। इसलिए वे गाँव-जवार में शिक्षा पर बहुत जोर देते और कहा करते कि दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच रही है, हम चाँद पर पहुँच चुके हैं और आप लोगों की मानसिकता अभी भूत-प्रेतों में उलझी हुई है। हमें इससे बाहर आना ही होगा। गाँव-जवार के लोग उनका बहुत ही सम्मान करते इसलिए जब वे कहते कि भूत-प्रेत कुछ नहीं होता तो कुछ लोग उनकी हाँ में हाँ मिला देते या कह देते, 'प्रिसिपल साहब, रउआँ ठीक कहतानी (आप ठीक कह रहे हैं)।'

पर खमेसरजी को भी लगता की अधिकांश लोग उनका मन रखने के लिए उनकी बात मान लेते हैं पर भूत-प्रेतों में पूरी तरह से विश्वास करते हैं। खमेसरजी के काका कवलेसजी तो बराबर खमेसरजी से कहते कि ज्ञानी होने, शिक्षित होने का मतलब यह कतई नहीं होता कि सत्य को झुठलाया जाए। अगर भगवान है तो भूत-प्रेत भी हैं और यह सत्य है कि भगवान है तो तार्किक रूप से भूत-प्रेत भी हैं ही। जो जीवित है, वह जीवन है और जो अतीत हो गए हैं, वे ही भूत हैं। पर हाँ, कुछ भूतों का उद्धार हो जाता है और कुछ अतृप्त होकर भटकते रहते हैं तथा साथ ही जो दुष्ट स्वभाव के होते हैं, वे जीवित लोगों को बहुत परेशान भी करते हैं। खमेसरजी अपने काका की बात तो सुन लेते पर कोई जवाब न देते हुए हँसकर रह जाते। जब खमेसरजी हँसते तो उनके काका कवलेसजी कहते कि आज तुम्हें मेरी बातों पर हँसी आ रही है पर एक न एक दिन तुम्हें भी भूतों का एहसास हो ही जाएगा। इसके साथ ही कभी-कभी खमेसरजी के काका कवलेसजी उन्हें अपने साथ घटी कोई भूतही घटना भी सुना देते।

एक बार की बात है। अपने काका कवलेसजी की एक भूतही घटना को सुनकर खमेसरजी बहुत ही हँसे थे, इतना हँसे थे कि उनके आँखों से आँसू निकल आए थे। उनकी ठहाके की हँसी उनके काका कवलेसजी को बहुत ही चुभ गई और फिर उनके काका ने उन्हें गुस्से में एक ऐसी जगह पर अकेले में जाने को कहा जहाँ उन्हें लगता था कि वहाँ कोई आत्मा, शक्ति रहती है। पहले मैं वह घटना सुना रहा हूँ जिसे सुनकर खमेसरजी खूब हँसे थे और फिर वह वृत्तांत बताऊँगा कि कवलेसजी ने खमेसरजी को कहाँ भेजा था और खमेसरजी के साथ क्या हुआ था? क्या खमेसरजी को भूत-प्रेत में विश्वास करना पड़ा?

कवलेसजी ने एक दिन खमेसरजी से कहा कि एक बार की बात है कि मैं और करिमन काका तरकुलवाँ से बाजार करके वापस घर आ रहे थे। काफी रात हो चुकी थी पर आकाश में चाँद अपने यौवन पर प्रकाशित था और उसकी चाँदनी उससे जुड़े रहकर भी जमीन पर आकर अपनी आभा बिखेर रही थी यानी भोजपुरी में कहूँ तो टहा-टह अँजोरिया (खूब चाँदनी उजाला) उगी हुई थी। मैं (कवलेसजी) साइकिल चला रहा था और करिमन काका साइकिल के पीछे कैरियर पर बैठे हुए थे। साइकिल के हैंडल में 3-4 झोले टंगे हुए थे जिनमें तरकारी, दाल, किराना का समान आदि था।

मैं उस चाँदनी रात में खुरहुरिया रास्ते से तेजी से साइकिल दौड़ाते हुए घर की ओर बढ़ा चला जा रहा था। जब मैं कंचनपुर और अपने गाँव के बीच की बड़की बारी (बड़ा बगीचा) से होकर गुजरने की कगार पर था तभी अचानक पता नहीं क्या हुआ कि साइकिल से हम दोनों पूरी तरह से गिर पड़े और वहीं बगीचे के किनारे एक खेत में, जो लगभग रास्ते से 10 मीटर की दूरी पर था और हाल ही में पटाया (पानी से भरा-सिंचाई किया हुआ) गया था, उसमें जा गिरे। साइकिल भी हम लोगों से 5-6 मीटर दूर छिटककर चली गई। अच्छा हुआ कि खेत में पानी था जिसके कारण हम लोगों को चोट नहीं आई पर हम लोग पूरी तरह से गीली माटी (मिट्टी) से सराबोर हो गए थे। पूरे शरीर में कानो-माटी लग गया था। झोलों के सारे सामान, झोलों को चिढ़ाते हुए, उनसे निकलकर गीली मिट्टी में मिलकर एकाकार हो गए थे। मैं स्तब्ध था कि आखिर न कुछ फिसलन थी और न ही साइकिल पर मेरा नियंत्रण ही छूटा था फिर इतनी दूर कैसे पहुँच गए? साइकिल से गिर कैसे गए? खैर, मैं उठा और करिमन काका को भी उठाया फिर साइकिल के पास आकर उसे भी स्टैंड पर खड़ी किया। इसके बाद वहीं नाली में जो थोड़ा-बहुत पानी था, उसमें अपने आप को धोया। गिरे हुए सामानों को उठाकर बिन धोए उन्हें फिर से झोलों में रखना शुरू किया। मैं सामान उठाने में लगा हुआ था और उधर क्या देखता हूँ कि करिमन काका मेरे पास में खड़े होकर धीरे-धीरे मुस्कुरा रहे हैं और चुनौटी (वह डिब्बा जिसमें तंबाकू और चुना रखते हैं) निकालकर सुर्ती (तंबाकू) बना रहे हैं। फिर मुझे तब और अचंभा हुआ, जब करिमन काका ने सुर्ती तो बनाई पर खाए नहीं और न ही मुझे ही दिए और फिर कुछ बुदबुदाते हुए उस बनाई हुई सुर्ती को वहीं गिरा (चढ़ा) दिए। फिर मेरा माथा ठनका और दिमाग पर जोर डालते ही सारी बात मेरी समझ में आ गई।

दरअसल हम लोगों के साइकिल पर से गिरने से पहले करिमन काका पीछे बैठकर मुझसे बात करते हुए ही चुनौटी निकालकर सुर्ती बनाए थे और बात ही बात में वे उस सुर्ती में से कुछ भाग चढ़ाए बिना ही मुझे भी दिए थे और खुद भी खा लिए थे और इसलिए उस बगीचे के एक भूत ने हम दोनों को साइकिल सहित ही उठाकर फेंक दिया था। दरअसल गाँव से दूर अगर कोई व्यक्ति सुर्ती (तंबाकू) बनाता है तो खाने से पहले उसका कुछ भाग वहाँ गिरा देता है ताकि अगर वहाँ कोई आत्मा आदि हो तो वह उसे ग्रहण कर ले।

जी हाँ, अपने काका कवलेसजी की यही घटना सुनकर खमेसरजी खूब हँसे थे और बार-बार कह रहे थे कि आपको भूत-उत ने नहीं फेंका, चूँकि आपकी रफ्तार बहुत तेज थी और इसलिए अनकंट्रोल होकर साइकिल फिसल गई और आप लोग दूर खेतों में जा गिरे। खमेसरजी के इसी तर्क से कवलेसजी को गुस्सा आ गया था क्योंकि उनका कहना था कि

गिरते तो वहीं आस-पास में गिरना चाहिए था। हम लोग 10-12 मीटर दूर कैसे चले गए?

खैर, अब आइए वह वृत्तांत सुनाता हूँ जिसमें इस घटना पर खमेसरजी के हँसने पर उनके काका कवलेसजी ने उन्हें कहाँ भेजा था और उनके (खमेसरजी के) साथ क्या हुआ था, का पता लगे। जब उपरोक्त घटना पर खमेसरजी हँसते ही चले जा रहे थे तो उनके काका कवलेसजी ने गुस्से में कहा कि अगर तुमको मेरी बात पर यकीन नहीं होता और तुम मानते हो कि भूत-प्रेत, अदृश्य शक्तियाँ नहीं होतीं, ये केवल मन के वहम हैं तो एक दिन रात में फलाँ (जिसकी जानकारी पहले से हो) पेड़ से कुछ पत्तियाँ तोड़कर ला दो।

अपने काका कवलेसजी की चुनौती को स्वीकार करते हुए उसी रात लगभग 10 बजे, जब गाँव-घर में सभी लोग खा-पीकर निद्रा माँ की गोद में समा गए थे और कुत्तों ने भी अपने भौं-भौं पर लगाम लगाते हुए इधर-उधर, किसी की घारी (मड़ई) में तो किसी के भुसौले में तो कोई-कोई किसी के खाट के नीचे पनाह ले लिए थे तो खमेसरजी घर से निकले। उनके एक हाथ में एक दुसेल्हिया (दो सेल वाली) बैटरी (टार्च) तो दूसरे हाथ में एक लाठी थी। वे अंधेरे में धीरे-धीरे गाँव के बाहर पूर्व दिशा की ओर निकले और पास में बहती नहर को पार करते हुए एक छोटे पर भयावह से बगीचे में दाखिल हुए। यह बगीचा एक छोटी-सी गढ़ही (तालाब) के किनारे था और इसमें मुश्किल से 15-20 पेड़ ही थे, पर आस-पास में बँसवारियों (बाँसों का थान) का खजाना था। खमेसरजी निडर मन से आगे बढ़ें और उस बगीचे के बीच में शोभायमान एक जंगली पौधे से कुछ पत्तियाँ तोड़ने ही वाले थे कि अचानक बगीचे में आँधी जैसा बवंडर उठा और पेड़ों की डालियाँ आपस में टकराते हुए डरावनी आवाज़ करने लगीं। पर खमेसरजी तो एकदम ही निडर थे। वे बिना देर किए आगे बढ़े और लपककर उस पेड़ से कुछ पत्ते तोड़ लिए। अरे, यह क्या पत्ते तोड़ते ही अचानक उस जंगली पेड़ पर एक लुकारा (प्रकाश) जैसा उठा और खमेसरजी की ओर तेजी से बढ़ा। अब भी खमेसरजी निडर ही थे और पीछे की ओर हटकर गाँव की ओर के रास्ते की ओर चल पड़े। अरे यह क्या, वे कुछ समझ पाते इससे पहले ही वह लुकारा तेजी से उनकी तरफ आया और उनसे टकरा गया। लुकारा के टकराते ही वे वहीं गिर गए। अब तो खमेसरजी पूरी तरह से पसीने-पसीने हो गए थे क्योंकि वे ज्योंही उठने की कोशिश करते वह लुकारा उनसे टकरा जाता और वे गिर जाते।

उस छोटे से बगीचे का माहौल पूरी तरह से डरावना हो गया था क्योंकि पेड़ों की डालियों की चरमराहट थमने का नाम ही नहीं ले रही थी और उस बगीचे में पनाह लेने वाले पक्षी भी अब पूरी तरह से डरकर चीं-चूँ करना शुरू कर दिए थे। शायद उन्हें किसी अनहोनी का आभास हो गया था। अब तो खमेसरजी की बोलती जैसे बंद ही हो गई हो, पर फिर भी वे थोड़ी हिम्मत किए और वहीं जमीन पर पड़े ही पड़े मन ही मन हनुमान चालीसा का पाठ करने लगे। धीरे-धीरे डालियों की टकराहट थमती नजर आई और अचानक उनके सामने एक विशालकाय, जगमगाती शरीर वाली एक शक्ति प्रकट हो गई। उस शक्ति ने क्रोधपूर्ण आवाज़ में कहा कि आज तो तुम्हें हनुमानजी और तुम्हारे पूजा-पाठ ने बचा लिया पर ऐसी गुस्ताखी फिर मत करना नहीं तो आगे फिर कभी तुम्हें क्षमा नहीं किया जाएगा और तुम्हारी गुस्ताखी की सजा तुम्हें अवश्य दी जाएगी।

बेचारे खमेसरजी वहीं चुपचाप बेसुध पड़े रहे और हाथ जोड़कर उस शक्ति की ओर

देखने की कोशिश करते रहे। जी हाँ, वे नेटुआबीर बाबा ही थे, जो उसी जंगली पेड़ पर रहते थे जिसकी पत्तियाँ खमेसरजी ने तोड़ने की गुस्ताखी की थी। वैसे भी गाँव आदि में रात में कोई भी किसी पेड़ से पत्ती आदि नहीं तोड़ता है और मजबूरीवश अगर तोड़ना भी पड़े तो पहले उस पेड़ को, पौधे को नमस्कार करता है और फिर अपनी मजबूरी बताते हुए, प्रार्थना करते हुए पत्ते आदि तोड़ता है।

अब नेटुआबीर बाबा फिर से अपने आवास रूपी उस जंगली पेड़ पर चले गए थे और वह बगीचा फिर से पूरी तरह शांत हो गया था। खमेसरजी अभी भी वहीं पड़े हुए थे क्योंकि उनमें उठने की हूब नहीं रह गई थी और साथ ही काफी डर भी गए थे। तभी अचानक खमेसरजी क्या देखते हैं कि उनके काका कवलेसजी भी वहाँ पहुँच चुके हैं और बाँह पकड़कर उन्हें उठाने की कोशिश कर रहे हैं। धीरे-धीरे उठते हुए, पसीने से पूरी तरह भीगे हुए खमेसरजी ने रोवांसूँ मन से (रोनी सूरत बनाकर) पूछा कि काका आप कब आए तो कवलेसजी ने कहा कि तू घर से ज्यों निकला, चुपके से मैं भी तुम्हारे पीछे हो लिया था। ताकि तुम्हारे साथ कोई अनहोनी होने पर मैं वहाँ तुम्हारे साथ रहूँ और तुम्हारी सहायता कर सकूँ। उनके काका ने आगे यह भी कहा कि मुझे पूरा यकीन था कि नेटुआबीर बाबा तुम्हें ज्यादा परेशान तो नहीं करेंगे पर तुम्हें सबक अवश्य सिखाएँगे ताकि भविष्य में तू फिर ऐसी गुस्ताखी न करे।

फिर कवलेसजी ने अनुनय-विनय के रूप से हाथ जोड़कर उस जंगली पेड़ की ओर मुड़कर नेटुआबीर बाबा को प्रणाम किए और खमेसरजी का हाथ पकड़कर बैटरी दिखाते हुए घर की ओर चल पड़े। घर आने के बाद भी 2-3 दिन तक खमेसरजी की तबीयत अच्छी नहीं थी। कभी-कभी वे अक-बक बोलने लगते थे तो कभी-कभी उलटे-पुटले काम करने लगते थे। रह-रहकर बुखार से उनका शरीर भी तपने लगता था।

एक दिन सुबह-सुबह नहा-धोकर कवलेसजी, नेटुआबीर बाबा के थान पर पहुँचे। नेटुआबीर बाबा के पेड़ के नीचे वे जेवनार (खीर) चढ़ाए और अपने भाँजे की ग़लती के लिए क्षमा माँगी। इसके साथ ही अपने साथ लाए हुए कोरे लंगोट को भी नेटुआबीर बाबा की जयकार करते हुए उस पेड़ पर बाँध दिए। इस घटना के बाद से खमेसरजी का भी भूत-प्रेतों पर विश्वास पक्का हो गया था क्योंकि अब तो उनका खुद का पाला ऐसी शक्ति से, ऐसी आत्मा से पड़ चुका था। वैसे भी भोजपुरी में कहते हैं कि 'कहि सुनाई की आँखीं देखाई (कह सुनाऊँ की आँखों देखाऊँ)' और कवलेसजी ने अपने भतीजे को आँखों दिखाना ही उचित समझा था।

यह कहानी तो यहीं समाप्त होती है पर अगली कहानी में बताऊँगा कि नेटुआबीर बाबा कौन थे? वे प्रेत-योनि में कैसे आए और साथ ही उनसे जुड़ी कुछ और घटनाएँ जो मैंने अपने गाँव वालों से सुन रखी है।

नेटुआबीर बाबा – 2

बात लगभग 80-90 साल पुरानी होगी। तब यह बगीचा बहुत ही घना और बड़ा होने के साथ ही बहुत डरावना भी हुआ करता था। यह बगीचा इतना घना होता था कि केवल ठीक दोपहर के समय ही सूर्यदेव का प्रकाश कहीं-कहीं इसकी जमीन को छूने में सफल हो पाता था, नहीं तो दिन में भी इसमें अंधेरा ही छाया रहता और हल्की बेयार भी एक रोमांचक सिहरन पैदा कर देती। चरवाहों के झुंड अपने मवेशियों को लिए इस बगीचे में भी आ जाते थे। पेड़ों की छाया में मवेशियों को आराम मिलता तो चरवाहे चिक्का-कबड्डी, ओल्हा-पाती आदि खेलने में मशगूल हो जाते। गाँव के कुछ लोग लगगी लेकर इस बगीचे में आते थे और जलावन के लिए सूखी लकड़ियाँ तोड़ते थे। यह बगीचा कितना भी डरावना, भयानक क्यों न हो पर वास्तव में यह गाँव वालों के दुख-सुख का साथी था। गाँव वालों की कई ज़रूरतों को पूरा करता था यह बगीचा। गाँव वालों को बिना इस बगीचे में आए चैन भी तो नहीं पड़ता था। और पड़े भी क्यों, यह बगीचा तो उनके ग्रामीण जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका था। इतना ही नहीं, इस बगीचे के आस-पास में 2-3 गढ़हियाँ (तालाब) थीं, जहाँ मवेशियों को भरपूर पानी मिल जाता और चरवाहे या गाँव के बच्चे भी छक-छक कर नहाते और छुआ-छुआवल, पौराक आदि जैसे खेल खेलते। हाँ, यह अलग बात थी कि इस बगीचे में दिन में भी कोई अकेले जाना पसंद नहीं करता और जब कभी इस बगीचे से होकर अकेले जाना पड़ता तो वह तेजी से निकलते हुए गाँव के देवी-देवताओं के साथ ही हलुमान जी (हनुमानजी) को गोहराते रहता। आम आदि तोड़ने के लिए बच्चे तो गोल बनाकर (समूह में) ही इस बगीचे में जाते और दिन डूबने से पहले घर भाग आते। खर-खर दुपहरिया में इस बगीचे की ओर जाने की हिम्मत तो कोई गँवई दिखा नहीं पाता तो रात को भला कौन जाए!

एक बार की बात है कि इसी बगीचे में नेटुआओं (एक घुमक्कड़, खानाबदोश जनजाति) का एक समूह (3-4 परिवार) अपना डेरा डाले हुए था। ये नेटुआ लोग छोटे-छोटे जीवों जैसे कि साही, खरगोश आदि का शिकार भी करते थे और साथ ही साथ मधु आदि निकालकर भी बेचते थे। इतना ही नहीं कुछ युवा नेटुआ गाँव-गाँव घूमकर सर्कस का खेल भी दिखाते थे और इस प्रकार से अपनी रोजी-रोटी का इंतजाम करते थे। (नेटुआ जाति बहुत ही वीर और निडर मानी जाती है तथा साथ ही बहुत ही मेहनती भी।)

बगीचे में आए नेटुआओं के झुंड का एक सरगना भी था जिसकी बड़ी-बड़ी रोबदार मूँछें थीं और उसकी उम्र लगभग 45-47 वर्ष की रही होगी। वह बहुत ही हँसमुख और बुद्धिमान था। सारे नेटुआ-नेटुआइन उसकी बात मानते थे। इतना ही नहीं, जब नेटुआ लोग अपने-अपने कामों पर निकल जाते तो यह सरगना उस बगीचे में रहकर नेटुआइनों (महिलाओं) और उनके बच्चों की देख-रेख करता और उनकी आपसी कटुता को दूर करने का प्रयास भी करता। हर नेटुआ या नेटुआइन अपने उस सरगना की बहुत ही कद्र करते और उसकी हर बात मानते। यहाँ तक वह सरगना ही अपने दल के लोगों के काम का बँटवारा भी करता। नेटुआओं का यह सरगना इतना मिलनसार था कि पास के गाँव के कई लोग उसके पास आते और उससे बहुत सारी बातें करते। अगर किसी को सूखी लकड़ी चाहिए होती तो यह

नेटुआ सरगना अपने किसी आदमी को लगाकर बहुत सारी सूखी लकड़ियाँ भी तुड़वा दिया करता। कभी-कभी तो गाँव के लोग कुछ खाने-पीने की चीजें भी लाकर उस नेटुआ सरगना को दे जाते।

दिन ऐसे ही बीत रहे थे और नेटुआओं का झुंड अभी भी उसी बगीचे में डेरा जमाए हुए था। एक रात की बात है। कुछ चोरों ने गाँव में चोरी की और धन का हिस्सा लगाने के लिए उसी बगीचे में आ गए। नेटुआओं के कुछ कुत्ते भौंकते हुए उन चोरों की दिशा में चल दिए। तभी एक किशोरी नेटुआइन जग गई और वह भी बिना किसी को जगाए कुत्तों के पीछे-पीछे हो ली। (फिर से यह बताना आवश्यक है कि नेटुआ लोग बहुत ही वीर और निडर स्वभाव के होते थे तथा महिलाएँ भी बहुत निडर और वीर हुआ करती थीं।) अपने डेरे (ठहरने के स्थान) से लगभग आधा कोस दूर बगीचे के दक्खिन तरफ उसे कुछ सुगबुगाहट सुनाई दी। अभी वह कुछ समझ पाती इससे पहले ही दो चोरों ने उसे पकड़ लिया पर वह अपनी वीरता से उन्हें पछाड़ने पर आमदा थी। अब तो कुत्तों के भौंकने की आवाज़ और भी तेज हो गई थी। तभी अचानक बल्लम (एक हथियार) लिए नेटुआओं का सरगना भी वहाँ आ गया। वहाँ आते ही वह चोरों पर टूट पड़ा और एक-एक कर लगा उन चोरों को मारने-पीटने। चोरों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उन्होंने उस नेटुआ किशोरी को तो छोड़ दिया पर अचानक से उन सभी चोरों ने एक साथ अपने हाथों में हथियार लिए उस नेटुआ सरगना पर धावा बोल दिया। उन्होंने हथियारों से नेटुआ सरगना पर इतने वार किए कि अंततः उस नेटुआ सरगना के पूरे शरीर में घाव हो गए। खून से वह पूरी तरह लथपथ हो गया। नेटुआ किशोरी दौड़कर अन्य नेटुआओं को बुलाकर लाती तब तक चोर, सब चोरी का सामान वहीं छोड़कर भाग गए थे। पर उन नेटुआओं के सिर पर आपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा था। वे सब बिलख-बिलख कर रोने को मजबूर हो गए थे क्योंकि चोरों के गंभीर मार से नेटुआओं के सरगना के प्राण-पखेरू उड़ गए थे।

सुबह होते ही यह खबर गाँव वालों को भी पता चली। पूरा गाँव उस बगीचे में एकत्र हो गया। नेटुआओं के सरगना को उसी बगीचे में एक तालाब के किनारे ससम्मान, आँखों में आँसू लिए, उसकी वीरगाथा को याद करते हुए अंतिम विदाई दी गई। गाँव वालों के चोरी गए सामान भी उन्हें वापस मिल गए पर गाँव वालों को अपने सामान से अधिक उस नेटुआओं के सरगना का जाना अखर रहा था। कहते हैं कि उस दिन वह नेटुआओं का झुंड भी अपना सामान समेटकर पता नहीं किस ओर निकल गया। अब बगीचा भी एकदम से सुनसान होकर उस नेटुआ सरगना की याद में गमगीन हो गया था।

इस घटना को बीते अभी 35-40 दिन ही हुए होंगे कि उसी नेटुआ समुदाय के कुछ नेटुआ फिर से उस गाँव में आ गए। उन नेटुआओं ने गाँव वालों को बताया कि उनके मृत सरगना (नेटुआबीर बाबा) उनके सपने में आए थे और उन लोगों से कहे कि वे उस बगीचे में ही फलां पेड़ पर अपना डेरा जमाए हुए हैं। फिर गाँव वालों के साथ वे नेटुआ लोग उस बगीचे में उस पेड़ के पास आए और कुछ पूजा-पाठ किए। जी हाँ, अब वह पेड़ पूरी तरह से नेटुआबीर बाबा के सम्मान में सम्मानित हो गया था और उस पर बँधे नए-नए लंगोट लहराते हुए नेटुआबीर बाबा की गौरव-गाथा को नमन करने लगे थे। अब वह पेड़ सम्मान का सूचक बन गया था। अब जब भी कोई ग्रामीण उस बगीचे में जाता तो उस पेड़ के

सामने अपना सिर ज़रूर झुकाता और नेटुआबीर बाबा की जय-जय बोलता। गाँव के कुछ लोग तो वहाँ बराबर जेवनार आदि भी चढ़ाया करते। इतना ही नहीं, अब तो गाँव में जब भी कोई धार्मिक आयोजन होता तो नेटुआबीर बाबा को ज़रूर याद किया जाता।

3 महीनों के बाद एक और ऐसी घटना घटी कि ग्रामीणों के दिल में नेटुआबीर बाबा के प्रति जो अपार सम्मान, श्रद्धा थी, वह और भी बढ़ गई। हुआ यूँ कि गाँव में फिर से चोरी हो गई। इस बार चोरों ने 5-6 घरों को निशाना बनाया था। चोरों की संख्या लगभग 12-14 थी। चोरी करने के बाद वे लोग चोरी का सामान लेकर फिर उसी बगीचे की ओर भागे। समय यही कोई आँधी रात रही होगी। तभी गाँव के कुछ लोग भी जग गए और गाँव में हल्ला मच गया कि कई घरों में चोरी हो गई है। फिर क्या था, गाँव वाले भी हाथ में लाठी-भाला आदि लिए उस बगीचे की ओर दौड़ पड़े। पर बगीचा इतना घना और बड़ा था कि चोर किधर छिपे हैं, इसका पता चल पाना बहुत ही मुश्किल था। सभी गाँव वाले बगीचे के बाहर खड़े होकर सोच रहे थे कि क्या किया जाए, चोरों को किधर ढूँढा जाए? तभी बगीचे में एक बहुत ही भयानक, दिलों को कँपा देने वाला बहुत बड़ा लुकारा (प्रकाश का गोला) उठा। ऐसा लगा कि पूरा बगीचा ही जलकर भस्म हो जाएगा। उस लुकारे के प्रकाश में पूरा बगीचा नहा रहा था। बहुत ही डरावना माहौल बन गया था। बहुत ही तेज हवा भी चलने लगी थी और पेड़ों की डालियाँ आपस में टकराकर भयंकर आवाजें पैदा करने लगी थीं। गाँव वाले भी डरकर वहीं नेटुआबीर बाबा को गोहराने लगे थे। तभी क्या हुआ कि चोरों का समुदाय बगीचे में से भागते हुए गाँव की ओर निकला और पास में ग्रामीणों को खड़ा देखकर सारा सामान उनके आगे फेंक दिया। इतना ही नहीं वे सारे चोर उन ग्रामीणों के आगे हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगे कि उन्हें बचा लिया जाए।

अभी गाँव वाले कुछ समझ पाते तभी उन चोरों के पीछे कुछ दूरी पर उन्हें बार-बार भयंकर लुकारा उठते हुए दिख रहा था। साथ ही एक भयानक, विशाल शरीर भी, जिसके दोनों हाथों में दो मोटी-मोटी डालियाँ थीं। गाँव वाले तो एकदम से स्तब्ध। चोर गिड़गिड़ाए जा रहे थे कि उन्हें बचा लिया जाए। फिर गाँव वालों को लगा कि ये तो नेटुआबीर बाबा ही हो सकते हैं। फिर क्या था, सब लोग नेटुआबीर बाबा के सामने नतमस्तक हो गए। धीरे-धीरे लुकारा उठना बंद हुआ और वह विशाल शरीर गायब हो गई। सामान के साथ ही चोरों को पकड़कर गाँव में लाया गया और उन्हें पुलिस को सौंप दिया गया।

इस घटना के बाद से गाँव वालों के लिए नेटुआबीर बाबा रक्षक बन गए एवं गाँव वाले उनके और भी परम भक्त। अब तो उस बगीचे में आस-पास के गाँव वाले भी जेवनार चढ़ाते, साथ ही किर्तन आदि का आयोजन भी करते। इतना ही नहीं, अब तो गाँव-जवार, जिले के लोग नेटुआबीर बाबा के दर्शन के लिए आने लगे थे और उस बगीचे में रोज़ मेला जैसा लगने लगा था।

खैर, अब यह बगीचा अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहा है। बहुत कम पेड़ बचे हैं। यह बगीचा लोगों के फालतू के स्वार्थ की भेंट चढ़ गया है। अब आइए, आपको एक और घटना सुनाता हूँ।

यह कोई 6-7 साल पहले की ही बात है। रोपनी लगी हुई थी। दोपहर का समय था। सारे रोपनिहा मजदूर अब के इस छोटे बगीचे (जिसमें नेटुआबीर बाबा का वास है) में आराम फरमा रहे थे। अचानक एक मजदूर को पता नहीं क्या सूझी कि उसने उठकर सूती (तंबाकू) बनाई और बिना नेटुआबीर बाबा को चढ़ाए खा गया। खाने के बाद गुस्ताखी में उसने नेटुआबीर बाबा के आवास वाले पेड़ पर उस खाई हुई सूती (तंबाकू) को थूककर जोरों से हँसा। वह इतने जोर से हँसा की वहाँ आराम फरमा रहे बाकी मजदूर भी उठकर बैठ गए और उस मजदूर से हँसने का कारण पूछने लगे। उस मजदूर ने कहा कि तुम लोग बेकार में इस नेटुआबीर बाबा को सम्मान देते हो। यहाँ कोई बाबा-ओबा नहीं है, और अगर है भी तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। फिर उसने गुमान में एक भोजपुरी कहावत भी कह सुनाई, “नीक रही करम, त का करिहें बरम (कर्म अच्छा रहेगा तो कोई देवी-देवता भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते)।” पर वह भूल चुका था कि इस कहावत में अच्छे कर्म की बात कही गई है, न कि ग़लत काम करने की। उसने जो किया था, वह पूरी तरह से ग़लत ही था।

अरे यह क्या, इतना कहते ही वह बार-बार नेटुआबीर बाबा के आवास वाले पेड़ पर थूकने लगा। मजदूर उसे समझाने की कोशिश कर रहे थे पर वह हँसते हुए थूके जा रहा था। अचानक कोई कुछ समझ पाए इससे पहले ही उस पेड़ पर एक बवंडर उठा। सारी डालियाँ आपस में टकराने लगीं और वहाँ का माहौल पूरी तरह से डरावना हो गया। उस खड़-खड़ दुपहरिया में भी उस पेड़ से स्पष्ट लुकारे (प्रकाश के गोले) उठते हुए दिखने लगे। सभी मजदूर डर गए। सब की सिट्टी-पिट्टी गुम और रोएँ खड़े हो गए। साँस अटक-अटक कर तेज होने लगी।

अचानक मजदूर क्या देखते हैं कि वह पेड़ पूरी तरह से नीचे से ऊपर तक हिलने लगा। ऐसा लगा कि कोई भारी-भरकम जीव, सरसराहट के साथ तेजी से उस पेड़ से उतर रहा है। मिनटों नहीं लगे और मजदूरों ने देखा कि मूर्खता, मनबढ़ई करने वाला वह मजदूर बार-बार उसी पेड़ के नीचे पटका जा रहा है, पर पटकने वाला दिख नहीं रहा है। हवा भी बहुत ही तेज व डरावनी हो गई थी। कोई कुछ समझ नहीं पा रहा था। तभी एक बुजुर्ग मजदूर ने नेटुआबीर बाबा को गोहराते हुए क्षमा-याचना करनी शुरू कर दी। फिर क्या था, सभी मजदूर रोते-चिल्लाते नेटुआबीर बाबा की जयकार लगाने लगे। धीरे-धीरे उस बगीचे का भयानक रौद्र रूप शांत हुआ पर वह मनबढ़ मजदूर अब पूरी तरह से बेहोश हो चुका था।

एक मजदूर ने उसके मुख पर पानी के छिंटे मारे फिर भी कुछ असर नहीं हुआ। फिर उसे उठाकर गाँव में ले जाया गया। उस मजदूर के घर वाले उसी समय उस बगीचे में आए तथा नेटुआबीर बाबा को जेवनार व लंगोट चढ़ाए तथा क्षमा-याचना की। उस मनबढ़ मजदूर को ठीक होने में महीनों लग गए। उसे पूरी तरह से भीतरघाव (अंदर लगा घाव) लगा था। पर अब हालत ऐसी है कि वह मजदूर पूरी तरह से नेटुआबीर बाबा का भक्त, कायल बन चुका है। प्रेम से बोलिए नेटुआबीर बाबा की जय।

नेटुआबीर बाबा – 3

पिछली दो कहानियों में आपको अच्छी तरह से नेटुआबीर बाबा से परिचय करा दिया गया है तथा साथ ही यह भी बता दिया गया है कि नेटुआबीर बाबा कौन थे? संक्षिप्त में कहें तो नेटुआबीर बाबा जाति के नेटुआ थे और एक लड़की को बलात्कारियों से बचाने में अपनी जान दे दी थी। खैर आइए, नेटुआबीर बाबा की एक और रोमांचक कहानी का आनंद उठाते हैं।

हमारे गाँव में महेसर साधु हुआ करते थे। महेसर साधु थे तो गृहस्थ, पर पूरी तरह से साधु का जीवन जीते थे। कभी भी किसी का अहित नहीं करते और अपने बेंवत (सामर्थ्य) अनुसार लोगों की मदद कर देते। महेसर साधु बराबर तीर्थों की यात्रा करते रहते या दूसरे गाँव आदि के मंदिरों, देवथानों पर चले जाते। वे बहुत अच्छा प्रवचन भी करते थे। पर महेसर साधु जब भी गाँव में रहते, प्रतिदिन सुबह नहा-धोकर नेटुआबीर बाबा के थान पर जाकर अगरबत्ती आदि दिखाना नहीं भूलते। कुछ लोग तो कहते हैं कि महेसर साधु पर नेटुआबीर बाबा की पूरी कृपा थी। कभी-कभी महेसर साधु नेटुआबीर बाबा का नाम लेकर झाड़-फूँक कर देते तो छोटी-मोटी व्याधियाँ भी एकदम से ठीक हो जातीं। नेटुआबीर बाबा के चलते ही महेसर साधु रात-बिरात कहीं भी, जंगल आदि में भी, सुनसान जगहों पर भी बेखौफ घूमा करते। क्योंकि कहा जाता है कि उनके साथ बराबर नेटुआबीर बाबा रहते और उनकी रक्षा करते।

महेसर साधु का एक ही लड़का था, घसीटन। घसीटन बहुत ही भोला-भाला था। अभी आठवीं में पढ़ता था तभी उसकी शादी हो गई थी। खैर, मिडिल पास करने के बाद उसने पढ़ाई भी छोड़ दी थी और खेती-बारी में अपने माता-पिता का हाथ बँटाता था। समय बीता और धीरे-धीरे करके घसीटन के भी दो बच्चे हो गए। इधर करवट लेते समय के साथ महेसर साधु भी बुजुर्ग हो चले। अब तो घर की सारी जिम्मेदारी घसीटन पर आ गई। खेती-बारी से अब घर का खर्च चलना बहुत मुश्किल हो गया था।

एक दिन की बात है कि महेसर साधु की जिद पर घसीटन उन्हें पिठइयाँ (पीठ पर बैठाकर) लेकर नेटुआबीर बाबा के थान पर पहुँचा। महेसर साधु की आँखों से आँसू बह रहे थे और अपने काँपते हाथों से अगरबत्ती दिखाते हुए उन्होंने काँपते होंठों से कहा, “नेटुआबीर बाबा, अब बुढ़ौती आ गई है! शरीर पूरी तरह से जवाब दे गया है। हाथ-पैर भी काम नहीं कर रहे, जिसके चलते अब आपके दर्शन कर पाना संभव नहीं। पर आप अपनी कृपा बनाए रखिएगा मुझपर, मेरे परिवार पर और साथ ही पूरे गाँव वालों पर।”

इतना कहते-कहते महेसर साधु नेटुआबीर बाबा के थान पर मुड़ी पटक दिए। अरे यह क्या, चमत्कार हो गया, चमत्कार। अचानक नेटुआबीर बाबा के थान वाले पेड़ में हलकत हुई। वह पूरी तरह से हिलने लगा और देखते ही देखते एक तेलनुमा पदार्थ उस पेड़ से गिरकर जमीन पर पसरने लगा और साथ ही उस तेल से महेसर साधु भी नहा उठे। पास में ही खड़ा घसीटन दौड़कर महेसर साधु के पास पहुँचा और उन्हें उठाकर अपने गमछे से पोंछने लगा। महेसर साधु को पोंछने के बाद घसीटन ने उनसे कहा कि अब तो पूजा हो गई न। आइए, मैं आपको पिठइयाँ लेकर घर चलता हूँ। घसीटन के इतना कहते ही महेसर साधु

ने कहा कि तुम्हारा हाथ पकड़कर कुछ दूर धीरे-धीरे पैदल चलता हूँ और फिर जब संभल नहीं पाऊँगा, पिठइयाँ हो जाऊँगा। पर यह क्या महेसर साधु को तो अब अपने निर्जीव से पड़े शरीर में काफी जान, ताकत आती नजर आई। जब वे घसीटन का हाथ पकड़कर खड़ा हुए तो पता नहीं क्यों उन्हें लगा कि अब तो उनके शरीर में पूरी जान आ गई है। उस तैल का चमत्कार था या नेटुआबीर बाबा का, पर महेसर साधु के पूरे शरीर में जान आ गई थी और अब वे आराम से खड़े हो सकते थे। महेसर साधु को अचानक पता नहीं क्या हुआ कि नेटुआबीर बाबा की जय बोलते हुए वे अपने लड़के से अपना हाथ छुड़ाए और बोल पड़े, “देखता क्या है, जल्दी से इस गिरे तेल को इकट्ठा कर लो।”

पर तेल बचा कहाँ था! उसे तो जमीन ने सोख लिया था और कुछ नीचे गिरे पत्तों आदि पर पसरा पड़ा था। खैर, घसीटन और महेसर साधु ने उन पत्तों के साथ ही लकड़ी से खोद-खोदकर वहाँ की ऊपरी मिट्टी को गमछे में बाँधकर घर लाए।

कहा जाता है कि उस मिट्टी आदि को कितने ही बुजुर्ग आदि के शरीर, हाथ, पैर पर रगड़ा गया और वे सारे के सारे लोग एकदम से चुस्त-दुरुस्त हो गए। यहाँ तक कि गाँव में लकवा से पीड़ित दो लोग भी इस मिट्टी के मलने से एकदम ठीक हो गए। अब तो महेसर साधु फिर से अपनी खेती-बारी का काम देखने लगे और प्रतिदिन नेटुआबीर बाबा के थान पर जाकर पूजा-पाठ करने लगे।

महेसर साधु के स्वस्थ होते ही उनका लड़का घसीटन काम की तलाश में शहर आ गया। शहर में आकर वह एक कारखाने में काम करने लगा। एक बार की बात है कि नाइट शिफ्ट करने के बाद वह साइकिल से अपने क्वार्टर पर जा रहा था। रात के दो बजे थे और उसी दिन उसे उस महीने की तनख्वाह भी मिली थी। वह तनख्वाह को लुंगी के खूंट में बाँधे तेजी से साइकिल चलाता हुआ बढ़ा जा रहा था। आगे सुनसान जगह पर उसे कुछ चोरों ने रोक लिया। देखते ही देखते चोरों ने उसकी साइकिल छीन ली और साथ ही उसके रुपए-पैसे भी। चोर उसको वहीं एक पेड़ से बाँधकर ज्यों ही आगे बढ़ना चाहे कि तभी एक लुकारा जैसा उठा और उस रोशनी में वह पूरी सुनसान एरिया नहा उठी। इतना ही नहीं वह लुकारा इतना विभत्स और डरावना था कि सारे चोरों के शरीर में सरसरी दौड़ गई और उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। इतना ही नहीं, देखते ही देखते एक अनजान हाथ उन चोरों के गालों पर तड़ातड़ बरसने लगा। बेचारों का मुँह पूरी तरह से लाल हो गया। कुछ के मुँह से खून भी आ गया। इसके बाद चोर और कुछ समझ पाते कि वहाँ एक डरावनी आवाज़ गूँजी और आवाज़ के निर्देशों के अनुसार चोरों ने घसीटन से माफी माँगते हुए उसके पैसे-साइकिल आदि वापस कर दिए।

तो अब बताने की ज़रूरत नहीं कि वे नेटुआबीर बाबा ही थे जो घसीटन की मदद करने आए थे।

कहा जाता है कि नेटुआबीर बाबा बराबर घसीटन की मदद किया करते थे। कभी-कभी अपनी पाली बजाने के बाद जब वह रात को अपनी साइकिल लिए अपने क्वार्टर की ओर रवाना होता था तो कुत्ते, बिल्ली आदि के रूप में कभी-कभी नेटुआबीर बाबा उसके साइकिल के आगे-पीछे भागते दिखाई देते थे। एक बार की बात है कि घसीटन

साइकिल खराब होने की वजह से रात को पैदल ही क्वार्टर जा रहा था। रास्ते में एक जहरीला नाग फन फैलाए बैठा था। अभी वह नाग घसीटन को डँसता, उससे पहले ही एक नेवले ने आकर उस नाग को पकड़ लिया। कहा जाता है कि नेवले के रूप में वे भी नेटुआबीर बाबा ही थे।

नेटुआबीर बाबा का एक और किस्सा सुनाने के बाद मैं अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगा। विराम यानी इस कहानी का समापन करना चाहूँगा। कहते हैं कि एक बार घसीटन छुट्टी लेकर घर आना चाहता था पर उसका मैनेजर उसे छुट्टी देने में नानुकुर कर रहा था। कहा जाता है कि नेटुआबीर बाबा एक साधु का रूप बनाकर उस मैनेजर के पास पहुँचे और उसे अपनी करामात दिखाते हुए समझाए कि अगर खसीटन को परेशान किया तो तेरी खैर नहीं। उसके बाद से वह मैनेजर घसीटन को बहुत मानने लगा था। तो बोलिए नेटुआबीर बाबा की जय।

नेटुआबीर बाबा – 4

भूत-प्रेत, चुड़ैल, जिन्न ब्रह्मपिचाश आदि का नाम सुनते ही मानव मन कौतुहल से भर जाता है। वैसे भी जो भी रहस्यमयी बातें, घटनाएँ होती हैं, वे मानव मन को अपने आगोश में जल्दी ही ले लेती हैं। खैर, इस प्रकार की बातें, घटनाएँ पढ़ने वाले या फिल्म आदि के माध्यम से देखने वाले के लिए रोमांचकारी हो सकती हैं, कभी-कभी डर भी पैदा कर सकती हैं पर जरा सोचिए, उस पर क्या बीतती होगी जिसके साथ कोई ऐसी घटना घटित होती होगी या हुई होगी? वैसे भी कभी-कभी इन बातों आदि का इतना प्रभाव पड़ जाता है कि व्यक्ति परेशानी में पड़ जाता है।

मैं तो बार-बार अपनी यही बात दुहराता रहता हूँ कि अगर भगवान का अस्तित्व है तो भूत-प्रेतों का क्यों नहीं? जहाँ सकारात्मकता होती है, वहाँ नकारात्मकता होती ही है। जहाँ सुख होता है, वहाँ दुख के भी अनुभव किए जाते हैं। इसका कारण यह है कि ऐसी बहुत सारी अवस्थाएँ हैं जो अपने एक से अधिक या यूँ कह लें कि अपनी विपरीत अवस्था में भी अपने अस्तित्व को बनाए रखती हैं। अब देखिए न, अच्छाई है तो बुराई भी है; प्रकाश है तो अंधकार भी है; सुर हैं तो असुर भी है।

खैर, यह तो एक पक्ष हुआ पर एक दूसरा पक्ष भी है। वह यह कि जैसे इंसान आदि हैं, बहुत सारे सूक्ष्म जीव आदि हैं, वैसे ही भूत-प्रेत भी हैं और बिना जाने, बिना विचारे, अपने ज्ञान का रौब दिखाते हुए, अपनी वैज्ञानिकता सिद्ध करते हुए इन्हें झुठलाया तो जा सकता है पर उसे आप कैसे समझा सकते हैं, उस पर आप अपने विज्ञान का जादू कैसे चला सकते हैं, जिसने ऐसी रहस्यमयी घटनाओं को, हृदय को कँपा देने वाली घटनाओं को अपनी आँखों से देखा हो या ऐसी घटनाओं से गुजरा हो या ऐसी परिस्थिति से खुद ही निपटा हो? तो फिर मैं वही बात कह रहा हूँ कि मुझे लगता है कि कहीं न कहीं कुछ ऐसे जीव, प्राणी आदि हैं जिनके किसी रूप को, स्वरूप को भूत-प्रेत आदि कहा जाता है और कुछ लोगों को इनका भान भी है। एक बात और कहना चाहूँगा, मैं दावे के साथ यह भी नहीं कह सकता कि भूत-प्रेत होते ही हैं। पर भूत-प्रेत नहीं होते, यह भी मानने को मेरा मन तैयार नहीं क्योंकि मैंने अपने गाँव-जवार में भूत-प्रेत, पिशाचों, चुड़ैलों आदि के इतने सारे किस्से सुन रखे हैं कि मेरी आत्मा इन आत्माओं के अस्तित्व को नकार नहीं पाती और साथ ही काफी मनन-चिंतन करने के बाद, तार्किक और अतार्किक विचार के बाद ऐसा लगने लगता है कि भगवान है तो शैतान भी होगा ही, चाहें वह भले हम मानवों के रूप में ही क्यों न हो।

मूल कहानी पर आने से पहले, अपने जवार (आस-पास के गाँव) की एक ऐसी सुनी हुई घटना बता रहा हूँ, जो यह भी सिद्ध करती है कि हमें अंधविश्वासी भी नहीं होना चाहिए और केवल सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। भगवान ने विवेक दिया है तो हमें विपत्ति-काल में भी धैर्य से अपने विवेक का उपयोग करना चाहिए।

कुछ पुरनिया (बुजुर्ग) भी कहा करते थे कि शंके भूत, मन्ने डाइन। यानी भूत-प्रेत आदि कुछ नहीं होते, बस ये मन के वहम हैं। अब वह घटना सुना देता हूँ, जो कहीं न कहीं इस

बात को भी सत्य ठहरा रही है। हमारे ज्वार में चिखुरी नाम के एक बहुत ही निडर और बहादुर व्यक्ति रहते थे। वे भी भूत-प्रेत में विश्वास नहीं करते थे। एक बार बातों ही बातों में उन्होंने अपने गाँव के एक व्यक्ति से शर्त लगा दी कि भूत-प्रेत कुछ भी नहीं होते, ये बस मन के वहम हैं। तुम बताओ, कहाँ भूत हैं? मैं जाकर निपट लेता हूँ। उनके गाँव के उस मनई ने कहा कि आज आधी रात को आप फलाँ गढ़ई (तालाब) के किनारे जो बरगद का पेड़ है, वहाँ एक खूँटा गाड़ कर आ जाइए तो मैं आपकी मरदुम्मी (साहस का लोहा) मान लूँगा।

आधी रात को चिखुरी एक खूँटा और हथौड़ा लिए निकल पड़े उस गढ़ई (तालाब) की ओर। वे ज्यों ही घर से निकले, थोड़े सिहर गए और सोचने लगे कि कहीं सही में भूत-प्रेत तो नहीं होते? कहीं ऐसा न हो कि भूत-प्रेत होते हों और मेरे साथ कुछ बुरा हो जाए।

अँधियारी रात थी और वह भी एकदम सुनसान। भूत-प्रेत के बारे में गहराई से सोचने के कारण अब बहती हुई हवा में भी उनको किसी भूत-प्रेत का आभास होने लगा था। पर हनुमानजी को याद करके वे तेजी से आगे बढ़े और दौड़ते-दौड़ते उस गढ़ई (तालाब) के किनारे पहुँच गए। पर कहीं न कहीं वे डरे हुए थे और अपने मन को भूत-प्रेत के चंगुल से निकाल नहीं पा रहे थे। गढ़ई के किनारे पहुँचकर, बरगद के पास वे हड़बड़ी में खूँटा गाड़ने लगे। उनका धीरज तेल लेने चला गया था और वे पसीने से पूरी तरह तर हो गए थे। खूँटा गाड़ने के बाद वे फटाफट वहाँ से निकलने के लिए भागना चाहे, पर यह क्या। वे चाह कर भी भाग नहीं पा रहे थे और उन्हें लग रहा था कि कोई उन्हें पकड़कर बैठा है और उन्हें खींच रहा है। चिखुरी पहलवान तो थे ही, हिम्मत करके खूब तेज पीछे की ओर हटे। थोड़ा अधिक बल लगाने के बाद अब वे फ्री महसूस कर रहे थे। फिर क्या था, बिना पीछे देखे, वे लंक लगाकर (बहुत ही तेज) गाँव की ओर भागे।

घर पहुँचने के बाद भी उनका बुरा हाल था। अब तो उनका शरीर भी पूरी तरह से तपने लगा था। फिर क्या था, घर वाले उनके आस-पास जमा हो गए। गँवई वैद्य को भी बुला लिया गया। कुछ काढ़ा-ओढ़ा पीने के बाद उन्हें थोड़ा आराम मिला। उन्होंने घर वालों को बताया कि उन्हें भूत ने पकड़ लिया था। गढ़ई के किनारे बरगद वाला भूत। खैर, रात बीती फिर गाँव के कुछ लोग गोल बनाकर उस गढ़ई किनारे के बरगद के पास पहुँचे। वहाँ एक खूँटा गड़ा हुआ था। पर गाँव के एक व्यक्ति ने खूँटे का सावधानी से निरीक्षण किया तो पाया कि खूँटे में धोती का कुछ भाग लगा हुआ है। फिर क्या, लोगों को यह बात समझते देर नहीं लगी कि हड़बड़ी में खूँटा ठोंकते समय चिखुरी की धोती का एक कोना भी मिट्टी में धँस गया था और जिसके चलते वे भाग नहीं पा रहे थे। यह सही पाया गया कि चिखुरी की धोती का एक कोना थोड़ा फटकर गायब था। तो कभी भी धीरज से काम लें, विवेक से काम लें और अंधविश्वास से बचें।

खैर, मैं आया था भूतही कहानी सुनाने और लगा भाषण देने। आप खुद ही समझदार हैं और समझ सकते हैं। आइए, अब बिना देर किए मैं आपको सुनी-सुनाई भूतही कहानी सुना ही देता हूँ।

बात बहुत ही पुरानी है। उस समय फोन-ओन नहीं हुआ करते थे। लोगों को कहीं बाहर जाना होता था तो ठीक से पता नोट करते थे, क्योंकि पता न होने पर उस व्यक्ति से मिल

पाना मुश्किल होता था। एक बार की बात है कि हमारे जवार के एक पंडीजी यूँ ही तीर्थ भ्रमण पर निकल पड़े। उन्होंने बाहर रहने वाले अपने उन सभी परिचितों के पते नोट कर लिए थे जिनके यहाँ वे जा सकते थे। सर्वप्रथम वे हरिद्वार गए। वहाँ 10-15 दिन रहने के बाद पता नहीं उनके मन में क्या आया कि वे वहाँ से नासिक के लिए निकल पड़े। शायद उस समय नासिक में कुंभ लगने वाला था। खैर, 10-15 दिन की यात्रा के बाद, कुछ पैदल, कुछ मंगनी की सवारी से होकर वे पंडीजी कैसे भी करके नासिक पहुँचे।

आगे की बात बताऊँ उससे पहले एक बहुत ही ज़रूरी बात बताना अति-आवश्यक है। क्योंकि कहानी में यह बात बहुत ही मायने रखती है। ऐसा कहा जाता है कि इन पंडीजी पर नेटुआबीर बाबा की असीम कृपा बनी रहती थी। पंडीजी वैसे तो बहुत बड़े पुजारी और नेकदिल इंसान थे ही, पर नेटुआबीर बाबा की छत्र-छाया में वे और भी नेक काम किया करते थे और गाँव-जवार के लोगों को भूत-प्रेत से बचाते रहते थे। अगर किसी को भूत-प्रेत या चुड़ैल ने पकड़ लिया तो पंडीजी नेटुआबीर बाबा की मदद से उस भूत-प्रेत या चुड़ैल को अपने बस में करते हुए सदा के लिए उन्हें अपना बंदी बना लेते थे। फिर ये भूत-प्रेत या चुड़ैल किसी को परेशान नहीं करते थे। नेटुआबीर बाबा इस पंडीजी को इतना मानते थे कि पंडीजी के याद करते ही वे वहाँ प्रकट हो जाते थे। कहा जाता है कि नेटुआबीर बाबा की कई सारे लोगों पर असीम कृपा हुआ करती थी। ये पंडीजी भी उन्हीं में से एक थे।

खैर, नासिक पहुँचकर ये पंडीजी बहुत ही खुश थे क्योंकि नासिक में उनका एक परमभक्त चेला रहता था। कुछ लोगों से पता आदि पूछ-पूछ कर वे अपने उस चेले की खोली पर पहुँचे। वह खोली शहर से दूर थोड़ी ग्रामीण इलाके में थी। जब वे खोली पर पहुँचे तो शाम हो रही थी। दरअसल उनका चेला ग्रामीण इलाके में घर बनवाकर रहता था। वे सीधे उसके घर पर पहुँच गए, पर घर पर तो ताला लगा हुआ था। आस-पास कोई दिख भी नहीं रहा था कि पूछें। वैसे भी वे पूरी तरह से थक गए थे तो वहीं बैठकर आराम करने लगे और सोचे कि उनका चेला शायद बाहर गया होगा तो कुछ देर में आ जाएगा। पर उनके समझ में एक बात नहीं आ रही थी कि घर पर किसी को तो होना ही चाहिए। क्योंकि उनका चेला तो सपरिवार यहाँ रहता है। उसकी पत्नी है, दो बड़े-बड़े बेटे हैं, एक छोटी बिटिया है, पर अभी कोई नहीं। खैर, उन्हें लगा कि किसी से मिलने गए होंगे, कुछ देर में आ जाएँगे।

दो-तीन घंटे के इंतजार के बाद, अचानक उस घर का दरवाजा खुल गया। दरवाजा खुलते ही उनके चेले का बड़ा लड़का बाहर निकला जिससे वे 1 साल पहले गाँव में मिल चुके थे और उन्हें प्रणाम करके अंदर आने को कहा। पंडीजी की समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि दरवाजे पर तो ताला लगा था तो अगर यह अंदर था तो बाहर कैसे आया? क्योंकि बाहर तो उनके सिवाय कोई नहीं था। खैर, वे थके-हारे थे इसलिए ज़्यादा विचार न करते हुए घर के अंदर चले गए। अरे, यह क्या, घर के अंदर पहुँचकर वे देखते हैं कि घर में तो बहुत सारे लोग हैं, हर उम्र के हैं, पुरुष भी हैं और महिलाएँ भी। पंडीजी को अजीब लगा।

अभी वे अपने चेले के लड़के से कुछ पूछें, उससे पहले ही वह बोल पड़ा, “बाबा! बाबूजी (पिताजी) कुछ काम से मम्मी-ओम्मी के साथ गाँव गए हैं और मैं पिछले 10 दिन से अकेले

ही हूँ घर पर। अकेले अच्छा नहीं लगता है तो रात को अपने इन दोस्तों को बुला लेता हूँ।”

खैर, पंडीजी वहीं पास में अपना बोरिया-बिस्तर, झोला-झंटा रख दिए और फराकित (दिशा-मैदान) होने के लिए लोटा उठाकर घर से बाहर निकल पड़े। फराकित होने के बाद, वे बाहर ही कहीं हाथ-ओथ धोए, कुल्ला-उल्ला करके फिर स्नान किए। पंडीजी अभी स्नान करके अपनी धोती बदल ही रहे थे तभी उन्हें एहसास हुआ कि उनके आस-पास कोई आत्मा है। अभी वे कुछ बोलें उससे पहले कि उनके कानों में एक आवाज़ गूँजी, “पंडीजी, मैं नेटुआबीर बाबा हूँ। घबराइए मत, पर थोड़ा सावधानी बरतिएगा। क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि आपको कोई भी काम अभी विधिवत और अपने मन मुताबिक ही करना चाहिए। आप किसी के बहकावे में मत आइएगा और आपको लगे कि मेरी भी आवश्यकता है, तो मुझे याद कीजिएगा, मैं सहर्ष आ जाऊँगा।” इतना कहने के बाद नेटुआबीर बाबा अंतर्ध्यान हो गए।

पंडीजी के बारे में ऐसा कहा जाता है कि वे केवल सुबह ही नहीं अपितु रात को भी नहाते थे और नहाने के बाद पूजा-पाठ करते थे। नहाकर कपड़े बदलने के बाद नेटुआबीर बाबा की बातों पर विचार करते हुए पंडीजी फिर अपने चेले के घर पहुँचे। घर के अंदर तो काफी धमा-चौकड़ी चल रही थी पर पंडीजी को इन सबसे क्या लेना था? वे तो बस अपने नित्य-क्रिया को ठीक तरह से करने में ही लगे रहते थे और दूसरों के कार्यों में बाधा डालना या अपनी वजह से किसी को परेशान देखना उचित नहीं समझते थे।

चेले के घर पर पहुँचकर पंडीजी ने अपने चेले के लड़के से कहा कि मैं पूजा-उजा कर लेता हूँ फिर भोजन कर लूँगा। उनके चेले का लड़का थोड़ा सकपकाया और बोल पड़ा, “बाबा, बिना पूजा किए भी तो आप भोजन कर सकते हैं। भोजन तैयार है, करके आराम कीजिए।” पर पंडीजी, उसकी बातों पर ध्यान न देते हुए वहीं एक बोरा बिछाकर लगे पूजा करने। पूजा करने के बाद वे हरिद्वार से लाए गंगा जल को निकाले और सोचे अपने चेले के घर में छिड़क कर इसे भी पवित्र कर देता हूँ। अरे यह क्या, वे ज्यों ही गंगाजल निकाले, उनके चेले का लड़का चिल्लाया, “ऐसा मत करो।” और इसके साथ ही वहाँ उपस्थित उसके सारे साथी विकराल रूप में आ गए, वे तो भूत-प्रेत थे। अजीब-अजीब तरह की आत्माएँ। अरे यह क्या, पंडीजी तो अवाक रह गए। कुछ समय के लिए उनका शरीर सुन्न पड़ गया। उसकी आवाज़ कंठ में अटक गई। पर फिर पंडीजी संभल गए और उन्हें नेटुआबीर बाबा की बातें याद आ गईं। साथ ही पंडीजी को लगा कि अगर कुछ गड़बड़ की आशंका होगी तो नेटुआबीर बाबा को बुला लूँगा। अब पंडीजी बिना देर किए, गंगाजल वाली शीशी का ढक्कन खोल दिए। अब भूत-प्रेत एकदम से आशंकित मन से उनसे दूर होकर चिल्लाने लगे थे।

खैर, पंडीजी तो निडर आदमी थे और हनुमानजी के परम भक्त भी। साथ ही नेटुआबीर बाबा की भी उन पर परम कृपा थी। फिर उनके लिए भूत-प्रेत आदि की कोई औकात कहाँ बचती है। पहले तो वे हँसे फिर थोड़ा गंभीर होकर, एकाग्र-चित्त मन से हनुमान-चालीसा पढ़ते हुए गंगाजल का छिड़काव करना शुरू कर दिए। अरे, यह क्या? गंगाजल का छिड़काव करते ही वहाँ उपस्थित सारे भूत-प्रेत रफूचककर हो गए और उनके चेले का लड़का भी।

पंडीजी पूरी तरह परेशान क्योंकि अब तो रात भी काफी हो गई थी और आस-पास भी कोई दिख नहीं रहा था। खैर, फिर भी वे वहाँ रुकना ठीक नहीं समझे और अपना झोला-झंटा उठाकर रात में ही निकल पड़े। उस घर से लगभग 1 किमी चलने के बाद वे एक मेन रोड जैसी जगह पर आए। वहाँ उनको एक छोटी टपरी (दुकान) दिखी। सोचे कि कुछ खा लेता हूँ और यहीं रात गुजार लेता हूँ। बातों ही बातों में टपरी वाले ने बताया कि वह भी उनके जिले के बगल वाले जिले का ही है। फिर क्या था, पंडीजी की अच्छी खातिरदारी हुई। फिर पंडीजी से रहा नहीं गया और अपनापन मिलते ही उन्होंने उस टपरी वाले के साथ घटी घटना साझा कर दी। इस घटना को सुनते ही वह टपरी वाला रो पड़ा। उसने बताया कि वह उनके चेले को जानता है। फिर उस टपरी वाले ने आगे बताया कि उनके चेले का बड़ा लड़का काम से कहीं बाहर गया था और सड़क दुर्घटना में मारा गया। उसने कहा कि उस लड़के की लाश लाने अन्य लोगों के साथ वह भी पुलिस थाने गया था। इतना ही नहीं, अभी इस घटना को घटे 10-12 दिन ही हुए हैं और उसी अपने बड़े लड़के की काम-क्रिया करने के लिए उनके चेले सपरिवार गाँव गए हैं।

खैर, भगवान उस पंडीजी के चेले के लड़के को सद्गति दें। फिर क्या था, पंडीजी घूमते-घामते महीनों बाद घर आए। सबसे पहले वे नहा-धोकर नेटुआबीर बाबा की थान पर गए, वहाँ जेवनार चढ़ाए। कुछ दिन बाद अपने चेले के आग्रह पर वे पंडीजी फिर से नासिक आए और अपने चेले के घर के शुद्धिकरण हेतु एक बहुत बड़ा अनुष्ठान किए। कहते हैं कि फिर कभी उनके चेले का लड़का किसी को नहीं दिखा।

दयावान बाल-प्रेत

कहते हैं कि सब भगवान की लीला है। हम मानव, हम सभी प्राणी तो बस कथपुतली मात्र हैं। भगवान अपनी इच्छानुसार हमें नचाता है। हर लौकिक या परलौकिक प्राणी, चाहें वह मूर्त हो या अमूर्त, उस परम पिता परमेश्वर से बड़ा नहीं हो सकता। हाँ, यह अलग बात है कि ईश्वर ने सब जीवों को अलग-अलग रूप-आकार, शक्तियाँ आदि प्रदान की है। आइए, आपको एक ऐसी कहानी सुनाता हूँ जो आपको बहुत कुछ सोचने पर मजबूर तो करेगी ही साथ ही प्रकृति के, ईश्वर के कुछ कार्यों की आलोचना करने के लिए भी मजबूर करेगी। यह जानते हुए भी कि सब प्रभु की लीला है।

अभी-अभी हाल ही में तो खमेसर आया था इस कस्बे में। ऐसा कस्बा जो धीरे-धीरे शहर का रूप ले रहा था। इधर-उधर दूर-दूर तक निर्माणाधीन बिल्डिंगें बिखरी पड़ी थीं। कहीं-कहीं, आस-पास में कई सारी बिल्डिंगें बन रही थीं तो कहीं-कहीं एकदम से सन्नाटा पसरा था। कहीं दूर-दूर तक एक भी घर नहीं, तो किसी-किसी एरिए में एक-आध कच्ची झोपड़ियाँ नजर आ जा रही थीं। इस कस्बे का कुछ भाग विलासिता-अमीरी की कहानियाँ कह रहा था तो कुछ भाग गरीबी में आँसू बहाने के लिए अभी मजबूर लग रहा था। कहीं-कहीं बड़ी-बड़ी कंपनियों द्वारा निर्मित पानी की महँगी बोतलें लोगों के सूखे गले को तर कर रही थीं तो कहीं-कहीं इन्हीं खाली बोतलों में बहते हुए नालियों से पानी भरने के लिए कुछ बच्चे मजबूर दिखाई दे रहे थे।

दरअसल खमेसर का बड़ा भाई रमेसर इस कस्बे में दैनिक मजदूरी का काम करता था। उसने ही खमेसर को भी काम के सिलसिले में बुलवाया था। रमेसर तो मजदूरी करता था पर उसे लगता था कि उसका भाई अच्छा पढ़ा-लिखा है तो उसे अच्छा काम मिल जाएगा। खमेसर बीए पास था और रमेसर ने प्रसन्न मन से उसे बताया था कि इस कस्बे में उसे सुपरवाइजर की नौकरी आसानी से मिल जाएगी। इतना ही नहीं रमेसर ने अपने भाई के काम के लिए दो लोगों से बात करके भी रखी थी और उसे पता था कि उसका भाई आराम से सुपरवाइजरी कर लेगा।

जून की तपती दोपहरी में खमेसर साइकिल दौड़ाता हुआ भाई द्वारा दिए गए पते की ओर तेजी से भागा चला जा रहा था। उबड़-खाबड़ रास्ते पर भी वह तेजी से साइकिल चला रहा था। वह पसीने से पूरा भींग चुका था पर अभी तक अपनी मंजिल तक नहीं पहुँचा था। कुछ और आगे बढ़ते ही उसने साइकिल धीमी कर दी और पास में दिख रही एक कटरैनी दुकान की ओर बढ़ चला। कटरैनी दुकान पर पहुँचकर उसने दुकानदार को कागज पर लिखा पता दिखाया और दुकानदार के बताए हुए कच्चे रास्ते पर फिर से साइकिल दौड़ाने लगा। उसे तो बस जल्द से जल्द उसे पते पर पहुँचना था।

अभी खमेसर अपने उस रास्ते पर थोड़ा ही आगे बढ़ा था कि उसे 8-10 वर्ष का एक लड़का मिला। उस लड़के ने हाथ दिखाकर खमेसर को रुकने का इशारा किया और कहा “अंकल, मुझे भी ले चलेंगे क्या?” खमेसर ने रुककर वह पता दिखाया और बताया कि उसे यहाँ पहुँचना बहुत ज़रूरी है। फिर उस लड़के ने कहा कि यह पता उसे पता है और उसे भी उधर ही जाना है। फिर क्या था, खमेसर ने उस लड़के को साइकिल पर आगे ही बैठा लिया

और उससे कुछ बातें करते हुए आगे बढ़ने लगा। लगभग 5-7 मिनट साइकिल दौड़ाने के बाद लड़के ने खमेसर को एक बन रही बिल्डिंग की तरफ इशारा करते हुए बताया कि यह वही बिल्डिंग है, जिसका पता आप पूछ रहे हैं। फिर लड़के ने कहा कि अंकल पहले आप अपना काम कर लें, फिर मेरा घर थोड़ा और आगे है, वहाँ मुझे छोड़ देना। खमेसर ने हामी भर दी और अपनी साइकिल को उस बन रही बिल्डिंग के तरफ मोड़ दी।

बिल्डिंग के पास पहुँचते ही उसे एक आदमी मिल गया जो शायद वॉचमैन था। खमेसर ने उस व्यक्ति को वह कागज दिखाया और पूछा कि यह पता यहीं का है न? वॉचमैन ने हामी भरते हुए पूछा कि आपको किससे मिलना है? इस पर खमेसर ने वॉचमैन से कहा कि मिसिरजी से। वॉचमैन ने बताया कि मिसिरजी तो यहीं थे पर अभी निकल गए। अब वे एक घंटे के बाद ही मिलेंगे।

“कोई बात नहीं, मैं फिर से एक घंटे में आ जाऊँगा। जब मिसिरजी आ जाएँ तो आप बता दीजिएगा कि खमेसर का छोटा भाई खमेसर आया था। मैं जरा इस बच्चे को इसके घर पर छोड़कर आता हूँ।”

वॉचमैन ने पूछा, “किस बच्चे को?” इस पर खमेसर ने उस 8-10 वर्षीय बच्चे की तरफ इशारा करते हुए कहा, “इसे।”

वॉचमैन को थोड़ा अजीब लगा क्योंकि उसे कोई बच्चा दिखाई नहीं दे रहा था पर उसने बात को टालने के लिए कह दिया कि ठीक है जाओ, पर एक घंटे तक आ जाना क्योंकि मिसिरजी आने के 2-3 घंटे बाद फिर यहाँ से निकल जाएँगे।

खमेसर हामी भरते हुए साइकिल मोड़ने लगा। अभी भी वॉचमैन मुँह सिकोड़ते हुए खमेसर को देखे जा रहा था।

खमेसर बच्चे के बताए हुए रास्ते पर फिर से साइकिल दौड़ाने लगा। लगभग 20-25 मिनट साइकिल दौड़ाने के बाद वह एक सुनसान इलाके में पहुँच गया। इस इलाके की जमीन पूरी तरह से ऊबड़-खाबड़ और जंगली थी। जगह-जगह झाड़ियाँ आदि उगी हुई थीं। कहीं-कहीं कुछ छोटे-बड़े गड्ढे भी थे। खमेसर ने कौतुहल से उस बच्चे से पूछा कि क्या तुम इस इलाके में रहते हो? बच्चे ने हाँ में सिर हिलाते हुए कहा कि हाँ अंकल, मैं इसी इलाके में रहता हूँ। फिर सामने एक खंडहर जैसी जगह की ओर इशारा करते हुए कहा कि अंकल मैं यहीं रहता हूँ। आप मुझे यहीं छोड़ दीजिए, अब मैं चला जाऊँगा। खमेसर के दिमाग में तो मिसिरजी से मिलना है, कहीं देर न हो जाए, यही बात चल रही थी। अस्तु उसने बच्चे से और कुछ पूछे बिना बच्चे को वहीं उतारकर तेजी से साइकिल मोड़कर फिर उसी रास्ते पर वापस साइकिल दौड़ाने लगा।

20-25 मिनट साइकिल दौड़ाने के बाद वह फिर से अपने पते पर आ गया। उसके वहाँ पहुँचते ही वॉचमैन बोल पड़ा, “मिसिरजी आ गए हैं।” और इतना कहते हुए वह उसे लेकर उस बन रही बिल्डिंग के अंदर पहुँच गया। अंदर मिसिरजी कुछ लोगों से बात कर रहे थे। वॉचमैन द्वारा परिचय कराए जाने के बाद खमेसर ने मिसिरजी की पँवलगी की। फिर बातचीत हुई और मिसिरजी के यह कहने के बाद कि कल से तुम काम पर आ जाना, प्रसन्न मन से खमेसर, मिसिरजी का धन्यवाद करते हुए उस बिल्डिंग से बाहर निकल गया।

बिल्डिंग से बाहर निकलने के बाद खमेसर काफी शांति महसूस कर रहा था क्योंकि वह लगभग 10-12 दिनों से काम की तलाश में इधर-उधर भाग रहा था और अब जाकर उसका काम बना था। वह बाहर आकर स्टैंड पर से साइकिल उतारा और उसे डुगराते हुए ही आगे बढ़ने लगा। उसे अब थोड़ी भूख भी सता रही थी क्योंकि लगभग 11-12 बजे का निकला था और अभी तक एक बूँद पानी भी मुँह में नहीं डाला था। वैसे भी काम बनने के बाद वह काफी निश्चित महसूस कर रहा था और शायद इसलिए अब उसका ध्यान पेट में कूदते चूहे भी पूरी तरह से आकर्षित कर रहे थे। वह सोच रहा था कि कुछ नाश्ता-पानी करने के बाद आराम से नौकरी लगने की खबर अपने भाई को सुना दूँगा।

साइकिल डुगराते-डुगराते वह फिर से उसी कटरैनी दुकान की ओर चल पड़ा जहाँ से उसे पते की जानकारी मिली थी। कटरैनी दुकान के पास पहुँचकर उसने स्टैंड पर अपनी साइकिल खड़ी कर दी और कुछ खाने के लिए दुकान के अंदर चला गया। दुकान के अंदर पहुँचकर वह एक टूटे हुए स्टूल पर बैठ गया और दुकानदार से एक लड्डू लाने के लिए कहा। दुकानदार ने कागज में एक लड्डू लपेटकर उसे दिया और साथ ही एक जग पानी और एक शीशे का गिलास भी लाकर उसके पास रख दिया। लड्डू खाते-खाते अचानक खमेसर की नजर दुकान में ही एक खंबे से काँटी में लटकी एक फोटो पर पड़ी जिस पर फूल-माला चढ़ाया गया था। बच्चे की फोटो और उस पर चढ़ी फूलमाला देखकर खमेसर धीरे से दुकानदार से पूछा कि यह आपका लड़का है क्या? दुकानदार ने उदास मन से हामी भरते हुए कहा कि हाँ, बाबू! यह मेरा लड़का ही है। अभी इसकी उम्र भी क्या थी! दुनिया भी ठीक से नहीं देख पाया था पर भगवान की मर्जी के आगे किसी की मर्जी नहीं चलती।

दुकानदार की इतनी बातें सुनने के बाद खमेसर धीरे से उठा और उस फोटो के पास पहुँचकर गौर से उसे देखने लगा। फोटो को गौर से देखने के बाद अचानक उसे कुछ याद आया और उसके चेहरे पर घबराहट के साथ ही पसीना भी आ गया। उसके पूरे शरीर में कंपन शुरू हो गई। बिना कुछ बोले वह फिर से अपनी जगह पर आ बैठा और बैठे-बैठे गिलास में जग से पानी ढालकर गट्टागट 2 गिलास पानी पी गया। उसके दिमाग में एक अजीब-सी ने बेचैनी अपनी जगह बना ली थी। दुकानदार चाय की केतली लेकर खमेसर के पास पहुँचा और उसके गिलास में चाय उड़ेलते हुए कहा, “बाबू, सबको जाना है, पर समय से जाना अच्छा लगता है। यह मेरा लड़का बहुत ही होनहार और उपकारी था। सब की सहायता करता था। यहाँ तक कि अपरिचितों की भी। इस एरिया के सभी लोग इसे बहुत ही चाहते थे। यह इस नव-निर्माणाधीन इलाके के बारे में पूरा परिचित था। जब भी कोई अनजाना कोई पता पूछता तो यह केवल पता ही नहीं बताता अपितु उस व्यक्ति को उस पते पर छोड़कर भी आता था। इसकी वजह से सभी लोग इसे बहुत ही प्यार करते थे। लगभग 1 महीने पहले की बात है, एक दिन एक अनगोइयाँ (अनजाना) मेरी दुकान पर आया, उसे उसी जगह पर जाना था, जहाँ से आप आ रहे हैं। मेरा बेटा उस अनगोइएँ (अनजाना व्यक्ति) को लेकर वहाँ पहुँचा। उस दिन उस बिल्डिंग के दूसरे माले पर पैट आदि बाँधने का काम चल रहा था। पता नहीं मेरे बेटे के दिमाग में क्या आया कि वह एक पैट पर चढ़ गया। अभी वह पैट पूरी तरह से बाँधा नहीं गया था। उसका पैर फिसला या पता नहीं क्या हुआ कि वह पैट पर से गिर पड़ा और वहाँ से कुछ लोग उसे लेकर अस्पताल तक

पहुँचते लेकिन तब तक उसके प्राण पखेरू उड़ चले थे।” इतना कहने के बाद उस दुकानदार की आँखें डबडबा गईं और वह वापस जाकर अपनी जगह पर बैठ गया।

अब खमेसर थोड़ा आराम महसूस कर रहा था पर वह सोच नहीं पा रहा था कि इस दुकानदार को कैसे बताए कि अभी इसी लड़के ने उसे उस पते तक पहुँचाया था। अभी खमेसर कुछ बोले इससे पहले ही वह दुकानदार फिर बोल पड़ा, “बाबू, फिर हमने इस अपने बच्चे को मुर्दहिया पर ले जाकर दफना दिया।” दुकानदार ने बातों ही बातों में यह भी बता दिया कि यह मुर्दहिया आप जो पता पूछे थे, उसके थोड़ा दूर आगे ही है। दुकानदार की ये बातें सुनकर खमेसर के भी आँसू निकल पड़े और वह रोते हुए दुकानदार से कहने लगा, “काका, इस लड़का ने आज भी मुझे उस पते पर पहुँचाया और फिर इसे मैंने मुर्दहिया पर ले जाकर छोड़ दिया। क्योंकि यह लड़का बता रहा था कि यह वहीं रहता है, पर मैं इसके साथ इसके रहने की जगह पर नहीं गया था।” अब तो वह दुकानदार फूट-फूटकर रोने लगा और कहने लगा कि बाबू, ज़रूर वह मेरा मुन्ना ही होगा क्योंकि कल भी मेरे मुन्ने ने एक व्यक्ति को एक पते पर पहुँचाया था और जब वह व्यक्ति मेरी दुकान पर आकर, इस फोटो को देखकर बताया कि इस लड़के ने ही उसे पते पर पहुँचाया तो मुझे विश्वास नहीं हुआ और मैं बोल पड़ा था कि ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि मेरे मुन्ना को गए तो महीनों हो गए हैं पर आज जब आपसे साथ भी यही घटना घटी तो अब मुझे यकीन हो गया है कि वह मेरा मुन्ना ही होगा और वह मुर्दहिया से आकर अपनी इस दुकान के आस-पास ही रहता होगा।

अभी दुकानदार और खमेसर की बात चल ही रही थी कि खमेसर के पते वाला वह वाँचमैन भी चाय पीने वहाँ आ गया। उसे देखते ही दुकानदार उसे चाय देने लगा। वाँचमैन ने चाय पीते हुए खमेसर से पूछा कि बाबू एक बात बताइए। जब आप मेरे पास गए थे तो मैंने तो किसी को भी आपसे साथ नहीं देखा, फिर भी आप बोल रहे थे कि इस बच्चे को छोड़ने जा रहा हूँ। उस समय मैं कुछ समझ नहीं पाया था। इस पर दुकानदार फिर से रो पड़ा और कहा कि बाचमन बाबू, वह मेरा मुन्ना था और इसलिए शायद आपको दिखाई नहीं दिया।

अब वाचमैन को भी सारी बातें क्लियर हो गई थीं क्योंकि उसने पिछले 15-20 दिनों में कितने अपरिचितों को कहते सुना था कि बच्चे को छोड़कर आ रहा हूँ।

ब्रह्मप्रेतों का अति खौफनाक कृत्य

कुछ अपने आपको ज्ञानी-विज्ञानी मानने वाले कहते हैं कि भूत-प्रेत, चुड़ैल, डाकिनी, जिन्न आदि बस कहानियों में ही अच्छे लगते हैं, इनका कोई अस्तित्व नहीं। पर मेरा मानना है कि पृथ्वी पर अनेकानेक रूपों में अनेक जीव पाए जाते हैं। कुछ ऐसे भी जिन्हें विज्ञान एकोशीय, अकोशीय, जीवाणु, विषाणु आदि संज्ञाओं से विभूषित करता है। कुछ सूक्ष्म जीवों को नंगी आँखों से देखा ही नहीं जा सकता, इन्हें देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी आदि की आवश्यकता होती है। साथ ही बहुत सारे रहस्यमय जीवों से भी यह दुनिया भरी पड़ी है। जैसे कुछ जीव नंगी आँख से दिखाई नहीं देते वैसे ही कुछ ऐसी आत्माएँ भी होती हैं जिन्हें नंगी आँखों से तब तक नहीं देखा जा सकता, जब तक वह आत्मा खुद न चाहे या आपमें सूक्ष्मदर्शी जैसी कोई शक्ति न हो, आत्मबल न हो, किसी विशेष देव-देवी की कृपा न हो। हाँ, पर कभी-कभी ये प्रकट न होकर भी अपने अस्तित्व का एहसास करा जाती हैं। यह भी सत्य है कि बुरी आत्माएँ अधिकतर कमजोर दिल वालों को, गंदे रहने वालों को ही अपना निशाना बनाती हैं तथा साथ ही पूजा-पाठ करने वाले, स्वच्छ रहने वाले, निडर लोगों के पास यह बुरी आत्माएँ जाने से डरती हैं। पर कुछ आत्माएँ ऐसी भी होती हैं जो किसी से भी नहीं डरतीं, कहीं भी बेरोक-टोक आती-जाती रहती हैं। इसका कारण यह है कि जब किसी निडर व्यक्ति, धर्मपरायण व्यक्ति आदि अकाल ही काल के गाल में समा जाता है तो उसकी आत्मा तब तक बेखौफ होकर भटकती रहती है जब तक उसका उद्धार नहीं हो जाता।

सभी आत्माएँ बुरी भी नहीं होती, कुछ अच्छी भी होती हैं। दरअसल यह इनके आत्मा (भूत-प्रेत, ब्रह्म, जिन्न, चुड़ैल आदि) के रूप में आने से पहले यानी कहने का तात्पर्य है कि अकाल मौत से पहले ये जिस रूप में, जिस स्वभाव के, मनुष्य या किसी अन्य जीव के रूप में होते हैं, मरने के बाद भी अधिकतर अपने उसी व्यवहार का उपयोग करते हैं पर साथ ही इनके अकाल मृत्यु का कारण क्या था, वह भी इनके स्वभाव में बदलाव को प्रभावित करता है। अगर किसी को जानबूझकर किसी दुश्मनीवश हत्या कर दी जाती है तो वह व्यक्ति अच्छा रहने के बावजूद, मरने के बाद उसे मारने वालों या उनके परिवार के लोगों को सताता है और यह भी हो सकता है कि वह अपने लोगों का भला करे। क्योंकि कई प्रेत ऐसे होते हैं जो अपनों का कुछ नहीं बिगाड़ते और फायदा ही पहुँचाते हैं।

मूल कहानी शुरू करने से पहले मैं आप लोगों को एक भूतही घटना सुनाता हूँ, जिसे मैंने कई बड़-बुजुर्गों से सुना है। हमारे जवार (क्षेत्र) में एक पंडीजी थे जो जादू-टोना में सिद्धहस्त थे और बहुत कुशल तांत्रिक माने जाते थे। कहा जाता है कि ये पंडीजी अपने तंत्र-मंत्र के बल पर, पूजा-पाठ के बल पर एक भूत को अपने कब्जे में कर लिए थे। ये उस भूत से उसकी क्षमता अनुसार काम करा लेते थे जैसे कि किसी के बखार से धान-गेहूँ निकलवा लेना, किसी दुकान से दिन-दहाड़ें बिना दुकानदार के जाने कोई वस्तु चुरवा लेना आदि-आदि। कुछ लोग तो कहते हैं कि पंडी जी खेती-बारी का काम भी उस भूत से करा लेते थे, जैसे कि ढेंकुलि से खेत में पानी चलवाना यानी खेत की सिंचाई, खेत के आड़-मेड़ की झंटाई तथा कोन आदि को कोड़ना आदि।

एक सुनी घटना याद आ रही है। आप भी सुन लें। पंडीजी के गोयड़े के खेत में एक कुआँ

था जिस पर सिंचाई के लिए ढेंकुलि लगी हुई थी। एक दिन भिनसहरे कुछ महिलाएँ खेतों की ओर (आज भी कुछ गाँवों आदि में बहुत ही सुबह, यानी भिनसहरे बहुत सारी महिलाएँ शौच के लिए खेतों में ही जाती हैं) जा रही थीं तो एक महिला क्या देखती है कि पंडीजी के खेत के कुएँ पर लगी ढेंकुलि अपने आप बहुत तेजी से चल रही है और पानी निकाल-निकालकर नाली में डाल रही है और वह पानी नाली के रास्ते पंडीजी के खेत में जा रहा है। वह बहुत डर गई और सहमे हुए कुछ और औरतों को यह दृश्य दिखाई। कुछ औरतें तो यह देखकर चिल्लाने लगी तभी ढेंकुलि का चलना बंद हो गया और खेतों की ओर से पंडीजी भी दौड़कर आ गए। साथ ही गाँव के दो-चार और लोग आ गए। जब महिलाओं ने यह बात बताई तो पंडीजी तड़ाक से बोल पड़े, अरे, मैं ही तो था। आधी रात से ही आकर ढेंकुलि चला रहा हूँ। शायद अंधेरे के कारण तुम लोग मुझे देख नहीं पाए होगे। पर गाँव के कुछ बड़-बुजुर्गों को समझते देर नहीं लगी कि पंडीजी का भूत ढेंकुलि चला रहा था।

ऐसे बहुत सारे किस्से हैं, उस भूत के बारे में। एक बार तो एक दुकानदार को उस भूत ने इतना परेशान कर दिया कि उस दुकानदार को आकर पंडीजी से माफी माँगनी पड़ी और एक जोड़ी पियरी (पीले रंग में रंगी हुई) धोती भी देनी पड़ी, तब जाकर उस भूत ने उस दुकानदार का पीछा छोड़ा था। दरअसल हुआ यह था कि पंडीजी अपनी लड़की की शादी में उधार पर कुछ कपड़े लिए थे। कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि पंडीजी ने अपनी लड़की की शादी में कई कपड़ों, गहनों की दुकानों से बहुत सारा सामान उस भूत से चुरवाया था पर समाज, गाँव-हित को दिखाने के लिए कुछ सामान उधार भी लिए थे ताकि लोगों को सच्चाई का पता न चले। तो हाँ, जिस दुकानदार से पंडीजी कुछ कपड़ें उधार लिए थे, कुछ समय बीतने के बाद वह तगादा (अपना पैसा वापस करने के लिए दबाव डालना) करना शुरू किया। पंडीजी आज-कल करते रहे। एक दिन दुकानदार का मुनीब (मुनीम) आया और पंडीजी की गाय खोलकर लेकर चला गया। शायद पंडीजी घर पर नहीं थे। जिस दिन वह गाय उस दुकानदार के घर पर गई उसी दिन अचानक उस दुकानदार के घर में आग लग गई। खैर, इतना तक तो ठीक था पर अब धीरे-धीरे उस दुकानदार की परेशानी बढ़ने लगी। कभी उसकी दुकान से कपड़ों का कोई गट्टर गायब हो जाता तो कभी-कभी उसके रुपये-पैसे रखने वाले कठ-बक्से से रुपये-पैसे। उसे पता ही नहीं चलता कि यह सब कैसे हो रहा है। वह बार-बार अपने यहाँ काम करने वाले लोगों पर चिल्लाता। धीरे-धीरे उसके यहाँ काम करने वाला भी कोई नहीं बचा और ग्राहक भी आने बंद हो गए क्योंकि कुछ ग्राहक बताते थे कि उसकी दुकान में जाकर बैठने पर अजीब लगता। कभी-कभी तो ऐसा लगता कि कोई अदृश्य शक्ति है जो जबरदस्ती बैठे ग्राहकों को उठा रही है या इधर-उधर खींचकर परेशान कर रही है। अब तो वह दुकान ही टूटने के कगार पर पहुँच गई फिर कुछ लोगों ने कहा कि उस पंडीजी की गाय वापस करके, उनसे माफी माँग लो तो शायद सब ठीक हो जाए। उस दुकानदार ने वैसा ही किया। उसने पंडीजी की गाय वापस करने के साथ ही उनका कर्ज भी माफ कर दिया और सपरिवार एक जोड़ी पियरी धोती और ग्यारह रुपए पंडीजी के पैर पर रखकर उनका पैर पकड़ लिया। अब क्या, धीरे-धीरे उस दुकानदार की दुकानदारी पटरी पर लौट आई।

आइए, अब देर न करते हुए मैं ब्रह्मप्रेतों के अति खौफनाक कृत्यों से भी आप लोगों को

परिचित करा देता हूँ। हमारे ही जवार (क्षेत्र) की घटना है। वैसे इस घटना को घटे लगभग 80-90 साल हो गए होंगे। उस समय एक बहुत ही नामी पंडित हुआ करते थे हमारे जवार में। दस कोस की एरिया में उनका काफी नाम था। वे ज्योतिष, तंत्र-मंत्र के बहुत ही अच्छे विद्वान माने जाते थे। लोग घर आदि बनवाने से पहले उनसे सलाह लेते थे और साथ ही पूजा-पाठ के लिए उन्हें ही आमंत्रित करना चाहते थे। पंडीजी धनी-मानी तो थे ही, साथ ही अच्छे खेतिहर भी थे।

एक बार की बात है कि पंडीजी के गाँव का ही घनेसर नामका एक आदमी पंडीजी के पास आया और कहा कि महाराज, मेरा परिवार काफी बड़ा हो गया है और खाने के लाले पड़ने की नौबत आ गई है। पंडीजी बहुत ही दयालु स्वभाव के थे। उन्होंने तुरंत उसे दो बीघे जमीन बँटाई के रूप में जोतने-बोने के लिए दे दी। धीरे-धीरे समय बितता गया और इधर घनेसर के मन में भी लालच समाने लगा। घनेसर ने धीरे-धीरे करके पंडीजी को उनके खेत से बँटाई का हिस्सा देना बंद कर दिया। एक बार पंडीजी ने घनेसर से इस विषय पर बात की तो घनेसर ने तैश में आकर बोल दिया कि अब वह खेत मेरा है और मैं आपको बँटाई-ओँटाई कुछ नहीं देन वाला हूँ। आप की जो मर्जी आए कर लो।

अरे, यह क्या अभी पंडीजी और घनेसर में यह बात हो ही रही थी तभी घनेसर के तीनों बेटे हाथ में लाठी लिए वहाँ आ गए और बोले कि अगर पंडीजी अब खेत के बारे में एक शब्द भी बोलोगे तो पीट-पीटकर अधमरा कर देंगे। हल्ला सुनकर गाँव के कुछ और लोग भी आ गए और बीच-बचाव करके झगड़े को शांत कराए।

उसी दिन, रात के समय की बात है। घनेसर के घर में जो खाना बना वह कोई खा नहीं पाया क्योंकि खाने को जब थाली में परोसा गया तो थाली में वह कच्चा माँस, खून आदि बन गया। घनेसर और उनके परिवार वाले यह बात समझ नहीं पाए कि ऐसा क्यों हो रहा है। जब यह बात उन लोगों ने पड़ोसियों को बताई और परोसी हुई थालियाँ दिखाई तो पड़ोसी हँसने लगे, क्योंकि उन लोगों को थाली में खाना यानी भात-तरकारी, रोटी आदि ही दिख रहा था जबकि घनेसर और उसके घर वालों को कच्चा माँस आदि। इसके बाद पड़ोसियों ने घनेसर और उसके घर वालों को अपने घर पर खाना खिलाया। अरे, यह क्या। उसी रात जब घनेसर सपरिवार सो रहे थे तो उनके घर पर ईंट-पत्थर चलने की आवाज़ आने लगी। वे लोग हड़बड़ाकर जग गए और लाठी निकालकर ईंट-पत्थर फेंकने वालों को खोजने लगे पर कोई नहीं मिला और इधर इनका खपड़ैल का घर तहस-नहस हो गया था क्योंकि छत की सारी खपड़ैल टूट-फूट चुकी थीं।

यह वाक्या हर रात होने लगा और घनेसर का परिवार अब पूरी तरह से खौफ में जीने लगा। अंत में गाँव के ही कुछ लोगों ने कहा कि उस पंडीजी से इसका समाधान पूछते हैं। अंत में न चाहकर भी घनेसर उसी पंडीजी के पास गए। पंडीजी पूजा में लगे हुए थे। घनेसर ने सारी बात बताई। पंडीजी बोले कि घनेसर अब आपको यह गाँव छोड़कर दूसरी जगह जाकर बसना होगा नहीं तो आप और आपका परिवार सही-सलामत नहीं बचेंगे।

घनेसर तो अब पूरी तरह से परेशान होकर गिड़गिड़ाने लगा कि पंडीजी आपकी शरण में हूँ, कोई रास्ता निकालिए। पंडीजी बोले कि मैंने कुछ नहीं किया है और मैं किसी का बुरा

भी नहीं चाहता हूँ पर क्या करूँ, चाहकर भी आपको इस विपत्ति से छुटकारा नहीं दिलवा सकता।

उसी दिन शाम को गाँव भर के बड़-बुजुर्ग उस पंडीजी के दरवाजे पर एकत्र हुए और पंडीजी से विनती किए कि घनेसर को माफ कर दें। पंडीजी ने कहा कि मैं घनेसर पर थोड़ा गुस्सा तो था पर अभी जो इनके साथ हो रहा है, वह मैं नहीं करवा रहा। फिर पंडीजी ने आगे बताया कि मेरी जमीन हड़पने और मुझ पर लाठी तानने के कारण अपने गाँव के डिह बाबा घनेसर से पूरी तरह रुष्ट हो गए हैं और उन्होंने अब गाँव में कुछ ब्रह्मप्रेतों को बुला लिया है। वे ही ब्रह्मप्रेत, घनेसर को परेशान कर रहे हैं। फिर पंडीजी ने कहा कि मैं आप लोगों को बिन बताए डिह बाबा से काफी विनती की कि घनेसर को माफ कर दें पर उन्होंने कहा कि अब उसको कभी माफी नहीं मिलेगी, क्योंकि उसने गाँव के ही आप जैसे अच्छे आदमी का दिल दुखाया है। फिर मैंने बहुत विनती की तो उन्होंने कहा कि जब तक घनेसर यह गाँव छोड़कर नहीं जाता, उसे परेशानियाँ झेलनी ही पड़ेगी और बहुत जल्द ब्रह्मप्रेत उसे पूरी तरह से तबाह कर देंगे।

खैर, अब तो यह आए दिन की बात हो गई थी। प्रतिदिन घनेसर के साथ, उसके परिवार के साथ कुछ बुरा घटने लगा और बुरा करने वाला भी दिखाई नहीं दे रहा था।

एक दिन घनेसर के घर में अपने आप आग लग गई। सारा समान स्वाहा हो गया। एक दिन घनेसर के एक जोड़ी बैलों को पता नहीं कौन सी बीमारी लग गई कि उनके आगे जो भी खाने को रखा जाता, वे सूँघकर छोड़ देते। कितने सोखा-गँवई डॉक्टर को दिखाया गया पर बैलों ने खाना-पीना ही छोड़ दिया और एक दिन ऐसा भी आया कि एक-दो दिन के आगे पीछे ही उनके दोनों बैल काल के गाल में समा गए। कुछ दिनों के बाद की बात है, घनेसर का एक-दो वर्ष का नाती रात को घर में अपनी माँ के पास सोया था तभी पता नहीं वह कैसे गायब हो गया। अचानक उसकी माँ जगी तो देखती है कि उसका लड़का नहीं है। फिर घर में उसकी तलाश शुरू हो गई, रोअन-पीटन मच गया। पूरा गाँव जमा हो गया। सभी लोग इधर-उधर उसे खोजने लगे कि तभी उसे एक कुएँ के पास ऐसे ही सोए-सोए खेलते हुए पाया गया। उसी साल घनेसर भी गाँव से काफी दूर एक बगीचे में एक पेड़ पर लटके हुए पाए गए। लोगों को आज भी पता नहीं चला कि घनेसर ने आत्महत्या की थी या ब्रह्मप्रेतों ने ही उन्हें सजा दी थी।

घनेसर के बेटों के अनुनय पर पंडीजी पूजा-पाठ करते रहे पर घनेसर का घर उजड़ता रहा और एक दिन घनेसर के बेटों को अपनी सारी संपत्ति बेचकर दूसरे गाँव में आना पड़ा। इस गाँव में ब्रह्मप्रेतों का आतंक थोड़ा कम हो गया था, फिर भी हप्ते-दो हप्ते में कोई ऐसी घटना घट जाती कि घनेसर के बेटों और उसके परिवार वालों की नींद उड़ जाती। वे भयभीत हो जाते। यह सिलसिला सालों-साल चलता रहा पर धीरे-धीरे कम होता गया।

कहने वाले तो आज भी कहते हैं कि कभी-कभी घनेसर के बेटों के घर के पास अजीबो-गरीब आवाजें सुनाई दे जाती हैं। खैर, आज घनेसर नहीं हैं और उनके लड़के भी पूरी तरह से बुजुर्ग हो गए हैं। उनके नाती भी कमाने-धमाने लगे हैं और हर वर्ष काफी पूजा-पाठ भी करते हैं पर इन ब्रह्मप्रेतों के आतंक का सामना उन्हें साल में एक-दो बार करना ही पड़ता है। जय-जय।

प्रेत का बदला

[क्या गाँव](#), क्या शहर! हर जगह कुछ ऐसी घटनाएँ सुनने को मिल ही जाती हैं जो भूत-प्रेत के अस्तित्व को अस्तित्वमय बना जाती हैं। कभी-कभी भूत-प्रेत को बनाने में इंसान भी महती भूमिका निभा जाता है। तमाम कुप्रथाओं, घृणित कर्मों के चलते भी भूत-प्रेत-चुड़ैल अस्तित्व में आ जाते हैं। सुना है, बहुत पहले कुछ गाँवों में लड़कियों को जन्म लेने के [साथ ही](#) हत्या कर दी जाती थी। कभी-कभी समझ में नहीं आता कि कथित पुरुष-प्रधान समाज, यह क्यों भूल जाता है कि उसका अस्तित्व महिलाओं से ही है, माँ से ही है। अगर प्रकृति से मादात्व को खत्म कर दिया जाए तो नरत्व अपने आप खत्म हो जाएगा। पर समाज, कथित समाज, [ना-ना](#) कथित पुरुष समाज पता नहीं क्यों अपने ज्ञान के घमंड में प्रकृति को रौंदने में ही लगा रहता है। क्या आप को नहीं लगता कि कभी-कभी हम अपने ज्ञान से मूर्खतापूर्ण काम करते हैं और हमें अपना मूर्खतापूर्ण कार्य, अधार्मिक, घृणित कार्य ही अच्छा लगता है?

खैर, आइए अपने ही गाँव-जवार का एक [भूतही किस्सा](#) आपको सुना देता हूँ। 100 वर्ष पहले एक परिवार के मुखिया के घृणित कर्म का प्रतिफल आज भी उनका परिवार भुगत रहा है और चाहकर भी उनका परिवार कुछ नहीं कर पाता और कष्टकर, मरणासन्न जीवन जीने के लिए मजबूर है।

मंगेसर पाणे (बदला नाम) हमारे जवार के एक नामी आदमी थे। काफी खेती-बारी और बाग-बगीचा था उनके पास। अच्छी तरह से खेती-किसानी करते थे जिसके चलते उनका घर धन-धान्य से भरा रहता था। दरवाजे पर 4 जोड़ी बैल हमेशा रहते थे तथा साथ ही 4-5 दुधारू गायों के साथ ही 2-3 अच्छी-अच्छी भैंसे थीं। सुबह से ही उनके दरवाजे पर गाँव वालों का ताँता लगा रहता था। वे सबकी मदद करते थे। गाँव-जवार-जिले में उनका नाम था, दबदबा था पर उनकी अच्छाइयों पर उनका एक ऐसा कर्म भी था जो पूरी तरह से हावी था। शायद उनके इस कुकर्म के बारे में गाँव-जवार के बहुत कम लोग ही जानते थे।

जी हाँ, मंगेसर पाणे गाँव-जवार में चोरी करवाते थे और चोरी का कुछ क्या, अच्छा हिस्सा खुद ही ले लेते थे। ऐसा कहा जाता है कि वे चोरों को पनाह देते थे, थाना-पुलिस से बचाते थे जिसके चलते गाँव-जवार-जिले के चोर उनकी बात मानते थे और चोरी का हिस्सा उन्हें दे देते थे। बैल खोलाई भी वे खूब करवाते थे और बैलों को सीधे बिहार राज्य में भिजवा देते थे पर अच्छी बात यह थी कि [उनके इस कुकृत्यों](#) के बारे में बहुत कम लोगों को पता था और चूँकि समाज में, गाँव-जवार-जिले में उनकी काफी इज्जत थी, इसलिए उनके कुकर्मों पर परदा पड़ा रहता था।

एक बार की बात है कि उनके ही सह पर चोरों ने उनके गाँव के बगल के ही गाँव में एक समृद्ध बाबू साहब के घर में चोरी की। बहुत सारा धन-दौलत-कपड़ा-लत्ता उनके हाथ लगा। चोरी का माल बाँटने के लिए चोर मंगेसर पाणे के बगीचे में आ गए। चूँकि मंगेसर पाणे का घर पास में ही था, इसलिए एक चोर दौड़कर गया और मंगेसर पाणे को जगा लाया। मंगेसर पाणे आते ही अच्छे-अच्छे सामान खुद ले लिए और बाकी बचे सामान को उन चोरों में बाँट दिए। एक चोर को अच्छा नहीं लगा और उसने कहा, “बाबा! [सारा अच्छा](#) सामान तो आप ले लिए और बेकार के सामान हम लोगों को दे दिए।” इस पर

मंगेसर पाणे गुस्से में बोल पड़े, “जो मिला है उसे रख, ज्यादा चिल्ल-पों मत कर; मुझसे जबान न लड़ा, नहीं तो मार डालूँगा।” उस चोर को भी थोड़ा गुस्सा आ गया और बोला कि जरा हिम्मत हो तो मार कर दिखाइए।

अरे यह क्या, अभी बाकी चोर कुछ समझ पाते इससे पहले ही मंगेसर पाणे ने वहाँ पड़े हथियारों में से एक भाला उठाया और उस चोर पर टूट पड़े। देखते ही देखते उन्होंने गोंथ-गोंथकर उस चोर को अधमरा कर दिया। वह चोर चिल्लाता रहा पर कोई अन्य चोर उसकी मदद के लिए नहीं आया। अंत में अधमरा चोर मंगेसर पाणे के आगे हाथ जोड़ने लगा पर मंगेसर पाणे उसके बाद भी नहीं रुके और वहीं पड़े एक तलवार से उसके सिर को धड़ से अलग कर दिए। उस चोर की हत्या करने के बाद मंगेसर पाणे ने उस मृत चोर को उसी बगीचे में दफनवा दिया। फिर सब चोर अपना-अपना सामान लेकर अपने-अपने घर चले गए। यह बात आई-गई हो गई। जवार में थोड़ी-बहुत बात चली पर किसी की हिम्मत नहीं थी कि कोई मंगेसर पाणे के खिलाफ मुँह खोले।

इस घटना के घटने के लगभग 2-3 महीने बाद की बात है। अब बगीचों में आम के टिकोरे अँठुलियाने लगे थे। मंगेसर पाणे ने अपने बगीचों की रखवाली कुछ लोगों को सौंप दी थी। एक रात एक घटना घटी! बहुत ही भयानक, रोंगटे खड़ी कर देने वाली घटना। हुआ यूँ कि जिस बगीचे में मंगेसर पाणे ने उस चोर को दफनवाया था, उस बगीचे का रखवार (पहरेदार) रात को करीब 11 बजे दौड़ते-हाँफते मंगेसर बाबा के घर आया और हाँफते हुए ही मंगेसर पाणे को जगाकर बोला कि बाबा, पूरा बगीचा तहस-नहस हो गया है। बगीचे में एक चोर घुस आया है। वह आम को तोड़-तोड़कर बोरों में भर रहा है। मैंने उसे काफी रोकने की कोशिश की पर वह मुझपर भी पिल पड़ा और मुझे दौड़ा-दौड़ाकर मारा।

मंगेसर बाबा बिना कुछ विचार किए अपनी चौकी पर से उठे। उन्होंने घर से भाला लिया और उस रखवार के साथ बगीचे की ओर दौड़ पड़े। वास्तव में बगीचे की हालत बहुत ही दयनीय हो गई थी। जगह-जगह डालियाँ टूटी-बिखरी पड़ी थीं। रखवार तो एकदम से डरा हुआ था और वह बगीचे में अंदर घुसने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था पर मरता क्या न करता। अगर वह मंगेसर पाणे के साथ नहीं जाता तो भी तो उसकी खैर नहीं थी।

मंगेसर पाणे बिना देर किए उस आम तोड़वा चोर पर टूट पड़े। उन्होंने भाले से उस चोर पर आक्रमण कर दिया था। भाले से वे जितना चोर पर वार करते, उतना ही वह चोर विकराल होते जाता और भयावह अट्टहास करने लगता। बगीचे में भयावह आँधी चलने लगी। चोर पर भाले के वार का कुछ असर ही नहीं हो रहा था। भाला चोर के सीने के आर-पार हो जाता फिर भी चोर पर कोई असर नहीं। यह दृश्य देखकर रखवार पूरी तरह से डर गया। उसने हिम्मत करके गाँव की ओर दौड़ लगाई और देखते ही देखते गाँव भर के लोग बगीचे में उपस्थित हो गए। सबने बैटरी, मसाल जला रखी थी। पूरे बगीचे में प्रकाश फैला हुआ था। गाँव वालों ने क्या देखा कि एक विकराल शरीर मंगेसर बाबा को बगीचे में घिसरा रही है और रह-रहकर उन्हें पेड़ों की जड़ पर पटक रही है। गाँव वालों में से किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह उस प्रेत के पास जाए। अचानक प्रेत और भी विकराल हो गया तथा अपने भयानक दाँतों से मंगेसर पाणे को चबाने लगा। उसका पूरा मुँह खून से भर गया था। फिर वह दहाड़ा, तूने मुझे भाले से गोंथ-गोंथकर मारा था न। तूझे पता नहीं

कि तूने कितने लोगों को मारा। तू नहीं बचेगा। इतना कहकर उस प्रेत ने फिर से मंगेसर पाणे का एक पैर पकड़कर घूमना शुरू किया और बहुत ही तेज घुमाते-घुमाते जमीन पर पटक दिया। मंगेसर पाणे के प्राण-पखेरू तो पहले ही उड़ गए थे। अचानक वह प्रेत गायब हो गया। मंगेसर पाणे के घर-गाँव के लोग हिम्मत करके मंगेसर पाणे की लाश को लेकर घर आए। उनका क्रिया-कर्म किया गया। यह घटना आग की तरह पूरे गाँव-जवार में फैल गई और उसके बाद से उस बगीचे की ओर लोग जाना भी छोड़ दिए और अगर जाते भी तो गोल (समूह) बनाकर।

ऐसा कहा जाता है कि आज भी उस बगीचे की ओर जाने वालों को एक आवाज़ सुनाई देती है कि आवस हो मंगेसर बाबा, चोरिया की समनवा के बँटवारा कइले जा (आइए मंगेसर बाबा, चोरी के सामान का बँटवारा करते जाइए)। खैर, जो भी हो, मंगेसर पाणे का परिवार आज भी भयावह स्थिति में जी रहा है। कभी-कभी जब मंगेसर बाबा के घर के लोग सोए रहते हैं तो अचानक उनके घर पर कहीं से हाड़-माँस आकर गिरना शुरू हो जाता है। इतना ही नहीं मंगेसर बाबा के परिवार का कोई सदस्य आज भी उस बगीचे में अकेले नहीं जाता। एक बार, मंगेसर बाबा का पोता कुछ बच्चों के साथ बगीचे में गया था तो बिना हवा-बयार के एक मोटी डाल टूटकर सिर्फ और सिर्फ उसके ऊपर ही गिर गई और उसका एक पैर टूट गया। आज भी मंगेसर बाबा के घर पर उस भूत का छाया है, ऐसा गाँव वाले कहते हैं।

उस प्रेत, भूत के डर से आज मंगेसर बाबा का परिवार गाँव का घर छोड़कर शहर में आकर रहने लगा है। गाँव का घर खंडहर हो गया है तथा साथ ही बहुत ही डरावना भी। पर शहर में भी मंगेसर के बाबा का परिवार चैन से नहीं जी पा रहा था। कभी-कभी ऐसी घटना घट जाती है कि मंगेसर बाबा का परिवार त्राहिमाम, त्राहिमाम करके रह जाता है।

जय बजरंग बली। किसी को भी सताइए मत। किसी के साथ भी बुरा व्यवहार न करें नहीं तो आपको तो भुगतना ही है, साथ ही साथ आपके अपने भी परेशान होकर रह जाएँगे। दुनिया बहुत ही खूबसूरत है। जीवन भी बहुत ही खूबसूरत है, आनंदमय है, इसका आनंद लें। सबको खुश रखें, स्वयं खुश रहें। जय-जय बजरंग बली।

(यहाँ दी गई कहानियाँ काल्पनिक हैं तथा नाम आदि भी काल्पनिक ही है। किसी से कुछ भी लेना-देना नहीं और अगर कुछ समानता दिखती है तो मात्र संयोग समझा जाए। जय-जय बजरंग बली।)

वो काली रात और दोमुँही डायन!

पिताजी तो कह रहे थे कि कल सुबह चले जाना। पर खमेसर मानने वाला कहाँ था। वह बार-बार अपने माता-पिता को समझा रहा था कि गाँव आए 10 दिन हो गए, कॉलेज का हर्जा हो रहा है। एक हप्ते की छुट्टी थी और मैं 10 दिन गाँव में रुक गया। नहीं पिताजी, अब मत रोकिए। जाने दीजिए। आज शाम निकलूँगा तो रात-बिरात कालेज के हास्टल में पहुँच जाऊँगा। कल से कालेज ज्वाइन कर लूँगा। और साथ ही वह अपने माता-पिता को यह भी समझाए जा रहा था कि घबराने की क्या बात है! मैं अकेले थोड़े जा रहा हूँ, समेसर भी तो है मेरे साथ। हम दो लोग हैं, आसानी से पहुँच जाएँगे।

जी हाँ! खमेसर गाँव से लगभग 40-45 किमी दूर एक छोटे, अभी पनपते, विकसित हो रहे कस्बे में स्थित एक प्राइवेट इंजिनियरिंग कॉलेज से बीटेक कर रहा था और उसके साथ ही उसके गाँव का समेसर भी। दरअसल समेसर के चाचा इसी कस्बे में जल निगम में जेई का काम करते थे। उन्होंने ही खमेसर और समेसर का नाम यहाँ लिखवा दिया था। इस कॉलेज के संरक्षक से समेसर के चाचा की खूब बनती थी। खमेसर और समेसर को हास्टल भी आसानी से मिल गया था, जिसके लिए उन दोनों को बहुत कम पे करना पड़ता था।

खमेसर ने फटाफट अपनी माँ से कहा कि थोड़ा अचार-ओचार रख दो और 4-6 भेली गुड़ भी। फिर क्या था, खमेसर ने अपना पिट्टू बैग पीठ पर लटकाया, माता-पिता को प्रणाम किया और बाय-बाय करते हुए तेजी से समेसर के घर की ओर दौड़ चला। समेसर, खमेसर का ही इंतजार कर रहा था। समेसर के बड़े भाई ने उन दोनों को मोटरसाइकिल पर बिठाया और चौराहे पर ले जाकर छोड़ दिए। चौराहे पर खड़े-खड़े वे दोनों अपने हास्टल की ओर जाने वाली सवारी का इंतजार करने लगे। कभी-कभी पिछड़े इलाकों में सवारी की बहुत परेशानी हो जाती है और अगर जाड़े का समय हो तो और भी परेशानी। शाम होते ही सवारियों का आना-जाना कम हो जाता है और रह-रहकर इक्की-दुक्की प्राइवेट गाड़ियाँ ही दौड़ते हुए दिखती हैं।

लगभग 2 घंटे के इंतजार के बाद उन्हें एक सिक्स सीटर मिला पर उसने भी कहा कि वह उस कस्बे के बाहर तक ही जा रहा है। अगर चलना है तो चलो, वहाँ तक छोड़ दूँगा पर तुम लोगों को हास्टल तक नहीं छोड़ पाऊँगा। कुछ सोच कर समेसर बोला कि यार खमेसर, घर लौट चलते हैं और कल सुबह हास्टल के लिए निकल चलेंगे। पर खमेसर कहाँ सुनने वाला था। उसने कहा कि यार वैसे ही बहुत रह लिए गाँव में। कालेज बहुत अकाज हो गया। आज जाना ही है। चलो, इसी सिक्स सीटर से चलते हैं और कस्बे से कोई रिक्सा आदि लेकर और नहीं तो पैदल ही हास्टल चले जाएँगे। कस्बे से पैदल हास्टल जाने में 40-45 मिनट तो ही लगते हैं। इसके बाद खमेसर ने समेसर को खींचकर उस सिक्स सीटर में बैठा लिया। समेसर कुछ बोल नहीं सका और चुपचाप बैठ गया।

कस्बे में पहुँचकर सिक्स सीटर से उतरने के बाद खमेसर और समेसर ने वहीं एक कटरैनी दुकान में चाय पी और उसके बाद रिक्शे आदि का इंतजार न करते हुए अपने हास्टल की ओर पैदल बढ़ने लगे। रात के करीब 9 बजने को थे और ठंड के मारे शरीर में कंपकंपी फैल रही थी। अच्छी बात यह थी कि इन दोनों दोस्तों के पास कुछ बहुत अधिक

सामान नहीं था और जो कुछ भी था, उसे ये दोनों अपने-अपने पिट्टू बैग में रखकर पीठ पर लटका लिए थे। खमेसर सीटी बजाकर ठंड को काबू में करने की कोशिश कर रहा था और रमेसर अपने दोनों हाथों को पैंट की जेब में घुसेड़कर तेजी से रास्ते पर बढ़ा जा रहा था। रात के 9 बजे कोई बहुत समय नहीं होता और फिर लगभग 10 बजे तक ये दोनों हास्टल तो पहुँच ही जाने वाले थे, तो घबराने की कोई बात नहीं थी, ऐसा नहीं है! दरअसल यह अभी डेवलप हो रहा इलाका था इसलिए बहुत ही सुनसान था। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था और रात की सांय-सांय भी अपनी ठिठुरन भरी आवाज़ से उस रात को और भयावह बना रही थी। हास्टल तक जाने के लिए जो कच्चा रास्ता था, वह उतना बेकार भी नहीं था। ठीक-ठाक था पर इस कच्चे रास्ते से लगभग एक-दो बीघे पर घने-घने बाग-बगीचे थे। खैर, दोनों दोस्त सीटी बजाते, गाना गाते तेजी से बढ़े जा रहे थे। हाँ, काफी दूर कोई टिमटिमाती लाइट इनकी राह को आसान बना जाती थी।

लगभग 20-25 मिनट चलने के बाद खमेसर अचानक रुक गया। खमेसर को रुकता देख समेसर बोला, “अबे रुक क्यों गया? चल, जल्दी चल! ठंड भी लग रही है और थोड़ा डर भी।” खमेसर धीरे से उसके पास पहुँचा और आगे रास्ते की ओर इशारा किया। दरअसल कुछ ही दूरी पर उन्हें एक व्यक्ति नजर आ रहा था पर उस अंधेरी ठंडी रात में थोड़ा स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था। पहले तो खमेसर को लगा कि कहीं कोई चोर-ओर न हो, नहीं तो हमारे पास जो कुछ है, लूट लेगा। फिर वह पछताने लगा कि काश, कल सुबह ही आए होते। पर अब करें तो क्या करें। वह व्यक्ति भी वहाँ रास्ते से हिलता-डुलता नहीं दिख रहा था और ऐसा लग रहा था कि वहाँ खड़ा होकर किसी का इंतजार ही कर रहा हो।

खैर, खमेसर ने हिम्मत जुटाई और समेसर की बाँह पकड़कर आगे बढ़ने को कहा। फिर क्या था, दोनों दोस्त आगे बढ़ने लगे। वे लोग ज्यों-ज्यों उस रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे, सामने का व्यक्ति थोड़ा क्लियर दिखाई देना शुरू हो रहा था। वे लोग ज्योंही उस व्यक्ति के पास पहुँचे, हक्के-बक्के हो गए, क्योंकि वह तो एक खूबसूरत लड़की थी, जो इन दोनों को देखकर बस मुस्कुराए जा रही थी।

ये लोग उस लड़की को क्रास करते हुए आगे बढ़ना चाहे कि तभी वह बोल पड़ी, “रुको! हास्टल की ओर जा रहे हो न? मुझे भी उधर ही जाना है।” दोनों दोस्त कुछ बोल नहीं पाए पर रुक गए। उनके रुकते ही वह लड़की दौड़कर उनके पास पहुँची और आगे-आगे चलने लगी। जी हाँ, इन दोनों दोस्तों से लगभग दो कदम आगे। अचानक समेसर की चीख निकल गई और रमेसर भी हक्का-बक्का हो गया। दरअसल वह लड़की चलते-चलते अपना सिर पीछे की ओर भी पूरी तरह मोड़ दे रही थी और साथ ही उसके पैर भी कभी-कभी पूरी तरह पीछे की ओर मुड़ जाते थे। अरे यह क्या, इस लड़की के दो मुँह कैसे, दो सिर कैसे हो सकता है? एक आगे की ओर और एक पीछे की ओर। इतना ही नहीं उस लड़की की मुस्कान के साथ ही उसके मुँह से प्रकाश-सा निकल जाता था, जिसमें ये दोनों दोस्त और पूरा रास्ता नहा जाता था। अब उन दोनों को सूझ नहीं रहा था कि क्या करें, कहाँ जाएँ? क्या पीछे की ओर भाग जाएँ? पर ऐसा करने पर उसने पीछा कर लिया तो? इसके तो दो मुँह हैं, आगे भी देख सकती है और पीछे भी। क्या करें?

अरे, अभी ये लोग ये सब सोच ही रहे थे तभी वह अट्टहास करते हुए बोली, “अब तुम

लोग नहीं बच सकते।” इतना कहते ही वह पूरी तरह से विकराल हो गई। उसके लंबे-लंबे दाँत और लंबी लपलपाती चीभ देखकर कोई भी सहम जाए। दो सिर वाली वह डायन बहुत ही विभत्स और भयानक थी। वह पूरी तरह से किसी अति डरावनी हारर फिल्म की भूतनी से भी भयानक लग रही थी।

खमेसर काँपते हुए जय हनुमान, जय हनुमान करने लगा और समेसर तो खमेसर के पीछे खड़ा होकर उसे पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगा। अचानक ये दोनों दोस्त कुछ समझ पाते तभी उस डायन ने अपना हाथ बढ़ाकर इन दोनों के बैग छिन लिए और उन्हें घूमाकर इतना तेज फेंका कि पता नहीं चला कि वे दोनों बैग उस अंधेरी रात में कहाँ गायब हो गए। फिर वह डायन हवा में उड़ने लगी। उसके अट्टहास से पूरा माहौल बहुत डरावना हो गया। उसके मुँह से निकलते आग के गोलों से लगता था कि ये दोनों जलकर भस्म हो जाएँगे। अब तो दोनों पूरी तरह से अवाक, बेहोशी की हालत में आ गए और वहीं बैठ गए। उन्हें कुछ भी सूझ नहीं रहा था। उन दोनों ने एक-दूसरे को पकड़कर अपनी आँखें बंद कर ली और लगे हनुमानजी को गोहराने।

अचानक उन्हें एक और आवाज़ सुनाई दी जो उन्हें डरा नहीं कह रही थी। उन दोनों ने जब आँखें खोली तो क्या देखते हैं कि एक और खूबसूरत लड़की खड़ी है जो इन्हें हाथों के इशारों से शांत होने और उठने का इशारा कर रही है। अभी ये दोनों कुछ समझ पाते तब तक वह पहली वाली डायन वहाँ अट्टहास करते हुए बोली, “आज तो तूने बचा लिया, इन दोनों को। पर कब तक लोगों को बचाती रहोगी? मैं तुमसे बहुत जल्द निपटूँगी। तुम्हारा नामो-निशाँ मिटा दूँगी।”

अभी वह चुड़ैल कुछ और बोले इसके पहले ही वह दूसरी लड़की कुछ बुदबुदाई और एक तेज फूँक उस डायन की ओर मारी। अरे, यह क्या! बचाओ, बचाओ की आवाज़ करते हुए वह चुड़ैल पूरी तरह से पता नहीं कहाँ गायब हो गई। अब इन दोनों दोस्तों को थोड़ी राहत मिली। उस लड़की ने फिर कहा, “डरो नहीं, मैं माँ काली की भक्त हूँ। यहीं पास के कस्बे में रहती हूँ। चलो, तुम लोगों को तुम्हारे हास्टल छोड़कर आती हूँ।”

इसके बाद दोनों दोस्त तेजी से हास्टल की ओर बढ़ निकले और उनके पीछे-पीछे कुछ दूरी पर वह लड़की भी चलने लगी।

हास्टल के पास पहुँचने पर उस लड़की ने कहा कि अब तुम लोग जाओ। मैं वापस अपने घर जा रही हूँ।

दोनों दोस्त उसका आभार मानते हुए अपने हास्टल के गेट पर पहुँच गए। हास्टल के गेट पर दो वॉचमैन आग जलाए बैठे हुए थे। इन दोनों को देखते हुए एक वॉचमैन ने गेट खोला और पूछा इतनी रात को तुम लोग कहाँ से आ रहे हो? फिर इन दोनों दोस्तों ने वहीं वॉचमैन द्वारा दी हुई बोतल से दो-दो घूँट पानी पीए और आग सेंकते-सेंकते पूरी घटना बता दी। उनकी पूरी बात सुनते ही एक वॉचमैन बोल पड़ा, “अच्छा हुआ कि गुड़िया आ गई। नहीं तो तुम लोगों का क्या हाल होता, तुम लोग समझ नहीं पाते। तुम लोगों का भाग्य बहुत ही अच्छा है कि गुड़िया आ गई। बहुत भली है वो, बहुत भली।”

फिर उसने बताया कि गुड़िया उसके ही गाँव की एक लड़की थी, जो माँ काली की बहुत

बड़ी भक्त थी। वह पढ़ने में भी बहुत ही तेज थी। पर विधि का विधान। वह मोटर-साइकिल चलाना सीख रही थी और इसी रास्ते पर उसकी मोटर-साइकिल एक टैक्टर से टकरा गई। उसे तुरंत अस्पताल पहुँचाया गया पर डॉक्टर उसे बचा नहीं सके। पर आज भी वह मर कर भी जिंदा है और लोगों की मदद किया करती है। अपने अच्छाई के बल पर वह दुष्ट आत्माओं को अपने अधीन कर लेती है। उसने आज तुम लोगों को भी बचा लिया। उसने मुझे भी एक बार पानी में डूबने से बचाया था। मेरी तो जान ही जाने वाली थी। कुछ बुरी आत्माएँ मुझे एक बार बरसाती पानी में डुबाने की कोशिश कर रही थीं पर सही समय पर गुड़िया आ गई और मेरी जान बच गई।

इसके बाद उस वॉचमैन ने उस दोमुँही, दो सिरवाली डायन के बारे में बताया। दरअसल एक दुर्घटना में वह इसी रास्ते पर मर गई थी और उसका सिर दो भागों में फटकर बँट गया था। तब से वह कभी-कभी रात में इस रास्ते पर घुमते हुए दिख जाती है और कुछ लोगों को बहुत परेशान भी कर देती है। जय-जय।

भूतहा खंडहर

भूत, प्रेत-पिशाच, चुड़ैल, डायन, डाकिनी आदि नाम हर व्यक्ति के लिए कौतुहल बने रहते हैं, रहस्यमय बने रहते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिकता इनके अस्तित्व को सिरे से खारिज करती है पर बिना ठोस प्रमाण के और साथ ही कभी-कभी कुछ ऐसे अतार्किक तर्कों से प्रेत-अस्तित्व को झूठलाने की कोशिश की जाती है जो हास्यास्पद लगता है। कुछ लोग तो कहते हैं कि भूत-प्रेतों का कोई अस्तित्व ही नहीं है। ये तो बस मानव मन की काल्पनिक उपज है पर ये लोग भी मानते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा कहाँ जाती है, आत्मा क्या है आदि के गूढ़ प्रश्नों को विज्ञान भी नहीं समझ पाया है। इसके लिए पढ़े-लिखे लोग भी इतिहास के पन्नों में झाँकने लगते हैं। हर धर्म के धर्मग्रंथों में आपको कुछ ऐसे लोकों के बारे में, ऐसे प्राणियों के बारे में रहस्यमयता का भान हो ही जाता है जो कहीं न कहीं भूत-प्रेत आदि के विश्वास को पुख्ता कर जाता है। पारंपरिक रूप से देखा जाए तो इंसान जब से अस्तित्व में आया है तब से इसका पाला कुछ रहस्यमयी चीजों से पड़ा है। कुछ अमानवीय कार्यों ने, प्राणियों ने मानव-मन को झकझोरा है और उसे मानव दुनिया से बाहर निकलकर अमानवीय दुनिया में भी गोते लगाने, उसे समझने के लिए बाध्य किया है। दुनिया की रहस्यमयता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता पर यह भी सत्य है कि बिना तर्क के इस रहस्यमयता को पूरी तरह से अलौकिक भी तो करार नहीं दिया जा सकता। खैर, इंसान को बहुत सारी अनोखी, रहस्यमयी बातों, प्राणियों ने आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित किया है।

इसी के मद्देनजर आज मैं आप लोगों को कुछ व्यक्तियों द्वारा सुनाई एक कौतुहल, रहस्यमयी, भूतही घटना सुना ही देता हूँ। पर इस घटना का वर्णन मैं यहाँ विशेष रूप से मनोरंजन के लिए कर रहा हूँ और इसलिए घटना से संबंधित स्थानों आदि का नाम बदल देना ही उचित समझता हूँ। मैं भी विज्ञान का छात्र रहा हूँ पर विज्ञान-विज्ञान चिल्लाना ही ठीक नहीं है। विज्ञान को मानते हुए भी तो लोगों द्वारा बताई जाने वाली, कही जाने वाली घटनाओं पर विचार किया जा सकता है। उसे अपने तर्क की कसौटी पर कसा जा सकता है।

यह कहानी है आज से लगभग 70-80 साल पहले की। उस समय हमारे जिले-जवार के लोग विशेष रूप से गाँव में ही रहकर खेती-बारी के साथ ही पशुपालन आदि से अपने और अपने परिवार का जीवन-निर्वाह किया करते थे। इने-गिने लोग ही नौकरी की तलाश में बड़े-बड़े शहरों की ओर कूच करते थे या अत्यधिक पैसे की लालच में कुछ लोग मजदूर के रूप में अपने गाँव से दूर हो जाते थे। कुछ लोग कोलकता (तब कलकत्ता), मुंबई (तब बंबई) आदि भारतीय शहरों के साथ ही म्यांमार (बर्मा) आदि अन्य कई देशों में चले जाते थे और इनमें से कुछ तो बुढ़ापे आदि में अपने वतन को वापस आ जाते थे पर अधिकांश वहीं के बनकर रह जाते थे, मरखप जाते थे और अपने अस्तित्व को सदा के लिए दबा देते थे पर कुछ ऐसे भी होते थे जो अपनी मेहनत से मजदूर से मालिक बन जाते थे और मरने के बाद भी इनके आलिशान घरों में इनकी संतानें इनके माल्यार्पित रेखा-चित्रों, चित्रों आदि को नमन करते रहते थे।

हमारे जवार के ही रमेसर बाबू को अपनी बाबूशाहत को दरकिनार करते हुए

कोलकाता जाना पड़ा था। दरअसल हुआ यह था कि रमेसर बाबू के पिताजी अपने समय के जवार के नामी पियक्कड़ थे। गाँजा-भाँग आदि के बिना वे अपने जीवन को पूरी तरह से अपूर्ण मानते थे। पूरी तरह से शान-शौकत वाला जीवन जीते थे और इसी चक्कर में उन्होंने अपने बाप-दादों की जमीन औने-पौने में बेच दी थी। बिना इस बात की परवाह करते हुए कि उनकी अपनी एकमात्र संतान यानी रमेसर बाबू का क्या होगा?

खैर, पिताजी की अच्छाइयों का तो संतान पर प्रभाव पड़ता ही है, बुराइयाँ भी पीछा नहीं छोड़तीं। आखिरकार पिता के मरने के बाद रमेसर बाबू के पास फटेहाल जीवन गुजारने के सिवाय कोई चारा नहीं था। कुछ दिन गाँव-जवार में धक्का खाने के बाद रमेसर बाबू सम्मानित जीवन जीने के लिए गँवई जीवन का त्याग करते हुए कोलकाता की राह पर निकल पड़े।

कोलकाता में पहुँचकर इधर-उधर धक्का खाने के बाद एक दिन रमेसर बाबू की मुलाकात कतवारू साहू से हुई थी। कतवारू साहू भी पास के गाँव के ही रहने वाले थे पर बहुत पहले कोलकाता आ गए थे और अपनी मेहनत-ईमानदारी से उस समय कोलकाता में 3-4 दुकानों के मालिक बन बैठे थे। कतवारू साहू बहुत ही प्रेम से रमेसर बाबू से मिले थे और उन्हें अपनी खोली पर ले गए थे। खोली पर आवभगत के बाद रमेसर बाबू ने दुखी मन से अपनी आप-बीती सुनाई थी और यह सब देख-सुनकर कतवारू साहू की आँखें छलक उठी थीं।

दरअसल बहुत पहले कतवारू साहू, रमेसर बाबू के बाप-दादा की मदद से ही राहखर्च लेकर कोलकाता आ पाए थे और इस बात को पूरी तरह से ससम्मान याद रखे हुए थे। कतवारू साहू ने रमेसर बाबू के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा था कि समय बड़े-बड़े घावों को भर देता है, आप निराश न हों। कुछ महीनों में ही रमेसर बाबू की तकदीर सुधरने लगी थी। हुआ यह था कि कतवारू साहू ने अपनी साख पर रमेसर बाबू को एक दुकान दिलवा दी थी और कुछ पैसे देकर उस दुकान में सामान आदि भी। अब क्या था, रमेसर बाबू दिन-रात मेहनत करके लक्ष्मी को अपनी जेब में भरने लगे थे।

रमेसर बाबू को कोलकाता आए लगभग 10 साल हो गए थे। जब वे कोलकाता की राह पर निकले थे, उस समय वे किशोर थे यानि 14-15 बरिस के। अब वे 25-26 में खेल रहे थे और खान-पान से चेहरा भी लाल हो उठा था। उस समय इस उम्र में उन्हें 2 बच्चों का पिता हो जाना चाहिए था पर अब तक वे शादी से बचते रहे थे। जब भी कतवारू साहू उन्हें शादी करने के लिए कहते तो वे कहते कि कतवारू काका, शादी तो मैं अपने जवार में ही करूँगा।

खैर, रमेसर बाबू की मेहनत रंग लाई थी और वे अब काफी मालदार हो गए थे। एक दिन वे कतवारू साहू से मिले और कहे कि काका अब मैं गाँव जाऊँगा और गाँव में खेती-बारी खरीदकर खेती करूँगा और विवाह करके अपना संसार बसाऊँगा।

जी हाँ, अब रमेसर बाबू अपने गाँव आ गए थे और गाँव से बाहर ही कुछ दूरी पर लगभग 2 बीघे जमीन खरीद लिए थे। इस जमीन में वे एक छोटा पर आलीशान घर बनवाने के साथ ही मवेशियों के रहने के लिए खपड़ैल आदि छवा दिए थे। उन्होंने दो जोड़ी

अच्छे बैल, दो दुधारू गाय और एक भैंस भी खरीद लिए थे। इसके साथ ही अच्छी नस्ल का एक घोड़ा भी उनके घर के आगे बँध गया था। अब कहें तो रमेसर बाबू की बाबूशाहत वापस आ गई थी। गाँव-जवार में उन्हें ससम्मान देखा जाने लगा था। उन्होंने पास के ही शहर में कुछ धंधा-पानी भी शुरू कर दिया था। जीवन पूरी तरह से पटरी पर दौड़ने लगा था। अब तो जवार-जिले के सभी बाबूसाहब लोग उन्हें अपना रिश्तेदार बनाने के लिए आगे आने लगे थे। जिनके घर कोई विवाह योग्य लड़की नहीं थी, वे लोग रमेसर बाबू से अपनी पिछली बाप-दादों के समय की रिश्तेदारी निकालने लगे थे। देखते ही देखते जवार के ही एक धनी-मानी बाबूसाहब की लड़की दुल्हन बनकर रमेसर बाबू के घर आ गई। पर यह भी सत्य है कि रमेसर बाबू और उनकी पत्नी के उम्र में 14-15 साल का अंतर था। शादी के समय रमेसर बाबू लगभग 30 के थे और उनकी पत्नी 15-16 की।

खैर, उस समय तो पैसे वाले मालधनी लोग बुढ़ापे में भी 12-15 की कन्या से विवाह रचाया करते थे। यानि समाज में धन-धान्य का बहुत ही बोलबाला था। वैसे आज के समय में भी हर जगह धन को दखलअंदाजी करते हुए देखा जा सकता है।

शादी को बीते अभी 1-2 साल भी नहीं बीते थे कि एक अति दुखदायी, मर्माहत करने वाली घटना घट गई। हुआ यूँ कि एक रात रमेसर बाबू अपने घर में सोए हुए थे पर दूसरे दिन सुबह उनकी तथा उनकी पत्नी की सरकटी लाश घर में ही पड़ी मिली। सुबह-सुबह उनके नौकर-चाकर द्वारा यह बात पूरे गाँव में फैल गई। किसी को कुछ भी पता नहीं था कि रमेसर बाबू और उनकी पत्नी को किसने इतनी घिनौनी, हृदयविदारक मौत दी? आखिर इसके पीछे कारण क्या था? उस भले मानुष को किसने मारा होगा?

पूरा गाँव रो रहा था। पुलिस भी आ गई थी। कानूनी कार्यों के बाद रमेसर बाबू के एक करीबी ने उन दोनों की चिता में आग दी थी। कुछ लोगों को नौकर-चाकर पर तो कुछ लोगों को उनके किसी करीबी पर शक था पर महीनों चली पुलिस कार्रवाई में कुछ भी खुलासा नहीं हुआ और लोग भी धीरे-धीरे इस घटना को भूलने लगे थे। अब इस घर पर पूरी तरह से रमेसर बाबू के इकलौते साले साहब का अधिकार हो गया था। कोई विशेष करीबी न होने के कारण गाँव वालों ने भी सुलह से वह सारी जमीन, घर आदि उनके साले के अधिकार में रहने देना ही उचित समझा। अब उस घर पर पूरी तरह से रमेसर बाबू के साले का अधिकार हो गया था। उन्होंने अपनी बहन और जीजा का दाह-संस्कार करने के साथ ही घर के बाहर उन दोनों के नाम से एक छोटी बैठक बनवा ली थी और सुबह-सुबह उसमें बैठकर गरीबों को कुछ दान-पुण्य करके अपने नेकदिल जीजा एवं बहन की आत्मा की शांति के लिए प्रयास करते दिखते थे। धीरे-धीरे कानूनी कार्रवाई करके उन्होंने वह सारी जमीन, घर आदि भी अब अपने नाम करा लिया था।

एक दिन की बात है। भिनसहरे जब रमेसर बाबू के साले का एक नौकर मवेशियों को सानी-पानी कर रहा था, उसी समय उसे साक्षात रमेसर बाबू और उनकी पत्नी दिखीं। दोनों की आँखें गीली हो रही थीं। अभी वह नौकर कुछ कह पाता इससे पहले ही रमेसर बाबू बोल पड़े, “डरो नहीं किरिपा भाई! दरअसल मेरा साला ही हम दोनों को मौत के घाट उतारकर हमारी संपत्ति का मालिक बन बैठा है पर अब अधिक दिनों तक वह भी जिंदा नहीं रह सकता। हम उसे ऐसी मौत देंगे कि देखने वालों का हृदय काँप उठेगा।” इतना

कहने के साथ ही रमेसर बाबू और उनकी पत्नी का भूत गायब हो गए।

अब तो किरिपा नामक नौकर पसीने से पूरी तरह डूबा हुआ था। वह अब मवेशियों को नाद पर बाँदना छोड़कर गाँव की ओर भागा और गाँव के कुछ बड़े-बुजुर्गों को यह बात बताई। गाँव के कुछ लोगों ने तो उसकी बात पर विश्वास किया पर अधिकांश ने इसे उसके खुराफाती दिमाग की उपज मानी। कुछ लोगों ने कहा कि हो सकता है कि रमेसर बाबू के साले ने इसको डाँटा हो इसलिए यह ऐसी बातें कर रहा है।

खैर, किरिपा की अब हिम्मत नहीं थी कि वह अपने काम पर जाए। वह तो इतना परेशान हो गया था कि उसी दिन सुबह-सुबह ही अपना गाँव छोड़कर किसी रिश्तेदारी में चला गया।

खैर, कुछ बातें अधिक दिन तक नहीं छिपतीं। हुआ यूँ था कि रमेसर बाबू के साले अब बराबर कुछ पंडितों को बुलाकर घर में अनुष्ठान करवाना शुरू कर दिए थे। पहले तो उन्होंने पंडितों को भी कुछ खुलकर नहीं बताया पर अंततः उन्हें बताना ही पड़ा कि इस घर पर भूतों का छाया है। रात को अजीब-अजीब घटनाएँ घटती हैं। कभी-कभी दिन में भी उनके साथ हृदय को कँपा देने वाली घटना घट जाती है। फिर उन्होंने अपने बचाव में एक नई अफवाह फैलाई कि कोई उनका दुश्मन उनसे इस जीजा के घर-जमीन को छिनना चाहता है, इसलिए उसने भूतों को छुड़वा रखा है। खैर, अब तो पंडितों के अनुष्ठानों के साथ ही सोखाओं आदि का आना भी शुरू हो गया था। सभी लोग भूतों को अपने बस में करने की, उन्हें बाँधने की, उन्हें भगाने की कोशिश करते पर कोई सफल नहीं होता। अब तो दिन-प्रतिदिन रमेसर बाबू के साले का जीवन नरकीय होता जा रहा था। वो मानसिक रूप से भी कमजोर होता जा रहा था पर फिर भी वो इस बात को छिपाने की कोशिश करता कि उसके जीजा और बहन के भूत ही उन्हें परेशान कर रहे हैं।

अब लोगों को भी दाल में कुछ काला नजर आने लगा था पर फिर भी कोई कुछ कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।

एक दिन कुछ पंडितों ने कहा कि हो सकता है कि उनके जीजा एवं बहन की अतृप्त आत्माएँ ही उन्हें परेशान कर रही हों? फिर क्या था, काशी से एक बड़े पंडित बुलाए गए। उस पंडित ने कहा कि मैं आपके जीजा और बहन के लिए थान (स्थान) बाँध देता हूँ। आप नियमित रूप से उनकी पूजा करें, कोई परेशानी नहीं रहेगी। फिर क्या था, अनुष्ठान शुरू हुआ। मंत्रोच्चार शुरू हुआ। घर के पास ही खुले में दो पिंडियाँ (एक जीजा एवं एक बहन के लिए) बाँधनी शुरू की गई। इसी दौरान रमेसर बाबू के साले ने पैसे से भरी अपनी थैली निकाली और गरीब लोगों को अपने जीजा-बहन के नाम पर दान करना शुरू किए।

अरे, यह क्या! कोई कुछ समझ पाए, तभी एक हाथ उनकी ओर बढ़ा और पैसे की उस थैली को छिनकर दूर फेंक दिया। इतना ही नहीं कोई आगे आए उससे पहले ही एक अदृश्य आवाज़ गूँजी, “तूने पैसे-जमीन आदि के लिए ही न हम दोनों को मारा था? तू भी इस पैसे-जमीन का उपभोग नहीं कर सकता।” इतना कहते ही ऐसा लगा कि रमेसर बाबू के साले का गला कोई अदृश्य शक्ति दबा रही है। किसी की भी हिम्मत नहीं हुई आगे बढ़ने की। देखते ही देखते रमेसर बाबू के साले के मुँह से रक्त फूट पड़ा। उनकी आँखें डर की विभत्सा

से डर कर ऐंठ गई। जी हाँ, उनकी इहलीला समाप्त हो गई।

इस घटना को घटे काफी दिन हो गए। रमेसर बाबू के गाँव-जवार के लोग आज भी कहते फिरते हैं कि व्यक्ति जो कुछ भी करता है, उसे कोई न कोई देख रहा होता है। अगर ग़लत काम के लिए कानून सजा न दे पाए तो भगवान देता ही है। आज भी वह घर विरान पड़ा हुआ है। किसी की हिम्मत नहीं होती उस घर में जाने की। साथ ही गाँव वालों को कभी-कभी श्वेत वस्त्र में लिपटे रमेसर बाबू और उनकी पत्नी दिख जाते हैं। गाँव वाले श्रद्धा से नतमस्तक हैं क्योंकि इस घटना के बाद से उस गाँव में कोई ऐसी घटना नहीं घटी और एक बार तो इस गाँव के एक व्यक्ति पर भिनसहरे खेतों की तरफ एक जंगली सूअर ने आक्रमण कर दिया था तो उस व्यक्ति ने बताया था कि उसकी रक्षा रमेसर बाबू ने ही की थी।

आज भी रमेसर बाबू का वह घर विरान पड़ा हुआ है और खंडहर में तब्दील हो गया है पर घर के बाहर बनी उन पिंडियों पर अगरबत्ती-कपूर जलता रहता है। उधर से गुजरने वाला कोई भी गाँव-जवारी उन पिंडियों के आगे नतमस्तक होना नहीं भूलता।

प्रेतनी का मायाजाल

मध्य जुलाई का समय और रात के करीब 11 बज रहे होंगे। रात की कालिमा को बादलों की काली घटा ने और भी भयानक रूप से काली-कलूटी बना दिया था। खैर, इस भयावह, सन्नाटेदार अँधियारी रात की परवाह न करते हुए गुगली-राधेनगर एक्सप्रेस अपनी तेज रफ्तार से अपने गंतव्य की ओर दौड़ते चली जा रही थी। चंदू अपनी सीट पर गहरी निद्रा में चला गया था पर पास वाले सामने की सीट पर सोए हुए बुजुर्ग करवटें बदल रहे थे। उनके करवटें बदलने का कारण यह था कि उन्हें अगले स्टेशन पर उतरना था जो लगभग आधे-पौन घंटे में आनेवाला था।

ठीक 11 बजकर 40 मिनट पर चों-चों करते हुए ट्रेन रुकी। बुजुर्ग ने तेजी से चंदू को हिलाकर जगाया और कहा कि बेटा मेरा स्टेशन आ गया है। जरा मेरा सामान उतरवाने में मेरी मदद कर दे।

चंदू आँख मलते हुए एवं अधखुले मुँह से जम्हाई लेते हुए उठ बैठा और उस बुजुर्ग के सीट के नीचे से उनकी अटैची एवं एक बड़े बैग को निकाला। फिर चंदू ने उस बुजुर्ग के सामान को ट्रेन से नीचे उतारा। बुजुर्ग ने चंदू को प्रशंसनीय दृष्टि से देखने के बजाय थोड़े उदास मन से देखा और फुसफुसाकर बोला, “बेटा जरा सावधानी बरतना क्योंकि मेरी सीट अभिशापित है। लगभग 12 बजने को हैं, अच्छा होगा कि अपने स्टेशन पर उतरने तक तू जगा ही रहा। वैसे भी 3-4 घंटे में तेरा स्टेशन भी आ ही जाएगा।”

चंदू कुछ समझ नहीं सका पर चेहरे पर प्रसन्नता लाते हुए उस बुजुर्ग व्यक्ति को बाय-बाय किया और फिर अपनी सीट पर आकर बैठ गया और उस बुजुर्ग की कही हुई बात पर अनमने मन से विचार करने लगा। अब तो वैसे भी चंदू की नींद गायब हो चुकी थी और बार-बार उसके दिमाग में एक ही बात कौंध रही थी कि उस बुजुर्ग ने ऐसा क्यों कहा कि अपना स्टेशन आने तक जगा ही रहा। खैर, अब ट्रेन भी हार्न दे चुकी थी और धीरे-धीरे अपनी स्पीड पकड़नी शुरू कर दी थी और इसी समय घनघोर घटा से बड़ी-बड़ी बूँदों ने निकलकर ट्रेन की छत को भिगोना शुरू कर दिया था। 5 मिनट भी नहीं बिता होगा कि ट्रेन भी अपनी पूरी स्पीड में आ गई और बारिश भी। जी हाँ, हल्की हवा और जोरदार, घरघराहट के साथ बारिश और हल्की हवा भी सांय-सांय करने लगी थी।

चंदू के आस-पास की सीटें लगभग खाली ही थीं, क्योंकि उसके डब्बे में उस बुजुर्ग के सिवा कोई और था ही नहीं और वे बुजुर्ग भी चंदू को थोड़ा दिमाग पर जोर डालने वाली बात बताकर पिछले स्टेशन पर उतर चुके थे। बाकी के सभी यात्री तो पहले के ही स्टेशनों पर उतर चुके थे। खैर, चंदू डरने वालों में से नहीं था। उसने सोचा कि लगभग भिनसहरे 3-4 बजे तक उसका स्टेशन आ ही जाएगा तो क्यों नहीं जगकर ही यह समय काट लिया जाए। उसने बुजुर्ग के उतरने के समय जलाई हुई बत्तियों को वैसे ही जलने दिया था पर अब मात्र एक बत्ती को छोड़कर बाकी बत्तियों को बुझा दिया तथा सीट पर ऐसे लेटा कि उसका मुँह सामने की सीट की ओर हो और आँखें बंदकर कुछ गुनगुनाने की कोशिश करने लगा।

ट्रेन अपने प्रियतम से मिलने को आतुर किसी मदमस्त नवयौवना की तरह बारिश की परवाह न करते हुए, सरसराते हुए, तेज गति से लोहे की पटरियों को बेरहमी से कुचलते हुए दौड़ी चली जा रही थी। अचानक तेज बिजली कौंधी और डिब्बे की खिड़की में लगे काँच को पार करते हुए डिब्बे में कुछ पल के लिए उँजियार कर रफूचक्कर हो गई। तभी अचानक हड़बड़ाकर चंदू उठकर अपनी सीट पर बैठ गया। उसे ऐसा लगा कि कोई व्यक्ति तेज कदमों से उस डिब्बे में आया हो।

अरे, यह क्या! वह कुछ समझ पाता, उससे पहले ही एक नवयुवती एक अटैची लिए धड़ाम से आकर उसके सामने वाली सीट पर बैठ गई। मंद प्रकाश में वह बहुत ही खूबसूरत लग रही थी पर साथ ही वह पूरी तरह से भींगी हुई थी और उसके बालों की लटों से पानी भी टपक रहा था। चंदू कुछ समझ पाता, कुछ बोल पाता, उससे पहले ही उस नवयौवना ने अपनी अटैची खोली और उसमें से तौलिए को निकालकर अपने सिर को पोंछने लगी। अपने बालों में तौलिए को फिराते हुए मंद प्रकाश में उसका गुलाबी चेहरा और भी खूबसूरत लग रहा था। चंदू थोड़ा सकपका गया जब उसे उस बुजुर्ग की बात याद आई और साथ ही उसके दिमाग में यह भी बात कौंधी की अचानक इतनी तेज बारिश में, इतनी तेज रफ्तार से दौड़ती ट्रेन में यह बला (बाला) चढ़ी कैसे? वह बहुत ही घबरा गया क्योंकि ट्रेन तो रुकी नहीं थी फिर यह युवती यहाँ कैसे? अचानक उसके दिमाग से आवाज़ आई कि हो सकता है कि पिछले स्टेशन पर दूसरे डिब्बे में चढ़ गई हो और अब यहाँ पहुँची हो। पर फिर एक शंका उत्पन्न हुई। अगर किसी पिछले डिब्बे में चढ़ी भी हो तो बारिश तो ट्रेन के चलने के साथ शुरू हुई थी तो यह भीगी कैसे? और यह भीगी भी इस तरह से है जैसे अभी-अभी इसी बरसात में भींगकर आई हो। चंदू के दिमाग ने अब काम करना बंद कर दिया था और उसके पूरे शरीर ने पसीने से नहाना शुरू कर दिया था। पसीने की कुछ बूँदों ने तो उसके ललाट पर अपना घर भी बना लिया था। वह गुमसुम मन से, डरे-सहमे, बिना कुछ बोले अपनी सीट पर जड़वत बना रहा।

5 मिनट तक की चुप्पी के बाद अचानक उस नवयुवती ने मुस्कुराते हुए हाथ मिलाने के अंदाज में अपना हाथ चंदू की तरफ बढ़ाया और चंदू अपना हाथ बढ़ाए इससे पहले ही वह नवयुवती बोल पड़ी, “मेरा नाम चंदा है और मैं अपने मौसी के घर जा रही हूँ।” चंदू भी हकलाकर बोल पड़ा, “मैं चंदू।” बस इससे अधिक वह कुछ बोल न सका। इसके बाद तो उस नवयुवती ने इस तरह से बोलना शुरू कर दिया कि जैसे कोई ऐसी समाचार-वाचिका हो जिसे 10 मिनट में बिना ब्रेक के हजार समाचार सुनाने हों। चंदू तो बस और बस थूक घोंटे हुए बैठा रहा और डरे-सहमे अपने स्टेशन का बेसब्री से इंतजार करता रहा। अचानक पता नहीं क्या हुआ कि तेज चोंड़ियाने के साथ ही ट्रेन अपनी जगह पर खड़ी हो गई। शायद कोई बहुत ही छोटा स्टेशन था। अभी चंदू कुछ समझे तभी उस स्टेशन पर लगे माइक उस बारिश में घोंघिया उठे। किसी मरदानी आवाज़ में घोषणा की जा रही थी कि तकनीकी खराबी के चलते गुगली-राधेनगर एक्सप्रेस अभी आगे नहीं जा सकती। इस तकनीकी खराबी को दूर करने में घंटों लग सकते हैं, अस्तु सभी यात्री सहयोग करें। चंदू के लिए यह एक और नई मुसीबत थी। अब तो उसका दिमाग पूरी तरह से चकरा गया। करे तो क्या करे? खैर, उसने घड़ी देखी। उसकी घड़ी उस समय रात के 2 बजा रही थी। मन को तसल्ली

दिया कि कोई बात नहीं, 2-3 घंटे में वैसे भी सुबह हो जाएगी। अचानक उसके सामने की सीट पर करवटें बदलती वह नवयुवती फिर बोल पड़ी, “लगता है, कोई बड़ी खराबी हो गई है। खैर, अगर आप चाहें तो मेरे साथ नीचे उतर सकते हैं। इस स्टेशन के पास ही मेरे एक रिश्तेदार रहते हैं। हम लोग उनके घर पर जा सकते हैं और सुबह-सुबह फिर कोई दूसरी ट्रेन पकड़कर अपने-अपने गंतव्य की ओर चले जाएंगे?”

चंदू कुछ बोल न सका पर पता नहीं क्यों उस नवयुवती के पीछे-पीछे अपना सामान लिए उतर पड़ा।

तेज बारिश में अपने तेज कदमों से छप-छप करती, स्टेशन के बाहर जाती हुई वह नवयुवती और बेसुध-सा उसके पीछे बेमन से घसीटकर चलता हुआ चंदू लगभग 5-7 मिनट चलने के बाद उस नवयुवती ने एक घर के बाहर लगी घंटी बजाई। दरवाजा खुला और वह घर के अंदर तथा पीछे-पीछे चंदू भी। घर के अंदर सिर्फ और सिर्फ एक ही औरत थी पर चंदू उसको भी ठीक से देख नहीं पाया था।

खैर, घर के अंदर पहुँचते ही साथ आई नवयुवती चंदा ने एक तौलिया लाकर चंदू को दिया तथा कुछ अच्छे रात्रिकालीन, शयनकालीन महुँगे पहनावे तथा साथ ही हौले से मुस्कुराते हुए बोली कि आप आराम से अपने कपड़े बदल लो तब तक मैं चाय बनाकर लाती हूँ। अब चंदू कुछ सहज महसूस कर रहा था पर डरा हुआ तो अभी भी था। उसने धीरे से बोला कि चाय की आवश्यकता तो नहीं लग रही पर पता नहीं फिर क्या सोचकर बोला, अच्छा, थोड़ा चाय पिलवा ही दीजिए।

लगभग 10 मिनट भी नहीं बीते होंगे कि वह नवयुवती (चंदा) शयनकालीन खूबसूरत, मादक पोशाक में बिखरे बालों के साथ दोनों हाथों में चाय की दो प्याली लिए हुए मादकता भरी चाल के साथ उस कमरे में दाखिल हुई और मुस्कुराते हुए एक प्याली चंदू की तरफ बढ़ा दी। कँपकँपाते हाथों को संभालते हुए अपने दाएँ हाथ को बढ़ाकर चंदू ने कैसे भी प्याली ले ली और उसे आहिस्ते से होंठों से लगाकर चाय की चुस्की लेने की कोशिश करने लगा। अभी चंदू ने चाय की प्याली को पूरी तरह से खत्म भी नहीं किया था कि उसे एक बहुत ही अजीब व भयानक चीज देखने को मिली।

वह जिस कमरे में था उसमें एक बड़ा-सा दर्पण लगा हुआ था। अचानक जब उसकी नजर उस दर्पण पर पड़ी तो क्या देखता है कि उस दर्पण में उसे एक अति भयानक एक आँख वाली चुड़ैल दिखाई दी, जिसके बाल पूरी तरह से बिखरे हुए और चेहरा बहुत ही विभत्स था। वह तो पूरी तरह से घबड़ा गया क्योंकि उसके पास बैठकर चाय की चुस्की लेने वाली चंदा तो बहुत ही मोहक थी, आकर्षक थी, खूबसूरत थी और उन दोनों के सिवा तो उस कमरे में कोई था भी नहीं। फिर क्या, उसने हनुमानजी का नाम लेते हुए अपने को संभाला और चाय को खत्म करके प्याली चंदा की ओर बढ़ा दिया। चंदा ने अपनी प्याली पहले ही खाली कर दी थी। फिर वह हौले से उठी और उन दोनों प्यालियों को लेकर घर के अंदर चली गई। उसके जाते ही चंदू ने फिर उस दर्पण की ओर देखा पर अब उस दर्पण से उस भूतनी का चेहरा गायब था। अब तो चंदू को उस बुजुर्ग की बात फिर से याद आ गई और वह समझ गया कि वह बुजुर्ग क्या कहना चाहता था।

खैर, अब चंदू ने धीरज और विवेक से काम लेना शुरू कर दिया था। अब उसने बिना देर किए अपनी अटैची से तुलसी की माला निकालकर गले में पहन लिया तथा साथ ही दुर्गा सप्तशती की पुस्तक भी निकालकर अपने सिरहाने रख लिया।

अरे यह क्या, प्याली रखने के बाद जब चंदा आई तो थोड़ा सहमकर चंदू के पास न बैठकर थोड़ा दूर ही खड़ी रही और कातर दृष्टि से चंदू की तरफ देखते हुए उससे वह माला निकालकर दूर फेंकने का इशारा की। पर चंदू अब पूरी तरह सजग हो गया था। उसने ऐसा नहीं किया और सिरहाने रखे दुर्गा सप्तशती को भी हाथ में उठा लिया। दुर्गा सप्तशती को हाथ में उठाते ही सुंदर, आकर्षण, मासूम-सी लगने वाली और मीठी मुस्कान वाली चंदा का चेहरा अचानक कठोर होने लगा और देखते ही देखते वह पूरी तरह से भयानक लगने लगी। उसके बाल पूरी तरह से खुले हुए हवा में लहराने लगे और गरजने लगे तथा साथ ही अट्टहास करने लगे। वह चिल्लाने लगी कि तू बचकर नहीं जा सकता और मैं तेरा अंत कर दूँगी। पर अब चंदू भी अपने को मजबूत करते हुए कुछ मंत्रों का उच्चारण करते तथा दुर्गा सप्तशती को हाथ में कस के दबाए उस कमरे से बाहर निकलने लगा। उधर वह चंदा अपने मायाजाल में चंदू को उलझाने का पूरा प्रयत्न करते हुए, उसके पीछे-पीछे बाहर आ गई। पर वह चाहकर भी चंदू का कुछ बिगाड़ नहीं पा रही थी और चंदू पर उसके भयानक, क्रूर रूप-रंग, अट्टहास का भी कोई असर होता नहीं दिख रहा था।

अभी चंदू उस घर से निकलकर तेजी से कुछ ही दूर बढ़ा था कि अचानक वह बस्ती पता नहीं कहाँ गायब हो गई और साथ ही वह चंदा (चुडैल) भी। अरे, यह तो भयानक जंगल था, डरावना-घना जंगल।

अब तो चंदू पूरी तरह से फँस चुका था क्योंकि उसे बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था। अभी चंदू कुछ और दिमाग दौड़ाए तभी उसके कानों में किसी बुजुर्ग की आवाज़ सुनाई दी, “बेटा! तू ठीक तो है?” यह आवाज़ सुनते ही चंदू ने पीछे मुड़कर देखा तो एक संत जैसे बुजुर्ग उसे दिखाई दिए जो चलते हुए उसकी ओर ही आ रहे थे। चंदू फिर डर गया, क्योंकि उसे लगा कि कहीं यह भी चंदा का मायाजाल तो नहीं? पर पता नहीं क्यों उस सज्जन के पास आते ही चंदू का डर रफूचक़र हो गया और वह पूरी तरह से सहज महसूस करने लगा। फिर क्या था, वह सज्जन किसी घटना का जिक्र करते हुए आगे-आगे और उनकी बातों को तन्मयता से सुनते हुए चंदू उनके पीछे-पीछे चल पड़ा।

दरअसल उस सज्जन ने चंदू को बताया कि वे पास की ही बस्ती में रहते हैं और चंदा उनकी ही बच्ची है जिसको मरे 5 साल हो चुके हैं। उन्होंने आगे भी उदास मन से कहना जारी रखा कि चंदा उस समय 17 साल की थी जब इसी ट्रेन से आ रही थी। उसके साथ 2-3 युवा भी थे। जब ट्रेन इस जंगल से होकर गुजरने को हुई तो उन लफंगों ने ट्रेन की चैन-पुलिंग करके जबरजस्ती चंदा को लेकर इसी जंगल में आ गए थे। फिर अपनी हवस मिटाने के बाद चंदा का कत्ल कर दिए थे। तभी से चंदा मरकर भी जीवित है और इस ट्रेन से आने वाले उस सीट पर बैठे, जिसपर तू बैठा था, किसी भी युवा को बहलाकर, अपने मायाजाल में उलझाकर यहाँ उतार लेती है और फिर उसको मार देती है। उस सज्जन ने यह भी बताया कि दरअसल ट्रेन जहाँ रुकी थी, वहाँ न कोई छोटा स्टेशन है और न ही कोई घोषणा ही होती है पर रात के समय उस सीट पर बैठे किसी भी युवा को वह छोटा स्टेशन दिखाई

देता है और साथ ही ट्रेन के वहाँ रुकते ही घोषणा भी सुनाई देती है। यह सारा काम चंदा द्वारा किया जाता है।

खैर, उस सज्जन ने यह भी बताया कि अगले महीने वे गया जाकर कुछ अनुष्ठान करना चाहते हैं, पिंडदान करना चाहते हैं ताकि चंदा की भटकती आत्मा शांत हो जाए और किसी निर्दोष का अहित न करे। उन्होंने यह भी बताया कि वे अपने गाँव-घर में उसकी आत्मा की शांति के कई अनुष्ठान कर चुके हैं पर वह शांत होने का नाम नहीं ले रही है, इसलिए वे गया जाकर पिंडदान करना चाहते हैं।

खैर, चंदू तो बच गया पर उन दुष्ट आताताइयों के कुकर्मों ने कितने ही मासूमों की बलि चढ़वा दी थी। सही करें, सत्कर्म करें। कुछ भी ऐसा न करें जिससे आपको या समाज को किसी भी प्रकार की किसी विपत्ति का सामना करना पड़े।

भूत का भयानक तांडव

भूत-भूत और भूत, सिर्फ भूत। जी हाँ, इस गाँव में हर व्यक्ति तब सिर्फ और सिर्फ भूत-प्रेत की ही बात करता था। आज भी यह गाँव भूत-प्रेत के छाए से उबर नहीं पाया है पर हाँ, आज कल भूत-प्रेत की चर्चा कम हो गई है या जानबूझकर इस गाँव-जवार के लोग भूत-प्रेतों की चर्चा करना नहीं चाहते। आखिर करें भी क्यों, ये लोग भूत-प्रेत की चर्चा? एक काला अध्याय जो बीत चुका है, उसके बारे में बात करना तो मूर्खता ही होगी और साथ ही डर, भय, आतंक की बात भला किसे अच्छी लगती है? बात करना तो दूर इस गाँव के कुछ बुजुर्ग लोगों के रोएँ खड़े हो जाते हैं केवल वह भूतही घटना याद करके।

बात लगभग 40-50 साल पुरानी है। तब यह गाँव जवार-परगने के सबसे समृद्ध गाँवों में गिना जाता था। आखिर गिना भी क्यों न जाए, लगभग 30-40 घरों के इस गाँव में लगभग सभी घर-परिवार पूरी तरह से खानदानी समृद्ध थे और खेती-बारी भी बहुत ही अच्छी होती थी। इस गाँव में बीसों कुएँ, 10-12 तालाब हुआ करते थे। कोई भी ऐसा घर नहीं जिसके दरवाजे पर 2-4 लगहर चउआ (दूध देने वाले गाय, भैंस) न हों और साथ ही 2-4 जोड़ी अच्छे बैल। कहा जाता है कि उस समय इस गाँव के अधिकांश लोग विदेशों में नौकरी करते थे। इतना ही नहीं गन्ने की पैदावार के लिए यह गाँव अपने जवार का नामी गाँव था। जनवरी-फरवरी आदि के महीने में इस गाँव में कम से कम 7-8 कोल्हू प्रतिदिन चलते थे। कड़ाहों से उठती राब की मिठास पूरे वातावरण में फैल जाती थी। पूरा गाँव मीठा-मीठा हो जाता था। हर घर के सामने खोइया की टल्ली लग जाती थी। महीने-दो महीने इस गाँव के हर घर से कचरसी महक उठती रहती थी। हर घर में रसिआव आदि पकवान बनाए जाते थे। लाई-धोंधा बाँधा जाता था। यह वह समय था जब कुछ गाँवों में अच्छे-अच्छे लोगों को खाने को नहीं जुरता (मिलता) था। उस समय आस-पास के गाँव, इस गाँव के कर्जदार हुआ करते थे।

इस गाँव के दक्खिनी छोर पर दूसरे गाँव से आकर एक धोबी परिवार बस गया था। गाँव भर के कपड़े आदि धोने से इस धोबी परिवार की अच्छी आमदनी हो जाती थी और किसी भी प्रकार से खाने-पीने की कोई कमी नहीं रहती थी। उस धोबी परिवार ने गाँव से सटे पूरब के ओर की कंकड़हिया गड़ही (तालाब) पर धोबी घाट बनाया था जहाँ कपड़े पटककर धोने के लिए ठेहुनभर पानी में 2-3 लकड़ी के पाट (जिस पर पटक कर कपड़ा धोया जाता है) रखे गए थे। कपड़े धोने के बाद यह धोबी परिवार उन कपड़ों को वहीं गड़ही किनारे पसारकर सुखा लेता था और फिर परिवार का कोई सदस्य गाँव में घूमकर जिसके कपड़े होते थे, उनके घर पर दे दिया करता था।

समय कब करवट बदल दे, खुशी कब मातम में बदल जाए, कहा नहीं जा सकता। समय का चक्र चलता रहता है, घुमता रहता है और अच्छे व बुरे दिनों का सूत्रपात करता रहता है। जी हाँ, पता नहीं कब इस गाँव की खुशियों को किसी की नजर लग गई। समृद्ध गाँव, हँसते-खेलते गाँव में एक दिन ऐसा आया कि सियारिन फेंकरने लगी। त्राहिमाम, त्राहिमाम मच गया। अधिकांश लोग अपने परिवार सहित गाँव छोड़कर दूसरे गाँवों में जाकर बसने लगे और एक भरा-पूरा गाँव उजाड़ हो गया। गाँव में गायों के रंभाने की, बछड़ों आदि के

उझल-कूद करने की, किसानों को खेतों में जाने की, मजदूरों द्वारा सिर पर बोझा लिए मस्त चाल से तो कुछ के दौड़ते हुए चलने की, चरवाहे की भैंस के पीठ पर बैठकर कोई पुरबिया तान छेड़ने की, घंसगरिन आदि के गुनगुनाने की, मक्के, गेहूँ आदि के खेत में गंवहारियों द्वारा भथुआ आदि साग घोंटने की परंपरा समाप्त होती दिखी। बहुत सारे घरों में झींगुरों, चींटा-चींटियों, मकड़ी के जालों का साम्राज्य हो गया तो किसी के घर की धरन, घरन, छाजन आदि ने जमीन को चूम लिया।

हुआ यूँ कि धोबी परिवार की किसी रिश्तेदारी में एक ऐसी घटना घट गई कि उस रिश्तेदार-परिवार के मात्र एक 14-15 वर्षीय रमेसर नामक किशोर को छोड़कर बाकी सभी महामारी के गाल में समा गए। विपत्ति के इस काल में धोबी परिवार उस असहाय किशोर का सहारा बनते हुए उसे अपने साथ अपने गाँव ले आया। दो-चार महीनों में वह किशोर अपनी विपत्तियों से उबरते हुए जीवन की नई राह पर चल पड़ा। अब वह उस धोबी परिवार के साथ ही रहकर कपड़े आदि धोने में उन सबकी मदद करने लगा। धीरे-धीरे वह किशोर गाँव भर का चहेता बन गया। वह गाँव के बड़-बुजुर्गों को नाना आदि तो युवा-अधबुड़ वर्ग को मामा आदि कहकर पुकारता था। अब तो इस गाँव से उसका अटूट संबंध बन गया था। लोगों के घर से कपड़े लेने और धोने के बाद पहुँचाने का काम अब अधिकतर वही करने लगा था। अचानक पता नहीं कब कपड़े लेने और देने के चक्कर में रमेसर के नैन उस गाँव की ललमुनिया से लड़ गए। ललमुनिया और रमेसर का प्यार इतना परवान चढ़ा कि उन दोनों ने एक-दूसरे के साथ जीने-मरने की कसम खा ली।

कहा जाता है कि इश्क और मुश्क छुपाए नहीं छुपते। सत्य है यह कथन। ललमुनिया और रमेसर के प्यार की खबर गाँव वालों को लग गयी। एक दिन गाँव के कुछ दबंग लोग ललमुनिया के घर पहुँचे और ललमुनिया के परिवार वालों को यह बात बताई। ललमुनिया का परिवार भी गाँव का एक समृद्ध परिवार था, अस्तु ललमुनिया की यह कारस्तानी उन लोगों को बहुत ही नागवार गुजरी। ललमुनिया को समझाया गया पर वह झुकने को एकदम तैयार नहीं थी। अंत में उसे मारा-पीटा भी गया पर अब तो उसने और निडर होकर सरेआम रमेसर के नाम की माला जपना शुरू कर दिया था। फिर क्या था, गाँव के लोग मिलकर उस धोबी परिवार के पास पहुँचे और रमेसर पर लगाम कसते हुए उसे उसके गाँव भेजने के लिए धोबी परिवार को बाध्य कर दिए। आखिर वह धोबी परिवार करता भी क्या? उसने पहले तो रमेसर को बहुत समझाया और बताया कि ये प्यार का खेल उसके साथ ही इस पूरे परिवार को ले डूबेगा, पर रमेसर मानने को तैयार नहीं हुआ। गाँव के डर से उस धोबी परिवार ने उस रमेसर को अपने घर से भगा दिया और कहा कि जहाँ तुम्हारी मर्जी हो चले जाओ और फिर कभी लौटकर इस गाँव में मुँह मत दिखाना।

जी हाँ, रमेसर गाँव तो छोड़कर चला गया पर गाँव के बाहर नहर किनारे या किसी बाग-बगीचे या गन्ने आदि के खेत में उसका और ललमुनिया का छुप-छुप कर मिलना जारी रहा। अब यह बात उस गाँव से निकलकर आस-पास के अन्य गाँवों के लिए चर्चा का विषय बनती जा रही थी। इस गाँव के लोगों को यह बात बहुत ही नागवार गुजरी और इन लोगों ने आपस में तय किया कि अब पानी नाक से चढ़कर बह रहा है। कुछ तो करना होगा जिससे आस-पास के गाँवों में हमारी जग-हँसाई न हो। प्लान के मुताबिक धोबी परिवार से

कहा गया कि अब वह रमेसर को बुला ले। उसे माफ कर दिया गया है। अब हम गाँव वालों को उससे कोई शिकायत नहीं है। वह धोबी परिवार उस गाँव के लोगों की कुटिल, जालिम चाल को समझ नहीं सका। उस धोबी परिवार के सभी सदस्यों के चेहरे खुशी से गुलाबी हो गए। जी हाँ, अब रमेसर फिर से उस गाँव में आकर रहने लगा था।

इस बार रमेसर का गाँव में आए अभी दूसरा दिन ही था। शाम का समय था और सूर्यदेव अस्तांचल में जाने के लिए बेचैन दिख रहे थे। उनका हल्का रक्तिम प्रकाश पेड़-पौधों की फुनगियों को रक्तरंजित करता पश्चिमी आकाश को गाढ़े खून रंग से रंग दिया था। पास के बगीचों में, पेड़-पौधों पर बैठे, इस डाल से दूसरी डाल पर फुदकते पक्षियों का कोलाहल कानों में मिश्री घोल रहा था। अचानक गाँव के 15-20 युवा, अधबुड़, बुजुर्ग गोल में उस धोबी परिवार के दरवाजे पर दस्तक दिए। उस समय रमेसर पास में ही झँटिकट्टे में झाँटी काटने में मगशूल था। अचानक बातों-बातों में ही उस धोबी परिवार के सवांग कुछ समझें उससे पहले ही गाँव के कुछ युवा उस झँटिकट्टे में पहुँचकर रमेसर को दबोच लिए। कोई कुछ कहे, धोबी परिवार रोए-गिड़गिड़ाए इससे पहले ही वहाँ जमा भीड़ ने फरसे, भाले आदि से रमेसर पर हमला कर दिया। भद्दी गालियाँ देती हुई, महाराक्षस बनी वह भीड़ रमेसर पर टूट पड़ी थी। धोबी परिवार का गिड़गिड़ाना, हाथ-पैर जोड़ना, रोना-चिल्लाना सब व्यर्थ था। देखते ही देखते पागल, राक्षसी भीड़ ने उस किशोर रमेसर को मौत के घाट उतार दिया तथा साथ ही उस धोबी परिवार को मुँह खोलने पर बहुत ही बुरा अंजाम की धमकी देते हुए पास के ही उस कंकड़हिया गड़ही के किनारे रमेसर की खून से लथपथ लाश को जलाकर दफना दिए।

समय धीरे-धीरे उस गाँव को बरबादी की ओर अग्रसर करने में जुट गया। अभी रमेसर वाले कांड को हुए 5 दिन भी नहीं बीते थे कि एक दिन सुनने में आया कि ललमुनिया ने भी उसी गड़ही के किनारे बाँस की कुछ कोठियों के बीच साड़ी से अपने गले को ऐंठकर अपने जीभ को सदा-सदा के लिए पूरा बाहर कर दिया। इस घटना के बाद गाँव में पूरी तरह से मातम छा गया था।

इस घटना को बीते अभी 2-3 माह भी नहीं हुए थे कि एक दिन सुबह-सुबह झाड़ा फिरने के बाद उस कंकड़हिया गड़ही में मल धोने गए दो 10-12 साल के बच्चों की लाश उस गड़ही के किनारे पाई गई। ऐसा लगता था कि किसी ने बेरहमी से उन दोनों अबोध बालकों को गला दबाकर मार दिया हो। अब तो आए दिन कोई न कोई भयावह घटना घटने लगी। ऐसी डरावनी घटनाएँ, हृदयविदारक घटनाएँ कि गाँव वालों का जीवन नर्क बन गया। जी हाँ, अब तो गाँव वालों को गाँव के आस-पास अजीब-सी आवाजें सुनाई देती थीं और कभी-कभी बँसवाड़ी या बगीचे आदि में, सुनसान में, बहुत ही सुबह या रात आदि को रमेसर और ललमुनिया को एक साथ घूमते हुए, प्यार के गीत गुनगुनाते हुए तो कभी-कभी भयानक, डरावने रूप में देखा जाने लगा। गाँव में ऐसा लगता था कि विपत्तियों, भयानक घटनाओं का पहाड़-सा टूट पड़ा है।

कभी बिना आग के ही किसी के घर में आग लग जाती तो कभी कुछ लोगों के घरों में बक्से में रखे कपड़े आदि बाक्स बंद होने के बाद भी जले हुए पाए जाते। कुछ लोगों के घरों में थाली में परोसे हुए भोजन में अपने आप किसी जानवर का कच्चा माँस आदि आ जाता

तो किसी की गाय या भैंस के दूध का रंग लाल हो जाता। गाँव वाले पूरी तरह से परेशान हो गए थे। उनका जीवन दुर्भर हो गया था। इतना ही नहीं उस रमेसर को मारने में साथ देने वाले हर व्यक्ति का अंजाम बहुत ही बुरा हुआ। सबको अकाल मृत्यु हुई। कोई पानी में डुबकर तो कोई बिना आँधी के ही किसी बगीचे में डालियों से दबा मृत पाया गया। कोई बिना बीमारी के खून धकचकर मर गया तो किसी ने पता नहीं क्यों खुद ही फँसरी लगा ली। बहुत ही भयावह, दर्दनाक स्थिति बन गई थी उस गाँव की।

ऐसी भयावह परिस्थिति के बाद एक-एक करके उस गाँव के लोग गाँव छोड़कर किसी और गाँव में जाने लगे पर भूत-प्रेत बने उस रमेसर और ललमुनिया के आतंक में कोई कमी नहीं आई। अंत में गाँव में बचे कुछ अच्छे लोग जिन्होंने मन ही मन रमेसर की मृत्यु पर अफसोस जाहिर किया था, एक बड़े पंडितजी को गाँव में बुला लाए। पंडितजी के बहुत ही पूजा-पाठ करने के बाद, मासिक यज्ञ-हवन करने के बाद भूत-प्रेत का आतंक थोड़ा कम हुआ। अंत में उस पंडीजी ने गाँव वालों से रमेसर और ललमुनिया की आत्मा की शांति के लिए अनुष्ठान करवाए।

आज वह गाँव विरान है, उजड़ा हुआ है, मात्र एक्के-दुक्के घर सही-सलामत दिखते हैं पर उनके भी दरवाजे पर ताले लटक रहे हैं। आज भी उस गाँव से जाते किसी पथिक, राही आदि को और साथ ही आस-पास के गाँव वालों को दोपहर के समय या रात को उस कंकड़हिया गड़ही पर किसी द्वारा कपड़े धोने, पटकने की आवाज़ आती रहती है तथा साथ ही यह भी सुनाई देता है कि मामा आवS, कपड़ा सुखाव तथा इसके बाद कभी-कभी भयानक रोने की तो कभी भयानक अट्टहास से पूरी गड़ही सहम-सी जाती है।

दोस्तों, किसी का बुरा न करें। अगर किसी ने कोई ग़लती की हो तो उसे समझाने का प्रयत्न करें। कुछ भी ऐसा न करें कि उसके साथ ही आपका भविष्य भी अंधकारमय हो जाए। कानून का सम्मान करें।

इंसान की हैवानियत पर भारी भूतनी की इंसानियत

आज विज्ञान-विज्ञान का शोर है। विज्ञान तरक्की पर तरक्की किए जा रहा है। यह बहुत ही अच्छी बात है। विज्ञान की छत्र-छाया में बहुत सारे रहस्यों से परदे उठ रहे हैं। हमें लगने लगा है कि हम सभ्यता की नई कहानी लिखने जा रहे हैं। विज्ञान समाज को एक ऐसी तरफ ले जा रहा है जिधर समाज को सिर्फ विकास ही विकास, सुख-सुविधा संपन्न संसार ही नजर आ रहा है। पर विज्ञान की इस तरक्की को हम केवल दिमाग से देखने लगे हैं और अपनी आँखें और कानों को बंद करके किन्हीं और बातों पर ध्यान देना पसंद नहीं करते, चाहें भले व अपने मन की, दिमाग की ही उपज क्यों न हो।

आज विज्ञान काफी अच्छा कर रहा है पर कहीं न कहीं विज्ञान की इस तरक्की में मानवता, भावुकता दबी-कुचल-सी नजर आने लगी है। लोग अपने दिल व दिमाग की न सुनकर विज्ञान की सुनने की आदत पालने लगे हैं। उन्हें लगने लगा है कि अगर हम अपने मन की, दिल की, अपने बाप-दादों की, पारंपरिक बातों पर ध्यान देंगे तो गँवार कहलाएँगे और विज्ञान की दौड़ में पीछे छूट जाएँगे। आप विज्ञान के साथ आगे बढ़ते रहिए पर अपने मन-मस्तिष्क को भी साथ लेकर चलिए तथा साथ ही अपनी परंपरा पर भी विचार कीजिए। अगर उसमें कुछ अपनाने वाला है तो उसे अपनाने से परहेज मत कीजिए। बाप-दादा की बातों पर भी विचार कीजिए। हाँ, आप भले विज्ञान की दृष्टि से ही सोचिए।

अभी भी बहुत सारे ऐसे रहस्य हैं जो विज्ञान की तरक्की पर प्रश्नचिह्न लगाते नजर आते हैं। विज्ञान इन रहस्यों के आगे बौना नजर आता है। लाख कोशिश के बावजूद वह कुछ रहस्यों पर तो अपनी अवैज्ञानिक बातों को ही थोपकर अपनी वैज्ञानिकता सिद्ध करना चाहता है, एकदम से किसी माफिया की तरह।

मैं भी कहाँ विज्ञान में फँस गया। ऐसा नहीं है कि मैं विज्ञान को तबज्जो नहीं देता. देता हूँ पर एक सीमा तक, जहाँ तक मेरा मन व मस्तिष्क गवाही देता है, वहीं तक। अरे, भगवान ने मुझे भी दिल दिया है, दिमाग दिया है, विवेक दिया है तो मुझे भी हक है इनका प्रयोग करने का। केवल विज्ञान-विज्ञान न रटते हुए अपनी पारंपरिक बातों, बाप-दादा की बातों पर मनन करने का, उनकी अच्छाइयों को अपनाने का। विज्ञान के चक्कर में कम से कम हृदयहीन तो न बनिए। दया, करुणा को दूर तो न कीजिए। जीवन के लिए विज्ञान से भी आवश्यक दया, करुणा और भावुकता है। अगर समाज को, देश को तरक्की के रास्ते पर ले जाना है तो विज्ञान का उपयोग दिल व दिमाग से करना बहुत ज़रूरी है।

हमें विज्ञान का नौकर नहीं बनना है अपितु इसका स्वामी बनकर इस पर नियंत्रण रखना है ताकि यह हमें जीवन से ही दूर न लेकर चला जाए। हमें पाषाण हृदय न बना दे। खैर, मुझे तो आप लोगों को एक भूतिहा कहानी सुनानी थी, और मैं लग गया विज्ञान में।

हिमालय की तराई में एक बहुत खूबसूरत गाँव था। इसी गाँव में रमेसर जी रहते थे। रमेसर जी का गाँव में बहुत सम्मान था। वे गाँव में ही अध्यापक थे और गाँव-जवार के बच्चों को अच्छी शिक्षा देते थे। रमेसर जी विवाहित तो थे पर एक लंबी बीमारी के बाद

उनकी बीबी का देहांत हो चुका था। उन्होंने अपनी बीबी को बचाने के लिए देश के कई नामी-गिरामी अस्पतालों के चक्कर लगाए थे पर विधि का विधान कौन टाल सकता है? रमेसरजी के साथ अगर कोई रहने वाला था तो उनकी 15 वर्षीय पुत्री, राधिका। राधिका, रमेसरजी का खूब ख्याल रखती थी और रमेसरजी, राधिका का। राधिका देखने में बहुत ही सुंदर थी और चालाक होने के साथ बातूनी भी। गाँव के सभी लोग भी उसे बहुत प्यार करते थे और शायद इसका यह भी कारण था कि बचपन में उसकी माँ गुजर गई थी।

एक बार की बात है कि जड़ी-बूटियों पर शोध करने के लिए एक महाविद्यालय के 5 छात्र आए हुए थे और इसी गाँव में ठहरे हुए थे। उन्हें कहीं से पता चला था कि रमेसर जी एक अच्छे इंसान होने के साथ ही जड़ी-बूटियों की भी काफी जानकारी रखते हैं और आवश्यक होने पर जड़ी-बूटी से छोटी-मोटी बीमारी का इलाज भी कर देते हैं। ये पाँचों छात्र दिन में हिमालय पर निकल जाते और कुछ जड़ी-बूटियों को लेकर दिन डूबने के पहले वापस आ जाते। कभी-कभी ये छात्र शाम को रमेसरजी के साथ बैठकर इन जड़ी-बूटियों को दिखाते और उनकी जानकारी, ज्ञान, अनुभव का भी लाभ उठाते। रमेसर जी को भी जितनी जानकारी होती, प्रसन्नता-पूर्वक बताते। राधिका भी इन पाँचों छात्रों के साथ खूब घूल-मिल गई थी और इन पाँचों को भइया-भइया कह कर पुकारती थी। छात्र भी राधिका को बहन जैसा प्यार जताते।

यौवन की खूबसूरती अच्छे-अच्छों की आँख पर परदा डाल देती है। इंसान को हैवान बना देती है। इन पाँच छात्रों में खमेसर नामका एक छात्र था। वह थोड़ा दुष्ट प्रकृति का था। धीरे-धीरे उस पर शैतानियत हावी होने लगी थी और उसने राधिका पर बुरी नजरें रखना शुरू कर दिया था।

एक बार की बात है कि रमेसरजी ने एक रात इन पाँचों छात्रों को अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किए। पाँचों छात्र जब आ गए और रमेसरजी के साथ बैठकर बातचीत करने लगे तो खमेसर ने कहा कि तुम लोग रमेसर अंकल के साथ बात करो तब तक मैं राधिका को भोजन बनाने में सहायता करता हूँ और इतना कहते हुए वह राधिका की सहायता के लिए रसोईघर में चला गया। रसोई घर में जाकर उसने अपनत्व के साथ भोजन बनाने में राधिका की सहायता करने लगा। भोजन बनकर तैयार हो गया। इधर खमेसर ने राधिका से छिपाकर भोजन में कुछ जहरीला पदार्थ मिला दिया था। जब सब लोगों के लिए भोजन परोसा जाने लगा तो खमेसर ने कहा कि आप लोग जीम लीजिए, मैं तो राधिका बहन के साथ आप लोगों को खिलाने के बाद ही खाऊँगा। सब लोग हँसते हुए जीमने बैठे। अरे, यह क्या! भोजन का पहला कौर ग्रहण करने के साथ ही चार छात्र और रमेसरजी लुढ़क गए।

राधिका को कुछ समझ में आता इससे पहले ही खमेसर ने एक छोटी सुई निकाली और राधिका के बाँह में दे मारी। अब तो राधिका भी बेहोशी की मुद्रा में चली गई।

खमेसर के दिमाग में क्या चल रहा था, शायद उसे जान पाना मुश्किल था। अब खमेसर ने क्या किया कि एक-एक छात्र को और उसके बाद रमेसरजी को पीठ पर लादकर उस रात के अंधेरे में पर्वत की ओर ले जाकर कुछ इस प्रकार से उनका हाल किया कि अगर किसी के

नजर में भी आए तो लगे कि जंगली, पर्वती जानवरों ने इनका यह हाल किया है। उसके बाद उसने वापस राधिका को भी उठाकर पर्वत की ओर चढ़ना शुरू किया। पता नहीं वह क्या चाहता था?

पर्वत पर कुछ ऊँचाई पर जहाँ से गाँव भी काफी दूर था और रात को वहाँ किसी गाँव वाले का पहुँच पाना भी संभव नहीं था। न ही किसी की आवाज़ ही वहाँ पहुँच सकती थी। ऐसी जगह पर पता नहीं खमेसर ने कब का पर्वतीय पेड़-पत्तियों से एक छोटी-सी मड़ई डाल रखी थी। शायद उसने दिन में ही यह सब किया था। उसने उस मड़ई में आराम से राधिका को लिटा दिया। राधिका को लेटाने के बाद उसने अपनी जेब से फिर एक सुई निकाली और राधिका को लगा दिया। अरे, यह क्या! इस सुई ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया और देखते ही देखते राधिका उठ बैठी। साथ ही यह भी अजीब बात थी कि उस दवा में ऐसा क्या था कि राधिका सब बातों से बेखबर खमेसर के कहे अनुसार बर्ताव करने लगी और उसकी शैतानियत में साथ देने लगी। उस समय राधिका को देखकर शायद किसी को भ्रम हो सकता था कि राधिका भी खमेसर को चाहती थी, पर सच्चाई यह थी कि यह सब दवा का असर था।

इसके बाद खमेसर उस मड़ई के कोने में पड़े एक पुराने झोले में से वाइन की एक छोटी बोतल तथा दो गिलास निकालकर पैग बनाया। कुटिल मुस्कान के साथ एक पैग राधिका की ओर बढ़ाते हुए बोला कि ले राधिका ले, आज की रात सबसे खूबसूरत रात है, हमारे लिए।

राधिका ने भी मदहोश आँखों के साथ गिलास अपने हाथ में ले ली। इसके बाद खमेसर पैग लेने के साथ ही राधिका से कामुकता भरी बातें करने लगा और राधिका भी बिन बोले उसका साथ देने लगी। खमेसर रह-रहकर राधिका को अपनी बाँहों में भरने भी लगा था।

10-15 मिनट तक बातों ही बातों में खेलने के बाद अचानक खमेसर शैतान की तरह राधिका पर टूट पड़ा। वह राधिका को नोच डालना चाहता था कि तभी ऐसा लगा कि एक डरावनी बिजली कड़की जो उस मड़ई को जलाकर राख कर देगी। इस कड़कती-चमकती बिजली के साथ ही उस मड़ई में एक अद्भुत प्रकाश भर गया। इस प्रकाश में खमेसर की आँखें चुंधियाँने लगीं।

मदहोश खमेसर ने जब आँखें खोलकर सामने देखा तो एक विकराल, भयावह छाया उसे दिखी। वह किसी चामुंडा की तरह लग रही थी। बहुत ही बड़े-बड़े लिपटे बाल, बड़े-बड़े हाथ और उनमें भालों जैसे नख। अब तो खमेसर की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई थी। उस छाया ने आगे बढ़कर राधिका के ऊपर हाथ फेरा और देखते ही देखते राधिका फिर से बेहोशी की मुद्रा में चली गई।

अब तो छाया ने अपना और भी विकराल रूप बना लिया। ऐसा रूप जिसे देखकर अच्छों-अच्छों की धोती गीली हो जाए, प्राण-पखेरू उड़ जाएँ। छाया ने आगे बढ़कर एक हाथ से खमेसर का गरदन पकड़ लिया था और चिल्लाए जा रही थी। तू इस लड़की की इज्जत से खेलेगा।

इसके बाद डरावनी हँसी हँसते हुए उस छाया ने कहा कि अब तो मैं तेरी इज्जत से

खेळूँगी। इसके बाद वह छाया अजीब-अजीब रूप बनाकर खमेसर के साथ कुछ ऐसा करने लगी कि रमेसर एक असहनीय पीड़ा से तड़प उठा। उसकी आत्मा भी काँपने लगी। ऐसा लगने लगा कि वह मर ही जाए तो अच्छा पर मर भी तो नहीं रहा था। फिर वह छाया चिल्लाई, “आज से 25-30 वर्ष पहले तेरे जैसा ही एक हैवान इसी पर्वत पर, इसी गाँव में आया था। बताया था कि प्रोफेसर है और जड़ी-बूटियों पर शोध करने आया है। वह मेरे गाँव में महीनों रह गया। धीरे-धीरे मैं उसके काफी करीब आ गई थी और हम दोनों एक-दूसरे को चाहने लगे थे और मैं उसके साथ कभी-कभी इस पर्वत पर भी आती और उसके शोध में मदद करती पर मैं मूर्ख उसको समझ नहीं पाई। वह भेड़िया था, भेड़िया। एक शाम वह मुझे लेकर इस पर्वत पर आया। मुझे क्या पता कि उसके दिमाग में हैवानियत भरी हुई है। पर्वत पर लाकर इसी तरह से उसने भी मड़ई में मेरी अस्मत् से खेलना चाहा। मैंने उससे कहा कि शादी के पहले हम ऐसी हरकत कत्तई नहीं कर सकते। इसके बाद उसने जोर-जबरदस्ती की और पता नहीं मुझे कैसा इंजेक्सन लगा दिया कि मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर पाई। इसके बाद मेरी अस्मत् से घिनौनी खेल खेलने के बाद उसने मुझे बेदर्दी से मार दिया और ऐसी जगह पर फेंक दिया जहाँ से मुझे कोई खोज न पाए।”

इतना कहने के बाद वह छाया अति करुण होकर रोने लगी थी। रोते ही रोते पता नहीं उस छाया को फिर क्या सूझी कि वह हँस पड़ी और देखते ही देखते अपने भाले जैसे नाखूनों से खमेसर को चिरकर रख दिया और भयंकर रूप बनाकर उसके रक्त को पीते हुए अट्टहास करने लगी।

इसी दौरान पता नहीं कब से राधिका भी होश में आ गई थी और उस मड़ई में जो भी चल रहा था, उसे डरी-सहमी देख-सुन रही थी। खमेसर का रक्त पीने के बाद धीरे-धीरे उस छाया की विकरालता शांत हुई। वह राधिका की तरफ बढ़कर बोली, “उठ बेटी, उठ। जब तक इस पर्वत पर मैं रहूँगी, मेरे गाँव क्या, आस पास के गाँवों की भी किसी भी बहू-बेटी की इज्जत से कोई दरिंदा खिलवाड़ नहीं कर पाएगा।”

इसके बाद छाया के इशारे से राधिका धीरे-धीरे उसके पीछे चल पड़ी। छाया ने रास्ते में उसे एक जड़ी उखाड़ने का इशारा किया और फिर राधिका को लेकर उसके पिता और उन चार छात्रों के पास पहुँची। उस छाया के आस-पास प्रकाश बना हुआ था। अपने पिता को देखते ही राधिका रो पड़ी पर छाया ने कहा कि बेटी, देर मत कर! जल्द से जल्द इस जड़ी को इन पाँचों को सूँघा नहीं तो देर हो गई तो इनका बचना मुश्किल हो जाएगा। जड़ी सूँघते ही पाँचों उठ बैठे। उनके उठते ही छाया गायब हो गई। फिर सब गाँव वापस आए।

रमेसरजी ने राधिका से पूरी कहानी सुनने के बाद उस छाया को नमन किया तथा साथ ही उन चार छात्रों से कहा कि कल हम लोग उस जड़ी की तलाश में पर्वत पर चलेंगे जो रात को राधिका ने हमें सूँघाया था। छात्रों ने पूछा कि वह कौन-सी जड़ी थी? इस पर थोड़ा गंभीर होकर पर मुस्कुराते हुए रमेसरजी ने कहा था कि वह संजीवनी जैसी जड़ी थी जो मुर्दों में भी जान डाल दे।

भूतनी का खूनी बदला

धर्म ग्रंथों में कहा गया है कि बुरे कर्मों की सजा भुगतनी ही पड़ती है। मरने के बाद अपने किए कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक में जाना पड़ता है। पर कई घटनाएँ ऐसी होती हैं जो मनुष्य के किए की सजा उसे जीते जी दे देती हैं। अच्छा भी है। कुछ लोग बुरे कर्मों को करते रहते हैं और सोचते हैं कि मरने के बाद क्या होगा, किसने देखा है? ऐसे लोगों के लिए अगर उन्हें जीते जी सजा मिल जाती है तो उन्हें अपने किए पर पछतावा भी होता है और साथ ही ईश्वर के न्याय की महत्ता का भी पता चलता है। हमें कई बार ऐसा लगता है कि हम जो बुरा कृत्य कर रहे हैं, उसे कोई देख नहीं रहा। और कभी-कभी सोचते हैं कि ऐसे कर्म करने में हर्ज ही क्या है?

भूतनी कहानी शुरू करने से पहले मुझे एक घटना याद आ रही है, बताना जरूरी समझता हूँ। हमारे गाँव-जवार की ही घटना है। एक काफी धनी-मनी और दबंग व्यक्ति थे। पैसे की कोई कमी नहीं थी। लोगों की मदद भी करते थे पर उनमें एक कमी थी जो उनकी सारी अच्छाइयों को ढक देती थी। वे पैसा खर्च करके न पीने वाले युवाओं को भी खूब मदिरा आदि का सेवन कराते थे। मुर्ग-मुसल्लम खिलाते थे ताकि वे युवा बहक कर ग़लत काम करें, अपने माता-पिता को परेशान करें। ऐसे युवाओं के माता-पिता को परेशान देखकर उस महाशय को बहुत शांति और आनंद मिलता था। इस महाशय का एक ही बेटा था जो बाहर शहर में रहकर पढ़ता था। अपने बेटे पर ये महाशय नजर तो खूब रखते पर उसे मन माँगा पैसा भी देते। शहर में उनका बेटा ग़लत संगत का शिकार हो गया। पढ़ाई-लिखाई तो कुछ नहीं करता था, बस दोस्तों के साथ फिल्में आदि देखता और मटरगस्ती करता। उसे शराब की भी लत लग गई। बाद में वही लड़का इतना बड़ा शराबी बना कि खेत-बाग तक बेचकर पी गया थी। उसके पिताजी जो दूसरे युवाओं को बहकाते थे, अपने बेटे से ही इतने परेशान हो गए कि पागलों की तरह इधर-उधर भटकते हुए, भीख माँगते हुए प्रभु को प्यारे हो गए।

अब भूतनी कहानी पर आ जाता हूँ। यह कहानी मैंने अपने गाँव के ही एक बुजुर्ग जो कोलकाता में काम करते थे, उनसे सुनी थी। एक बार की बात है कि कुछ अंग्रेज शिकारी भारत के किसी जंगल में शिकार पर गए। उस जंगल के बाहर एक डाक-बंगला था पर उसमें पहले से ही कोई बड़ा अंग्रेज अधिकारी ठहरा हुआ था। अस्तु इन अंग्रेज शिकारियों को जंगल के बीच बने एक पुराने डाक बंगले में रुकना पड़ा। इस डाक बंगले का रखवाला अपने परिवार के साथ रहता था और डाक बंगले में रुकने वाले लोगों की सेवा करता था। इस रखवाले के परिवार में उसकी बीबी तथा लगभग 14-15 साल की उसकी एकमात्र लड़की थी।

एक शाम जब अंग्रेज शिकारी शिकार करके वापस डाक बंगले पर आए तो नहा-धोकर पीने बैठ गए। पीने के बाद उन्हें इतनी चढ़ गई कि वे लोग पूरी तरह से बहक गए और उस रखवाले को गोली मारने के बाद उसकी बीबी तथा बच्ची को नोच डाले। इन पापियों को नशे में कुछ भी पता नहीं चला और नोचने के बाद उन दोनों को भी गोलियों से भून डाला और तीनों की लाश को डाक बंगले के पीछे दफना दिया।

यह बात आई-गई रह गई। अंग्रेजों ने फिर कुछ दिन के बाद वहाँ कैलाश नामक एक नया सेवक रख दिया। किसी को कुछ भी पता नहीं चला कि इस पुराने डाक बंगले का पुराना सेवक और उसका परिवार कहाँ चला गया?

एक बार कि बात है कि नया सेवक कैलाश रात को गेट बंद करके सोया हुआ था। तभी अचानक उसकी नींद खुल गई क्योंकि उसे लगा कि दरवाजे पर कोई रो रहा है। उसने एक हाथ में लाठी उठाया और दूसरे में चिराग और दरवाजे पर आकर हाँक लगाया, “कौन है? इतनी रात गए कौन दरवाजे पर रो रहा है?”

उसने देखा कि एक किशोरी दरवाजे पर बैठी रो रही है। कैलाश उस किशोरी के पास गया और उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा कि बेटी रो मत, अंदर चल।

फिर उस किशोरी के अंदर आने पर कैलाश ने उसे पीने के लिए पानी आगे बढ़ाते हुए पूछा कि बेटी तुम कौन हो और इतनी रात को अकेले इस जंगल में क्यों भटक रही हो? कैलाश की इतनी बातें सुनते ही वह किशोरी और तेज फफक पड़ी। कुछ समय तक तेज-तेज रोने के बाद वह थोड़ा शांत हुई और कैलाश को बताई कि वह इस डाक बंगले के पहले सेवक की पुत्री है। फिर उसने यह भी बताया कि कैसे 4-5 अंग्रेज शिकारियों ने उसके पिता को मार डाला और उसके बाद उसके तथा उसकी माँ की आबरू को नोच डाला। फिर कैसे उसकी माँ तथा उसको भी गोलियों से भूनने के बाद डाक बंगले के पीछे दफना दिया।

उस किशोरी की इतनी बातें सुनते ही कैलाश पूरी तरह सहम गया पर निडरता दिखाते हुए पूछा कि ऐसे कैसे हो सकता है? अगर तू मर गई है तो मेरे सामने कैसे बैठी है?

कैलाश की यह बात सुनते ही वह लड़की अचानक गायब हो गई और कैलाश कुछ समझ पाए इससे पहले ही वह उस कमरे की दिवाल पर उलटी टहलती नजर आई। कैलाश यह नजारा देखकर पूरी तरह से सहम गया। फिर अचानक वह लड़की आकर कैलाश के सामने बैठते हुए बोली कि काका, आप डरिए मत! मैं आपका कुछ भी बुरा नहीं करूँगी। धीरे-धीरे कैलाश का डर जाता रहा और उसने अपने मस्तक पर आई पसीने की बूँदों को गमछे से पोछ लिया।

फिर उसी रात को उस लड़की ने वह जगह दिखाई जहाँ उन तीनों को दफनाया गया था। कैलाश ने कुदाल से खोदकर उन तीनों के अस्थिपंजर को निकाला। फिर कैलाश ने उस किशोरी से वादा किया कि वह उन अंग्रेज शिकारियों के खिलाफ कोर्ट जाएगा और किशोरी को इंसाफ दिलवाकर रहेगा।

कैलाश की बातें सुनकर वह किशोरी रोते हुए बोली कि काका, आपको कुछ नहीं करना है! बदला तो मैं लूँगी, बस आप मेरी थोड़ी-सी मदद कर दें।

फिर क्या, उस किशोरी के बताए अनुसार कैलाश ने बीमारी का बहाना बनाकर उस डाक बंगले की नौकरी छोड़ दी तथा उस किशोरी को किए वादे के अनुसार उसके माता-पिता की अस्थियों को जला दिया तथा उन दोनों के नाम पर पूजा-पाठ भी करवाया। उन दोनों की मुक्ति हो गई पर लड़की के कहे अनुसार कैलाश ने न लड़की के अस्थिपंजर को जलाया और न ही उसके क्रिया-कर्म के लिए कोई अनुष्ठान, पूजा-पाठ ही किया। क्योंकि किशोरी ने कहा था कि अगर उसके लिए भी पूजा-पाठ हो गई तो वह इस भूतही योनि से

मुक्त हो जाएगी और फिर उन दरिंदों से बदला नहीं ले पाएगी।

समय बीतता गया और अब उस डाक बंगले में कोई नया सेवक आने को भी तैयार नहीं हुआ क्योंकि कैलाश वहीं आस-पास मँडराता रहता और नए आने वाले सेवक को भूतही कहानी सुनाकर भगा देता। कभी-कभी वह किशोरी भी अपनी भूतही कारनामों से आने वाले नए सेवक को नौ दो ग्यारह कर देती। पर उस बंगले पर शिकारियों का आना कम नहीं हुआ। वे आते और खुद ही अपनी व्यवस्था करते। पर जो अब आता वह वापस नहीं जाता क्योंकि उस डाक बंगले में ठहरने वाला हर अंग्रेज शिकारी उस लड़की का शिकार हो जाता। कभी-कभी तो ऐसा होता कि वह लड़की किसी अंग्रेज शिकारी को अपने लटकों-झटकों में फँसाकर उस डाक बंगले में लाती और रात को अपने असली रूप में आ जाती और डराकर उस अंग्रेज को मार डालती और उसका खून पी जाती।

यह क्रम चलता रहा और उस डाक बंगले में मरने वाले अंग्रेज शिकारियों की मौत रहस्य ही बनी रही। अंग्रेज अधिकारियों के लाख कोशिश के बावजूद न हत्यारा पकड़ में आता और न ही मरने वाले अंग्रेज शिकारियों, अधिकारियों के मौत का कारण पता चलता। धीरे-धीरे यह खबर आस-पास के क्षेत्रों में, अंग्रेज शिकारियों आदि में फैल गई कि पुराने डाक बंगले में ठहरने वाले हर शिकारी की रात तो होती है पर वह दूसरे दिन का सूरज नहीं देख पाता।

दो-तीन और वर्ष बीते और अब वह डाक बंगला खंडहर हो गया क्योंकि अब किसी में भी हिम्मत नहीं थी कि वहाँ ठहरे। आखिर किसको अपनी जान की परवाह नहीं होती। पर वह किशोरी भूतनी जो अब युवती बन गई थी, उसी डाक बंगले में रहकर अपने हत्यारों का इंतजार करती। दिन में उधर आने-जाने वाले लोगों को उसका एहसास होता क्योंकि वह बराबर रोती रहती पर किसी को दिखाई नहीं देती।

एक बार की बात है कि वह युवा भूतनी उस जंगल में रह रहे एक युवा भूत तथा युवा भूतनी के संपर्क में आई। ये दोनों आदिवासी थे और जंगल में लकड़ी काटते समय किसी अंग्रेज शिकारी के शिकार बन गए थे। युवा भूतनी उन दोनों को लेकर शहर की ओर निकल गई। युवा भूतनी उन दोनों भूत-भूतनी के साथ शहर में घूम-घूमकर अपने हत्यारों की तलाश करती रही। 2-3 दिन की मेहनत के बाद ही उसने अपने हत्यारों को पहचान लिया। एक दिन वह शाम के समय खूब खूबसूरत युवती बनकर उनमें से एक हत्यारे अंग्रेज शिकारी के घर पर गई। घर पर उस अंग्रेज के सिवा कोई नहीं था। फिर उसने खूब लटके-झटके दिखाए और उस अंग्रेज को अपनी सुंदरता में फँस लिया। रूप लुभावन हो तो अच्छे-अच्छों को फँसते देर नहीं लगती।

योजना के अनुसार वह दूसरे दिन भी उस अंग्रेज से मिली, फिर उसे पूरी तरह विश्वास में लेने के बाद एक दिन कहा कि क्यों नहीं हम लोग शिकार पर चलें? अंग्रेज ने कहा कि अच्छी बात है। मेरे कुछ मित्र शिकारी हैं, उन्हें भी लेकर चलते हैं। फिर क्या था, उस युवती भूतनी ने उस अंग्रेज से कहा कि मेरी एक और सहेली है, वह भी बहुत ही खूबसूरत है और शिकार पर जाना पसंद करेगी।

फिर दूसरे दिन उस युवती भूतनी ने अपने साथ आए हुए दूसरी युवा भूतनी से उस

अंग्रेज शिकारी को मिलवाया। अब तो अंग्रेज पूरी तरह उस भूतनी के माया-जाल, रूप-जाल में फँस चुका था।

एक दिन सुबह-सुबह वह अपने उन्हीं पुराने दोस्तों के साथ जंगल की ओर निकल पड़ा। दिन भर शिकार करते रहे और खूब मौज-मस्ती भी। शाम होने को आई तो अंग्रेज शिकारियों ने कहा कि अब सूर्य ढलने लगा है, क्यों न हम लोग वापस शहर लौट चले। अंग्रेज की बात सुनकर उस युवा भूतनी ने कहा कि ना, ना, आज रात हम लोग यहीं ठहर कर जंगल का आनंद उठाते हैं। पर एक अंग्रेज शिकारी ने कहा कि हमने पहले से डाक बंगला तो बुक किया नहीं है, ठहरेंगे कहाँ? फिर क्या था, वह युवा भूतनी मुस्कुराई और बोली कि इसी जंगल में दूसरी ओर मेरे एक मित्र आदिवासी की कुटिया है। हम रात वहीं बिताएँगे और खूब मौज-मस्ती करेंगे।

अब हुआ यूँ कि उस युवा भूतनी की योजना के अनुसार देखते ही देखते उसके मित्र युवा भूत ने एक मड़ई तैयार कर ली थी। उसमें ऐशो-आराम की सारी चीजें भी ला दी थी। उन दोनों युवा भूतनी के साथ ये अंग्रेज उस मड़ई में पहुँचे। इन अंग्रेज शिकारियों को उस मड़ई की दशा देखकर अजीब लगा क्योंकि उस मड़ई में महलों, बड़े-बड़े होटलों जैसी व्यवस्था थी।

रात को पार्टी शुरू हुई तथा साथ ही अंग्रेज अधिकारियों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। क्योंकि पहले तो उन दोनों युवा भूतनियों ने जो देखने में बहुत खूबसूरत लग रही थीं, अचानक उन्होंने बहुत ही डरावना रूप बना लिया। ऐसा रूप जिसे देखते ही अच्छे-अच्छों की पेंट गीली हो जाए। फिर क्या था, उन भूतनियों ने ग्लास में खून भरकर उन अंग्रेजों को लाकर पिलाना शुरू कर दिया। किसी अंग्रेज की हिम्मत ही न थी कि वह न करे, क्योंकि सब के सब पूरी तरह से डरे हुए थे और काँप रहे थे।

अचानक आदिवासी युवा भी विकराल रूप में आ गया और उछलकर पास के एक मोटे पेड़ की मोटी शाखा को उछलकर इतना जोर से खींचा कि चर्र की आवाज़ के साथ वह मोटी शाखा टूट गई। उसके बाद वह विकराल भूत उन अंग्रेज शिकारियों में से एक को पकड़कर पैर के नीचे दबाकर देखते ही देखते चीर दिया और उसके खून को पीने लगा। उसका खून पीता देख दोनों भूतनियों ने भी लंबी-लंबी विकराल चीभ निकालते हुए खून पीने में उसका साथ देने लगीं और साथ ही अपने बड़े-बड़े नाखूनों से उसका शरीर जगह-जगह से चीरने लगीं। उस युवा भूतनी ने तो भयानक आवाज़ निकालते हुए दौड़कर एक दूसरे अंग्रेज शिकारी के पास पहुँची और उसकी आँखों में अपने विकराल, भयावह, भाले जैसे नखों को डालकर उसकी दोनों आँखों को निकालकर खा गई। इसके बाद उन तीनों भूतनी-भूत ने एक-एक कर सभी अंग्रेज शिकारियों को मार डाला।

दूसरे दिन उन अंग्रेजों की खोज में गए अंग्रेज अधिकारियों को उनकी ऐसी वीभत्स लाशें मिलीं जो देखने में बहुत ही भयावह लग रही थीं। उनको ऐसे नोचा गया था कि लगता था कि यह किसी मनुष्य या जानवर का काम ही नहीं हो सकता। कैलाश को तो सब कुछ पता ही था पर उसने किसी को कुछ नहीं बताया।

फिर एक दिन समय निकालकर, गोपनीय रूप से कैलाश ने उस युवा भूतनी के कंकाल

को भी जला दिया तथा उसकी मुक्ति के लिए एक पूजा करवा दी।

यह एक काल्पनिक कहानी है, पर हकीकत भी हो सकती है, उन लोगों के लिए जो अपनी शक्ति, संबंधों का नाजायज फायदा उठाते हुए ग़लत कार्यों को अंजाम देते हैं और उन्हें लगता है कि कोई उनका बाल-बाँका भी नहीं कर सकता। हमेशा वैसा ही कार्य करें, जैसा आप दूसरों से अपने तथा अपनों के प्रति चाहते हैं।

दिव्य आत्मा

भारत ही नहीं अगर विश्व की बात करें तो बहुत सारे ऐसे पढ़े-लिखे लोग मिल जाएँगे जो भूत-प्रेत, आत्मा में विश्वास करते हैं। आए दिन भूत की खबरें पढ़ने को या देखने को मिलती हैं। कभी-कभी कुछ लोगों के कैमरे में भी ऐसी आत्माएँ शूट हो जाती हैं।

भूत है या नहीं यह अलग विषय है पर जो लोग अपनी वैज्ञानिकता के घमंड में यह मानने को तैयार ही नहीं होते कि भूत होते हैं और लोगों को बोलते हैं कि ऐसी अफवाह न फैलाएँ, इससे समाज दिग्भ्रमित होता है। हम गँवार समझे जाते हैं? क्या भूत-प्रेत को मानने वाले गँवार, अशिक्षित ही होते हैं? क्या वास्तव में आत्मा का कोई वजूद नहीं?

मुझे तो लगता है कि शरीर से आत्मा निकलने के बाद जब तक ब्रह्म में विलिन नहीं हो जाती या किसी अन्य शरीर में जन्म नहीं ले लेती, भटकती रहती है। भगवान है, यह अकाट्य सत्य है तो फिर आत्मा को मानना गँवारपन कैसे? जैसे विघटन के बाद, नाश के बाद हर वस्तु का कोई न कोई रूप बन जाता है या वह किसी न किसी रूप में, भले अंशमात्र में ही हो, उसका अस्तित्व बना रहता है, वैसे ही आत्मा जब तक परमात्मा में एकाकार नहीं हो जाती या किसी अन्य शरीर में अवतरित नहीं हो जाती, विद्यमान रहती है।

खैर, मैं यहाँ इस विषय पर प्रवचन देने नहीं आया हूँ। मैं तो कोई कहानी गढ़ रहा हूँ ताकि आप सबको सुना सकूँ। किसी पचरे में न पड़ते हुए आप भी इस भूतही काल्पनिक कहानी का आनंद लें। काल्पनिक इसलिए क्योंकि इस कहानी का आधार होकर भी कोई आधार नहीं। शब्दों में गूँथे होने के बाद भी अपनी काल्पनिकता से शब्दों में पिरोकर परोस रहा हूँ।

बहुत समय पहले की बात है। खुनिया गाँव के 8-10 लोगों की एक मंडली दर्शन हेतु एक काली मंदिर में गई थी। काली का यह मंदिर एक जंगल में था पर आस-पास में बहुत सारी दुकानें, धर्मशाला आदि भी थे, कच्ची-पक्की सड़कें भी बनी हुई थीं। पर घने-उगे जंगली पेड़-पौधे इसे जंगल होने का भान कराते थे। यह काली मंदिर बहुत ही जगता स्थान माना जाता था। यहाँ हर समय भक्तों की भीड़ लगी रहती थी पर मंदिर के अंदर जाने का समय सुबह 8 बजे से लेकर रात के 8 बजे तक ही था। भक्तों की उमड़ती भीड़ को देखते हुए मंदिर में मुख्य दरवाजे के अलावा एक और दरवाजा खोल दिया गया था ताकि भक्तजन मुख्य दरवाजे से दर्शन के लिए प्रवेश करें और दूसरे दरवाजे से निकल जाएँ।

खुनिया गाँव की मंडली शाम को 6 बजे दर्शन के लिए मंदिर पहुँची और दर्शन करने बाद मंदिर के आस-पास घूमकर वहाँ लगे मेले का आनंद लेने लगी। मेले में घूमते-घामते यह मंडली अपने निर्भयपन का परिचय देते हुए जंगल में थोड़ा दूर निकल गई।

रात होने लगी थी, मंडली का कोई व्यक्ति कहता कि अब वापस चलते हैं, कल दिन में घूम लेंगे पर कोई कहता डर रहे हो क्या? इतने लोग हैं, थोड़ा और अंदर चलते हैं फिर वापस आ जाएँगे।

ऐसा करते-करते यह मंडली उस जंगल में काफी अंदर चली गई। रात के अंधेरे में अब

मंडली को रास्ता भी नहीं सूझ रहा था और न ही मंदिर के आस-पास जलती कोई रोशनी ही दिख रही थी। अब मंडली यह समझ नहीं पा रही थी कि किस ओर चलें। खैर, मंडली के एक व्यक्ति ने अपनी जेब से माचिस निकाली और झोले में रखे कुछ कागजों को जलाकर रोशनी कर दी।

रोशनी में उस मंडली ने जो कुछ देखा, वह बहुत ही भयावह था। आस-पास कुछ नर-कंकाल नजर आ रहे थे और पेड़ों पर कुछ अजीब तरह के डरावने जीव-जंतु इस मंडली को घूरते नजर आ रहे थे। अब तो इस मंडली के सभी लोग पूरी तरह से चुप थे। कोई कुछ बोलने की हिम्मत नहीं कर रहा था। पर हाँ, वे लोग धीरे-धीरे एक-दूसरे के काफी करीब आकर चिपक गए थे। फिर किसी ने थोड़ी हिम्मत करके कागज की बूझती आग पर वहीं पड़े कुछ सूखे घास-फूस को डाला और फिर आग थोड़ी तेज हो गई।

मंडली ने मन ही मन निश्चित किया कि अभी कहीं भी जाना खतरे से खाली नहीं है, क्योंकि वे लोग रास्ता भी भूल गए थे और उन्हें समझ में ही नहीं आ रहा था कि किस ओर जाएँ। अस्तु उन लोगों ने फुसफुसाकर यह निर्णय लिया कि आज की रात कैसे भी करके यहीं गुजारेंगे और सुबह होते ही यहाँ से निकल जाएँगे। चूँकि ये लोग गाँव से थे और इन लोगों का भूत-प्रेतों से कई बार पाला पड़ा था, इसलिए थोड़े डरे हुए तो थे पर इतना भी नहीं कि ये डरकर चिल्लाने लगे या भागना शुरू कर दें। इस मंडली ने हिम्मत दिखाई और धीरे-धीरे करके आग को और तेज करने लगी, क्योंकि अब इस मंडली को लगने लगा था कि ज़रूर यहाँ कुछ बुरी आत्माएँ हैं और वे इस मंडली को अपनी चपेट में लेना चाहती हैं।

पर वहाँ की आबो-हवा देखकर यह गँवई मंडली पूरी तरह से डर गई थी और अंदर से पसीने-पसीने भी हो गई थी पर इस डर को चेहरे पर नहीं लाना चाहती थी। क्योंकि इनको पता था कि डरे तो मरे और डरे हुए लोगों पर यह बुरी आत्माएँ और भी असर करती हैं। मंडली के कुछ लोग एक-दूसरे का हाथ कसकर पकड़ लिए थे और पूरी तरह से सतर्क थे। कुछ लोगों ने हनुमान चालीसा आदि पढ़ना और हनुमानजी को गोहराना भी शुरू कर दिया था तो कुछ लोग उस जंगल की काली माता की दुहाई दे रहे थे।

अचानक एक भयानक आत्मा उनके सामने प्रकट हो गई और रौद्र रूप में अट्टहास करने लगी। उस समय का माहौल और भी भयानक हो गया। अब इस मंडली के पसीने चेहरे पर भी दिखने शुरू हो गए थे। चेहरे लाल होना शुरू हो गए थे और ये लोग और कसकर एक-दूसरे के करीब आ गए थे। अभी वह रौद्र आत्मा अट्टहास करके पूरे वातावरण को और भी भयानक बनाता कि तभी वहाँ कुछ और भयानक आत्माएँ आ गईं। अब तो इस मंडली की सिट्टी-पिट्टी गुम। अब इन लोगों को अपना काल अपने सामने दिख रहा था। अब वहाँ एक नहीं लगभग 5-6 आत्माएँ आ गई थीं और अपनी अजीब हरकतों से माहौल को पूरी तरह भयानक बनाकर रख दिया था।

मंडली के एक व्यक्ति ने हिम्मत करके कहा कि अगर मरना ही है तो इनका सामना करके मरेंगे। जिसके पास भी चाकू आदि है निकाल लो, डंडे आदि उठा लो और इनका सामना करो। दरअसल उस समय लोग अपनी जेब में छोटा-सा चाकू आदि भी रखते थे और कुछ लोग बराबर लाठी लिए रहते थे। इस मंडली के दो लोगों के पास भी लाठी और

तीन के पास चाकू थे। अब सब पूरी तरह से मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए थे।

पर शायद इन्हें लड़ने की नौबत नहीं आई। हुआ यूँ कि जैसे ही एक भयानक आत्मा ने इन पर हमला किया, उसका सिर कटकर अलग गिर गया और वह बिना सिर के ही खूब तेज भागी तथा उसका सिर भी भाग निकला। अब माहौल एकदम से भयानक रणमय हो गया था क्योंकि एक गौरवर्णीय व्यक्ति जो कोई साधु जैसा दिखता था और केवल धोती पहने हुआ था, हाथ में तलवार लिए इन बुरी आत्माओं को काटे जा रहा था। देखते ही देखते उसने सारी बुरी आत्माओं को काटकर रख दिया। पर गौर करने वाली बात यह थी कि कोई आत्मा मरी नहीं पर सब चिल्लाते हुए, अजीब-अजीब आवाज़ करते हुए वहाँ से भाग निकलीं। अब यह मंडली उस सज्जन महात्मा के पैरों पर गिर गई थी और उन्हें धन्यवाद दे रही थी।

इस मंडली को उस गौरवर्णीय, पराक्रमी महात्मा ने अपने पीछे आने का इशारा करके आगे बढ़ने लगे। लगभग 10 मिनट चलने के बाद यह मंडली एक कुटिया के पास पहुँच चुकी थी। वहाँ डर का कोई नामो-निशान नहीं था। उस महात्मा ने इन लोगों को कुटिया के अंदर आने का इशारा किया। कुटिया में पहुँचकर इन लोगों ने अपना झोरा-झंटा रखा और चैन की साँस ली। फिर बाबा ने इशारे से ही इन्हें खाने के लिए पंगत में बैठा दिया। कुटिया के अंदर से एक दूसरे महात्मा निकले और उन्होंने किसी पेड़ के पत्ते को पत्तल के रूप में इन लोगों के आगे रख दिया। फिर क्या था, उस महात्मा ने उस पत्तल पर कुछ अलग-अलग पेड़ों के पत्ते रखे। ऐसा करते समय इस मंडली को बहुत अजीब लग रहा था पर किसी में हिम्मत नहीं थी कि बाबा से कुछ पूछे। फिर उस महात्मा ने कमंडल से जल लिया और कुछ मंत्र बुदबुदाकर छिड़क दिया। अरे, यह क्या! अब तो वे पत्तलें थाल बन चुकी थीं और मंडली के हर व्यक्ति के इच्छानुसार उसमें पकवान पड़े हुए थे। फिर बाबा का इशारा मिलते ही बिना कोई प्रश्न किए यह मंडली जीमने लगी। जीमने के बाद बाबा का इशारा पाकर वह मंडली वहीं सो गई। पर सब सोने का नाटक कर रहे थे, नींद किसी के भी आँख में नहीं थी। इस कुटिया में दूर-दूर तक डर नहीं था पर बाबा के कारनामों देखकर वे लोग हतप्रभ थे और सोच रहे थे कि सुबह बाबा से इस बारे में जानकारी लेंगे।

सुबह जब सूर्य की किरणें इस मंडली के चेहरे पर पड़ी तो इनकी नींद खुली। मंडली का हर व्यक्ति बहुत ही आश्चर्य में था क्योंकि वहाँ न कोई कुटिया थी और न ही रात वाले बाबा ही। और ये लोग भी नीचे वैसे ही घास-फूस पर सोए हुए थे। अब इनको समझ में नहीं आ रहा था कि वह कुटिया और बाबा गए कहाँ। खैर, अब इन लोगों के पास कोई चारा नहीं था। थोड़ा-बहुत इधर-इधर छानबीन करने के बाद इनको रास्ता भी मिल गया और ये लोग मेले में वापस आ गए।

मेले में वापस आने के बाद उन लोग न काली माता के पुजारी से मिलकर सारी घटना बताई। पुजारी बाबा ने एक लंबी साँस छोड़ते हुए कहा कि वह दिव्य आत्मा है जो इस जंगल में रहती है। वह केवल रात में ही और वह भी भूले-भटके लोगों को ही नजर आती है और उन्हें रात में आश्रय प्रदान करके फिर पता नहीं कहाँ गायब हो जाती है। उस पुजारी बाबा ने बताया कि ऐसी घटनाएँ उन्हें काफी श्रद्धालु सुना चुके हैं। इतना ही नहीं उन्होंने कई बार दिन के उजाले में 9-10 लोगों के साथ इस जंगल का कोना-कोना छान मारा है पर

कभी भी न वे महात्मा मिले और न ही ऐसी कोई कुटिया ही दिखी।

खैर, यह मंडली तो कुछ और ही करना चाहती थी। यह मंडली फिर हिम्मत करके रात को जंगल में निकल गई। मंडली चाहती थी कि उन्हें बुरी आत्माएँ सताएँ और बाबा फिर आकर उनकी रक्षा करें। इसी बहाने यह मंडली यह चाहती थी कि बाबा के दिखते ही उनके पैरों पर गिरकर कुछ रहस्यों के बारे में जानकारी ली जाएगी। बाबा से हाथ जोड़कर प्रार्थना किया जाएगा कि वे कुछ अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर दें। पर यह क्या, अभी यह लोग जंगल में कुछ दूर ही आगे बढ़े थे कि जो बाबा रात को पत्तल लाकर रखे थे, वे दिख गए और बोले, तुम लोगों के मन-मस्तिष्क में क्या चल रहा है, मुझे पता है। पर ऐसी भूल मत करो। कुछ चीजों को रहस्य ही रहने दो और सबसे अहम बात हम और हमारे वे गुरुजी इस जंगल में इसी माता के दर्शन के लिए आए थे पर रात को जंगल में कुछ डाकुओं ने हमारी हत्या कर दी थी। फिर हम कभी इस जंगल को छोड़कर नहीं गए और रातभर जागकर श्रद्धालुओं को डाकुओं और बुरी आत्माओं से बचाते रहते हैं।

भूतनी का बदला

बार-बार सुनने को मिलता है कि 100 अपराधी छूट जाएँ पर किसी निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए। पर क्या वास्तव में ऐसा होना चाहिए? क्या अपराधी का बच निकलना समाज हित में है? शायद नहीं। क्योंकि कमजोर कानून का फायदा उठाकर कितने अपराधी बच निकलते हैं। कभी-कभी तो फिल्मों आदि में ऐसा भी दिखाया जाता है कि कानून अंधा होता है या बिक जाता है। पर अगर किसी लड़की का बलात्कार कर दिया जाए और उसकी गवाह वह स्वयं हो और उसके बाद भी वह बलात्कारी कानून से बच निकले तो उस लड़की पर क्या गुजरेगी? कानून, समाज की नजर में वह अपराधी भले ही निर्दोष हो पर उस लड़की का क्या जिसके साथ ऐसी घिनौनी हरकत हुई हो, जो न उसे जीने ही देती हो और न मरने ही। रात-दिन बेचारी तिल-तिल कर मर रही हो, कानून, समाज का यह चेहरा देखकर।

मुझे एक कहानी हल्की-फुल्की याद आ रही है, जो कभी सुन रखी थी। न अब सुनाने वाला याद आ रहा है और न ही यह कहानी पूरी तरह से मुझे याद ही आ रही है पर थोड़ा-बहुत जो याद आ रहा है, उसमें काल्पनिकता भरते हुए मैं इस कहानी को पूरा कर रहा हूँ।

कहते हैं कहानी, कहानी होती है तो उसे कहानी के रूप में लेना चाहिए पर मुझे लगता है कि कहानी भले किसी के दिमाग की, कल्पना की उपज हो पर कहीं-न-कहीं उसका कुछ आधार ज़रूर होता होगा। खैर, जो भी हो। आइए इस भूतनी कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

बात बहुत ही पुरानी है। किसी पर्वत की तलहटी में रमेसरपुर नाम का एक बहुत ही रमणीय गाँव था। इस गाँव के मुखिया रमेसर काका थे। सभी गाँव-वासी रमेसर काका की बहुत ही इज्जत करते थे और उनके विचारों, सुझावों को पूरी तरह मानते थे। रमेसर काका की एक ही संतान थी, चंदा। 15-16 साल की उम्र में भी चंदा का नटखटपन गया नहीं था। वह बहुत ही शरारती थी। उसके चेहरे पर कहीं भी षोडशी का शर्मीलापन नजर नहीं आता। पर हाँ, उसके चेहरे से उसका भोलापन ज़रूर छलकता। उस समय हर माँ-बाप की बस एक ही ख्वाइश होती थी कि उनकी लड़की को अच्छा घर-वर मिल जाए और वह अपने ससुराल में खुश रहे। रमेसर काका भी चंदा के लिए आस-पास के गाँवों वरदेखुआ बनकर जाना शुरू कर दिए थे।

एक बार पास के एक गाँव के उनके मुखिया मित्र ने कहा कि उनकी नजर में एक लड़का है। अगर आप तैयार हों तो मैं बात चलाऊँ? रमेसर काका के हाँ करते ही उनके मुखिया मित्र की अगुआई में चंदा का विवाह तय हो गया। चंदा का पति नदेसर उस समय कोलकाता में कुछ काम करता था। नदेसर देखने में बहुत ही सीधा-साधा और सुंदर युवक था। वह रमेसर काका को पूरी तरह से भा गया था। खैर, शादी हुई और रमेसर काका ने नम आँखों से चंदा को विदा किया। कुछ ही दिनों में चंदा अपने ससुराल में भी सबकी प्रिय हो चुकी थी। 1-2 महीना चंदा के साथ बिताने के बाद नदेसर भारी मन से कोलकाता की राह पर निकल पड़ा। चंदा ने नदेसर को समझाया कि कमाना भी ज़रूरी है और 5-6 महीने की ही तो बात है। दिवाली में आपको फिर से घर आना ही है, तब तक मैं नजरें बिछाए आपका इंतजार प्रसन्न मन से कर लूँगी।

कोलकता पहुँचने पर नदेसर ने फिर से अपना काम-धंधा शुरू किया पर काम में उसका मन ही नहीं लगता था। बार-बार चंदा का शरारती चेहरा, उसके आँखों के आगे घूम जाता। वह जितना भी काम में मन लगाने की कोशिश करता उतना ही चंदा की याद आती। नदेसर की यह बेकरारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। उसने अपने दिल की बात अपने साथ काम करने वाले अपने 5 मित्रों को बताई। ये पाँचों उसके अच्छे मित्र थे। नदेसर दिन-रात अपने इन पाँचों दोस्तों से चंदा की खूबसूरती और उसके शरारतीपन का बखान करता रहता। पाँचों मित्रों ने चंदा के बारे में सुन-सुनकर उसकी खूबसूरती की एक छवि अपने-अपने मन में बना लिया था और अब बार-बार नदेसर से कहते कि भाभी से कब मिलवा रहे हो? नदेसर कहता कि मैं तो खुद ही उससे मिलने के लिए बेकरार हूँ पर समझ नहीं पा रहा हूँ कि कैसे मिलूँ?

खैर, अब नदेसर के पाँचों दोस्तों के दिमाग में जो एक भयानक, घिनौनी खिचड़ी पकनी शुरू हो गई थी उससे नदेसर पूरी तरह अनभिज्ञ था। उसके पाँचों दोस्तों ने एक दिन नदेसर से कहा कि यार, भाभी को यहीं ले आओ। कुछ दिन रहेगी, कोलकता भी घूम लेगी तो उसको बहुत अच्छा लगेगा और फिर 1-2 हफ्ते में उसे वापस छोड़ आना।

पर नदेसर अपने बूढ़े माँ-बाप को याद कर कहता कि नहीं यारों, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरी अम्मा और बाबू की देखभाल के लिए गाँव में चंदा के अलावा और कोई नहीं है।

कुछ दिन और बीते पर ये बीतते दिन नदेसर की बेकरारी को और भी बढ़ाते जा रहे थे। अब तो नदेसर का काम में एकदम से मन नहीं लग रहा था और उसे बस गाँव दिखाई दे रहा था। एक दिन रात को नदेसर के पाँचों दोस्तों ने नदेसर से कहा कि चलो हम लोग तुम्हारे गाँव चलते हैं। नदेसर अभी कुछ समझ पाता या कह पाता तब तक उसके उन पाँच दोस्तों में से निकेश नामक दोस्त ने कहा कि यार टेंसन मत ले। कह देना कि अभी काम की मंदी चल रही है इसलिए गाँव आ गया। साथ ही इसी बहाने हम मित्र लोग भी तुम्हारा गाँव देख लेंगे और भाभी के साथ ही तुम्हारे माता-पिता से भी मिल लेंगे क्योंकि हम लोगों का तो गाँव भी नहीं है। इसी कोलकते में पैदा हुए और कोलकते को ही अपना घर बना लिया। हम लोग भी चाहते हैं कि कुछ दिन गाँव आबो-हवा का आनंद लें।

नदेसर तो घर जाने के लिए बेकरार था ही, उसे अपने दोस्तों की बात भी भली लगी। फिर क्या था, दूसरे दिन ही नदेसर अपने उन पाँच दोस्तों के साथ अपने गाँव के लिए निकल पड़ा। उसके गाँव के आस-पास में बहुत सारे घने जंगल थे। इस पर्वतीय इलाके के इन पहाड़वासियों के अलावा अगर कोई अनजान जाए तो वह ज़रूर रास्ता भटक जाए और हिंसक जानवरों का शिकार बन जाए।

ट्रेन और बस की यात्रा करते-करते आखिरकार नदेसर अपने पाँच दोस्तों के साथ अपने गाँव के पास के एक छोटे से बस स्टेशन पर पहुँच ही गया। इस स्टेशन से उसके गाँव जाने के लिए अच्छी कच्ची सड़क भी न थी। जंगल में चलने से बने पगडंडियों से, उबड़-खाबड़ रास्ते से होकर जाना पड़ता था। जंगल में चलते-चलते जब नदेसर से निकेश ने पूछा कि भाई नदेसर अभी तुम्हारा गाँव कितनी दूर है तो नदेसर ने प्रसन्न होकर कहा कि यार अब

हम लोग पहुँचने ही वाले हैं।

नदेसर की बात सुनते ही निकेश हाँफने का नाटक करते हुए वहीं बैठते हुए बोला कि यार अब मुझसे चला नहीं जाता। उसकी बात सुनते ही नदेसर ने कहा कि यार हम लोग पहुँच गए हैं और अब मुश्किल से 5 मिनट भी नहीं लगेंगे। पर नदेसर की बातों को अनसुनी करते हुए उसके अन्य चार दोस्त भी निकेश के पास ही बैठ गए। अब नदेसर बेचारा क्या करे, उसे भी रुकना पड़ा। नदेसर के रुकते ही निकेश ने अपने हाथ में लिए झोले में से एक अच्छी नई साड़ी और साथ ही चूड़ी आदि निकालते हुए कहा कि यार नदेसर, हम लोग भाभी से पहली बार मिलने वाले हैं इसलिए उसके लिए कुछ उपहार लाए हैं। उसकी बात सुनते ही नदेसर ने कहा कि यारों इसकी क्या ज़रूरत थी। पर निकेश ने हँसकर कहा कि ज़रूरत थी भाई। हमारी भी तो भाभी है। हम पहली बार उससे मिल रहे हैं तो बिना कुछ दिए कैसे रह सकते हैं?

इसके बाद निकेश ने कुटिल मुस्कान चेहरे पर लाते हुए नदेसर से कहा कि यार नदेसर, क्यों न भाभी को सरप्राइज दिया जाए। एक काम करो, तुम घर जाओ और बिना किसी को बताए भाभी को घुमाने के बहाने यहाँ लाओ। हम लोग यहाँ भाभी को यह सब उपहार दे देंगे और उसके बाद फिर से तुम दोनों के साथ तुम्हारे घर चल चलेंगे। भोला नदेसर हाँ में हाँ मिलाते हुए तेज कदमों से घर की ओर गया और लगभग 30-40 मिनट के बाद चंदा को लेकर दोस्तों के पास वापस आ गया। फिर क्या था, चंदा से वे पाँचों दोस्त एकदम से अपनी भाभी की तरह मिले। चंदा को भी बहुत अच्छा लगा। इसके बाद जब चंदा ने उन्हें घर चलने के लिए कहा तो अचानक उनके तेवर थोड़े से बदले नजर आए।

निकेश और नदेसर के अन्य चार दोस्त चंदा और नदेसर के पास पूरी सख्ती से खड़े हो गए थे। चंदा और नदेसर कुछ समझ पाते इससे पहले ही निकेश ने दाँत भींचते हुए तेज आवाज़ में नदेसर से कहा कि साले, मैं अपनी बहन की शादी तुमसे करना चाहता था पर तुम बिना बताए गाँव आकर अपनी कर लिए।

उसकी बात सुनकर नदेसर ने भोलेपन से कहा कि निकेश भाई, आपने तो कभी हमसे अपनी बहन की शादी के बारे में बात भी नहीं की थी और जब मैं घर आया था तो यहाँ माँ-बाबू ने शादी कर दिया। भला मैं उन्हें मना कैसे कर सकता था?

पर नदेसर की इन भोली बातों का उन पाँचों दैत्यों पर कोई असर नहीं हुआ। उनमें से दो ने नदेसर को कसकर पकड़ लिया और तीन चंदा का चीरहरण करने लगे थे। अभी नदेसर या चंदा चिल्लाकर आवाज़ लगा पाते इससे पहले ही उन दोनों के मुँह में कपड़े थूँस दिए गए। फिर निवस्त्र चंदा और घनेसर को उठाकर वे लोग कुछ और घने जंगल में ले गए। घने जंगल में ले जाकर उन लोगों ने नदेसर की हत्या कर दी और चंदा की इज्जत से खेल बैठे। लगभग वे पाँचों नरपिशाच घंटों तक चंदा को दागदार करते रहे। वह चिल्लाती रही, भीख माँगती रही पर उन भेड़ियों पर कोई असर नहीं हुआ। अंततः अपनी वाली करने के बाद उन पाँचों ने चंदा को भी मौत के घाट उतारकर, वहीं जंगल में सुखी पत्तियों में उन्हें ढँककर आग लगा दिए।

आग लगाने के बाद ये पाँचों दोस्त जिधर से आए थे, उधर को भाग निकले। जंगल

जलने लगा और जलने लगे चंदा और नदेसर के जिस्म। सब कुछ स्वाहा हो गया था। इस आग से आस-पास के गाँव वालों को कुछ भी लेना देना नहीं था, क्योंकि जंगल में आग लगना कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी। कभी भी कोई भी अपनी लंठई में जंगल में आग लगा दिया करता था।

धीरे-धीरे समय बीतने लगा। रात तक जब चंदा और नदेसर घर नहीं आए तो नदेसर के पिताजी ने नदेसर के आने और चंदा को लेकर जाने की बात अपने पड़ोसियों को बताई। उसी रात को नदेसर और उनके कुछ पड़ोसी मशाल लेकर चंदा और नदेसर को खोजने निकल पड़े। काफी खोजबीन के बाद भी इन दोनों का पता नहीं चला। दूसरे दिन सुबह पुलिस में खबर दी गई पर पुलिस भी क्या करती। थोड़ा-बहुत छानबीन की पर उन दोनों का कोई पता नहीं लगा।

अब नदेसर के माँ-बाप और गाँव वालों को लगने लगा था कि नदेसर अपनी बहुरिया को लेकर बिना बताए कोलकाता चला गया। शायद उसे डर था कि अगर बाबू को बताकर ले जाएँगे तो वे ले जाने नहीं देंगे। आखिर कोलकाता में नदेसर कहाँ रहता है, क्या करता है, इन सब बातों के बारे में भी नदेसर के माता-पिता और गाँव वालों को बहुत कम ही पता था। धीरे-धीरे करके 8-9 महीने बीत गए। अब नदेसर के माता-पिता बिना नदेसर और चंदा के जीना सीख गए थे।

इधर कोलकाता में एक दिन अचानक निकेश के घर पर कोहराम मच गया। हुआ यह था कि किसी ने बहुत ही बेरहमी से उसके गुप्तांग को दाँतों से काट खाया था। उसके शरीर पर जगह-जगह भयानक दाँतों के निशान भी पड़े थे और वह इस दुनिया को विदा कर गया था। पुलिस के पूछताछ में उसके घर वालों ने बताया कि पिछले 1 महीने से निकेश का किसी लड़की के साथ चक्कर था। वे दोनों बराबर एक-दूसरे से मिलते थे पर लड़की कौन थी, कैसी थी, किसी ने देखा नहीं था। पर इसी दौरान पुलिस को निकेश की बहन से एक अजीब व डरावनी बात पता चली।

निकेश की बहन ने बताया कि एक दिन जब निकेश घर से निकला तो वह भी पीछे-पीछे हो ली थी। निकेश बस्ती से निकलकर एक सुनसान रास्ते में बनी एक पुलिया पर बैठ गया था। वहाँ से मैं लगभग 20 मीटर की दूरी पर एक बिजली के खंभे की आड़ में खड़ी होकर उस पर नजर रख रही थी। मुझे बहुत ही अजीब लगा क्योंकि ऐसा लग रहा था कि निकेश किसी से बात कर रहा है, किसी को पुचकार रहा है पर वहाँ तो निकेश के अलावा कोई था ही नहीं। फिर मुझे लगा कि कहीं निकेश भइया पागल तो नहीं हो गए हैं न। अभी मैं यही सब सोच रही थी तभी एक भयानक, काली छाया मेरे पास आकर खड़ी हो गई। वह छाया बहुत ही भयानक थी पर छाया तो थी पर छाया किसकी है, यह समझ में नहीं आ रहा था। मैं पूरी तरह से डर गई थी। फिर अचानक वह छाया अट्टहास करने लगी और चिल्लाई, “अब तेरा भाई नहीं बचेगा। नोचा था न मुझे, मैं भी उसे नोच-नोचकर खा जाऊँगी। और हाँ, एक बात तू याद रख, अगर यह बात किसी को भी बताई तो मैं तेरे पूरे घर को बरबाद कर दूँगी।” इतना कहते ही निकेश की बहन सुबक-सुबक कर रोने लगी।

इतना सुनते ही पुलिस और आस-पास जुटे लोग सकते में आ गए और पूरी तरह से डर

भी गए। क्योंकि निकेश का जो हाल हुआ था, वह यह बयाँ कर रहा था कि इसके साथ जो हुआ है वह किसी इंसान ने नहीं अपितु भूत-प्रेत ने ही किया होगा।

यह कहानी यहीं समाप्त होती है। पर इसके अगले भाग के रूप में एक कहानी और आ सकती है कि क्या निकेश का यह हाल किसी भूत-भूतनी ने ही ऐसा किया था या किसी और ने? कहीं चंदा तो नहीं या नदेसर? निकेश के अन्य चार दोस्तों के साथ भी कुछ हुआ क्या?

भटकती आत्मा किसी के इंतजार में

मैदानी भागों में भी अगर किसी कल-कल बहती नदी के किनारे कोई छोटा-सा गाँव हो, आस-पास में हरियाली ही हरियाली हो, शाम के समय गाय-बकरियों का झुंड इस नदी के किनारे के खाली भागों में छोटी-बड़ी झाड़ियों के बीच उग आई घासों को चर रहा हो। गायें रह-रहकर रंभा रही हों, बछड़े कुलाछें भर रहे हों, वहीं कहीं पास में ही एक छोटे से खाली भाग में चरवाहे गुल्ली-डंडा या चिक्का, कबड्डी आदि खेल रहे हों और छोटी-छोटी बातों पर भी तर्क-वितर्क करते हुए हँसी-मजाक कर रहे हों। पास के ही खेतों में किसान लोग खेतों की निराई-गुड़ाई या जुताई कर रहे हों, रह-रहकर कहीं सुर्ती ठोकने की आवाज़ आ रही हो तो कोई किसान खेत जोतने के बाद कांधे पर हल उठाए गाँव में जाने की तैयारी कर रहा हो। कुछ घँसगर्हिन घाँस से भरे खाँची को सिर पर उठाए, हाथ में हँसुआ और खुर्पी लिए घर की ओर जाने के लिए उतावली दिख रही हों और उसी समय कोई चिंतक वहीं आस-पास नजरे गड़ाए यह सब देख रहा हो तो उसे यह सब देखना या महसूस करना किसी स्वर्णिम आनंद से कम नहीं लगता होगा। यह मनोहारी दृश्य उसके लिए सदा अविस्मरणीय होगा।

जब आप सरवरिया क्षेत्र में पूरब की ओर बढ़ेंगे तो नदी के खलार में आप को एक बभनवली नाम का गाँव मिलेगा। इस गाँव में 7 टोले हैं। इन्हीं टोलों में से एक टोला है, बभन टोला। बभन टोला को आप-पास के टोले वाले बभनौती भी कहकर पुकारते हैं, क्योंकि इस टोले पर बसे 22-24 घरों में से 18-20 घर ब्राह्मणों के ही हैं। इस टोले से लगभग 200 मीटर की दूरी पर गंडक बहती है। गाँव में कई सारे देवी-देवताओं के थान हैं। इन थानों में मुख्य रूप से डिहबाबा, बरमबाबा, काली माई, भवानी माई के थान हैं और साथ ही गाँव के बाहर नदी के पास एक टिले पर बना छोटा-सा शिव मंदिर। अगर कभी आप किसी सुरम्य पर्वतीय क्षेत्र का दर्शन किए हों और उसकी खूबसूरती के कायल हों और उसके बाद मैदानी भाग के इस छोटे से टोले रूपी गाँव में जाने का मौका मिल जाए तो हर हालत में यहाँ का सुरम्य वातावरण, गँवई सादगीपूर्ण परिवेश आपको मंत्रमुग्ध कर देगा और आप के मुख से बरबस ही निकल पड़ेगा कि इस भौतिक संसार में अगर कोई अविस्मरणीय, मनोहारी स्थल है तो बस वह यही है।

एक बार की बात है कि एक विदेशी पर्यटक दल घूमते-घामते इस गाँव के पास आ पहुँचा। उस दल को यह ग्रामीण परिवेश, प्राकृतिक सौंदर्य इतना पसंद आया कि वे लोग महीनों तक यहीं रह गए। गाँव वालों ने उनकी बहुत आवभगत भी की। इस दल में नैसी नामक की एक षोडशी भी थी। प्रकृति ने उसके अंग-प्रत्यंग में बला की खूबसूरती भर दी थी। उसे जो भी देखता, देखता ही रह जाता। नैसी बहुत शर्मीले स्वभाव की भी थी और यहाँ तक कि अपने पर्यटक दल के सदस्यों के साथ भी बातें करते समय आँखें नीची रखती थी। नैसी की खूबसूरती में उसके दैनिक कार्य चार-चाँद लगा देते थे। वह प्रतिदिन समय से जगने के बाद नहा-धोकर मंदिर भी जाती थी और गाँव के कुछ किशोरों, बच्चों, महिलाओं आदि को मंदिर के प्रांगण में इकट्ठा कर योग आदि के साथ ही अंग्रेजी बोलना भी सिखाती थी। दरअसल नैसी को भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव था और वह जर्मनी के किसी

विश्वविद्यालय से संस्कृत की पढ़ाई भी कर रही थी। नैसी को कई सारी भाषाओं पर एकाधिकार था। वह फरटिदार तत्समी हिंदी बोलती थी। कभी-कभी नैसी गाँव की महिलाओं को एकत्र कर उन्हें विभिन्न प्रकार की कलाओं में पारंगत करने की कोशिश करती थी। इन महीनों में गाँव वालों की चहेती बन गयी थी, नैसी। उसके अपनापन ने पूरे गाँव वालों को अपना बना लिया था। रमेसर काका तो गाँव वालों के सामने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे और सीना तानकर कहते थे कि अगर नैसी के माता-पिता हाँ करेंगे तो वे अपने बेटे सूरज का बिआह नैसी से करना पसंद करेंगे, भले ही इसके लिए उनका अपना समाज साथ न दे।

गाँव में आने के बाद अगर नैसी ने सबसे अधिक समय किसी के साथ बिताया था तो वह था सूरज। नैसी कभी-कभी सूरज के साथ खेतों के तरफ भी निकल जाया करती और उसके साथ मेड़ पर बैठकर गन्ना खाती, बहुत सारा बतियाती और हिरणी की तरह कुलांछें भरती गाँव में आ जाया करती। कभी-कभी जब सूरज गाय-बैलों को नहलाने के लिए नदी पर जाता तो नैसी भी उसके साथ जाती और मवेशियों को नहलाने में उसकी मदद करती। पुआल का लुड़ा बना-बनाकर गायों-बैलों के शरीर पर मलती, गायों-बछड़ों को दुलराती और किसी गाय का पगहा पकड़े कोई विदेशी गीत गुनगुनाते सूरज के साथ लौट आती। कभी-कभी किसी बात को लेकर नैसी और सूरज लड़ भी जाते, पर यह तकरार बहुत अधिक देर तक उन्हें एक-दूसरे से दूर नहीं रख पाती। कहीं न कहीं सूरज और नैसी के दिल के किसी कोने में प्रेम अंगराई लेने लगा था, प्रेम की लौ जलने लगी थी, पर वे दोनों अनजान थे इससे।

विधि का लिखंत कहें या प्रकृति को कोई खेल, लगभग 2-3 महीने के बाद जब वह विदेशी पर्यटक दल उस गाँव से विदा लेने लगा तो नैसी ने अपने आप को गाँव वालों के दिल के इतने करीब पाया कि वह गाँव वालों कि जिद के आगे नतमस्तक हो गई और अपने साथियों के साथ न जाकर कुछ दिन और गाँव वालों के साथ रहने का मन बना लिया। नैसी ने ज्योंही उस गाँव में कुछ दिन और रुकने की बात कही, सभी ग्रामवासी प्रफुल्लित मन से मन ही मन उसकी जय-जयकार करने लगे। रमेसर काका तो इतने प्रसन्न थे कि उनके आँख के आँसू बहुत चाहने के बाद भी आँखों में रहना उचित नहीं समझे और आँखें भी अब उनको विदा करना ही ठीक समझीं। लोग कुछ समझ पाते, इससे पहले ही रमेसर काका ने दौड़कर नैसी को बाहों में भर लिया और अपनी बेटी की विदाई करने वाले बाबुल की तरह 'आरे मेरी बेटी' कहकर अहकने लगे। नैसी भी अपने आप को रोक न सकी और उनसे लिपटकर आँसू बहाने लगी।

नैसी ने रमेसर काका के घर के सभी कामों में हाथ बँटाने के साथ ही गाँव वालों को सिखलाना-पढ़ाना जारी रखा। धीरे-धीरे 10-11 महीने बीत गए और अब नैसी पूरी तरह से ग्रामीण किशोरी के रूप में परिणित हो चुकी थी। इन 10-11 महीनों के बीच नैसी ने गाँव के किशोरों और युवाओं को इतना प्रेरित किया था, इतना उत्साहित किया था कि गाँव के लगभग अधिकांश किशोर-युवा जो 10वीं और 12वीं आदि पास थे, वे अपनी मेहनत के बल पर सरकारी नौकरियों में चयनित हो गए। रमेसर काका का (बेटा) सूरज भी एनडीए की परीक्षा उत्तीर्णकर प्रशिक्षण के लिए पुणे आ गया। अब गाँव की तस्वीर

एकदम से बदल गई थी। पहले जो गाँव की सरलता, सुंदरता व संपन्नता ठंड से काँपती एक चिरई की तरह पंख को सिकोड़े हुए थी; वही सरलता, सुंदरता व संपन्नता अब नैसी रूपी घाम के लगने से अपना पंख पसार कर उड़ने लगी थी।

सूरज का प्रशिक्षण समाप्त होते ही वह गाँव वापस आ गया। उसकी पोस्टिंग एक सेना अधिकारी के रूप में हो चुकी थी। वह 10-15 दिन की छुट्टी बिताने के बाद ज्वाइन करने वाला था। इन 10-15 दिनों में समय ने पूरी तरह से करवट लिया। नैसी के यह बताते ही कि वह अनाथ है, उसका इस दुनिया में कोई नहीं है, रमेसर काका ने स्नेहिल हृदय से उसके सिर पर हाथ रखा और अपने सूरज से कहा कि बेटा, “मेरी एक ही इच्छा है कि नैसी को तू अपना ले।” सूरज ने रमेसर काका के हाँ में हाँ तो मिलाई पर कहा कि बाबूजी ज्वाइन करने के बाद मैं पहली छुट्टी में गाँव आते ही नैसी से ब्याह रचा लूँगा।

कहते हैं कि आदमी एक खिलौना है उस शक्ति का, जो अपने मनोरंजन के लिए, अपने हिसाब से आदमी के साथ खेलती है। इस खेल में आदमी का बस नहीं चलता। उसे तो बस एक कठपुतली की तरह उस शक्ति के इशारों पर नाचना पड़ता है। वह शक्ति जिसके अदृश्य होकर भी दृश्य होने का भान है। वह कभी-कभी कुछ ऐसे खेल कर जाती है कि खिलौना टूटकर बिखर जाता है या उसकी दृश्यता, अदृश्यता में परिणित हो जाती है। जी हाँ, परिणीता बनने से पहले ही उस शक्ति ने कुछ ऐसा ही खेल खेला नैसी के साथ। ऐसा खेल जिसने नैसी के जीवन में ऐसा भूचाल ला दिया कि वह सदा-सदा के लिए अदृश्यता में दृश्य बन गई।

हुआ यह था कि सूरज सीमा पर आतंकी गतिविधियों का शिकार हो गया था और उसकी लाश भी शायद आतंकी उठाकर ले गए थे। सेना के कई जवान, अधिकारी गायब हो गए थे और 15-20 दिन तक खोज करने के बाद भी जब उनका अता-पता नहीं मिला तो सेना ने यह मान लिया था कि वे आतंक की भेंट चढ़ गए।

नैसी, वही नैसी जो पहले एक हिरणी की तरह कुलाछें भरती रहती थी, अब एक मूर्ति बनकर रह गई थी। खाना-पीना सब कुछ त्याग दिया था उसने। गाँव वालों ने, रमेसर काका ने उसे बहुत समझाया पर सब कुछ समझकर भी वह एक नासमझ बनी रही। सूनी आँखों से राह निहारती रही, गाँव के बाहर पागलों जैसी घूमती रही। एक दिन पता नहीं उसे क्या सूझा कि उसने सरकार को पत्र लिखा, जिसमें उसने लिखा था कि उसका सूरज जिंदा है, वह मरा नहीं है। फिर से अभियान चलाकर उसकी नई सिरे से खोज की जाए, वह ज़रूर मिल जाएगा। पर सरकार ने उस पत्र पर कोई कार्रवाई नहीं किया क्योंकि वह भी पूरी तरह से मान चुकी थी कि सूरज शहीद हो चुका है।

अब नैसी के पास खुद कुछ करने के सिवाय और कोई चारा नहीं था। वह हर हालत में सूरज को पाना चाहती थी और उसका दिल यह मानने को कत्तई तैयार नहीं था कि सूरज अब नहीं रहा। क्योंकि वह एक दिन रमेसर काका से भी कह रही थी कि काका, अगर सूरज नहीं रहा तो मुझे इसका एहसास क्यों नहीं हुआ? काका, हम दो जिस्म पर एक जान हैं! अगर उसे कुछ हुआ होता तो मुझे ज़रूर पता चलता। पर सात्विक, समर्पित प्रेम को समझना सब के बस की बात नहीं होती।

रमेसर काका ने इसे नैसी का सूरज के प्रति दिवानगी, पागलपन समझा और बस उसे सांत्वना देकर रह गए।

लगभग 1 महीने बीत गए। अब नैसी थोड़ी कठोर-सी लगने लगी थी। उसके चेहरे पर अजीब-से भाव बनते-बिगड़ते रहते थे। लोगों को लगता था कि वह थोड़ी-सी बावली हो गई है। एक दिन सुबह जब रमेसर काका खेतों से लौटकर घर वापस आए तो नैसी घर में न दिखी। दरअसल नैसी तो सूरज की खोज में निकल गई थी। नैसी के जाने के लगभग 14-15 दिनों के बाद एक ऐसी घटना घटी जो रमेसर काका और गाँव वालों के लिए बहुत ही हृदय-विदारक थी। इस घटना ने पूरे गाँव को स्तब्ध तो कर दिया था पर पूरे गाँव वाले क्या, जो भी इस घटना को सुनता, नैसी के कारनामे के आगे नतमस्तक हो जाता।

दरअसल नैसी एक सैनिक के भेष में भारतीय सैनिकों की आँख से बचते हुए वहाँ पहुँच गई थी जहाँ से सूरज गायब हुआ था। उस जगह पर पहुँचकर नैसी ने गोली चलाते हुए दुश्मन सेना के खेमे में भूचाल ही नहीं लाया था अपितु कितनों को मार गिराया था और भारतीय सेना कुछ समझ पाती इससे पहले ही दुश्मन सेना की एक गोली ने उसकी इह-लीला समाप्त कर दी थी। फिर सेना के जवानों ने नैसी के शव को अपने कब्जे में लेकर कुछ कागजी कार्रवाई करने के बाद उसे ससम्मान रमेसर काका को सौंप दिया था। नैसी के चले जाने से केवल रमेसर काका का ही घर काटने को नहीं दौड़ता था, अपितु पूरे गाँव में शोक की लहर थी। यहाँ तक कि वह ग्रामीण, सात्विक, मनोरम परिवेश अब आग उगलने लगा था।

पर समय अच्छे-अच्छे घावों को भर देता है। काफी समय बीत जाने के बाद गाँव फिर से अपने पुराने ढर्रे पर लौटने लगा था। लोग बीती बातों को याद कर अपनी आँखें तो गीली कर लेते थे पर उसे एक बुरा स्वप्न मानकर भूल जाना चाहते थे। एक दिन सुबह-सुबह रमेसर काका खेतों से लौटकर आए तो क्या देखते हैं कि घर में किसी के पायल की आवाज़ सुनाई दे रही है। उन्हें बहुत ही कौतुहल हुआ पर जब वे घर में घुसे तो चूल्हा जलता देख उनके सिर की लकीरों के साथ ही पसीने भी उभर आए। जो कुछ भी हो रहा था, वह अजीब था और रमेसर काका कुछ समझ नहीं पा रहे थे। तभी उन्हें एक आवाज़ ने विस्मित कर दिया। जी हाँ, एक महिला की आवाज़ ने। वह सुमधुर आवाज़ किसी और की नहीं अपितु नैसी की ही थी। वह आहिस्ते से बोल रही थी, “बाबूजी, डरिए नहीं। मैं हूँ, नैसी। मैं वापस लौट आई हूँ और बहुत ही जल्द सूरज को भी वापस लाऊँगी।”

रमेसर काका के पैर पीछे की ओर मुड़ गए। वे तेजी से घर के बाहर निकले और घर से बाहर निकले ही चिल्लाने लगे। उनकी चिल्लाहट सुनकर गाँव के काफी लोग एकत्र हो गए। उन्होंने लोगों के पूछने पर उंगुली से घर की ओर इशारा करते हुए, कंपकपाई आवाज़ में कहा कि वह लौट आई है? गाँव के कुछ लोगों ने हिम्मत करके घर में प्रवेश किया कि आखिर कौन लौट आई है, ऐसा क्या हुआ है कि रमेसर काका एकदम से सहम गए हैं? जब गाँव वालों ने घर के अंदर प्रवेश किया तो उन्हें भी किसी के पायल की आवाज़ सुनाई देने के साथ ही बहुत कुछ ऐसा दिखा, महसूस हुआ जिससे उन्हें भी नैसी के लौट आने पर भरोसा हो गया हो। पर फिर भी वे यह मानने को तैयार नहीं थे, क्योंकि नैसी तो मर चुकी थी। वह कैसे आ सकती है?

अजीब स्थिति थी, फिर कुछ लोगों ने हिम्मत करके नैसी को आवाज़ लगाई। अब तो पायल की आवाज़ भी गायब हो गई थी। फिर क्या था, कुछ लोगों ने रमेसर काका का पूरा घर छान मारा पर उसे नैसी कहीं नहीं मिली। अब तो गाँव वाले पूरी तरह से डर गए थे। तो क्या नैसी की आत्मा?

खैर, उस दिन गाँव वालों ने दोपहर में मंदिर में एकत्र होकर इस पर चर्चा करनी शुरू कर दी। आखिर अगर नैसी की आत्मा वापस आ गई है तो अब क्या करना चाहिए? कहीं ऐसा न हो कि वह हम गाँव वालों को परेशान करे। गाँव के बड़-बुजुर्ग अभी यही सोच रहे थे कि तभी एक हल्की-सी आँधी उठी। कोई कुछ समझ पाता इससे पहले ही मंदिर का बड़ा घंटा अपने आप बजने लगा। सब लोग सहमकर बैठ गए। किसी को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। तभी घंटे की आवाज़ धीमी होने लगी और एक अदृश्य महिला आवाज़ गूँजने लगी, “हाँ, मैं नैसी हूँ, नैसी। मैं वापस लौट आई हूँ और जब तक सूरज को लाकर रमेसर काका को सौंप नहीं देती, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी। पर हाँ, मैं यह भी वादा करती हूँ कि मेरे कारण इस गाँव के किसी का भी कोई बुरा नहीं होगा। मैं बहू हूँ इस गाँव की और सदा अपने संबंध को निभाती रहूँगी।”

आवाज़ समाप्त होते ही गाँव वालों के पास अब कुछ कहने या सोचने के लिए कुछ भी तो नहीं बचा था। उन्हें अदृश्यता में दृश्यता का भान हो चुका था। सभी लोग अपने-अपने घरों को जा चुके थे।

दूसरे दिन से प्रतिदिन सुबह-सुबह एक अदृश्य आत्मा गाँव में घूम-घूमकर लोगों को सजग करती नजर आने लगी। उसके होने का एहसास तो सब को हो रहा था पर उसकी अदृश्यता एक अबूझ पहेली बनी हुई थी।

गृहस्थ भूत

भूत की कहानी भी सत्य हो सकती है क्या? कुछ लोग इस पर सत्यता की मुहर लगाते हैं तो कुछ लोग गढ़ी हुई मानकर रोब जमाते हैं। खैर, मैं तो यह मानता हूँ कि अगर भगवान का अस्तित्व है तो भूत-प्रेतों का क्यों नहीं? पर यह भी सही है कि हमें भूत-प्रेत के पचड़े में न पड़ते हुए ऐसी कहानियों को काल्पनिक मानते हुए मनोरंजन के रूप में लेना चाहिए। यानि कोई भी सुनी हुई घटना जब कोई सुनाता है तो वह पूरी तरह से सत्य ही हो यह कहा नहीं जा सकता। हाँ, अगर कोई स्वयं पर बीती घटना सुनाता है तो उसकी सत्यता से पूरी तरह से इंकार भी नहीं किया जा सकता।

खैर, छोड़िए इन बातों को! मेरी कहानियों को आप केवल मनोरंजन के रूप में ही लें। हाँ, साथ ही यह भी सत्य है कि मैं केवल मनोरंजन प्रदान करने के लिए कल्पना की धरातल पर इन कहानियों को गढ़ता हूँ और यह भी मानता हूँ कि कहानी तो कही हुई बात ही है जिसे कहानीकार अपनी भाषा शैली में, अपने विचारों को प्रमुखता देते हुए परोसता है पर सत्य कहानियों के अस्तित्व को भी मैं नकार नहीं सकता।

अभी जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, यह एक ऐसे भूत की है जो ट्रक का ड्राइवर था और भेद खुलने के पहले तक हर महीने अपने परिवार को मनीआर्डर भेजता रहता था। हँसी आती है लोगों की कारस्तानी पर। अरे, अगर भूत हर महीने अपने परिवार को मनीआर्डर भेज रहा है तो ऐसे भूत की छान-बीन करके, उसका क्रिया-कर्म करके उसकी आत्मा की शांति के लिए पूजा-पाठ करवाने की क्या आवश्यकता है? उसे इस भूत-प्रेत की योनि से छुटकारा दिलवाने की क्या आवश्यकता है? ऐसे भूत मिलते कहाँ हैं जो हर महीने अपनों की आर्थिक मदद करते रहें? नहीं, पर आवश्यकता है क्योंकि ये भूत-प्रेत भी किसी के सगे-संबंधी ही होते हैं और कोई भी नहीं चाहता कि उसका कोई अपना मृत्यु के बाद भूत-प्रेत की योनि में भटकता रहे।

हुनेसरजी (नाम बदला हुआ) हमारे जिले के ही रहने वाले थे और शादी-शुदा थे। उनके परिवार में उनके दो छोटे भाई, माता-पिता, पत्नी तथा दो प्यारे बच्चे थे। हुनेसर जी कोलकाता में किसी सेठ के यहाँ ट्रक की ड्राइवरी करते थे। उन्हें ट्रक पर माल लादकर दूर-दूर के शहरों में जाना पड़ता था। वे बहुत ही मेहनती थे और अपना काम पूरी जिम्मेदारी व ईमानदारी से करते थे। उनके कार्यों से उनका सेठ भी बहुत ही खुश था और हर महीने उन्हें अपने साथ लेकर डाकघर जाता था और हजार-बारह सौ उनके घर मनीआर्डर ज़रूर कराता था।

हुनेसरजी की जीवन गाड़ी बहुत ही मजे में चल रही थी। कभी-कभी जब उनको माल लेकर लखनऊ, बनारस आदि आना पड़ता तो वे थोड़ा समय निकालकर घर पर भी आ जाते और घर वालों का हाल-चाल लेने के बाद वापस चले जाते।

एक बार की बात है कि हुनेसरजी रात को करीब दस बजे ट्रक लेकर निकले। उन्हें दिल्ली की ओर जाना था। उनके साथ सामू नामका एक खलौंसी भी था। हुनेसरजी, खलौंसी को अपने बेटे जैसा मानते थे और उसे ट्रक चलाना भी सिखाते थे। अब सामू ट्रक

चलाने में निपुण भी हो गया था। उस रात सामू ने जिद करके कहा कि आप आराम से सो जाइए तो ट्रक चलाकर मैं ले चलता हूँ। हुनेसरजी न कहकर ट्रक खुद चलाते हुए निकल पड़े और सामू उनके बगल में बैठा रहा।

रात के करीब 1 बजे होंगे और ट्रक एक चौड़ी सड़क पर तेज गति से दौड़ा चला जा रहा था। अचानक हुनेसरजी को पता नहीं क्या हुआ कि वे सड़क किनारे ट्रक रोककर बीड़ी सुलगाकर पीने लगे। बीड़ी पीने के बाद वे सामू से बोले कि मुझे बहुत नींद आ रही है, अस्तु मैं सोने जा रहा हूँ। तुम एक काम करो, मजे में (धीरे-धीरे) ट्रक चलाकर ले चलो।

सामू तो ट्रक चलाना ही चाहता था, उसने हामी भरकर ट्रक की स्टेयरिंग पकड़ ली और धीमी गति से ट्रक को दौड़ाने लगा। लगभग आधे-एक घंटे के बाद जब सामू को लगा कि अब हुनेसरजी गहरी नींद में सो रहे हैं तो उसको मस्ती सूझी। उसने ट्रक की स्पीड बहुत ही तेज कर दी और गुनगुनाते हुए डाइबिंग करने लगा। अचानक उसे पीछे से एक और ट्रक आती दिखाई पड़ी। शायद जिसकी स्पीड और भी तेज थी। उसने सोचा कि शायद पीछे से आ रही ट्रक उससे आगे निकलना चाहती है। सामू का भी खून अभी तो एकदम नया था। वह भला ऐसा क्यों होने दे, उसने भी ट्रक का एक्सीलेटर चाँपते हुए ट्रक को और भी तेज दौड़ाने लगा। अरे, यह क्या उसने ट्रक की स्पीड इतनी बढ़ा दी कि ट्रक अब उसके काबू से बाहर हो गई। वह कुछ सोच पाता इससे पहले ही ट्रक सड़क छोड़कर उतर गई और एक पेड़ से टकराकर पूरी तरह से नष्ट हो गई।

इस दुर्घटना में हुनेसरजी तो प्रभु को प्यारे हो गए पर सामू बच गया। उसे कुछ ट्रक चालकों ने पास के अस्पताल में भर्ती कराकर उसके सेठ को सूचना भिजवा दी थी। सामू 4-5 दिन अस्पताल में पड़ा रहा। उसे अपनी ग़लती पर बहुत ही पछतावा हो रहा था। उसकी एक ग़लती से उसके पिता समान हुनेसरजी को अपनी जान गँवानी पड़ी थी। उसका दिल रो पड़ा था पर अब विधि के विधान के आगे वह कर भी क्या सकता था। उसने तय कर लिया कि अब वह जो भी कमाएगा उसका आधा हुनेसरजी की परिवार को दिया करेगा। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद वह वापस कोलकाता आ गया। अपने सेठ से मिलकर उसने सारी बात बताई और अपनी ग़लती पर फूट-फूटकर रोने लगा। सेठ ने उसे समझाते हुए कहा कि अब रोने-धोने से कुछ होने वाला नहीं पर हम अभी हुनेसरजी के परिवार वालों को कुछ बताएँगे नहीं और समय-समय पर उसके परिवार की मदद करते रहेंगे। इसके साथ ही उन्होंने सामू से एक ऐसी बात बताई जिसे सुनकर सामू पूरी तरह से डर गया, उसके रोंगटे खड़े हो गए।

दरअसल सेठ ने सामू को बताया कि हुनेसरजी बराबर बताया करते थे कि मालिक जब भी यहाँ से माल लेकर दिल्ली के लिए निकलता हूँ, तो रात को करीब 1-2 बजे एक सुनसान जगह पर ऐसा लगता है कि कोई ट्रक तेजी से पीछे से आ रहा है और हमें ओवरटेक करने की कोशिश कर रहा है। पीछे देखने पर वह ट्रक दिखाई नहीं देता पर ट्रक के मिरर में वह साफ-साफ ओवरटेक करते हुए दिखता है। कई बार तो मैंने अपने ट्रक को किनारे लगाकर उतरकर देखा तो पीछे कोई ट्रक ही नहीं दिखा। तेजी से आता वह ट्रक केवल रात को ही और वह भी मिरर में ही दिखता है। मालिक इस ट्रक के चक्कर में कई ट्रक वालों का एक्सीडेंट हो गया है। समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों होता है? आगे उस सेठ ने कहा कि

मैं हुनेसरजी की बातों को सुन तो लेता था पर उस पर ध्यान नहीं देता था। क्योंकि ऐसे कैसे हो सकता है कि कोई ट्रक होकर भी न हो? और वैसे भी मैं भूत-प्रेत में विश्वास नहीं करता पर तुम्हारी बातें सुनने के बाद पता नहीं क्यों अब मुझे हुनेसरजी की बातों पर विश्वास होने लगा है।

सेठ जी के इतना कहते ही सामू को काठ मार गया। वह चाहकर भी चीख नहीं सका। तो क्या पीछे से आ रहा ट्रक कोई भूत-प्रेत था? या कोई भूत ट्रक बनकर ट्रक वालों को चकमा देकर दुर्घटना करा देता था?

खैर, समय सब के घाव भर देता है। सेठ भी अपने काम में लग गए और सामू भी। 3 महीना बीतने के बाद एक दिन सेठ ने सामू से कहा कि चलो हुनेसरजी के घर चलकर आते हैं। इस बात को छिपाना ठीक नहीं होगा और साथ ही हुनेसरजी के परिवार की कुछ आर्थिक मदद भी कर देंगे। हुनेसरजी थे तो हर महीने उनके परिवार को मनीआर्डर चला जाता था पर पिछले 3 महीने से मनीआर्डर भी नहीं गया और न ही कोई पत्र आदि। उनके घर के लोग कहीं परेशान न हों? सेठ की बात सुनकर सामू ने कहा कि सेठजी अगले महीने मेरी शादी है। शादी के बाद हम लोग चलेंगे क्योंकि मैंने भी सोच रखा है कि हुनेसरजी के परिवार की मदद करता रहूँगा। इसके बाद सेठ ने कहा कि ठीक है, अगले महीने चलते हैं। मैं चाहता हूँ कि मैं हुनेसरजी के बच्चों की पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था भी कर दूँ और साथ ही उनके दोनों भाइयों को यहाँ लाकर कुछ काम-धंधा दिलवा दूँ।

मई का महीना था और दोपहर का समय। कड़ाके की लू चल रही थी। सेठ और सामू पसीने से तर-बतर थे। वे लोग पूछते-पूछते हुनेसरजी के गाँव में आ गए थे। एक आदमी ने हुनेसरजी के घर पर भी उन लोगों को पहुँचा दिया। हुनेसरजी के दरवाजे पर एक नीम का घना पेड़ था, जिसके नीचे चौकी पड़ी हुई थी। सेठ और सामू वहीं बैठ गए। उन लोगों ने हुनेसरजी के परिवार के लिए साड़ी, कपड़ा, मिठाई आदि जो लेकर आए थे, घर में भिजवा दिए। घर से उन्हें पानी (जलपान आदि) पीने के लिए आया। पानी-ओनी पीने के बाद उन दोनों ने हुनेसरजी के पूरे परिवार को यह दुखद घटना सुनाने की सोची। अरे, यह कहा, अभी वे लोग कुछ कहने ही वाले थे तभी डाकिए के साइकिल की घंटी ट्रिन-ट्रिन बजती हुई उसी नीम के आगे आकर रुक गई। फिर डाकिए ने हुनेसरजी के पिताजी को जयरम्मी करते हुए मनीआर्डर सौंपा। मनीआर्डर सौंपने के बाद डाकिया चला गया। डाकिए के जाने के बाद हुनेसरजी के पिताजी ने कहा कि जब आप लोग आ ही रहे थे तो फिर हुनेसर को यह पैसे डाक से लगाने की क्या ज़रूरत थी? आप लोगों से हाथ से ही भिजवा दिया होता।

हुनेसरजी के पिता के मुँह से इतना सुनते ही सेठ और सामू दोनों हक्के-बक्के हो गए। सेठ ने थूक घोंटकर हुनेसर के पिताजी से पूछा कि क्या कहा आपने? हुनेसरजी ने मनी आर्डर भेजा है? सेठ की यह बात सुनते ही हुनेसर के पिताजी ने बिना कुछ बोलते हुए 100 के आठ नोट तथा मनीआर्डर वाला छोटा कागज का टुकड़ा जिसपर पता लिखा था, सेठ के आगे बढ़ा दिया। सेठ जल्दी-जल्दी उस कागज के टुकड़े को उलट-पुलट कर देखने लगे। उन्हें कुछ भी विश्वास ही नहीं हो रहा था क्योंकि मनीआर्डर के उस कागज पर जो लिखाई थी वह हुनेसरजी की ही थी और वह पैसा उन्होंने पिछले महीने ही उसी डाकघर से लगाया था जहाँ से सेठ और वे बराबर हर महीने पैसा लगाया करते थे। अब तो सेठ एकदम से घबरा

गए थे। साथ ही सामू के चेहरे का रंग भी उड़ गया था। उन दोनों को समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है? तभी हुनेसर के पिताजी बोल पड़े कि कुछ भी हो पर भगवान ऐसा लड़का सबको दें। हम लोगों की बहुत ही सुध रखता है और हर महीने थोड़ा कम या ज्यादा मनीआर्डर जरूर कर देता है।

इतना सुनते ही सामू बोल पड़ा कि काका, क्या पिछले महीने भी हुनेसरजी ने मनीआर्डर किया था?

हाँ, कहते हुए हुनेसरजी के पिताजी ने कहा कि, अरे भाई, हाँ, हाँ! पिछले महीने तो उसने 12 रुपए भेजे थे। इतना सब सुनने के बाद आप लोग खुद ही सोच लीजिए कि सेठ और सामू किस परिस्थिति में होंगे?

अचानक सामू अपने आपको रोक न सका और फफककर रो पड़ा। सेठ से रहा न गया और वे सामू को चुप कराते हुए खुद भी रूआँसू हो गए। हुनेसरजी के परिवार वालों को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर अचानक ये दोनों रोने क्यों लगे? अब उस नीम के नीचे गाँव के अन्य लोग भी एकत्र हो गए थे। सेठ ने थोड़ी हिम्मत करके सारी बात कह डाली। यह बात सुनते ही वहाँ खड़े लोगों विशेषकर महिलाओं में रोवन-पीटन शुरू हो गया पर अभी भी हुनेसरजी के घर वाले यह मानने को तैयार नहीं थे कि पिछले 4 महीनों से हुनेसरजी नहीं है। अगर हुनेसरजी नहीं है तो इन चार महीनों में जो 3 बार मनीआर्डर आए हैं, वह किसने भेजा है? हैंडराइटिंग तो मुनेसर की ही है। अरे, इतना ही नहीं दो महीने पहले उसका एक पत्र भी मिला था जिसमें उसने लिखा था कि बाबूजी कुछ ज़रूरी काम आ जाने के कारण 1 साल तक मैं घर नहीं आ सकता पर मनीआर्डर बराबर भेजता रहूँगा।

काफी कुछ सांत्वना के बाद, हुनेसरजी के दुर्घटना की पुलिस द्वारा ली गई कुछ तस्वीरों और डाक्टर की रिपोर्ट के बाद अंततः हुनेसरजी के घर वाले माने कि अब हुनेसरजी नहीं रहे पर वह भी पूरी तरह से नहीं।

गाँव वालों और कुछ हित-नात के कहने-सुनने के बाद हुनेसरजी की अंतिम क्रिया संपन्न की गई। सारे कर्म विधिवत संपादित किए गए। इसके बाद हुनेसर जी के दोनों भाई सेठ के पास कोलकाता चले गए। सेठ ने उन्हें एक कारखाने में अच्छे वेतन पर नौकरी दिलवा दी। इसके साथ ही सेठ हर महीने हुनेसरजी के परिवार के लिए कुछ पैसे मनीआर्डर करता रहा।

खैर, जो भी हो पर अभी भी सामू को यकीं नहीं कि उसका पीछा करने वाला ट्रक कोई भूत चला रहा था और मरने के बाद भी हुनेसरजी अपने परिवार को मनीआर्डर करते रहे। अब हुनेसरजी के परिवार को पूरी तरह यकीं हो गया है कि हुनेसरजी इस दुनिया में नहीं हैं, क्योंकि अब उनका पत्र-मनीआर्डर आदि भी नहीं आता और इस घटना को भी तो काफी समय हो गए।

बुड़ुआ का उत्पात

कहानी शुरू करने से पहले यह जान लेना ज़रूरी है कि बुड़ुआ क्या होता है? दरअसल बुड़ुआ भी एक तरह का भूत ही है। ऐसा माना जाता है कि अगर कोई प्राणी पानी में डूबकर मरता है तो वह बुड़ुआ (एक प्रकार का भूत) बन जाता है। पहले के समय में लोगों का यह मानना था कि अधिकतर पोखरों, तालाबों, झीलों, नदियों आदि में बुड़ुआओं का वास रहता था और जब भी कोई व्यक्ति अकेले इन तालाबों आदि में जाते थे तो ये लोग उसे पकड़कर पानी के भीतर खींच लेते थे और उसे डुबाकर मार देते थे। कई लोगों ने यह भी बताया है कि किस प्रकार अपनी चतुरता और बल के आधार पर उन लोगों ने बुड़ुआओं का मात दे दिया और बुड़ुआओं के चंगुल से निकल भागे। दरअसल बुड़ुआ व्यक्ति को पानी में खींचने के साथ ही कभी-कभी पानी की कीचड़ में धाँस भी देते थे।

हमारे गाँव के एक व्यक्ति बताते थे कि एक बार वे खड़खड़ दुपहरिया में अपने भैंस को नहलाने के लिए पोखरे में लेकर गए थे। भैंस डुबाह भर पानी में चली गई और वे भी। अचानक एक बुड़ुआ ने उन पर हमला कर दिया और उन्हें कीचड़ में धाँसने की कोशिश करने लगा। बुड़ुआ के साथ उनकी खूब लड़ाई हुई अंत में वे महानुभाव बुड़ुआ के चंगुल से निकलकर भैंस के पीठ पर चढ़ गए। बुड़ुआ वहाँ भी उनका पीछा करना जारी रखा। अंततः पता नहीं भैंस को क्या आभास हुआ कि वह तेजी से पोखरे से बाहर निकलने के लिए भागी। ऐसा लगता था कि बुड़ुआ ने भैंस के पैरों को जकड़ लिया है। कैसे भी करके भैंस पानी के बाहर आई और उस महानुभाव की जान बची। इस घटना के लगभग महीनों तक वह भैंस कभी भी किसी तालाब आदि में जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाती थी।

आइए, हम आपको बुड़ुआ की एक घटना सुना देते हैं। स्वर्गीय (स्वर्गीय कहना उचित प्रतीत नहीं हो रहा है क्योंकि अगर रमेसर स्वर्गीय हो गए तो फिर बुड़ुआ बनकर लोगों को सता क्यों रहे हैं? खैर, भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।) रमेसर हमारे गाँव के ही रहने वाले थे और जब उन्होंने अपने इस क्षणभंगुर शरीर का त्याग किया, उस समय उनकी उम्र लगभग 9-10 वर्ष रही होगी। वे बहुत ही कर्मठ लड़के थे। पढ़ने में तो बहुत कम रुचि रखते थे पर घर के कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। चउओं (मवेशियों) को चारा देने से लेकर उनको चराने, नहलाने, गोबर-गोहथारि आदि करने का काम वे बखूबी किया करते थे। वे खेती-किसानी में भी अपने घर वालों का हाथ बँटाते थे। उनका घर एक बड़े पोखरे के किनारे था। यह पोखरा गरमी में भी सूखता नहीं था और जब भी रमेसर को मौका मिलता इस पोखरे में डूबकी भी लगा आते। दरवाजे पर पोखरा होने का फायदा रमेसर ने छोटी ही उम्र में उठा लिया था और एक कुशल तैराक बन गए थे। आज गाँव वालों ने इस पोखरे को भरकर घर-खलिहान आदि बना लिया है।

इस पोखरे से गाँव को बहुत ही फायदा था। गर्मी में लोग खूब अपने मवेशियों को डूबकी लगावाते थे और बच्चों का झुंड भी खूब तैराकी करता था। यह पोखरा गाँव के जीवन का एक अंग था। वैसे भी आजकल तो कहीं भी ये पोखरे, तालाब आदि नजर नहीं आ रहे हैं, या बहुत कम नजर आ रहे हैं क्योंकि लोगों ने इन्हें भरना शुरू कर दिया है। खैर, जो अपने हाथ में नहीं उसका रोना रोना ठीक नहीं। आइए, आपको सीधे कहानी से परिचित करवाता हूँ।

एक बार की बात है की असह्य गरमी पड़ रही थी और सूर्यदेव अपने असली रूप में तप रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे पूरी धरती को तपाकर लाल कर देंगे। ऐसे दिन में खर-खर दुपहरिया (ठीक दोपहर) का समय था और रमेसर नाँद में सानी-पानी करने के बाद भैंस को खूँटे से खोलकर नाँद पर बाँधने के लिए आगे बढ़े। भैंस भी अत्यधिक गरमी से परेशान थी। भैंस का पगहा खोलते समय रमेसर ने बचपने (बच्चा तो थे ही) में भैंस का पगहा अपने हाथ में लपेट लिए। इसको बचपना इसलिए कह रहा हूँ कि लोग किसी भी मवेशी का पगहा हाथ में लपेटकर नहीं रखते हैं क्योंकि अगर वह मवेशी ने किसी कारणवश भागना शुरू कर दिया तो उस व्यक्ति के जान पर बन आती है और वह भी उसके साथ घसीटते हुए खींचा चला जाता है क्योंकि पगहा हाथ में कस जाता है और हड़बड़ी में उसमें से हाथ निकालना बहुत ही मुश्किल हो जाता है।

जब रमेसर भैंस को लेकर नाँद की तरफ बढ़े तभी गरमी से बेहाल भैंस पोखरे की ओर भागी। रमेसर भैंस के अचानक पोखरे की ओर भागने से संभल नहीं सके और वे भी उसके साथ तेजी में खींचे चले गए। भैंस पोखरे के बीचोंबीच में पहुँचकर लगी खूब बोह (डूबने) लेने। चूँकि पोखरे के बीचोंबीच में रमेसर के तीन पोरसा (उनकी लंबाई के तिगुना) पानी था और बार-बार भैंस के बोह लेने से उन्हें साँस लेने में परेशानी होने लगी और वे उसी में डूब गए। हाथ बँधा और घबराए हुए होने की वजह से उनका तैरना भी काम नहीं आया।

2-3 घंटे तक भैंस पानी में बोह लेती रही और यह अभाग्य ही कहा जाएगा कि उस समय किसी और का ध्यान उस पोखरे की ओर नहीं गया। उनके घर-वाले भी निश्चित थे क्योंकि ऐसी घटना का किसी को अंदेशा नहीं था। 2-3 घंटे के बाद जब भैंस को गरमी से पूरी तरह से राहत मिल गई तो वह रमेसर की लाश को खिंचते हुए पोखरे से बाहर आने लगी। जब भैंस लगभग पोखरे के किनारे पहुँच गई तो किसी व्यक्ति का ध्यान भैंस की ओर गया और उसने चिल्लाना शुरू किया। उस व्यक्ति की चिल्लाहट सुनकर आस-पास के बहुत सारे लोग जमा हो गए। पर यह जानकर वहाँ शोक पसर गया कि कर्मठ रमेसर अब नहीं रहा। भैंस ने अपनी गरमी शांत करने के लिए एक निर्बोध बालक को मौत के मुँह में भेज दिया था।

इस घटना को घटे जब लगभग 5-6 साल बीत गए तो लोगों को उस पोखरे में बुडुवे (भूत) का एहसास होने लगा। गाँव में यह बात तेजी से फैल गई कि अब रमेसर जवान हो गया है और लोगों पर हमला भी करने लगा है। एक दिन गोन्हुआ सुबह-सुबह मछरी मारने के लिए तालाब से जलकुंभी निकाल रहा था तभी उसके पैरों में सेवार या कार्ड जैसी कोई फिसलन वाली वस्तु लगी नजर आई। वह उस सेवार या कार्ड जैसी वस्तु को जितना हाथ से नोचकर फेंकने की कोशिश करता, वह उतना ही उसके शरीर पर फैलती जा रही थी तथा गोन्हुआ को यह भी आभास हो रहा था कि पता नहीं क्यों, वह धीरे-धीरे पानी में खींचा चला जा रहा है। अचानक उसे लगा कि हो न हो कहीं यह रमेसर बुडुआ तो नहीं? फिर उसका लकार खुला और वह तेज-तेज चिल्लाने लगा। उसकी चिल्लाहट सुनकर कुछ लोग दौड़े हुए आए और उसे पानी से बाहर निकाला।

गोन्हुआ पूरी तरह से डरा हुआ था और बता रहा था कि किस प्रकार न चाहते हुए भी वह पानी में खींचा चला जा रहा था। गोन्हुआ के अलावा भी कई लोगों ने उस बुडुवे को

देखा था। एक बार की बात है की खमेसरी काकी, उस पोखरे के किनारे की बाँसवारी में अपनी गाय के लिए बाँस की पतई तोड़ रही थीं तभी उन्हें तालाब में किनारे कुछ अजीब चीज तेजी से नीचे-ऊपर होते दिखाई दी। उनको पक्का यकीन हो गया कि यह रमेसर बुडुआ है क्योंकि वह अजीब चीज जब ऊपर उछलती तो हाथ के इशारे से उन्हें उसके पास आने का इशारा करती। पर खमेसरी काकी को पता था कि बुडुआ का बल केवल पानी में ही काम करता है। यहाँ सूखी जमीन पर वह उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता, अस्तु रमेसरी काकी उस बुडुआ पर ध्यान दिए बिना बाँस की पतई तोड़ने में लगी रहीं। आज वह पोखरा समतल हो गया है। उस पर घर-खलिहान आदि बन गए हैं पर जब तक उसमें पानी था तब तक रमेसर उस पोखरे में अकेले नहाने वाले कई लोगों पर हमला कर चुका था।

एक बार तो वह एक बड़े बलवान आदमी को भी खींचते हुए पानी के अंदर लेकर चला गया था। अब डुबाने वाला ही था पर संयोग से किसी महिला की नजर उस पर पड़ गई और उसकी चिल्लाहट सुनकर कुछ लोगों ने उस व्यक्ति की जान बचाई।

दिवानी चुडैल

यह कहानी है एक चुडैल की जो एक व्यक्ति के पीछे ही पड़ गई थी। और हाँ, ये चुडैल उस व्यक्ति से बहुत कुछ दिल की बातें करती थी। इस चुडैल का तो यहाँ तक कहना था कि उसको उस व्यक्ति से प्यार हो गया है और वह सदा के लिए उसका बनकर रहना चाहती है। पर क्या वह चुडैल उस व्यक्ति को अपना बना पाई? शायद यह कहानी इस रहस्य पर से परदा उठाएगी और एक चुडैल के प्रेम को, उसकी चाहत को बयाँ करेगी।

हाँ, इतना ही नहीं! मैं बता दूँ कि यह कहानी मैंने उस व्यक्ति से सुनी है जिसके पीछे वह चुडैल पड़ गई थी, मतलब प्यार में। एक दिन जब मैं उस व्यक्ति के पास बैठा, भूत-प्रेतों के बारे में जानने के लिए बहुत ही उत्सुक था तो उस व्यक्ति ने यह कहानी सुनाई। आप भी सुनिए और आनंद लीजिए। डरना मना है...।

यह कहानी आज से 55-60 साल पहले की है जब गाँवों के अगल-बगल में बहुत सारे पेड़-पौधे, झाड़ियाँ आदि हुआ करती थीं। जगह-जगह पर बँसवाड़ी (बाँस का बगीचा), महुआनी (महुआ का बगीचा), बारियाँ (आम आदि पेड़ों के बगीचे) हुआ करती थीं। गाँव के बाहर निकलने के लिए कच्ची पगडंडियाँ थीं वह भी मूँज आदि पौधों से घिरी हुई।

ऐसे समय में भूत-प्रेतों, चुडैलों का बहुत ही बोलबाला था। लोगों को इन अनसुलझी आत्माओं के डरावने अनुभव हुआ करते थे। यहाँ तक कि ये रोएँ खड़ी कर देने वाली आत्माओं के कुछ नाम भी हुआ करते थे जो इनके काम या रहने की जगह आदि पर रखे जाते थे। जैसे पंडीजी के श्रीफल पर की चुडैल, नेटुआबीर बाबा, बड़कीबारी वाला भूत, बँसवाड़ी में की चुडैल, सारंगी बाबा, रक्तपियनी चुडैल, नहरडुबनी चुडैल, प्यासनमरी चुडैल आदि। तो आइए आप लोगों को उस चुडैल से मिलवाता हूँ जो एक आम के बगीचे के कोने में स्थित एक बाँस की कोठी (कोठी यानि एक पास एक में सटे उगे हुए बहुत से बाँस) में रहती थी।

यह कहानी जिस समय की है उस समय बहिरू बाबा गबडू जवान थे। चिक्का, कबड्डी, दौड़ आदि में बड़-चढ़कर हिस्सा लेते थे और हमेशा बाजी मारते थे। अरे भाई, कबड्डी खेलते समय अगर तीन-चार लोग भी उन्हें पकड़ लेते थे तो सब को खींचते हुए बिना साँस तोड़े बहिरू बाबा लाइन छू लेते थे।

बहिरू बाबा के घर के आगे लगभग 200 मीटर की दूरी पर उनका खुद का एक आम का बगीचा था जिसमें आम के लगभग 15-16 पेड़ थे और इस बगीचे के एक कोने में बसवाड़ी भी थी जिसमें बाँस की तीन-चार कोठियाँ थीं।

आम का मौसम था और इस बगीचे के हर पेड़ की डालियाँ आम से लदकर झुल रही थीं। दिन में बहिरू बाबा के घर का कोई व्यक्ति दिनभर इन आमों की रखवाली करता था पर रात को रखवाली करने का जिम्मा बहिरू बाबा का ही था। रात होते ही बहिरू बाबा खाने-पीने के बाद अपना बिस्तर और बँसखटिया उठाते थे और सोने के लिए इस आम के बगीचे में चले जाते थे।

एक रात बहिरू बाबा बगीचे में अपनी बँसखटिया पर सोए हुए थे। तभी उनको बँसवाड़ी के तरफ कुछ आहट सुनाई दी। बहिरू बाबा तो जग गए पर खाट पर पड़े-पड़े ही

अपनी नजर बँसवाड़ी की तरफ घुमा दिए। उनको बँसवाड़ी के कुछ बाँस हिलते हुए नजर आ रहे थे पर हवा न बहने की वजह से उनको लगा कि कोई जानवर बाँसों में घुसकर अपने शरीर को रगड़ रहा होगा और शायद इसकी वजह से ये बाँस हिल रहे हैं।

इसके बाद बहिरू बाबा उठकर खाट पर ही बैठ गए और अपनी लाठी संभाल लिए। अभी बहिरू बाबा कुछ बोलें इसके पहले ही उन्हें बँसवाड़ी में से एक औरत निकलती हुई दिखाई दी। उस औरत को देखते ही बहिरू बाबा की साँसे तेज हो गई और वे लगे सोचने की इतनी रात को कोई औरत इस बँसवाड़ी में क्या कर रही है? ज़रूर कुछ गड़बड़ है। अभी वे कुछ सोच ही रहे थे कि वह औरत उनके पास आकर कुछ दूरी पर खड़ी हो गई।

बहिरू बाबा तो हक्का-बक्का थे। उनके मुँह से आवाज़ भी नहीं निकल रही थी। कैसे भी हिम्मत करके उन्होंने पूछा कि तुम कौन हो और इतनी रात को यहाँ क्यों आई हो?

बहिरू बाबा की बात सुनकर वह औरत बहुत जोर से डरावनी हँसी हँसी और बोली, औरत हूँ और इसी बँसवाड़ी में रहती हूँ। बहुत दिनों से मैं तुमको यहाँ सोते हुए देख रही हूँ और धीरे-धीरे मुझे अब तुमसे प्यार हो गया है। मैं सदा तुम्हारी होकर रहना चाहती हूँ।

बहिरू बाबा को अब यह समझते देर नहीं लगी कि यह तो वही चुड़ैल है जिसके बारे में लोग बताते हैं कि इस बगीचे में बहुत साल पहले घुमकड़ मदारी (जादूगर) परिवार आकर लगभग तीन-चार महीने रहा था और एक दिन कुछ लोगों ने उस मदारी परिवार की एक 10-11 साल की बालिका को इसी बसवाड़ी में मरे पाया था और मदारी परिवार वहाँ से अपना बोरिया-बिस्तर लेकर नदारद था और वही बालिका चुड़ैल बन गई थी क्योंकि उसकी हत्या गला दबाकर की गई थी।

बहिरू बाबा अब धीरे-धीरे अपने डर पर काबू पा चुके थे और उस चुड़ैल से बोले कि तुम ठहरी मरी हुई आत्मा और मैं जीता-जागता। तुम बताओ मैं तुमको कैसे अपना सकता हूँ?

बहिरू बाबा की बात सुनकर वह चुड़ैल थोड़ा गुस्से में बोली कि मैं कुछ नहीं जानती। अगर तुम मुझे ठुकराओगे तो मैं तुम्हें मार डालूंगी। तुम्हें हर हालत में मुझे अपनाना ही होगा।

अब बहिरू बाबा कुछ बोले तो नहीं पर धीरे-धीरे हनुमान चालीसा पढ़ने लगे। वह चुड़ैल धीरे-धीरे पीछे हटने लगी पर बहिरू बाबा को चेतावनी भी देती गई कि हर हालत में उनको उसे अपनाना ही होगा।

इस घटना के बाद तो बहिरू बाबा की नींद ही उड़ गई और वे अपनी बँसखटिया उठाए घर चले गए।

दूसरे दिन रात को बहिरू बाबा ने बगीचे में न सोने के लिए बहाना बनाया और घर के बाहर दरवाजे पर ही सो गए। अरे, यह क्या रात को उनकी अचानक नींद खुली तो वो क्या देखते हैं कि उनके साथ कुछ गड़बड़ हो गई है और कोई औरत उनके पास सोई हुई है। बहिरू बाबा फौरन जग गए और उस औरत से लगे पूछने की कौन हो तुम?

वह औरत डरावनी हँसी हँसी और बोली कि रातवाली ही हूँ। तुम मुझसे पीछा नहीं छुड़ा सकते और हाँ, अब तो तूने मुझे अपना भी लिया है।

अब प्रतिदिन रात को वह चुड़ैल, बहिरू बाबा के पास आने लगी और बहिरू बाबा चाहते हुए भी कुछ न कर सके।

इस घटना को चलते 15-20 दिन बीत गए। अब बहिरू बाबा में पहले वाली ताकत नहीं रही। वे बहुत ही कमजोर हो गए थे। उनके घर-वाले ये समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर इनको क्या हो गया है? एक हट्टा-कट्टा आदमी इतना कमजोर कैसे हो गया? घर वालों ने बहिरू बाबा से बहुत बार पूछा कि उन्हें क्या हो गया है पर वे लोक-लाज के डर से कुछ नहीं बताते थे। कई डाक्टरों को दिखाया गया पर बहिरू बाबा की हालत में कोई सुधार नजर नहीं आया।

एक दिन गाँव में नाच (नौटंकी) आया हुआ था और बहिरू बाबा अपने संगतिया लोगों (दोस्तों) के साथ नाच देखने गए हुए थे। जहाँ नाच हो रहा था वहाँ पान की दुकान भी लगी हुई थी। बहिरू बाबा ने वहाँ से पान लगवाकर एक बीड़ा खा लिया और पान वाले से दो बीड़ा लगाकर बाँधकर देने के लिए कहा। पान वाले ने दो बीड़ा पान कागज में लपेटकर बहिरू बाबा को दे दिया। नाच देखने के बाद बहिरू बाबा घर आए और सोने से पहले एक बीड़ा पान निकालकर खाए और बाकी एक बीड़े को वैसे ही लपेटकर पाकेट में रख लिए।

उस रात बहिरू बाबा के साथ एक चमत्कार हुआ और वह चमत्कार यह था कि वह चुड़ैल उनके पास नहीं आई। सुबह बहिरू बाबा जगे तो बहुत खुश थे। उनको लग रहा था कि पान लेकर सोने की वजह से वह चुड़ैल उनके पास नहीं आई। उन्होंने अपने पास रखे उस दूसरे बीड़ा पान को खाया नहीं और दूसरी रात भी उसको पाकेट में रखकर ही सोए। उस रात वह चुड़ैल तो आई पर इनके खाट से कुछ दूरी पर खड़ी होकर चिल्लाने लगी। बहिरू बाबा की नींद खुल गई और वे उठकर बैठ गए। उस चुड़ैल ने गुस्से में कहा कि तुम्हारे पाकेट में पान लपेटा जो कागज है उसको निकालकर फेंक दो। पर ऐसा करने से बहिरू बाबा ने मना कर दिया। लाख कोशिशों के बाद भी जब वह चुड़ैल अपने मकसद में कामयाब नहीं हुई तो रोते हुए उस बँसवाड़ी की ओर चली गई।

अब बहिरू बाबा को नींद नहीं आई। वे फौरन बैटरी (टार्च) जलाकर पान लपेटे उस कागज को देखने लगे। उनको यह देखकर बहुत विस्मय हुआ कि पान जिस कागज में लपेटा था वह कागज किसी अखबार का भाग था और उसमें हनुमान-यंत्र बना हुआ था। अब बहिरू बाबा समझ चुके थे कि पान की वजह से नहीं, अपितु हनुमानजी की वजह से उन्हें इस दुष्ट चुड़ैल से छुटकारा मिल गया था।

दूसरे दिन नहा-धोकर बहिरू बाबा मंदिर गए और वहाँ से एक हनुमान का लाकेट खरीदकर गले में धारण किए और इतना ही नहीं अब रात को सोते समय वे हमेशा हनुमान चालीसा का पाठ करते और हनुमान चालीसा को सिर के पास रखकर ही सोते।

अब बहिरू बाबा फिर से भले-चंगे हो गए थे और अब आम के बगीचे में सोना भी शुरू कर दिए थे। हाँ, अब जब भी वे अकेले सुनसान में उस बँसवाड़ी की तरफ जाते थे तो उस चुड़ैल को रोता हुआ ही पाते थे। वह चुड़ैल, बहिरू बाबा से अपने प्यार की भीख माँगते हुए गिड़गिड़ाती रहती।

चुडैल से शादी?

पिछली कहानी में आपने पढ़ा 'एक दिवानी चुडैल के बारे में' और आपने यह भी पढ़ा कि किस प्रकार छूटा था उस दिवानी चुडैल से पीछा।

अब जो कहानी मैं आप लोगों को सुनाने जा रहा हूँ, वह एक ऐसे आदमी की है जिसको पता नहीं क्या सूझा कि वह शादी करने के लिए एक चुडैल के पीछे ही पड़ गया। उसने उस चुडैल को पाने के लिए बहुत सारे हथकंडे अपनाए। पर क्या वह सफल हुआ? क्या वह चुडैल उससे शादी करने के लिए राजी हुई? आइए इस रहस्य पर से परदा उठाते हैं...

बात कोई 13-14 साल पुरानी है और मेरे मित्र की माने तो एकदम सही। अरे, इतना ही नहीं, मेरे मित्र के अलावा और भी कई लोग इस घटना को बनावटी नहीं, सच्ची मानते हैं। कुछ लोगों का तो यह भी कहना है कि मेरे मित्र और चुडैल के बीच जो रोमांचक बातें हो रही थीं, उसके वे लोग भी गवाह हैं क्योंकि उन लोगों ने वे सारी बातें सुनी।

तो आइए अब आपका वक्त जाया न करते हुए मैं अपने मित्र रमेश के मुखारबिंदु से सुनी इस घटना को आप लोगों को सुनाता हूँ।

उस समय रमेश की उम्र कोई 22-23 साल थी और आप लोगों को तो पता ही है कि गाँवों में इस उम्र में लोग बच्चों के बाप बन जाते हैं मतलब परिणय-बंधन में तो बँध ही जाते हैं।

हाँ, तो रमेश की भी शादी हुए लगभग 4-5 साल हो गए थे और ढेड़-दो साल पहले ही उसका गौना हुआ था। उस समय रमेश घर पर ही रहता था और अपनी एम.ए. की पढ़ाई पूरी कर रहा था।

यह घटना जब घटी उस समय रमेश एक 20-25 दिन की सुंदर बच्ची का पिता बन चुका था। हाँ, एक बात मैं आप लोगों को बता दूँ कि रमेश की बीबी बहुत ही निडर स्वभाव की महिला थी। यह गुण बताना इसलिए आवश्यक था कि इस कहानी की शुरुआत में इसकी निडरता अहम भूमिका निभाती है।

एक दिन की बात है कि रमेश की बीबी ने अपनी निडरता का परिचय दिया और अपनी नन्हीं बच्ची (उम्र लगभग एक माह से कम ही) और रमेश को बिस्तर पर सोता हुआ छोड़ चार बजे सुबह उठ गई। गाँवों में आज-कल तो लोग पाखाना-घर बनवाने लगे हैं पर 10-12 साल पहले तक अधिकतर घरों की महिलाओं को नित्य-क्रिया (दिशा-मैदान) हेतु घर से बाहर ही जाना पड़ता था और घर की सब महिलाएँ नहीं तो कम से कम दो-एक साथ घर से बाहर निकलती थीं। ये महिलाएँ सभी लोगों के जगने से पूर्व ही (बह्म मुहूर्त में) जगकर खेतों की ओर चली जाती थीं।

ऐसा नहीं था कि रमेश की बीबी पहली बार चार बजे जगी थी। अरे भाई, वह प्रतिदिन चार बजे ही जगती थी पर निडरता का परिचय इसलिए कह रहा हूँ कि और दिनों की तरह उसने घर के किसी महिला सदस्य को जगाया नहीं और अकेले ही दिशा मैदान हेतु घर से बाहर निकल पड़ी।

दरअसल गाँव में लड़कोरी महिला (जच्चा) जिसका बच्चा अभी 6 महीना तक का न हुआ

हो, उसको अलवाँती बोलते हैं और ऐसा कहा जाता है कि ऐसी महिला पर भूत-प्रेत की छाया जल्दी पड़ जाती है या भूत-प्रेत ऐसी महिला को जल्दी चपेट में ले लेते हैं। इसलिए ये अलवाँती महिलाएँ जिस घर में रहती हैं वहाँ आग जलाकर रखते हैं या कुछ लोग इनके तकिये के नीचे चाकू आदि रखते हैं।

खैर, रमेश की बीबी ने अपनी निडरता दिखाई और वह निडरता उस पर भारी पड़ी। वह अकेले घर से काफी दूर खेतों की ओर निकल पड़ी। हुआ यह कि उसी समय पंडीजी के श्रीफल (बेल) पर रहने वाली चुड़ैल उधर घूम रही थी और न चाहते हुए भी उसने रमेश की बीबी पर अपना डेरा डाल दिया। हाँ, फर्क सिर्फ इतना था कि वह पहले दूर-दूर से ही रमेश की बीबी का पीछा करती रही पर अंततः उसने अपने आप को रोक नहीं पाई और ज्यों ही रमेश की बीबी घर पहुँची उस पर सवार हो गई।

रमेश भी लगभग 5 बजे जगा और भैंस आदि को चारा देने के लिए घर से बाहर चला गया। जब वह घर में वापस आया तो अपनी बीबी की हरकतों में बदलाव देखा। उसने देखा कि उसकी बच्ची रो रही है पर उसकी बीबी आराम से पलंग पर बैठकर पैर पसारे हुए कुछ गुनगुना रही है।

रमेश ने एक बार अपनी रोती हुई बच्ची को देखा और दूसरी बार दाँत निपोड़ते और पलंग पर बेखौफ बैठी हुई अपनी बीबी को। उसको गुस्सा आया और उसने बच्ची को अपनी गोद में उठा लिया और अपनी बीबी पर गरजा, “बच्ची रो रही है और तुम्हारे कान पर जूँ तक नहीं रेंग रही है।”

अरे यह क्या, रमेश की बीबी ने तो रमेश के इस गुस्से को नजरअंदाज कर दिया और अपने में ही मस्त बनी रही।

रमेश का गुस्सा और बढ़े इससे पहले ही रमेश की भाभी वहाँ आ गई और रमेश की गोदी में से बच्ची को लेते हुए उसे बाहर जाने के लिए कहा। रमेश का गुस्सा तो अब और भी बढ़ गया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि आज क्या हो रहा है, जो औरत (उसकी बीबी) अपने से बड़ों के उस घर में आते ही पलंग पर से खड़ी हो जाती थी, वही बीबी आज उसके भाभी के आने के बाद भी पलंग पर आराम से बैठे मुस्कुरा रही थी।

खैर, रमेश तो कुछ नहीं समझा पर उसकी भाभी को सब कुछ समझ में आ गया और वे हँसने लगी। रमेश को अपनी भाभी का हँसना मूर्खतापूर्ण लगा और वह अपने भाभी से बोल पड़ा, “अरे, आपको क्या हुआ? ये उलटी-पुलटी हरकतें कर रही है और आप हैं कि हँसे जा रही हैं।” रमेश के इतना कहते ही उसकी भाभी ने उसे मुस्कुराते हुए जबरदस्ती बाहर जाने के लिए कहा और यह भी कहा कि बाहर से दादाजी को बुला लीजिए।

भाभी के इतना कहते ही कि दादाजी को बुला लाइए, रमेश सब समझ गया और वह बाहर न जाकर अपनी बीबी के पास ही पलंग पर बैठ गया। इतने ही देर में रमेश के घर की सभी महिलाएँ वहाँ एकत्र हो गई थीं और अगल-बगल के घरों के भी कुछ नर-नारी। अरे भाई, गाँव में इन सब बातों को फैलते देर नहीं लगती और तो और अगर बात भूत-प्रेत की हो तो और भी लोग मजे ले लेकर हवाई जहाज की रफ्तार से खबर फैलाते हैं।

हाँ, तो अब मैं आपको बता दूँ कि रमेश के कमरे में लगभग 10-12 मर्द-औरतों का

जमावड़ा हो चुका था और रमेश ने भी सब को मना कर दिया कि यह खबर खेतों की ओर गए दादाजी के कान तक नहीं पहुँचनी चाहिए। दरअसल वह अपने आप को लोगों की नजरों में बहुत बुद्धिमान और निडर साबित करना चाहता था। वह तनकर अपनी बीबी के सामने बैठ गया और अपनी बीबी से कुछ जानने के लिए प्रश्नों की बौछार शुरू कर दी।

रमेश – “कौन हो तुम?”

रमेश की बीबी कुछ न बोली केवल मुस्कुराकर रह गई।

रमेश ओझाओं की तरह फिर गुराया, “मुझे ऐसा-वैसा न समझ। मैं तुमको भस्म कर दूँगा।”

रमेश की बीबी फिर से मुस्कुराई पर इस बार थोड़ा तनकर बोली, “तुम चाहते क्या हो?”

बहुत सारे लोगों को वहाँ पाकर रमेश थोड़ा अकड़ेबाजों जैसा बोला, “‘तुम’ मत बोल। मेरे साथ रिस्पेक्ट से बातें कर। तुम्हें पता नहीं कि मैं ब्राह्मण कुमार हूँ और उस पर भी बजरंगबली का भक्त।”

रमेश के इतना कहते ही उसकी बीबी (चुड़ैल से पीड़ित) थोड़ा सकपकाकर बोली, “मैं पंडीजी के श्रीफल पर की चुड़ैल हूँ।”

अपने बीबी के मुख से इतना सुनते ही तो रमेश को और भी जोश आ गया। उसे लगने लगा कि अब वह वास्तव में इस पर काबू पा लेगा। वहाँ खड़े लोग कौतुहलपूर्वक रमेश और उसकी बीबी की बातों को सुन रहे थे और मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। अरे भाई, मनोरंजन जो हो रहा था उनका।

रमेश फिर बोला, “अच्छ, पर तूने इसको पकड़ा क्यों? तुमके पता नहीं कि यह एक ब्राह्मण की बहू है और नियमित पूजा-पाठ भी करती है।”

रमेश की चुड़ैल पीड़ित बीबी बोली, “मैंने इसको जानबूझकर नहीं पकड़ा। इसको पकड़ना तो मेरी मजबूरी हो गई थी। यह इस हालत में अकेले बाहर गई क्यों? खैर, अब मैं जा रही हूँ। मैं खुद ही अब अधिक देर यहाँ नहीं रह सकती।”

रमेश अपने बीबी की इन बातों को सुनकर बोला, “क्यों क्या हुआ? डर गई न मुझसे।”

रमेश के इतना कहते ही फिर उसकी बीबी मुस्कुराई और बोली, “तुमसे क्या डर? मैं तो उससे डर रही हूँ जो इस घर पर लटक रहा है और मुझे जला रहा है। अब उसका ताप मुझे सहन नहीं हो रहा है।”

दरअसल बात यह थी कि रमेश के घर के ठीक पीछे एक पीपल का पेड़ था और गाँव वाले उस पेड़ को बाँसदेव बाबा कहते थे। लोगों का विश्वास था कि इस पेड़ पर कोई अच्छी आत्मा रहती है और वह सबकी सहायता करती है। कभी-कभी तो लोग उस पीपल के नीचे जेवनार आदि भी चढ़ाते थे। और हाँ, इस पीपल की एक डाली रमेश के घर के उसी कमरे पर लटकती रहती थी जिसमें रमेश की बीबी रहती थी।

चुड़ैल (अपनी बीबी) की बात सुनकर रमेश हँसा और बोला, “जा मत, यहीं रह जा। जैसे हमारी एक बीबी है वैसे ही तुम एक और।”

रमेश के इतना कहते ही वह चुड़ैल हँसी और बोली, “यह संभव नहीं है पर तुम मुझसे शादी क्यों करना चाहते हो?”

रमेश बोला, “अरे भाई, गरीब ब्राह्मण हूँ। कुछ कमाता-धमाता तो हूँ नहीं। तू रहेगी जो थोड़ा धन-दौलत लाती रहेगी।”

रमेश के इतना कहते ही वह चुड़ैल बोली, “तुम बहुत चालू है। और हाँ, यह भी सही है कि हमारे पास बहुत सारा धन है पर उस पर हमारे लोगों का पहरा रहता है। अगर कोई इंसान वह धन लेना चाहे तो हम लोग उसका अहित कर देती हैं। और एक बात, वह धन तुम जैसे जीवित प्राणियों के लिए नहीं है।”

रमेश अब थोड़ा शांत और शालीन स्वभाव में बोला, “अच्छा ठीक है, तुम जरा कृपा करके एक बात बताओ, ये भूत-प्रेत क्या होते हैं? क्या तुमने कभी भगवान को देखा है, आखिर तुम कौन हो, क्या पहले तुम भी इंसान ही थी?”

चुड़ैल भी थोड़ा शांत थी और शांत थे वहाँ उपस्थित सभी लोग। क्योंकि सब लोग इन प्रश्नों का उत्तर जानना चाहते थे।

चुड़ैल ने एक गहरी साँस ली और कहना आरंभ किया, “भगवान क्या है, मुझे नहीं मालूम पर कुछ हमारे जैसी आत्माएँ भी होती हैं जिनसे हम लोग बहुत डरते हैं और उनसे दूर रहना ही पसंद करते हैं। हम लोग उनसे क्यों डरती हैं, यह भी मुझे पता नहीं। वैसे हम लोग पूजा-पाठ करने वाले लोगों के पास भी भटकना पसंद नहीं करते और मंत्रों आदि से भी डरते हैं।”

रमेश ने फिर पूछा, “खैर, ये बताओ कि तुम इसके पहले क्या थी? तुम्हारा घर कहाँ था, तुम चुड़ैल कैसे बन गई।”

चुड़ैल ने रमेश की बातों को अनसुना करते हुए कहा, “नहीं, नहीं, अब मैं जा रही हूँ! अब और मैं यहाँ नहीं रुक सकती। वे आ रहे हैं।”

चुड़ैल के इतना कहते ही कोई तो कमरे में प्रवेश किया और रमेश को डाँटा, “रमेश! यह सब क्या हो रहा है? क्या मजाक बनाकर रखे हो?” रमेश कुछ बोले इससे पहले ही क्या देखता है कि उसकी बीबी ने साड़ी का पल्लू झट से अपने सिर पर रख लिया और हड़बड़ाकर पलंग पर से उतरकर नीचे बैठ गई और धीरे-धीरे मेरी बेटी, मेरी बेटी कहते हुए रमेश की भाभी की गोद में से बच्ची को लेकर दूध पिलाने लगी।

रमेश ने एक दृष्टि अपने दादाजी की ओर डाला और मन ही मन बुदबुदाया, “आपको अभी आना था? सब खेल बिगाड़ दिए। आधे घंटे बाद आते तो क्या बिगाड़ जाता?”

इतना भी न सताओ कि भूत बनकर सताना पड़े

कभी-कभी क्या, हमेशा ही ऐसा होता है मेरे साथ। जब भी इंसान के बारे में सोचता हूँ तो गुस्से से तिलमिला उठता हूँ। कभी हँसना तो कभी रोना आता है इस इंसान पर। बड़ी-बड़ी बातें करने वाला इंसान, नैतिकता की दुहाई देने वाला इंसान, राम-कृष्ण का पुजारी, माँ शक्ति की चरणों में लेटे रहने वाला इंसान। वाह प्रभु, तूने क्या इंसान बनाया! मुझे तो लगता है कि जब प्रभु ने सब जीवों को बना लिया होगा तो उसके बाद इंसान बनाया होगा ताकि उसकी सृजनता चरितार्थ हो सके। पर क्या उसकी सृजनता मानव के रूप में साकार हो पाई? मुझे तो लगता है कि बिल्कुल नहीं। क्योंकि जब तक इस दुनिया में इंसान नहीं आया होगा तब तक सभी जीव शांति से जी रहे होंगे और इंसान के आते ही उनकी ही क्या, भगवान की शांति भी भंग हो गई होगी।

आपको लगता होगा कि मैं कौन हूँ, और क्यों इतना बकबका रहा हूँ? चलिए बता ही देता हूँ। मैं भी तो इंसान ही बनकर इस जमीं पर आई थी। बहुत सारे सपने थे मेरे, पर इंसान ने ही, अरे इंसान क्या, मेरे अपनों ने ही मेरे सारे सपनों में आग लगा दी और लगा दी आग मुझे भी। क्योंकि वे तो इस कहावत में विश्वास करते थे कि न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। जो मेरे नजरो में प्रभु की अनमोल कृति थी, वही उनके नजरो में विपत्ति। और वे लोग तो विपत्ति का समूल नाश करने में ही विश्वास रखते थे।

यह कहानी भले आपको काल्पनिक लगे, पर यह सच्ची कहानी है। आप इस कहानी के ताने-बाने पर मत जाइए। मैं तो इस कहानी की सत्यता से आप लोगों का परिचय कराना चाहती हूँ। जी हाँ, आप ठीक समझे। मैं भी इंसान ही हूँ पर नारी हूँ। मैं चीख-चीख कर अपनों से अपनों की भीख माँगती रही पर किसी भी दरिंदे के कान पर जूँ तक नहीं रेंगा और अंततः मुझे इन जालिमों से निपटने के लिए खुद ही जालिम बनना पड़ा, दरिंदगी की हद तक जाना पड़ा। मैं मानती हूँ कि मैंने जो किया वह सही नहीं था पर क्या जो समाज ने, इंसान ने मेरे साथ किया, वह सही था?

मेरा जन्म आज से लगभग 70 साल पहले एक ऐसे गाँव में हुआ था जो धार्मिकता, मानवता की ध्वजा को लहराने वाला माना जाता था। उस समय मेरे गाँव में काली माई, बरमबाबा आदि देवथानों के साथ ही शिवजी का एक छोटा-सा मंदिर भी था। घर-घर में माँ तुलसी शोभायमान थीं। सूरज के अस्ताचल में जाते ही इन बिरवों के नीचे मिट्टी के छोटे-छोटे कोरे दीपक जल उठते थे। ऐसे धार्मिकतापूर्ण वातावरण में मैं फली-फूली। विद्यालय का मुँह तो नहीं देखी पर घर पर ही एक कुशल शिक्षक के मार्गदर्शन में बहुत सारे विषयों का अध्ययन की। मुझे गीता और रामायण पढ़ना बहुत ही अच्छा लगता था। मुझे याद है मैं उस समय 14 साल की रही होगी तभी मेरे हाथ पीले कर दिए गए थे।

शादी के बाद मैं नए गाँव, घर-परिवार में आ गई। इस नए घर का माहौल ठीक-ठाक ही था। 2 सालों के बाद मैं एक बच्ची की माँ बन गई। पर मैं कुछ समझ पाती इससे पहले ही वह लड़की पता नहीं कहाँ गायब हो गई और मुझे यह बताया गया कि वह मरी हुई ही पैदा

हुई थी, पर मुझे उसका रोता चेहरा आज भी याद है। मैं उस समय कुछ प्रतिकार नहीं कर पाई, क्योंकि घर-गाँव का माहौल ही कुछ ऐसा था कि मेरी सुनने वाला कोई नहीं था। मैंने अपने मायके वालों से इस बारे में बात की पर वे लोग भी मेरा साथ नहीं दे पाए।

खैर, इस घटना को लगभग 1 साल ही बीते थे कि फिर मैं एक बच्ची की माँ बनी। पर हाय रे प्रभु, इस बच्ची का मुँह भी ठीक से मैं नहीं देख पाई। पता नहीं प्रभु को क्या मंजूर था। 1-1 वर्ष या 14-15 महीनों पर मैं लगातार बच्चे जनने वाली मशीन बनी रही पर शायद ये बच्चे समाज, घर के किसी काम के नहीं थे।

एक-एक करके मेरी पुत्रियाँ इस हृदयहीन समाज में साँस लेने के पहले ही काल के गाल में समाती गईं। मुझे याद है लगभग 6-7 सालों में मुझे 5 पुत्रियाँ प्राप्त हुई थीं पर कोई भी अंगने में किलकारी नहीं ले पाई थी। इनके मौत का राज मेरे लिए अबूझ पहेली थी और इस पहेली को सुलझाने वाला भी कोई नहीं था।

अब तो जिस घर में मैं लक्ष्मी बनकर आयी थी, उसी में अब दरिद्रा हो गई थी। एक असहाय अबला जिसे कोई भी दुरदुरा देता था। किससे कहूँ अपना दुख? खुद मेरे पति भी अब मुझे बात-बात पर मारने दौड़ पड़ते थे।

एक दिन की बात है। शाम का समय था और मेरे सास-ससुर दोगहे में बैठकर कुछ खुसुर-पुसुर कर रहे थे। पास ही में मेरे पति(अ)देव भी बैठे हुए थे। उस दिन मैंने हिम्मत करके इन लोगों से कुछ कहने के लिए किवाड़ की ओट में खड़ी हुई। पर यह क्या, अभी मैं कुछ कहने की हिम्मत करूँ इससे पहले ही मेरी सास ने मेरे पति से कहा कि ये कलमुँही केवल कलमुँही ही पैदा करेगी। यह जब तक है तेरी दूसरी शादी भी नहीं कर सकती। पर कुछ भी कर एक कुलदीपक दे ही दे मुझे। बिना कुलदीपक का मुँह देखे मैं कत्तई मरना नहीं चाहती।

फिर अचानक मेरे पति ने कहा कि माँ धीरज रख। आज ही कुछ इंतजाम कर देता हूँ। मैं तो एकदम से डर गई थी क्योंकि उस समय ये मेरे अपने इंसान कम दरिंदे अधिक लग रहे थे।

जिसका डर था, वही हुआ। उसी रात मुझपर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग के हवाले कर दिया गया। मैं चाहकर भी कुछ न कर सकी। बस केवल चिखती रही, चिल्लाती रही पर सुने कौन? अंततः मेरी इह लीला समाप्त हो गई। न पुलिस आई न गाँव के कुछ लोग। गाँव के कुछ लोग भी यही कहते रहे कि मैं कुलटा थी। मेरे उस घर में आते ही उस घर की खुशियाँ छिन गई थीं। पर क्या ऐसा था? मुझे पता नहीं।

मेरे माता-पिता, भाई-बहन भी बस आँसू ही बहा पाए, कुछ कर नहीं पाए। मेरी आत्मा भटकती रही। कुछ महीनों बाद मेरे पति की दूसरी शादी भी हो गई। पर अब तो मैं पूरी तरह से इन कथित अपनों को सबक सिखाने का मन बना चुकी थी।

तो अब शुरू होता है मेरा बदला। रमेसर काका और रमेसरी काकी आज बहुत परेशान नजर आ रहे थे। उनकी बहू रमकलिया पेट से थी और रह-रहकर कराह उठती थी। पता नहीं क्यों जब भी उसे गर्भ रहता तो उसे पेट में अत्यधिक दर्द शुरू हो जाता। इसके पहले भी उसके 2 भ्रूण नुकसान हो चुके थे। रमेसर काका का एक ही पुत्र था बहोरन। रमकलिया

उसकी तीसरी पत्नी थी। दरअसल सुनने में यह आता है कि बहोरन की पहली पत्नी से लगभग 1-1 साल के अंतराल पर 5 पुत्रियाँ पैदा हुई थीं पर सभी मरी हुई और जिसके चलते अंततः बहोरन की पहली पत्नी ने अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा लिया था और सदा-सदा के लिए इस दुनिया का परित्याग कर दिया था।

बहोरन की दूसरी बीबी से केवल दो लड़कियाँ ही थी पर पुत्र की लालसा में बहोरन के माता-पिता ने बहोरन की तीसरी शादी भी कर दी थी। गाँव की दाई की माने तो बहोरन की दूसरी बीबी भी जब एक बार पेट से थी और खरबिरउरा दवा आदि तथा उसके हाव-भाव से ऐसा लगता था कि पेट में लड़का ही है, तो उसे भी सहनीय पीड़ा होती रहती थी और अंततः उसका वह गर्भ भी नुकसान हो गया था। तो गाँव वालों को यह लगता था कि बहोरन की पत्नी को जब भी लड़का होने को होता है तो बहुत ही दर्द होता है और जब लड़की होने को हो तो आराम से हो जाता है। अब गाँव वाले इस बात को बहोरन की पहली पत्नी से जोड़कर देखते थे।

गाँव में धीरे-धीरे यह भी बात फैलनी शुरू हो गई थी कि बहोरन की पहली पत्नी से जो भी पाँच लड़कियाँ पैदा हुई थीं, सब के सब ठीक थीं पर बहोरन काका और उनके घर वालों की मिलीभगत से उन मासूमों को सदा के लिए मिट्टी के नीचे दफना दिया गया था। क्योंकि वे लोग लड़का और सिर्फ लड़का चाहते थे। उन्हें कुलदीपक चाहिए था और उस कुलदीपक के चक्कर में इन लोगों ने शक्ति स्वरूपा कन्याओं को कंस बनकर हत्या कर दी थी। इतना घोर अनर्थ और फिर भी कोई प्रतिकार नहीं? अब तो गाँव वाले सदमे में रहते थे क्योंकि पेट से होने पर गाँव की कई बहुओं के साथ उल्टी-पुल्टी घटनाएँ घटना शुरू हो गई थीं।

खैर, अब आपको रमेसर काका के घर में ले चलता हूँ। रमेसर काका की बहू रमकलिया अंगने में पड़ी कराह रही है। पास में गाँव की दाई और गाँव की 2-4 बुजुर्ग महिलाएँ बैठी हुई हैं। सब की सब उदास हैं। रमेसरी काकी रह-रहकर रोती हैं और भुनभुनाती हैं कि उनकी पहली बहू ही यह सब कर रही है। वे अचानक घर से बाहर निकलकर रमेसर काका से कहती हैं कि बहू को किसी अच्छे अस्पताल में भर्ती करा दीजिए। रमेसर काका सहमति में सिर हिलाते हैं तभी दाई हड़बड़ाए हुए घर से बाहर निकलती है और रमेसरी काकी की ओर इशारे से कुछ कहती है। अच्छा तो रमेसरी काकी का यह कुलदीपक भी अब इस दुनिया में आने से रह गया।

एक दिन की बात है। रमेसरी काकी रात को खाट पर सोए-सोए ही चिल्लाने लगीं, छोड़-छोड़ मेरा गला। छोड़-छोड़। उनकी आवाज़ सुनकर रमेसर काका, बहोरन आदि उनके पास आ गए। उन लोगों ने देखा कि रमेसरी काकी खुद ही अपने हाथों से कसकर अपना गला पकड़ी हैं और चिल्लाए जा रही हैं। उनकी आँखें थोड़ी-सी लाल हो गई थीं और चेहरे पर हल्की-सी सूजन भी आ गई थी।

बहोरन ने आगे बढ़कर रमेसरी काकी के गले से उनका हाथ मजबूती से खींचकर अलग किया। फिर रमेसरी काकी को उठाकर एक-दो घूँट पानी पिलाया गया। अब तो पूरे घर वालों के आँखों से नींद कोसों दूर चली गई थी। सभी सहमे हुए ही लग रहे थे क्योंकि रमेसरी काकी रूआँसू होकर कह रही थी कि बहोरनी की पहली बहू ही थी जो उनका गला

दबा रही थी।

दरअसल रमेसरी काकी ने कहा कि आज शाम को जब वे गोहरौरी में से गोहरा निकाल रही थीं, तभी वहाँ उन्हें कोई दिखा था पर अचानक गायब हो गया था। दो मिनट में ही ऐसा लगा कि गोहरौरी में भूचाल आ गया हो और पूरी मड़ई हिलने लगी थी। मैं एकदम से डर कर सिर पकड़कर बैठ गई थी। तभी एक औरताना कर्णभेदक हँसी मेरे कानों में पड़ी थी, जो बहुत ही डरावनी थी। बाद में वह हँसी आवाज़ में बदल गई थी और चिल्ला रही थी कि अगर मैं कलमुँही थी, मेरी बेटियाँ कलमुँही थीं तो तू यह कैसे भूल गई कि तू भी तो किसी की बेटा है। मैं भी बेटा, तू भी बेटा तो केवल मैं ही कलमुँही क्यों? तू क्यों नहीं? तुझको कुलदीपक चाहिए न? देती हूँ मैं तुझे कुलदीपक।

इतना कहने के बाद वह आवाज़ फिर से हँसी में बदल गई थी और मैं बस अचेत मन, सहमे हुए वह आवाज़ सुनती रही थी। और अभी वही मेरा गला भी दबा रही थी।

प्रभु तो अगम है ही कभी-कभी कुछ ऐसी घटनाएँ भी घटित हो जाती हैं जो किसी अगम से कम नहीं होती। इंसान इनको चमत्कार मान लेता है या किसी गैर-इंसान का कार्य। क्योंकि इसके सिवा कोई चारा भी तो नहीं बचता। रमेसर काका के साथ ही उनका पूरा परिवार तथा उनका पूरा गाँव एक रहस्यमयी संभावित खतरे में जी रहा था। उनको लगता था कि कहीं कुछ तो ऐसा है जो जाने-अनजाने उनका अहित कर रहा है, परेशान कर रहा है उन्हें तथा उनके पूरे गाँव को।

उनके ग्राम-प्रधान तथा अन्य घरों के बड़े-बुजुर्ग इस खतरे से पार पाने के लिए हाथ-पैर मार रहे थे पर समाधान नहीं निकल पा रहा था। गाँव में अखंड किर्तन से लेकर कितने सारे पूजा-पाठ किए गए पर समस्याएँ जस की तस। कितने ओझा-सोखा आए पर कोई समाधान नहीं।

एक दिन गाँव की एक औरत सुबह-सुबह अपने खेतों में गेहूँ काटने गई थी। अचानक उसे पता नहीं क्या हुआ कि विकराल रूप बनाए अपने गाँव में दाखिल हुई और बस एक ही रट लगाए जा रही थी। अब इस गाँव के किसी भी घर में कोई कुलदीपक नहीं आएगा, जो हैं भी, वे भी एक-एक करके काल की गाल में समा जाएँगे। मेरा भोजन बन जाएँगे। मैं किसी को भी नहीं छोड़ूँगी।

यही सब कहते-चिल्लाते वह ग्राम-प्रधान के दरवाजे पर पहुँचकर तपड़ी, “निकल परधान, बाहर निकल! उस दिन तू कहाँ था जब मुझे और मेरी बेटियों को जिंदा ही दफनाया जा रहा था, उन्हें जलाया जा रहा था। उस दिन तो तू चैन की नींद सो रहा था। रहनुमा बना है न तू इस गाँव का? मेरी बात अब कान खोल कर सुन ले! न अब तू बचेगा और न ही इस गाँव का कोई और। सबको तहस-नहस कर दूँगी। चुन-चुन कर बदला लूँगी। अभी तक तुम लोगों ने एक मरी आत्मा का कहर नहीं देखा है, जो अब शुरू होने वाली है।”

इतना सब कहने के बाद व औरत बेहोश हो गई। उसे उठाकर उसके घर पर लाया गया। धीरे-धीरे आधे-एक घंटे में व सचेत हुई।

अब तो उस चुड़ैल ने, भूतनी ने उस गाँव पर अपना कहर बरपाना शुरू कर दिया था। प्रतिदिन कोई न कोई ऐसी घटना घटने लगी जिसने गाँव वालों से उनका चैन छिन लिया।

उनके आँखों की नींद सदा के लिए गायब होने लगी। वे लोग आतंक में जीने लगे। अरे, यहाँ तक कि उस गाँव के छोटे-छोटे बच्चों को उनकी माँ के साथ किसी न किसी रिश्तेदारी में भेजा जाने लगा। ऐसा लगने लगा कि गाँव में पूरी तरह से आतंक का, भय का साम्राज्य पसर चुका है। सबके चेहरे पर खौफ साफ नजर आने लगा था। प्रतिदिन उस गाँव की महिलाएँ नहा-धोकर दल बनाकर छ्वाक देने देवीताने जाने लगी थीं। कड़ाइयाँ भाखना शुरू हो गया था। देवताओं की आराधना दिन व दिन बढ़ती ही जा रही थी।

एक दिन रमेसर काका खेतों में मृत पाए गए थे। ऐसा लगता था कि किसी ने उनको तड़पा-तड़पाकर मारा हो। आधे कट्टे तक की फसल उनके घसीटने के कारण बरबाद हो गई थी। उनके गले पर किसी के अंगुलियों के निसान उभर आए थे, जो बहुत ही भयावह थे। रमेसरी काकी भी एक दिन गोहरौरी में गोहरा निकालने गईं और वहीं एक जहरीले साँप ने उनकी इहलीला समाप्त कर दी।

बहोरन पागल हो गया था। गाँव वालों की माने तो उसे किसी भूत ने अपने चपेट में लेकर पागल बना दिया था। वह एकदम पागलों जैसा इधर-उधर घूमता रहता और लोगों को परेशान किया करता। कभी-कभी उसमें इतना बल आ जाता कि लोगों को दौड़ा-दौड़ाकर मारता और इतना मारता कि कुछ लोग अधमरे हो जाते। कभी-कभी तो दिन में भी लोगों के घरों के दरवाजे बंद रहते और कोई घर से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। बरबादी और सिर्फ बरबादी ही दिखाई देती थी उस गाँव में।

कुछ दिनों के बाद एक साधु का आगमन हुआ उस गाँव में। वे बहुत ही सीधे-साधे और धार्मिक स्वभाव के थे। गाँव वाले उनके आगे बहुत गिड़गिड़ाए और उनसे चिरौरी किए कि उन लोगों को इस आत्मा से बचा लिया जाए।

साधु बाबा पहले तो स्थिति को अच्छी तरह से समझे और पूरे गाँव वालों को बहुत ही फटकार लगाई। अंत में उन्होंने कुछ अनुष्ठान किया और उस मृत आत्मा को एक औरत पर बुलाया। मृत आत्मा के आते ही वह औरत आपे से बाहर हो गई और उत्पात मचाना शुरू कर दिया। फिर साधु बाबा के अनुरोध पर वह धीरे-धीरे शांत हुई और रो-रोकर कहने लगी कि बाबा, इन गाँव वालों ने केवल मेरी ही पुत्रियों को नहीं और भी कितनी ही बेटियों को जिंदे जी गाँव के बाहर के बगीचे के किनारे दफन कर दिया है। मैं किसी भी कीमत पर इन लोगों को छोड़ने वाली नहीं। इस गाँव में कोई नहीं बचेगा। अंत में साधु बाबा ने बहुत अनुनय-विनय करके उस महिला को शांत कराया। फिर गाँव वालों ने स्वप्न में भी ऐसी धिनौनी हरकत न करने की कसम खाई और साधु बाबा द्वारा एक छोटा अनुष्ठान किया गया। सभी मृतक बालाओं की शांति के मंत्रोच्चार किए गए।

अभी तो वह गाँव पूरी तरह से शांत है पर कभी-कभी गाँव में और गाँव के बाहर एक अजीब सन्नाटा पसरा रहता है। गाँव के बाहर निकलने पर आज भी ऐसा लगता है कि कोई महिला अपनी छोटी-छोटी बेटियों के साथ रो रही है। और कहीं न कहीं गाँव वालों को अपनी करतूत का भान करा रही है। आज भी मायूस है वह गाँव और वहाँ के लोग।

बेटी है तो कल है, बेटी है तो जीवन है।

समाप्त